

(कुल्लु नफ़िसन ज़ाइक़तुल मौत)

आख़िर मरना है

कमोबेश 300 कुरआनी आयात
व 600 अहादीस पर मुश्तमिल

तसनीफ़ - व - तालीफ़
डॉ० आजम बेग़ कादरी

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम किताब	:	आखिर मरना है AKHIR MARNA HAI
जेरे निगरानी	:	हज़रत मौलाना सिराजुद्दीन वारसी साहब
तसनीफ़-व-तालीफ़	:	डॉ० आज़म बेग़ क़ादरी
पहला एडिशन	:	जुलाई-2015, रमज़ानुल मुबारक (1436 हि०)
कीमत	:	140/- रु०

मिलने के पते

उर्दू बुक हाउस

तलाक़ महल कानपुर (उ० प्र०)

PH-09389837386, 09559032415

जावेद बुक डिपो

याकूब मार्कीट, करहल, (मैनपुरी) यु.पी.

मोबाईल: 09634447000

(कुल्लु नफ़िसन ज़ाइक़तुल मौत)

आख़िर मरना है

कमोबेश 300 कुरआनी आयात
व 600 अहादीस पर मुश्तमिल

तसनीफ़ -व- तालीफ़
डॉ० आजम बेग क़ादरी

ज़ेरे निगरानी:
हज़रत मौलाना सिराजुद्दीन वारसी साहब

उर्दू बुक हाउस
तलाक़ महल कानपुर (उ० प्र०)
PH-09389837386, 09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन (उन्वान)

न० शुमार	सफ़हा
01— मक़सद	08
02— आमाल और आजमाइश	17
03— दुनियाँ की मज़म्मत	24
04— माल की मज़म्मत	41
05— इल्म की फ़ज़ीलत	46
06— क़ुरान की फ़ज़ीलत	49
07— आलिम की फ़ज़ीलत	52
08— नमाज़ की फ़ज़ीलत	56
09— नमाज़ के आदाब	62
10— ज़िक़रे इलाही	67
11— रोज़े की फ़ज़ीलत	71
12— हज की फ़ज़ीलत	75
13— मौत और उसकी सख़्तियाँ	80
14— क़ब्र और उसका अज़ाब	90
15— ज़कात और बुख़्ल	102
16— राहे खुदा में ख़र्च (सदका ख़ैरात)	107
17— फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत	114
18— काफ़िर से दोस्ती	118
19— आख़लाके हसना	119
20— तकब्बुर	123
21— खुद पसन्दी	130
22— तवाज़ोअ	133
23— मुतफ़र्रिक़ आमाल	137
24— नीयत और रिया	139
25— इख़लास	146
26— अम्र बिल माअरुफ़ व नही अनिल मुन्कर	149
27— रियाज़त	155

न०		सफ़्हा
शुमार		
28—	गीबत (जुबान की आफ़त)	161
29—	गुस्सा	174
30—	हसद	176
31—	क़यामत का बयान	180
32—	सच और हक़	200
33—	हलाल हराम और तिजारत	203
34—	खशीयते इलाही (ख़ौफ़े खुदा)	209
35—	सब्र की फ़ज़ीलत	214
36—	शुक्र की फ़ज़ीलत	224
37—	तवक्कुल	232
38—	अल्लाह व रसूल की मुहब्बत	238
39—	रज़ाये इलाही	244
40—	तौबा की फ़ज़ीलत	250
41—	जहन्नुम का बयान	261
42—	मुशाबहत	269
43—	दुरुदो सलाम की फ़ज़ीलत	271
44—	खाने के आदाब और भूक से कम खाने की फ़ज़ीलत	280
45—	निकाह और फ़िज़ूल ख़र्ची	284
46—	मुसलमानों के हुक्क़	299
47—	वालिदैन के हुक्क़	313
48—	मियाँ बीवी के हुक्क़	322
49—	मुहब्बते अहले बैत और ताज़ियादारी	326
50—	जन्नत का बयान	356

786/92

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल अलमीन वस्सलातु वस्सलामु
अला सइयदिल मुरसलीन अम्माबाअद फ़आऊजू बिल्लाहि
मिनश्शैतॉनिर्रजीम बिसमिल्लाहिर रहमानिर्रहीम०

तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो
तमाम जहानों का मालिक है कायनात के निज़ाम को
चलाने वाला निहायत मेहरबान और बे इन्तिहा करम
करने वाला है और हिदायत देने वाला गुनाहगारों को
बख़्शने वाला जो तमाम हिकमतों का जानने वाला है।

और दुरुदो सलाम हो नबी अकरम नूरे मुजस्सम
सरकारे दो अलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर जिसे
अल्लाह तअ़ाला ने हक् और रहमत के साथ भेजा जो
तमाम ऐबो नकाइस से पाक उलूमे ग़ैब का जानने वाला
जो नूर और कुरान के साथ दुनियाँ में तशरीफ़ लाये
और सलाम हो आपकी अज़वाजे मुतहरात और आपकी
आल और असहाब और तमाम औलियाकिराम पर और
उन पर जो अल्लाह तअ़ाला के मुकर्रब और मख़्सूस
बन्दे हैं।

अपनी बात

अल्लाह तआला का फज़्लो करम व शुक्र और एहसान है कि जिसकी तौफीक से इस अदना बन्दे को इस किताब को लिखने की सआदत हासिल हुई अल्लाह तआला ने अपने हबीब रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफैल से ये तौफीक हमें बरख्शी और इस किताब को लिखने का मक़सद भी अल्लाह अज्ज़ व जल के रहमो करम से ही अता हुआ है।

आज मुआशरे के हालात पर अगर हम गौर करें तो पायेंगे कि अक्सर लोग आखिरत को भूलकर दुनियाँ और उसकी आराइश की मुहब्बत और रग़बत में मुब्तिला हैं हालाँकि दुनियाँ धोका है और आखिरत हकीकत है दुनियाँ फ़ानी है और आखिरत हमेशगी का घर है लेकिन फिर भी लोग अन्जान हैं और इसकी सबसे बड़ी वजह ये है कि कुरान और दीनी इल्म का हमारे पास न होना और दुन्यावी तालीम को बढ़ावा देना और नफ़्सानी ख्वाहिशात हमें बहुत बड़े ख़सारे यानी अज़ाबे क़ब्र और जहन्नुम की तरफ़ माइल कर रही है।

हालात ये हैं कि मस्जिदें खाली हैं और बाज़ार भरे हैं दुनियाँ और माल की रेस में अक्सर लोग दौड़ रहे हैं और एक दूसरे से सबक़त पाने में मुब्तिला हैं अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्मों की नाफ़रमानी हो रही है बुराई और बेहयाई उरुज पर है शैतान हमारे नफ़सों पर ग़ालिब है और हमारे नफ़सों पर हमारा काबू न होने के बाइस हम गुनाहों और बुराइयों की तरफ़ राग़िब हो रहे हैं और अक्सर लोग अपनी मौत से ग़ाफ़िल रहते हैं जैसे कभी मरना ही न हो और वो अपनी मौत को याद नहीं करते हालाँकि वो बहुत से लोगो को अपने काँधों पर सवार करके क़ब्र में छोड़कर आये हैं ऐसे हालातों पर हमें ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये।

जिस इस्लाम को फैलाने के लिये हमारे आका मदीने के ताजदार रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने कितनी मुसीबतें और तकलीफ़ें बर्दास्त कीं और जिस इस्लाम की हिफ़ज़त में हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआला अन्हु और दीगर शुहदाएकिराम और सहाबाएकिराम ने कितनी मुसीबतें

परेशानी और अज़िज़तें बर्दास्त की आज उस इस्लाम और उसके अहकाम को अक्सर लोग जानते और समझते हैं लेकिन उस पर अमल नहीं करते और उसकी तरफ़ राग़िब और मुतवज्जै नहीं होते और दुन्यावी मसरूफ़ियत के सबब उस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते हालाँकि हम तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त करें और उसके अहकाम पर अमल पैरा हों और लोगों को अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अमल पैरा करने के लिए तरगीब दें और मुतवज्जै करें और उनकी इस्लाह करें।

इसलिए हम तमाम मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार बनें और कसरत से नेक अमल करें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतों को अपने अमल में लायें और गुनाहों से खुद को बचायें व दुन्यावी तालीम के साथ दीनी तालीम भी हासिल करें जो हमारे लिए सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी है क्योंकि दीनी इल्म क़यामत तक हमारा साथी व मददगार होगा जबकि दुन्यावी इल्म सिर्फ़ दुनियाँ तक ही महदूद है। और हमें चाहिए कि अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इताअत में गुज़ारें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो और हम हमेशगी वाले घर यानी जन्नत के मुस्तहिक़ हो जायें और अज़ाबे क़ब्र और अज़ाबे क़यामत और जहन्नुम से महफूज़ रहें। अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफ़ैल हम तमाम मुसलमानों को हिदायत अता फ़रमाये व सिराते मुस्तकीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये—आमीन

और आप हज़रात से हमारी गुज़ारिश है कि इस किताब को पूरा पढ़ें और उस पर अमल भी करें और लोगों को इस किताब को पढ़ाना मेरा मक़सद नहीं बल्कि पढ़ने के साथ-साथ उस पर अमल की तरफ़ रग़बत दिलाना मेरा अहम मक़सद है और इस किताब को पढ़कर दूसरे लोगों को भी इस किताब को पढ़ने के लिए दें ताकि आपको ज़्यादा सवाब मिले और इस किताब को लिखने में अगर कोई कोताही या ग़लती हमसे हो गई हो तो हमे मुत्तलाअ करें और हमें माफ़ करें।

—: मक़सद :—

अल्लाह तआला ने कोई भी चीज़ बे मक़सद पैदा नहीं की हर चीज़ का कोई न कोई मक़सद होता है चाहे पोशीदा हो या जाहिर और इन्सान को तमाम चीज़ों के मक़सिद का इल्म होता है जैसे वो खाना खाता है तो खाने का मक़सद भूक मिटाना है कपड़े पहनने का मक़सद जिस्म को छुपाना है मकान बनाने का मक़सद गर्मी, सर्दी, बरसात से खुद की हिफ़ाज़त करना है और माल कमाने का मक़सद दुन्यावी ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरतों को पूरा करना वगैराह है तो हर चीज़ का एक मक़सद होता है और इन्सान इन तमाम मक़सिद को याद रखता और कभी नहीं भूलता लेकिन बाज़ लोग असल मक़सद को भूल गये हैं और वो ये है कि दुनियाँ में इन्सान की तख़लीक़ यानी अल्लाह तआला ने दुनियाँ में इन्सान को किस लिए पैदा फ़रमाया है क्या हम दुनियाँ और माल हासिल करने के लिए पैदा किये गये हैं या दुनियाँ में ऐशो इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए पैदा किए गए हैं नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने हमें दुनियाँ में अपनी इबादत और नेक आमाल करने के लिए पैदा फ़रमाया है और हमारी दुन्यावी ज़रूरतें और हमारा रिज़क अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के जिम्मे करम और उसके इख़्तियार में है वो जिसे जब चाहे जितना चाहे अता करता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फ़रमाता है—
और मैंने ज़िन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया। (सू० ज़ारियात—56)

सूरह: मुल्क में इरशादे बारी तआला है—
वो जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताकि तुम्हारी जाँच हो कि तुम में से किसके काम ज़्यादा अच्छे हैं। (सू०—मुल्क—2)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है ताकि जिन लोगों ने बुरे काम किये उन्हें उनके बुरे आमाल का बदला दें और नेक काम करने वालों को उनके नेक आमाल का निहायत अच्छा सिला दें। (सू०—नज़्म—31)

कुरान मजीद की इन आयात से ये बात वाज़ेह (साफ़) हो गई है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया और इसलिये कि दुनियाँ में इन्सानों के आमालों की जाँच हो जाये ताकि नेक आमाल करने वालों को उनके नेक आमाल का अच्छा सिला (यानी जन्नत) दूँ और बुरे काम करने वालों को उनके बुरे काम का बदला यानी दोज़ख़ दूँ लेकिन बाज़ लोग इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और इस हकीक़त से अंजान रहते हैं और आख़िरत में वो नुक़सान उठाने वाले और अज़ाबे इलाही के मुस्तहिक़ होंगे।

हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— बेशक दुनियाँ मीठी सर सब्ज़ है और अल्लाह तआला ने तुम्हें इसमें बाकी रखा ताकि वो देखे कि तुम कैसे अमल करते हो (मुस्नद अहमद—3/22)

पस हमें चाहिये कि हम अपने अहम मक़सद यानी दुनियाँ में आने को हमेशा ज़हन मे रखें और उस पर ग़ौरो फ़िक्र करें कि अल्लाह तआला ने हमे दुनियाँ मे क्यों भेजा और हम क्या कर रहे हैं हम दुनियाँ मे इम्तिहान और आजमाइश के लिये भेजे गये हैं और हम दुनियाँ की ज़िन्दगी को हकीकी ज़िन्दगी समझकर उसमें इतने मुब्तिला और मसरुफ़ हो गये हैं कि अपनी हमेशा कायम रहने वाली ज़िन्दगी यानी आख़िरत को भूल गये हैं और क़ब्र क़यामत और दोज़ख़ मे मिलने वाले अज़ाब से भी बेख़बर हो गये हैं हमारी पैदाइश का मक़सद आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये है और हम दुनियाँ की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने में लगे हुये हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ को तुम्हारे लिये पैदा किया गया है और तुम्हें आख़िरत के लिये पैदा किया गया है। (शुअबुल ईमान—7/360)

एक और मक़ाम पर आपका इरशादे गिरामी है—
हकीकी ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है (सही बुख़ारी—1/535)
आख़िरत बाकी रहने वाली है और दुनियाँ फ़ना हो जायेगी इसलिये

हमें चाहिए कि आखिरत को दुनियाँ पर तरजीह दें और अपनी जिन्दगी को अल्लाह तआला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म के मुताबिक गुज़ारें ताकि आखिरत में मिलने वाली अज़ीम नेअमत जन्नत को पा सकें और कब्र क़यामत और जहन्नुम में मिलने वाले तमाम अज़ाब से महफूज़ रहें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
(ऐ महबूब) तुम फ़रमादो हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का
(सू०—आले इमरान—32)

सूरह निसा में इरशादे बारी तआला है—
जिसने रसूल का हुक्म माना उसने अल्लाह तआला का हुक्म माना।
(सू०—निसा—80)

हमें हर हाल में अल्लाह तआला और उसके रसूल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करनी चाहिये क्योंकि यही सिराते मुस्तकीम है जो हमें जन्नत की तरफ़ ले जाता है ज़रा सोचें जब हमारी औलाद हमारा कहना नहीं मानती और नाफ़रमानी करती है तो हम उससे नाराज़ हो जाते हैं अगर हमारा नौकर हमारी बात न माने तो हम उस नौकर से नाराज़ हो जाते हैं और यहाँ तक कि उसे नौकरी से निकाल देते हैं। तो ज़रा सोचो अगर हम अपने रब की बात न मानें और नाफ़रमानी करें जो हमारा मालिक है। हमें पालने वाला हमें खिलाने वाला और दुनियाँ व आखिरत में बेशुमार नेअमतेँ अता करने वाला है तो क्या हमारा रब हमसे नाराज़ न होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने उनके लिये जहन्नुम की आग है जिसमे वो हमेशा हमेशा रहेंगे (सू०—जिन्न—23)

दुनियाँ और उसकी ज़ैबो जीनत इन्सान के लिये आजमाइश है और इन्सान का नफ़्स उसे दुनियाँ की मुहब्बत की तरफ़ खींचता है और दुनियाँ की मुहब्बत उसे रब तआला से दूर कर देती है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
और जो कुछ ज़मीन पर है हमने उसे ज़मीन की जीनत बनाया
ताकि हम लोगों की आजमाइश करें कि कौन अच्छा अमल करता
है और हम उसको जो ज़मीन पर है चटयल मैदान बनाने वाले हैं।
(सू०—कहफ़—७—८)

अल्लाह तबारक व तआला के हम पर बे शुमार एहसान हैं जिसमें
सबसे बड़ा एहसान ये कि अल्लाह तआला ने हमें रसूले अकरम
सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की उम्मत में पैदा फ़रमाया और हम
मुसलमान हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक अल्लाह तआला का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि
उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता
और उन्हें पाक करता और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता और वो
ज़रूर इससे पहले खुली गुमराही में थे। (सू०—आले इमरान—१६४)

अल्लाह तआला ने हमें अजीम नेअमत से नवाजा है कि हमें
मुसलमान बनाया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का उम्मती
बनाया जो तमाम जहानों के लिये सरापा रहमत हैं।

हदीस पाक में वारिद है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह
वसल्लम ने फ़रमाया—

मेरी हयात (ज़िन्दगी) और मेरी वफ़ात दोनों तुम्हारे लिये ख़ैर हैं
ज़िन्दगी इसलिये कि मैं तुम्हें सुन्नतें और शरई अहकाम देता हूँ और
(वफ़ात इसलिये) कि बाद वफ़ात तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किये
जायेंगे तो उनमें से अच्छे आमाल देखकर मैं अल्लाह तआला का
शुक्र अदा करूँगा और तुम्हारे बुरे आमाल देखकर मैं अल्लाह तआला
से तुम्हारी बख़्शिश माँगूँगा।

कुरान मजीद में हज़रत नूह अलैहस्सलाम का ज़िक्र इस तरह आया
हज़रत नूह ने अपनी कौम के खिलाफ़ बददुआ की कि ऐ मेरे सब
ज़मीन पर किसी काफ़िर के घर को बाकी न छोड़ना (सू०—नूह—२६)

और नूह अलैहस्सलाम की बददुआ बारगाहे खुदा वन्दी में कुबूल हुई और सब काफिरों को अजाबे इलाही ने घेर लिया और सब तबाह व बर्बाद हो गये कुछ भी वाकी न रहा लेकिन मेरे मुस्तफा की रहमत का क्या कहना कि आपके चेहरे मुबारक को खून आलूद किया गया आपके दाँत मुबारक शहीद किये गये और आपको कई तरह की ईजायें (तकलीफें) दी गई लेकिन आपने भलाई के कलमे के अलावा कुछ न कहा।

हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया या अल्लाह मेरी कौम को बख्श दे ये लोग मेरे मक़ाम को नहीं जानते (सही बुख़ारी—1/495)

कयामत के दिन कुफ़ार ख़सारे में होंगे और उन पर सख़्त अजाब होगा तब वो यूँ कहेंगे कुरान मजीद में इरशादे खुदा वन्दी है कुफ़ार (आख़िरत में मोमिनो पर अल्लाह तआला की रहमत का मंजर देखकर) बार—बार कहेंगे कि काश हम मुसलमान होते।
(सू0—हिज्र—2)

तो हमारा मुसलमान होना अल्लाह तआला की हम पर सबसे बड़ी रहमत है पस हमें चाहिये कि इस रहमत को बुरे आमाल करके जाया (बर्बाद) न करें बल्कि वो काम करें जो अल्लाह तआला व उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म के मुताबिक हों ताकि अल्लाह तआला के बन्दे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के उम्मीती होने का हक़ अदा हो और कामिल मोमिन होने के लिए ये शर्त है कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह तआला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके अहल व अयाल और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ। (सही मुसलिम—1/49)

हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जो शख्स मुझसे मुहब्बत करता हो वो मेरी सुन्नतों पर अमल करे
(वैहकी-7/78)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक अल्लाह तआला के यहाँ इस्लाम ही दीन है
(सू0—आले इमरान—19)

जो शख्स अल्लाह व रसूल की नाफरमानी करता है और दुनियाँ में आने का मकसद सिर्फ दुनियाँ और माल को हासिल करना समझता है और अल्लाह के ज़िक्र और अपनी आखिरत से गाफ़िल रहता है तो गोया वो खुद को हलाकत में डालता है और वो अपने आप का सबसे बड़ा दुश्मन है जो खुद पर जुल्म करता है और आखिरत में अज़ाबे इलाही का मुस्तहिक़ होता है और जो शख्स अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से मुहब्बत करता है और उनकी फ़रमाबरदारी और सुन्नतों पर अपनी तमाम उम्र गुज़ारता है तो अल्लाह तआला उस शख्स को वो इनामात व दरजात और मरतिब अता फ़रमायेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

ऐ महबूब तुम फ़रमादो अगर तुम अल्लाह तआला को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमाबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। (सू0—आले इमरान—31)

सूरह निसा में इरशादे बारी तआला है—

और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उन्हें उनका साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया यानी अम्बिया और सिद्दीक़ और शुहदा और नेक लोग ये क्या ही अच्छे साथी हैं
(सू0— निसा—69)

मज़कूरा बाला आयात में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी का जो इनाम ज़िक्र हुआ है अगर वो जिस बन्दे को अता हो जाये तो उसके मक़ाम और मर्तबे का क्या कहना यानी अल्लाह तआला फ़रमाबरदार बन्दों को दोस्त रखता है और उनके गुनाहों को बख़्श देता है।

और अल्लाह तआला जिसे अपना दोस्त रखता है वो ग़ज़बे इलाही से महफूज़ रहता है और उसके लिये रहमत ही रहमत है और अम्बियाएकिराम अलैहिमुस्सलाम व सिद्दीक व शुहदा और नेक लोगों का साथ बन्दे के लिए निजात है और इसके अलावा कसीर इनामात अल्लाह तआला उसे अता फ़रमायेगा और जो शख्स अल्लाह तआला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी करेगा और अपने नफ़्स का ताबैअ होकर बुराई का रास्ता इख़्तियार करेगा अल्लाह तआला उसे सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

जिस दिन उनके मुँह उलट पलट कर आग में तले जायेंगे तो वो कहेंगे कि काश हमने अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माना होता और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले तो उन्होंने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब उन्हें आग का दूना अज़ाब दे। (सू०—अहज़ाब—66—68)

सूरह कहफ़ में इरशादे बारी तआला है—

और (हर एक के सामने) आमाल नामा रख दिया जायेगा सो आप मुजरिमों को देखेंगे (वो) उन (गुनाहों और जुर्मों) से ख़ौफ़ ज़दा होंगे जो (उस आमाल नामे) में दर्ज होंगे और कहेंगे हाय हलाकत इस आमाल नामे को क्या हुआ इसने न कोई छोटी (बात) छोड़ी और न कोई बड़ी (बात) मगर उसने (हर बात को) शुमार कर लिया है और वो जो कुछ करते थे (अपने सामने) हाज़िर पायेंगे और आपका रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा (सू०—कहफ़—49)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ (रह०) फ़रमाते हैं कि जितने दिन तुम्हें दुनियाँ में रहना है उतनी तैयारी दुनियाँ की करो और जितने दिन तुम्हें आख़िरत में रहना है उतनी तैयारी आख़िरत की करो और इन्सान को चाहिये कि खुद के वुजूद पर गौर करे कि एक वक़्त ऐसा था कि दुनियाँ तो थी लेकिन उसका वुजूद न था और एक ऐसा वक़्त भी होगा कि दुनियाँ में उसका नामो निशान न होगा और वो कब्र के अंधेरो में गुम हो जायेगा और क़यामत के दिन उठाया जायेगा इन्सान दुनियाँ में आने से कब्ल वो अपनी माँ के बदन में मनी से वुजूद में आया और यही इन्सान की हकीकत का आइना है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

बेशक आदमी पर ऐसा वक्त गुज़रा कि कहीं उसका नामोनिशान न था बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी (वीर्य) से कि हम उसकी आजमाइश करें कि उसे सुनता देखता कर दिया।

(सू0—दहर—1—2)

सूरह कियामह में इरशादे बारी तआला है—

क्या वो एक बूँद पानी न था उस मनी का जो गिराई जाये फिर खून की फुटक हुआ पस उसने पैदा फरमाया फिर उसके आज्ञा (हाथ पैर वगैराह) दुरुस्त किये तो उससे दो जोड़े बनाये मर्द और औरत क्या जिसने ये कुछ किया क्या वो मुर्दे न जिला सकेगा।

(सू0—कियामह—37—40)

जब कोई शख्स मरता है तो उस मइयत से मुताअल्लिक तमाम कामों को हम शरीअत के अहकाम और सुन्नतों के मुताबिक करते हैं जैसे मइयत को लिटाना कि उसके चेहरे का रुख काबा की तरफ हो और उसके पैर इसके बरअक्स हों और मइयत का गुस्ल और उसका कफनाना और उसकी नमाज़ और दफ़ीना वगैराह तमाम कामों को हम शरीअत के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक अंजाम देते हैं और कोई छोटी सी भी सुन्नत को इस दरमियान तर्क नहीं करते तो क्या तमाम शरई हुक्म और सुन्नतें सिर्फ मुर्दों के लिए हैं क्या हम जिन्दों के लिए नहीं हैं अगर हम अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक गुज़ारें तो ये हमारे लिये कितना बेहतर हो और हम कब्र और कयामत के अज़ाब से महफूज़ हो जायें और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होने से बच जायें और हमारी आख़िरत की तमाम मन्ज़िलें आसानी और राहतों के साथ गुज़र जायें और हम जहन्नुम से बच जायें और जन्नत के मुस्तहिक बन जायें और इस तरह हम अल्लाह तआला के मुक़र्रब और महबूब बन्दे बन जायेंगे और कयामत के दिन अल्लाह तआला हमें अपने मख़सूस बन्दों के साथ उठायेगा और हमें जहन्नुम के दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ रखेगा।

इरशादे बारी तआला है—

जो हुक्म माने अल्लाह का और रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं। (सू0—नूर—52)

हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं और बन्दे का काम है कि अपने मौला के हुक्म की तामील करना और अल्लाह तआला हमारा खालिक व मालिक है पस जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे सब कुछ उसके इरिख्तियार में है हमें तो बस अपने सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी मक़सद को हमेशा और हर वक़्त अपने ज़हन में रखना चाहिये और उसी के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अंजाम देना चाहिये ताकि जिस मक़सद के लिये हम दुनियाँ में तख़लीक़ किये गये उस मक़सद की तकमील में हम कामयाब हों और दुनियाँ व आख़िरत में हम बेहतर अज़र व इनामात से सरफ़राज़ हों और ग़ज़बे इलाही से महफूज़ रहें।

इरशादे बारी तआला है—

क्या तुमने ये ख़्याल कर रखा कि हमने तुम्हें बे मक़सद पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटाये नहीं जाओगे। (सू०—मोमिनून—115)

—: पाँच बातें :-

- 1— लोग कहते हैं कि हम अल्लाह के बन्दे हैं लेकिन काम गुलामों की तरह नहीं बल्कि आज़ादों की तरह अपनी मर्ज़ी से करते हैं।
- 2— लोग कहते हैं कि अल्लाह हमें रिज़क देता है लेकिन अपना दिल दुनियाँ और मताये दुनियाँ को हासिल करने में लगा रहता है और हलाल हराम नहीं देखता।
- 3— लोग कहते हैं कि आख़िर हमें मरना है लेकिन काम ऐसे करते हैं कि जैसे कभी मरना ही न हो।
- 4— लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तआला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) से मुहब्बत करते हैं लेकिन बात अपने नफ़्स की मानते हैं।
- 5— लोग कहते हैं कि क़यामत कायम होगी लेकिन उसकी तैयारी नहीं करते।

—: आमाल और आजमाइश :—

गुज़िस्ता बाब मक़सद में कुरान व अहादीस की रोशनी में ये बात पूरी तरह से वाज़ेह हो चुकी है कि इन्सान को दुनियाँ में अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपनी इबादत और नेक अमल करने के लिए पैदा फ़रमाया और दुनियाँ को इन्सान के लिए और इन्सान को आख़िरत के लिए पैदा फ़रमाया तो सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिए कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत और नेक अमल करने के लिए दुनियाँ में भेजे गये हैं और हमें दुनियाँ के लिए नहीं बल्कि आख़िरत के लिए पैदा किया गया है इसके अलावा हमारा दुनियाँ में आने का और कोई दूसरा मक़सद नहीं है तो हमें चाहिये अपने मक़सद को जानते और मानते हुए और इसी मक़सद के मुताबिक़ दुनियाँ में अपने कामों को अंजाम दें।

दुनियाँ में हमें जो नेअमतेँ मयस्सर हुई हैं जैसे माल औलाद बीवी व मकानात व ताक़त व हुस्नों जमाल वगैराह व दीगर तमाम चीज़ें ये सब हमें ऐशो इशरत के लिये नहीं दी गई बल्कि इन तमाम चीज़ों से हमारे आमाल और हमारी आजमाइशें जुड़ी हुई हैं और इन चीज़ों के ज़रिये अल्लाह तआला हमें आजमाता है और देखता है कि कौन बन्दा कैसे अमल करता है।

जैसे किसी शख्स को अल्लाह तआला ने ख़ूबसूरत बीवी अता की तो उसे उस ख़ूबसूरत बीवी के ज़रिये अल्लाह तआला आजमाइश में डालता है और देखता है कि बन्दा अपनी बीवी की मुहब्बत में कैसे अमल करता है हमें याद रखता है या नहीं और मेरा ज़िक्र करता है या नहीं और मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और मुझसे सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता है या अपनी बीवी से करता है और बन्दा मेरा गुलाम रहता है या अपनी बीवी का और मेरे और मेरे महबूब के रास्ते पर चलता है या अपनी बीवी के बताये रास्ते पर चलता है और बन्दा मेरा हुक्म मानता है या अपनी बीवी का हुक्म मानता है तो इस तरह उसकी आजमाइश की जाती है और इसके ज़रिये उस बन्दे के आमाल देखे जाते हैं और उसे उसके आमाल के मुताबिक़ सवाब या अज़ाब दिया जायेगा।

और इसी तरह जब किसी शख्स को अल्लाह तआला

खूबसूरत बीवी नहीं देता तो उसे भी आजमाया जाता है और अल्लाह तआला देखता है क्या बन्दा मेरी अता पर राजी है या वो दूसरों की औरतों को देखकर गमगीन होता है और सोचता है कि मुझे फलों औरत जैसी खूबसूरत बीवी अता क्यों नहीं हुई और क्या उसे अपने दुनियाँ में आने का मकसद याद है या भूल गया कि मैंने उसे अपनी इबादत और नेक अमल के लिए दुनियाँ में भेजा न कि खूबसूरत बीवी के साथ ऐशो आराम के लिए भेजा।

अगर वो शर्क्स अपने दुनियाँ में आने का मकसद याद रखता है और कहता कि मुझे मेरे रब ने जो कुछ भी अता किया है मैं उस पर राजी हूँ और वो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता है और सब्र पर कायम रहता है और कहता कि मैं सिर्फ रब तआला की इबादत और नेक अमल के लिए पैदा किया गया हूँ और जिस काम के लिए मैं पैदा किया गया सिर्फ वही काम करूँगा जैसे रोज़ा, नमाज़, हज वगैराह और दीगर तमाम अच्छे काम करूँगा और बुराई और गुनाहों से दूर रहूँगा और रहा मामला मेरी बीवी का तो मैं उसके लिए पैदा नहीं किया गया जो मैं उसके बारे में सोचूँ और फ़िक्र करूँ और वो इस तरह नेक अमल करता है और अल्लाह व रसूल की इताअत करता है और वो अल्लाह तआला के इम्तिहान में पास हो जाता है और जन्नत का मुस्तहिक बन जाता है जहाँ उसे खूबसूरत हसीन बीवी के अलावा हुस्नो जमाल की पैकर बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें अता होंगी और बेशुमार नेअमतेँ उसे मिलेंगी।

इसी तरह माल का मामला है कि जब अल्लाह तआला किसी को माल देता है तो उसे माल के ज़रिये आजमाता है कि मेरे अता कर्दा माल को बन्दा किस तरह खर्च करता है कितना मेरी राह में खर्च करता है और कितना गुरबा मसाकीन और फुक़रा में खर्च करता है और उस माल पर मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और अपने माल की ज़कात निकालता या नहीं और इसी तरह ग़रीब को भी आजमाता है कि वो सब्र करता या नहीं और अपने इस हाल पर राजी है या नहीं और इन्सान का खुद का जिस्म भी आजमाइश है और अल्लाह तआला देखता है कि बन्दा अपने जिस्म को किस काम में लगाता है बुराई या गुनाह की तरफ़ या इबादत और नेक काम की तरफ़ लगाता है।

और इसी तरह औलाद भी आजमाइश है और अल्लाह तआला देखता है कि बन्दा औलाद की मुहब्बत में कितना मुब्तिला होता है और उस मुहब्बत के बाइस वो कैसे अमल करता है वो गुमराही के रास्ते पर चलता है या मेरे और मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के रास्ते पर चलता है और मेरा शुक्र गुज़ार बन्दा बनता है या औलाद की मुहब्बत में हमें भूल जाता है और मेरा जिक्र छोड़ देता है और औलाद की तालीम व तरबियत के लिये कैसे अमल करता है हलाल रोज़ी कमाता या हराम और अपने दिल में ख़ौफ़े खुदा रखता या मख़लूक का ख़ौफ़ रखता और औलाद की मुहब्बत उस पर ग़ालिब आती या फिर अल्लाह की मुहब्बत को तरजीह व अहमियत देता और कायनात की हर शैः पर अल्लाह की मुहब्बत को ग़ालिब रखता इसी तरह इन्सान की ज़िन्दगी से जुड़ी हर चीज़ आजमाइश है और दुनियाँ की तमाम चीज़ें कुछ वक़्त इस्तेमाल के लिये हैं हमेशगी के लिये नहीं हैं और अल्लाह तआला अपने बन्दों को आजमाइश में डालकर उसके आमालों की जाँच करता है कि बन्दा दुन्यावी अशया (चीज़ों) में मुब्तिला होकर कैसे अमल करता है इसलिये हमें चाहिये कि पूरी तरह से ज़हन में बिठालें कि दुनियाँ और जो कुछ उसमें मौजूद है वो सब हमारे लिये आजमाइश है और हमें अल्लाह तआला ने अपनी इबादत व नेक आमाल के लिये पैदा फ़रमाया और अगर दुनियाँ में हमें कोई नेअमत न मिले तो हमें चाहिये कि ग़मगीन न हों और न अफ़सोस करें बल्कि सब्र करें और अपने इम्तिहान को नेक आमाल के ज़रिये पास करें ताकि जन्नत में मिलने वाली अज़ीम दायमी नेअमतों के मुस्तहक़ बन जायें और जब हम किसी दूसरे के पास वो नेअमत देखें जो हमारे पास नहीं है तो हमें चाहिये कि हसद न करें बल्कि ये ख़याल करें कि हम इन नेअमतों के हासिल करने और उनके इस्तेमाल के लिये पैदा नहीं किये गये हैं बल्कि नेक अमल और इबादत के लिये पैदा किये गये हैं तो इस तरह हम सब्र और रब की रज़ा पर कायम रह सकते हैं और बुराई और गुनाह से बच सकते हैं और इस तरह हम किसी भी नेअमत के न मिलने पर रंजीदा व ग़मगीन न होंगे।

और कोई भी शख्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता और न सिराते मुस्तकीम पा सकता है जब तक कि वो दुनियाँ को इम्तिहान गाह न जानें और अपने दुनियाँ में आने के मक़सद के मुताबिक़ अमल न करे इसलिये हमें चाहिये कि दुनियाँ में हमें जो

कुछ अता हो उस पर राजी रहें और अल्लाह तआला का शुक्र बजा लायें और जो चीज़ हमें दुनियाँ में न मिले उस पर सब्र करें और हर हाल में सिर्फ और सिर्फ नेक अमल करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
बेशक तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब आजमाइश हैं।
(सू०—तगाबुन—15)

इरशादे बारी तआला है—
और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वो जन्नत वाले हैं और उन्हें वहाँ हमेशा रहना है। (सू०—बकराह—82)

अल्लाह रब्बुल इज्जत फरमाता है—
बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वही तमाम मखलूक में बेहतर हैं। (सू०—बइयना—7)

इरशादे खुदा वन्दी है—
तुम्हें जो कुछ भी (माल व मताअ) दिया गया है वो दुनियावी ज़िन्दगी का (चन्द दिनों का) फायदा है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वही बेहतर है और बाकी रहने वाला है (ये) उन लोगों के लिये है जो ईमान लाते और अपने रब पर भरोसा करते हैं और जो कबीरा (बड़े) गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं और वो जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ कायम रखते हैं और उनका काम आपसी मशवरे से होता है और हमारे दिये हुये (माल) से हमारी राह में खर्च करते हैं। (सू०—शूरा—36—38)

मुन्दरजा बाला आयात से वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआला के नज़दीक वही लोग बेहतर हैं जो नेक काम करते हैं और अल्लाह तआला ने उनके लिये जन्नत को आरास्ता किया है जिसमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे और उसमें वो कसीर नेअमतें और लज़्ज़तें पायेंगे जो न किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी और ये उनके नेक आमालों के बाइस उन्हें अता की जायेगी।

क़यामत के दिन आमालों की पुरसिश (पूछ) होगी

और जो लोग दुनियाँ में अच्छे आमाल करते हैं तो क़यामत के दिन हिसाब उन्हें ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और क़यामत की सख़्तियों और तकलीफ़ों से वो महफूज़ रहेंगे और जो लोग बुरे आमाल करते हैं तो वो उस दिन की सख़्तियों और तकलीफ़ों में मुब्तिला होंगे और अल्लाह तआला ने इन्सान की तखलीक जिस काम के लिये की है अगर बन्दा वो काम नहीं करेगा तो वो अल्लाह के गुज़ब का शिकार होगा और अल्लाह तआला हमारी शक्लों और मालों को नहीं देखता बल्कि वो तो सिर्फ़ हमारे आमालों को देखता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल और तुम्हारे माल को नहीं देखता बल्कि वो सिर्फ़ तुम्हारे आमाल को देखता है।
(सही मुस्लिम-2/317)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
इन्सान के तीन दोस्त हैं एक जो मौत तक साथ रहता है वो माल है दूसरा वो जो कब्र तक साथ रहता है वो उसके घर वाले हैं तीसरा वो जो मैदाने हश्न तक साथ रहता है वो उसका अमल है।
(मुस्नद अहमद-3/110)

हमारे दोस्त, रिश्तेदार, घर वाले, हमारे माँ बाप और हमारी औलाद और वो माल जो दुनियाँ में हमने कमाया वो आखिरत में हमारे साथी और मददगार न होंगे बल्कि हमारे साथी और मददगार सिर्फ़ हमारे आमाल होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फ़िरोगे और हर जान को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा (सू0-बकराह-281)

जो लोग अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते और बुरे काम करते हैं वो लोग अपने बुरे आमालों के बाइस सख़्त अज़ाब से घिरे होंगे और अल्लाह तआला से अर्ज़ करेंगे कि हमें वापस दुनियाँ में भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें लेकिन वापस लौटना मुमकिन न होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

जब मुजरिम अपने रब के पास अपने सरों को झुकाये हुये कहेंगे ऐ मेरे रब हमने देखा और सुना हमें वापस लोटा दे ताकि हम अच्छे काम करें। (सू०—सजदा—12)

और जो लोग दुनियाँ में मुसीबतो परेशानी से दो चार होने के बावजूद अल्लाह तआला की रज़ा के लिये नेक अमल करते हैं तो अल्लाह तआला उन लोगो से राजी होता है और उनकी दुआओं को कुबूल फ़रमाता है और उन्हें उनके नेक अमल का बेहतर सिला (बदला) अता फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

और अल्लाह तआला दुआ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाये और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़ल से और इनाम देता है और काफ़िरो के लिये सज़ा अज़ाब है। (सू०—शूरा—26)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये यकीनन हम उनके अज़र को ज़ाया नहीं करते जिनके काम अच्छे हों।

(सू०—कहफ़—30)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

दो किस्म के लोग हैं जो काबिले रश्क हैं एक वो जिनको अल्लाह तआला ने माल दिया और वो राहे खुदा में खर्च करते हैं दूसरे वो जिनको अल्लाह तआला ने इल्म दिया और वो उस पर अमल करते हैं। (मुस्नद अहमद—1/385)

पस हमें चाहिये कि नेक आमाल को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनालें और अल्लाह व रसूल के अहकामात और सुन्नतों पर कसरत से अमल करें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो और हमें अल्लाह व रसूल की कुर्बत हासिल हो।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जिसने मेरी सुन्नतों से मुहब्बत की उसने मुझ से मुहब्बत की और वो जन्नत में मेरे साथ होगा। (तिर्मिज़ी—4/309)

हर इन्सान को चाहिए कि तन्हाई में बैठकर गौरो फ़िक्र करे कि वो जिस घर में रहता है उसी घर से उसकी मइयत भी निकलेगी और जिस आँगन में वो चलता फिरता है उसी आँगन में उसका आख़िरी गुस्ल होगा और वो जिस बिस्तर पर लेटता है वो बिस्तर एक दिन उसे छोड़ देगा और वो खाक पर लेटेगा और वो लोग जिनसे वो बेहद मुहब्बत करता है और जिनके लिये वो माल जमा करता है वो तमाम लोग उसके लिये बेगाने हो जायेंगे और वो जिस घर से मुहब्बत करता है उसी घर से एक दिन निकाला जायेगा और जिस मिट्टी को वो अपने तन और कपड़ों से जुदा रखता है और उससे नफ़रत करता है उसी मिट्टी के वो सुपुर्द किया जायेगा और कब्र की तन्हाई में उसका साथी व दोस्त और मददगार सिर्फ़ उसके आमाल होंगे इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से नेक अमल करें।

बाज़ लोग कहते हैं कि अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों की दुआयें कुबूल नहीं करता और उन्हें परेशानियों में मुब्तिला रखता है तो इसमें हिक्मते इलाही है कि अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों की हर दुआ इसलिये कुबूल नहीं करता कि कहीं उस पर उसकी तमन्नाओं और ख्वाहिशों का ग़लबा न हो जाये जो उसकी हलाकत का सबब बने और उसकी परेशानियाँ उसकी आजमाइश है जिस तरह सोना तपने के बाद ख़रा और कुन्दन बनकर निकलता है इसी तरह अल्लाह तआला अपने बन्दों को परेशानियों में मुब्तिला रखकर आजमाता है कि बन्दा अपने ईमान पर कितना मज़बूत और मेरी रज़ा पर कितना राज़ी है।

इन्सान के ईमान और नेकियों में जिस क़दर इज़ाफ़ा होता है उसी क़दर उस पर मुसीबतों परेशानियों का नुज़ूल होता है और उसकी मज़ीद आजमाइश होती है और जब वो सब्र और ज़ब्त से काम लेता है और अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहता है तो अल्लाह तआला उसे तमाम परेशानियों से निजात अता फ़रमाता है और उसके दरजात को बुलन्द करता है और वो राहतों और मशरतों से बहरावर हो जाता है और फिर वो कुर्बे इलाही की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाता है और ये उसके हक़ में बेहतर साबित होता है और अल्लाह तआला अपने मुक़र्रब बन्दों को दुनियाँ व आख़िरत में किसी तरह का अज़ाब नहीं देता।

—: दुनियाँ की मजम्मत :—

कुरान मजीद व अहादीस मुबारका में दुनियाँ की बहुत ज़्यादा मजम्मत आयी है और हकीकत में दुनियाँ मजम्मत (बुराई) के लायक ही है क्योंकि दुनियाँ की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है और इसकी ख्वाहिश परेशानियों की बुनियाद है जो बन्दों को अल्लाह तआला के रास्ते से हटाकर गुनाहों की तरफ़ माइल करती है और दुनियाँ (यानी ज़मीन और जो कुछ उसमें मौजूद है) इन्सान को अपनी तरफ़ इस क़दर खींचती है कि इन्सान इस दुनियाँ को ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करने की फ़िक्र में दिन रात लगा रहता है और मशक्कत व परेशानियों को उठाते हुये दुनियाँ को हासिल करता है और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत में इन्सान इतना मुब्तिला हो जाता है कि वो अच्छा बुरा और हलाल व हराम में इम्तियाज़ नहीं रखता बल्कि वो हर सूरत इस दुनियाँ को हासिल करना चाहता है और वो इस तरह अल्लाह तआला का रास्ता छोड़कर शैतान के रास्ते पर चल पड़ता है हालाँकि इन्सान बखूबी जानता है कि जिस दुनियाँ से वो मुहब्बत करता है उस दुनियाँ को छोड़कर एक दिन उसे जाना होगा दुनियाँ से उसका वुजूद ख़त्म हो जायेगा और वो खाक के सुपुर्द हो जायेगा और क़यामत तक उसी खाक में रहेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

ऐ महबूब तुम फ़रमादो कि दुनियाँ का बरतना थोड़ा है और डर वालों (यानी परहेज़गारों) के लिये आख़िरत अच्छी है और तुम पर तागे बराबर भी जुल्म न होगा (सू०—निसा—77)

इरशादे बारी तआला है—

दुनियाँ की ज़िन्दगी थोड़ी मुद्दत का नफ़ा है और दरअसल (हकीकत में) आख़िरत ही हमेशा ठहरने की जगह है।
(सू०—मोमिन—39)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

दुनियाँ की मुहब्बत तमाम गुनाहों की असल है।

(शुअबुल ईमान—7 / 338)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
दुनियाँ की ज़िन्दगी मुसाफिर की तरह गुज़ारो और खुद को कब्र
वालों में शुमार करो। (मिशकात—450)

जिस तरह कोई खूबसूरत औरत जो अपने हुस्नो जमाल के बाइस
लोगों को अपनी तरफ़ माइल करती है लेकिन जब उसकी हकीकत
का पता चलता है कि उस औरत में बहुत सी बुराइयाँ हैं और ऐसी
बीमारियाँ हैं जो उसकी सुहवत से दूसरों में पहुँच सकती हैं तो ऐसी
औरतों से लोग नफरत करते हैं और दूर भागते हैं इसी तरह दुनियाँ
की हकीकत है कि उसकी ज़ैबो जीनत देखकर हम उसकी तरफ़
फिर जाते हैं लेकिन असल में वो गुनाहों का रास्ता है जो हमें
गुनाहों की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह तआला की याद से
गाफिल कर देता है हत्ता कि इन्सान अपनी मौत व कब्र व कयामत
व अज़ाबे इलाही से वे फ़िक्र हो जाता है दुनियाँ की तलब में इन्सान
गुनाह पर गुनाह किये जाता है और बिल आखिर वो कब्र के अंधेरों
में गुम हो जाता है दुनियाँ पाने की तलब में इन्सान जितनी मेहनत
व मशक्कत उठाता है अगर उसका आधा हिस्सा भी अल्लाह तआला
की इबादत और उसके ज़िक्र और नेक अमल के लिये सर्फ़ करे तो
जन्नत और उसकी नेअमतों का मुस्तहिक बन जायेगा जो उसके
पास हमेशा रहेगी और कभी वापस नहीं ली जायेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है—
जो कुछ तुम्हारे पास है वो ख़त्म हो जायेगा और जो अल्लाह
तआला के पास है वो बाकी रहेगा। (सू0—नहल—96)

इरशादे खुदा वन्दी है—
बेशक जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुनियाँ की
ज़िन्दगी पर राज़ी व खुश हैं और उस पर मुतमईन हो गये हैं और
जो हमारी आयात से गाफिल हैं उनका ठिकाना जहन्नुम है उन
आमालों के बदले में जो वो कमाते रहे। (सू0—यूनुस—7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ मलऊन है और जो कुछ उसमें है वो भी लानत के काबिल
है सिवाये उसके जो अल्लाह तआला के लिये है।
(सुनन इब्ने माजा—312)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शरख्स दुनियाँ से मुहब्बत करता है वो अपनी आखिरत को
नुकसान पहुँचाता है और जो आखिरत से मुहब्बत करता है वो
अपनी दुनियाँ को नुकसान पहुँचाता है तो फना होने वाली पर
बाकी रहने वाली को तरजीह दो (मुस्नद अहमद-7/165)

वो शरख्स बहुत बड़ा अहमक और कम अक्ल है जो दुनियाँ की
कसरत (यानी ज़्यादा मिलने) पर खुश होता है और अपनी उम्र के
कम होने पर गमगीन नहीं होता हालाँकि उसके पास जो कुछ है
वो उससे चला जायेगा और कोई भी दुन्यावी नेअमत उसके पास
बाकी नहीं रहेगी सिवाय नेक आमाल के जो क़यामत तक उसके
साथ रहेंगे।

हज़रत आदम अलैहस्सलाम ने जन्नत में जब उस दरख्त
के फल खाये जिसके लिये आपको मना किया गया था तो उस
फल के खाने के बाद आपके पेट में हरकत हुई और आप अपनी
हाजत को पूरा करने के लिए जन्नत में इधर उधर घूमने लगे
लेकिन कहीं पर ऐसी जगह दिखाई नहीं दी जहाँ पर आप अपनी
हाजत को पूरा करते फिर अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ आदम
तुम दुनियाँ में चले जाओ और आदम अलैहस्सलाम दुनियाँ में भेज
दिये गये क्योंकि जन्नत में ग़लाज़त व नजासत के लिए अल्लाह
तआला ने कोई जगह नहीं बनाई इसके लिए तो दुनियाँ है जो
अल्लाह तआला के नज़दीक तमाम मख़लूक में सबसे ज़्यादा ना
पसंदीदा है दुनियाँ की मिसाल ऐसी है जैसे कोई खाने की चीज़
या कोई मीठा फल वगैराह जो खाने में लज़ीज़ और देखने में
अच्छा होता है लेकिन जब वो सुबह को ग़लाज़त बन कर निकलता
है तो हम उससे नफ़रत व घिन करते हैं इसी तरह दुनियाँ की
हकीकत है जो देखने में बहुत अच्छी मालूम होती है लेकिन असल
में वो बहुत बुरी और क़ाबिले नफ़रत है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

और काफ़िर दुनियाँ की ज़िन्दगी पर इतरा गये और दुनियाँ की
ज़िन्दगी आखिरत के मुक़ाबले कुछ भी नहीं मगर कुछ दिन का
बरत लेना (सू0-रअद-26)

इरशादे बारी तआला है—

जान लो कि दुनियाँ की ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा है और जाहिरी आराइश है और आपस में फरख और बढ़ाई मारना है और एक दूसरे पर माल व औलाद में ज़्यादती की तलब है इसकी मिसाल बारिश जैसी है कि जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है फिर वो खुश्क हो जाती है फिर तुम उसे पक कर ज़र्द होता देखते हो फिर वो रेज़ा रेज़ा हो जाती है। (सू०—हदीद—20)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अल्लाह तआला ने दुनियाँ की मिसाल उस चीज़ के साथ दी है।
जिससे इन्सान का खाना बदल जाता है (यानी पाखाना)
(मुस्नद अहमद—3 / 452)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
दुनियाँ की मिसाल इन्सान से बयान की गई है पस देखो कि
आदमी से क्या निकलता है अगरचा वो उसमें नमक और मसाला
डाले लेकिन वो कहाँ जाता है (मुस्नद अहमद—5 / 136)

इरशादे बारी तआला है—

पस इन्सान को चाहिए अपने खाने की तरफ़ देखे (और गौर करे)
(सू०—अबस—24)

एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम एक कूड़े
के ढेर के पास खड़े हुये और उस ढेर से एक सड़ा गला कपड़ा
और एक हड्डी उठाई और फरमाया आओ देखो ये दुनियाँ है।
(शुअबुल ईमान—7 / 327)

हदीस पाक में है सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने
फरमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोग ऐसे आर्येंगें जिनके आमाल
पहाड़ों जैसे होंगे (यानी बहुत ज़्यादा होंगे) और वो नमाज़ी रोज़दार
और रात को शबे बेदारी करने वाले होंगे लेकिन हुक्मे इलाही होगा
कि इन्हें जहन्नुम की तरफ़ ले जाओ क्योंकि वो दुनियाँ और उसकी
आराइश से मुहब्बत रखने वाले होंगे।

इन्सान जिस दुनियाँ पर भरोसा करता है वही दुनियाँ उसे धोका देती है और जो कुछ उसके पास मौजूद होता है वो सब उससे छीन लेती है और इन्सान खाली हाथ सब कुछ छोड़कर चला जाता है और जो लोग दुनियाँ को अपनी ज़िन्दगी का अहम मकसद बनाते और गुनाहों को अपना अमल बनाते हैं वो आखिरत में ज़लील व रुसवा होंगे और दोज़ख की आग उनका ठिकाना होगी।

दुनियाँ में अगर हमारा कोई माली नुकसान हो जाये तो हम परेशान हो जाते हैं लेकिन दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत के सबब हम जन्नत से दूर और जहन्नुम के करीब जा रहे हैं इस बात पर हम ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और न हम परेशान होते हैं क्या ये हमारी कम अक्ली और हिमाक़्त की दलील नहीं।

हमें उस दोज़ख की आग से हर वक़्त डरना चाहिये जो हजारों साल से दहक रही है जब हम दुनियाँ की आग को एक लम्हें के लिये बर्दास्त नहीं कर सकते तो उस आग को कैसे बर्दास्त करेंगे हालाँकि हमें मालूम है कि अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ फ़ना हो जायेगी तो फिर दुनियाँ की हैसियत क्या है इसलिये हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ वही काम करें जिससे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हमें खुशनुदी हासिल हो और वो हमसे राज़ी हो जाये और कोई ऐसा काम न करें जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब बनें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

और जो दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आखिरत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा और उनके लिये आग है और उनके आमाल जो वहाँ करते थे सब अकारत गये।

(सू०—हूद—15—16)

इरशादे खुदा वन्दी है—

और काफ़िरों के लिये ख़राबी है एक सख़्त अज़ाब से ज़िन्हें आखिरत से दुनियाँ की ज़िन्दगी प्यारी है (सू०—इब्राहीम—2,—3)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

दुनियाँ उसका घर है जिसका (आखिरत में) घर नहीं और (दुनियाँ)

उसका माल है जिसका कोई दूसरा माल नहीं और दुनियाँ के लिये वो आदमी जमा करता है जिसके पास अक्ल नहीं और इस पर वो दुश्मनी करता है जो जाहिल है और इस पर वो हसद करता है जिसके पास समझ नहीं और इस दुनियाँ के लिये वही कोशिश करता है जिसके पास यकीन नहीं। (शुअबुल ईमान-7/375)

एक रिवायत में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम एक मुर्दार बकरी के पास से गुज़रे और फ़रमाया—क्या तुम जानते हो कि ये मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक कितनी हकीर है सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया इस बकरी को हकारत की वजह से ही इसके मालिक ने इसे यहाँ फेंका है आपने इरशाद फ़रमाया—उस ज़ात की कसम जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है जिस क़दर ये मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक हकीर (बुरी) है इसी क़दर अल्लाह तआला के नज़दीक दुनियाँ इससे भी ज़्यादा हकीर है और अगर अल्लाह तआला के नज़दीक दुनियाँ मच्छर के पर के बराबर भी होती तो इस दुनियाँ से काफ़िर को एक घूँट पानी भी न मिलता। (मुस्तदरक हाकिम-4/306)

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बाद ज़रूर दुनियाँ तुम्हारे पास आयेगी जो तुम्हारे ईमान को इस तरह ख़ायेगी जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है हज़रत मूसा अलैहस्सलाम एक शरख़ के पास से गुज़रे तो वो रो रहा था और जब वो वापस आये तब भी वो शरख़ रो रहा था हज़रत मूसा अलैहस्सलाम ने अर्ज किया ऐ मेरे रब तेरा बन्दा तेरे ख़ौफ़ की वजह से रो रहा है ऐ मेरे रब इसे बरख़्शा दे अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मूसा अगर इस शरख़ के आँसुओं के साथ इसका दिमाग़ भी बहना शुरु हो जाये और वो हाथों को दुआ के लिये उठाये हत्ता कि वो गिर जायें तब भी मैं इसे नहीं बरख़्शूंगा क्योंकि वो दुनियाँ से मुहब्बत करता है इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला दुनियाँ से मुहब्बत और रग़बत रखने वाले शरख़ से सख़्त नाराज़ रहता है।

हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम फ़रमाते हैं कि आदमी को चाहिये कि अल्लाह तआला को पहचाने और उसकी

इबादत करे और शैतान को पहचाने और उससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करे और शैतान की बात न माने और हक को पहचाने और उसके पीछे चले और बातिल को पहचाने और उससे बचे और दुनियाँ को पहचाने और उसे छोड़ दे और आखिरत को पहचाने और उसकी तलब में नेक अमल करे और अपने रब का जिक्र बुलन्द करे एक बार कलमये तौहीद का पढ़ना दुनियाँ और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर है तो ज़रा सोचो जब एक बार कलमये तौहीद का पढ़ना तमाम दुनियाँ से बेहतर है तो जब हम कसरत से अल्लाह तआला का जिक्र करेंगे तो कितना ज़्यादा सबाब पायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है—
हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है और तुम्हारे अज़र पूरे के पूरे तो क़यामत के दिन ही दिये जायेंगे पस जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वो वाकई कामयाब हुआ और दुनियाँ की ज़िन्दगी तो धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं है। (सू०—आले इमरान—185)

इरशादे बारी तआला है—

ये वो लोग हैं जिन्होंने आखिरत के बदले दुनियाँ की ज़िन्दगी ख़रीदी तो उन पर से न अज़ाब हल्का होगा और न उनकी मदद की जायेगी (सू०—बकराह—86)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक तमाम मख़लूक में दुनियाँ सबसे बुरी और काबिले नफ़रत है और अल्लाह तआला ने जब से इसको पैदा फरमाया कभी इस पर नज़रे रहमत नहीं की।

(शुअबुल ईमान—7 / 338)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से एक शख्स ने अर्ज़ किया कि मुझे काई ऐसा अमल बताइये कि अल्लाह तआला मुझसे मुहब्बत करे आपने इरशाद फरमाया दुनियाँ से बे रग़बत हो जा और इस अदना माल को लोगों की तरफ़ फेंक दे अल्लाह तआला तुझ से मुहब्बत करेगा (सुनन इब्ने माजा—311)

जिस माल या जिस चीज़ के हम आज मालिक हैं फिर एक दिन

कोई दूसरा उसका मालिक होगा फिर दूसरे के बाद कोई तीसरा उसका मालिक होगा यानी हर चीज़ के मालिक बदलते रहते हैं और हकीकतन हम किसी चीज़ के मालिक नहीं हैं बल्कि हम सिर्फ़ इस्तेमाल करते और छोड़ते हैं असल में हर चीज़ का हकीकी मालिक तो रब्बुल आलमीन है जिसने तमाम मख़लूक को पैदा किया तो जब हम किसी चीज़ के मालिक ही नहीं तो हमारा अपना क्या है जो हम उससे मुहब्बत करें और उससे रग़बत रखें अगर हमारा अपना ज़ाती मिलिक्यत में अगर कुछ है तो वो सिर्फ़ हमारे नेक आमाल हैं जो हमने अपने रब की रज़ा के लिये इख़लास के साथ किये हैं और यही हमारे दोस्त और साथी हैं जो क़यामत तक हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे और हमें अज़ाब से बचाने में हमारे मददगार साबित होंगे।

दुनियाँ उस वक़्त भी थी जब दुनियाँ में हमारा वुजूद नहीं था और उस वक़्त भी होगी जब हमारा वुजूद न होगा तो हम इस दुनियाँ से मुहब्बत और रग़बत क्यों रखें जो असल में हमारी है ही नहीं और जो हमारा साथ नहीं दे सकती और एक दिन वो हमें धोका देगी और हमारा साथ छोड़ देगी।

दुनियाँ की असल तस्वीर वाज़ेह होने के बावजूद भी हम दुनियाँ को हासिल करने में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर देते हैं और बहुत बड़े ख़सारे में चले जाते हैं और नतीजा ये होता है कि दुनियाँ की तलब में न तो नेक आमाल हमारे पास होते हैं और न दुनियाँ का साथ होता है और दोनो चीज़ों के वग़ैर खाली हाथ हम दुनियाँ से कूच कर जाते हैं और अज़ाबे क़ब्र व अज़ाबे क़यामत और अज़ाबे जहन्नुम के मुस्तहिक़ बन जाते हैं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि दुनियाँ को तीन हिस्सों में तक्सीम किया गया है मोमिन अपने हिस्से से अपनी आख़िरत बनाता है और मुनाफ़िक़ अपने हिस्से से ज़ाहिरी जीनत इख़्तियार करता है और काफ़िर दुनियाँ से नफ़ा उठाता है और इन्सान को ये भी पता नहीं होता कि वो कहाँ फ़ौत होगा और कहाँ दफ़न होगा और कफ़न नसीब होगा या नहीं होगा हत्ता कि इन्सान शाम को खाता है और सुबह को क़ब्र में होता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
जो आखिरत की खेती चाहे हम उसके लिये उसकी खेती में बढ़ायेंगे
और जो दुनियाँ की खेती चाहे हम उसे दुनियाँ की खेती में बढ़ायेंगे
लेकिन आखिरत में उनका (यानी दुनियाँ की खेती चाहने वालों का)
कोई हिस्सा न होगा (सू०—शूरा—20)

इरशादे बारी तआला है—
और (ऐ लोगो) ये दुनियाँ की जिन्दगी खेल और तमाशे के सिवा
कुछ नहीं है और हकीकत में आखिरत का घर ही सच्ची जिन्दगी है
काश वो लोग (ये राज़) जानते होते। (सू०—अनकबूत—64)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अपने दिलों को दुनियाँ के ज़िक्र में मशगूल न रखो।
(शुअबुल ईमान—7 / 361)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
उस शख्स पर बहुत तआज्जुब है जो आखिरत के घर की तसदीक
करता है लेकिन धोके वाले घर दुनियाँ की कोशिश करता है।
(दुर्रे मन्सूर—5 / 149)

दुनियाँ दोस्त के लिबास में दुश्मन है अक्सर लोग माल की वजह
से फित्नों में मुब्तिला हो जाते हैं हज़रत मालिक बिन दीनार (रह०)
फरमाते हैं कि इन्सान जिस कदर दुनियाँ से मुहब्बत करता है या
दुनियाँ के लिये जितना ग़मगीन होता है उसी मिक़दार में उसके
दिल से आखिरत की फ़िक्र निकल जाती है क्योंकि मोमिन के दिल
में दुनियाँ और आखिरत दोनो जमा नहीं होतीं हज़रत सईद बिन
मसऊद (रज़ि०) फरमाते हैं कि जब तुम किसी बन्दे को देखो कि
उसकी दुनियाँ में इज़ाफ़ा हो रहा है और आखिरत में कमी हो रही
है और वो इस हालत पर राज़ी है तो वो शख्स बहुत बड़े नुकसान
में है।

हर मुसलमान जानता है कि मौत हक़ है योमे हिसाब हक़ है कब्र व
दोज़ख़ व जन्नत सब हक़ हैं फिर भी दुनियाँ की लज्ज़तों से अपना
दिल लगाता है और दुनियाँ के हासिल होने पर बहुत खुश होता है

और दुनियाँ हासिल करने की तलब में किसी चीज़ की परवाह नहीं करता और कसीर माल पर भी क़नाअत नहीं करता और उसकी उम्मीदें कभी पूरी नहीं होतीं और अपनी आख़िरत के लिये जमा नहीं करता बल्कि चन्द दिनों की ज़िन्दगी के लिये जमा करता है और उसका एक ही मक़सद होता है कि दुनियाँ को ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करे हालाँकि दुनियाँ चन्द दिनों तक ही इन्सान का साथ देती है।

हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं दुनियाँ को ज़लील जानो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़सम इससे ज़्यादा ज़िल्लत के काबिल कोई चीज़ नहीं। अल्लाह तआला जब किसी शख्स के लिये भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे अतिया देने के बाद रोक लेता है और जब वो ख़त्म हो जाता है तो दोबारा देता है और जो शख्स अल्लाह तआला के नज़दीक ज़लील होता है तो अल्लाह तआला उसके लिये दुनियाँ को कुशादा कर देता है यानी उसे दुनियाँ में बहुत ज़्यादा माल और नेअमतेँ देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
दुनियाँ की ज़िन्दगी उसके मिस्ल है जैसे हमने आसमान से पानी उतारा तो उसके सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें सब घनी होकर निकली जिनको आदमी और चौपाये खाते हैं यहाँ तक कि ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया और ख़ूब आरास्ता हो गई फिर उसके मालिक ने रात और दिन में उसको काट दिया कि जैसे कल थी ही नहीं यूँ ही हम मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं ग़ौर करने वालों के लिये। (सू०—यूनुस—24)

इरशादे बारी तआला है—
ये इसलिये कि उन्होंने दुनियाँ की ज़िन्दगी को आख़िरत से प्यारी जानी और इसलिये अल्लाह तआला ऐसे काफ़िरों को राह नहीं देता। (सू०—नहल—107)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आख़िरत के मुक़ाबले दुनियाँ इस तरह है कि तुम में से कोई समुन्दर

में उँगली डाले फिर देखे कि उँगली कितना पानी लेकर आयी है (सही मुस्लिम-2/384)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जो शख्स चाहता है कि अल्लाह तआला उसे वगैर सीखे इल्म दे और हिदायत हासिल किये वगैर हिदायत दे तो उसे चाहिये कि दुनियाँ से बे रग़बती इख्तियार करे। (अल इसराउल मरफूआ-216)

हजरत अली करमल्लाहु वजहुल करीम फरमाते हैं कि दुनियाँ की मिसाल एक साँप की तरह है जिसका जिस्म मुलायम होता है जो आसानी से छुआ जा सकता है लेकिन उसका ज़हर इन्सान को हलाक कर देता है और जो शख्स दुनियाँ की मुहब्बत और उसकी ख्वाहिश में दुनियाँ के पीछे चलता है उस शख्स के लिये दुनियाँ से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि दुनियावी नेअमतें आने के बाद जब वो जाती है तो वो परेशान हो जाता है और दोबारा हासिल करने की फ़िक्र में लगा रहता है।

दुनियाँ एक ख़्वाब की तरह है कि इन्सान जब ख़्वाब देखता है तो उसको हकीकत जानता है लेकिन जब वो नींद से बेदार होता है तो उस ख़्वाब से उसका तआल्लुक़ मुनक़ताअ हो जाता है और दुनियाँ की हकीकत भी ख़्वाब की तरह है कि जब वो कब्र में होगा तो उसके लिये दुनियाँ की ज़िन्दगी ख़्वाब के मिरल होगी।

दुनियाँ सफ़र की जगह है ठहरने की जगह नहीं है ठहरने की जगह तो आख़िरत है और अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनियाँ में इबादत और नेक अमल के लिये पैदा फरमाया है और फिर उसे इम्तिहान व आजमाइश में डाला ताकि वो देखे कि कौन कैसे अमल करता है और उसी के मुताबिक़ उसके लिये जन्नत और दोज़ख़ का फैसला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
क्या तुम आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियाँ की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये पस दुनियाँ की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में थोड़ा है। (सू0-तौबा-38)

इरशादे बारी तआला है—

तो वो जिसने सरकशी की और दुनियाँ की ज़िन्दगी को तरजीह दी तो बेशक उसका ठिकाना जहन्नुम है। (सू०—नाज़ियात—37,—38)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करो अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा। (सुनन इब्ने माजा—311)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिस आदमी ने यूँ सुबह की कि उसका सबसे बड़ा मक़सद दुनियाँ को हासिल करना है तो ऐसे शख्स का अल्लाह तआला के साथ कोई तआल्लुक नहीं। (मुस्तदरक हाकिम—4/317)

इन्सान अपनी मौत से गाफ़िल हो जाता है लेकिन मौत उससे कभी गाफ़िल नहीं होती और वो अपने वक़्त मुक़र्ररा पर ज़रूर आती है और इन्सान की तमाम उम्मीदें धरी की धरी रह जाती हैं और अगर दुनियाँ में नेक अमल न किये तो सिवाये पछतावे के उसके हाथ कुछ भी नहीं आता।

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी ज़रूरतों के मुताबिक़ दुनियाँ को हासिल करें और उसका इस्तेमाल करें लेकिन ये ख़याल हमेशा ज़हन में रखें कि इसे छोड़कर हमें जाना है और दुन्यावी नुकसानात और तकलीफ़ो पर ग़म न करें बल्कि सब्र व तहम्मुल और शुक्र पर हमेशा कायम रहें और दुनियाँ के मिलने पर ज़्यादा खुश न हों क्योंकि ज़्यादा खुशी का इज़हार दुनियाँ की मुहब्बत की दलील है।

तमाम अम्बियाएकिराम व औलियाएइज़ाम और बुजुर्ग़ाने दीन हमेशा दुनियाँ से बे रग़बत रहे हज़रत सुलैमान अलैहस्सलाम अपनी सल्तनत में लोगो को लज़ीज़ खाना खिलाते थे लेकिन खुद जौ की रोटी खाते थे लज़ीज़ खानों पर कुदरत होने के बावजूद सब्रो ज़ब्त करना बहुत मुश्किल है हमारे आका सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का कई कई दिनों का फ़ाका होता था और आप अपने बतने (पेट) मुबारक पर पत्थर बाँधते थे, पैबन्द लगे हुए कपड़े पहनते थे और एक गद्दा था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी।

और आप उस पर आराम फ़रमाते थे हालाँकि अगर आप चाहते तो तमाम दुनियाँ में कौन सी ऐसी नेअमत थी जो आप के क़दमों तले न होती लेकिन आप ने हमेशा दुनियाँ को ना पसन्द फ़रमाया और इससे बे रग़बत रहे इसलिये हमें चाहिये कि अपने हर मामलात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करें और उनके तमाम फ़ैअल और सुन्नतों को अमल में लायें और दुनियाँ की मुहब्बत के बजाय अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से बेहद मुहब्बत करें जैसा कि हम पर हक़ है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

ऐ महबूब तुम फ़रमादो अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुकसान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द के मकान ये चीज़ें अल्लाह तआला और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना हुक्म (यानी अज़ाब) लाये और अल्लाह तआला फ़ासिकों को राह नहीं देता (सू०—तौबा—24)

इरशादे बारी तआला है—

और अल्लाह तआला जिसको हिदायत देने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसको गुमराही पर रखने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना घुटन के साथ तंग कर देता है। (सू०—अनआम—125)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

धोके वाले घर (यानी दुनियाँ) से दूर रहो और हमेशा रहने वाले घर (यानी जन्नत) की तरफ़ रुजूअ़ करो और मौत आने से पहले उसकी तैयारी करो। (मुस्तदरक हाकिम—4/311)

बाज़ लोगों का मक़सद ये होता है कि ज़्यादा से ज़्यादा माल कमायें और लज़ीज़ खाने खायें और बेश कीमती उम्दाह लिवास पहनें और ऐशो आराम के सभी सामान मौजूद हों ताकि लोगों में हम मुअज़्ज़ज़ हो जायें और लोग हमारी तारीफ़ व ताज़ीम करें और वो अपने मकानात को बहुत खूबसूरत बनाते और फिर कई तरह की चीज़ों से

उसे सजाते हैं ताकि लोग उन्हें मालदार और इज्जदार गुमान करें और मेरे मकानात को देखें और उसकी ज़ैबो ज़ीनत की तारीफ़ करें और वो इस बात पर बहुत फख़ और खुशी महसूस करते हैं और इसके सबब वो रात दिन माल कमाने के लिये मेहनत व मशक्कत उठाते हैं और दुनियाँ हासिल करने की मसरुफ़ियत के बाइस वो रब तआला की याद से गाफ़िल हो जाते हैं और वो दुनियाँ में आने का मकसद सिर्फ़ दुनियाँ को हासिल करना समझते हैं और वो शैतान के जाल में फंसकर खुद को जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं।

इस फ़ानी दुनियाँ से इन्सान के लिये दो रास्ते निकलते हैं एक दोज़ख़ की तरफ़ जाता है और एक जन्नत की तरफ़ जाता है अब इन्सान की मर्ज़ी कि वो जिस रास्ते को चाहे उसे मुन्तख़ब करे और दुनियाँ की मुहब्बत दोज़ख़ का रास्ता है और दुनियाँ से बे रग़बती और आख़िरत से मुहब्बत जन्नत का रास्ता है और दुनियाँ आजमाइश और मुसीबतों का घर है और आख़िरत सआदत व राहतों और मशरर्तों का मक़ाम है और जो शख्स दुनियाँ से मुहब्बत व रग़बत रखता है और उसकी ज़ैबो ज़ीनत में मसरुफ़ होता है उसके दिल से आख़िरत का ख़ौफ़ निकल जाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स हलाल दुनियाँ (यानी माल) इसलिये हासिल करता है कि उसे बढ़ाये और दूसरों पर फख़ करे तो वो अल्लाह तआला से कयामत के दिन इस तरह मुलाकात करेगा कि अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होगा और जो शख्स माँगने से बचे और अपनी इज्ज़त और नफ़्स को महफूज़ रखने के लिये (माल) तलब करता है तो कयामत के दिन इस तरह आयेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगा। (शुअबुल ईमान—7 / 298)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आयेगी जो कसीर (ज़्यादा) माल के बावजूद कनाअत नहीं करेंगे (यानी ज़्यादा माल पर भी राज़ी न होंगे) मज़ीद किस्म किस्म के कपड़े पहनेंगे खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे और उनके पेट थोड़ी चीज़ से सेर नही होंगे और उसी को अपना रब और माअबूद समझेंगे और उसी की बात मानेंगे और ख़्वाहिशात

की पैरवी करेंगे तो जो आदमी ऐसे ज़माने को पाये तो वो तुम्हारी औलाद से हो या औलाद की औलाद से हो जब ऐसे लोगों को पाओ तो उन्हें सलाम न करना और अगर बीमार हो जायें तो बीमार पुरसी न करना और अगर मर जायें तो उनके जनाज़ों में शरीक न होना और अगर किसी ने इसके बरअक्स (खिलाफ़) काम किया तो गोया उसने दीन को ढाने में मदद की।

(मुअज़म कबीर तिबरानी-8/127)

दो चीज़ें दुनियाँ में ऐसी होती हैं जिससे इन्सान को फ़ायदा हासिल होता है एक इल्म का सीखना और दूसरा नेक अमल और इसके अलावा दुनियाँ से सिर्फ़ उतना ही हासिल करे जितने में उसकी जाइज़ ज़रूरतें पूरी हो जायें जैसे खाना, लिवास और मकान और वो चीज़ें जिनकी ज़रूरत जिन्दगी गुज़ारने में दरपेश आती हैं और ज़रूरत से ज़्यादा की तलब इन्सान को राहे खुदावन्दी से गुमराह कर सकती है क्योंकि ज़्यादा माल पाने की तलब में इन्सान इतना मसरुफ़ हो जाता है कि उसे जो तमाम नेअमतें रब तआला ने अता की हैं उन नेअमतों के देने वाले रब्बुल आलमीन को ही भूल जाता है और ज़िक्रे इलाही से गाफ़िल हो जाता है।

इसलिये हर शख्स को चाहिये कि अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़ी कमाये और उतना खाना खाये जितने में उसका पेट भर जाये और हृद से ज़्यादा न खाये बल्कि भूक से कम खाये और दिखावे का लिवास न पहने बल्कि जिस्म को ढकने की नीयत से लिबास पहने और मकान को दिखावे की नीयत से तामीर न करे बल्कि गर्मी सर्दी, धूप, बरसात और चारों से हिफ़ाज़त के लिये तामीर करे और अपने घरों में ज़िक्रे इलाही बुलन्द करे और कसरत से कुरान मजीद की तिलावत करे और अल्लाह तआला के तमाम अहकामात पर अमल पैरा हो जाये और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत और सुन्नतों पर अमल करे और दुनियाँ से बे रग़बती इख्तियार करे क्योंकि दुनियाँ को इन्सान के लिये पैदा किया गया है और इन्सान को आख़िरत के लिये पैदा किया गया है और मौत खात्मे का नाम नहीं बल्कि दुनियाँ की महबूब चीज़ों से दूर करके बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर होने का नाम है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

अल्लाह तआला जिस शख्स का सीना इस्लाम के खोल देता है वो अपने रब की तरफ से नूर पर (फाइज़) होता है पस उन लोगों के लिये हलाकत है जिनके दिल अल्लाह तआला के जिक्र से (महरुम होकर) सख्त हो गये हैं यही लोग खुली गुमराही में हैं।

(सू0—जुमर—22)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

दुनियाँ मोमिन के लिये कैदखाना है और काफिर के लिये जन्नत है (सही मुस्लिम—2/407)

हजरत गौसुल आजम अब्दुल कादिर जीलानी (रजि0) फरमाते हैं जब तुम दुनियाँ को दुनियाँ वालों के हाथों में इस तरह देखो कि वो अपनी बातिल खूबसूरती और अपनी जाहिरी नर्मी और अपनी बातिली सख्ती के बावजूद उन्हें अपने झूठ और फरेब का शिकार बनाकर उनको हलाकत में डाले हुए है और उनके हक में पोशीदा कातिल बनी हुई है और वो लोग अपनों और गैरों से बेगाना होकर गफ़लत और अहद शिकनी (वायदा खिलाफी) का शिकार हो चुके हैं तो तुम उनको इस तरह देखो जैसे कोई बरहना (नंगा) शख्स पाखाना कर रहा हो और उसके चारों तरफ़ बदबू फैली हो और तुम ये मन्ज़र देखकर अपनी आँखें और नाक बन्द कर लेते हो ठीक इसी तरह अहले दुनियाँ की जैबो जीनत देखकर अपनी आँखें बन्द कर लो और दुनियाँ की लज़्ज़ात और शहवात की बदबू से अपनी नाक बन्द कर लो ताकि तुम्हें दुनियाँ की आफ़ात से निजात मिल जाये फिर जो कुछ तुम्हारी किस्मत में होगा वो तुम्हें ज़रूर मिलकर रहेगा।

दुनियाँ और दुनियाँ की तमाम चीज़ों की मुहब्बत और लज़्ज़त को अपने कल्ब से निकाल देना और अपने दिलों में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत रखना और अपनी आखिरत के लिये नेक आमाल करना हर शख्स के लिये इन्तिहाई ज़रूरी है और हमें चाहिये कि अपने तमाम अहवाल में अल्लाह व रसूल के हुक्म का ताबैअ रहें और अपनी तमाम दुन्यावी ख़्वाहिशात को फना कर दें और अपने नफ़्स पर हमेशा ग़ालिब रहें और हमारा हर अमल अल्लाह व रसूल के हुक्म और रज़ा के मुताबिक हो ।

और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहें और अपने हर मामलात में अपने रब को मुतवल्ली और कारसाज तसव्वुर व तसलीम करें जिस तरह जब बच्चा छोटा होता है तो उसकी देखभाल और उसकी परवरिश उसके माँ बाप करते हैं क्योंकि वो अपनी देखभाल और परवरिश खुद नहीं कर सकता है और सिर्फ अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) रखते हुये दुनियाँ से बे नियाज़ हो जाये।

दुनियाँ और आखिरत की मिसाल ऐसी है जैसे नदी के दो किनारे तो जो शख्स एक किनारे की तरफ़ जितना ज़्यादा करीब जायेगा तो वो दूसरे किनारे से उतना ही दूर हो जायेगा यानी जितना हम दुनियाँ के ज़्यादा करीब जायेंगे उतना ही आखिरत से दूर हो जायेंगे और जितना हम आखिरत को बेहतर बनाने के लिये उसके करीब जायेंगे उतना ही हम दुनियाँ से दूर हो जायेंगे।

बाज़ लोग कहते हैं कि हम दुनियाँ और आखिरत दोनों की बेहतरी चाहते हैं और उसी के मुताबिक़ अमल करते हैं और दोनों के तालिब और ख्वाहिश मन्द हैं और दोनों को पाना चाहते हैं तो ऐसे लोग अहमक हैं जो बीच में खड़े होकर नदी के दोनों किनारों तक पहुँचना चाहते हैं हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम् ने फरमाया जिसने दुनियाँ को पसन्द किया उसने आखिरत का नुकसान किया और जिसने आखिरत को पसन्द किया उसने दुनियाँ का नुकसान किया तो उसको इख्तियार करो जिसका नफ़ा दायमी और पायेदार (मज़बूत) है और उसको छोड़ दो जो सिर्फ़ चन्द दिनों की है दुनियाँ से सिर्फ़ अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ हासिल करें और उसी पर क़नाअत करें और फ़िज़ूल व ज़ायद व ग़ैर ज़रूरी अशया से इजतिनाब करें और सिर्फ़ ज़रूरत की अशया के तालिब रहें क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा किसी चीज़ की ख्वाहिश व मशगूलियत इन्सान को धीरे-धीरे गुनाह व हराम की तरफ़ माइल करती है और उसका नफ़्स हिर्स व सरकशी और शहवात की तरफ़ उकसाता है और बन्दा गुनाहों में मुब्तिला हो जाता है।

—: माल की मजम्मत —

दुनियाँ में बे शुमार फ़िल्ने हैं जिसमें सबसे बड़ा फ़िल्ना माल है क्योंकि अगर माल न मिले तो इन्सान की मुहताजी उसे कुफ़्र के करीब ले जा सकती है और उसे गुमराह कर सकती है और अगर माल मिल जाये तो सरकशी का ख़तरा रहता है जिसका नतीजा सिवाय नुकसान के कुछ भी नहीं है और इसके फ़ायदे निजात देने वाले हैं और इसकी आफ़त गुनाहों में डालने वाली है और इससे वही फ़ायदा उठाता है जिसे अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे या जिसे दीन, व इल्म और उसकी समझ की तौफ़ीक़ अता हो और माल के सबब अल्लाह तआला इन्सानों को आजमाइश में डालता है कि मेरे दिये हुये माल को बन्दा किस तरह खर्च करता है और कितना मेरी राह में खर्च करता है और कितना फ़िजूल खर्च करता है और उस माल के बाइस वो अपनी आफ़ियत में मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और मेरे अता कर्दा माल पर शुक्र गुजारी के साथ साथ क़नाअत करता है या नहीं लेकिन बाज़ लोगों की उम्मीदें और ख़्वाहिशात कभी ख़त्म नहीं होती हत्ता कि मौत का वक़्त आ जाता है और वो क़ब्र में दफ़न हो जाते हैं हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़िल्ना है और मेरी उम्मत का फ़िल्ना माल है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब आजमाइश है।
(सू०—तगाबुन—15)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मुझे इस बात का डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे बल्कि इस बात का डर है कि माल कि हिस्स में एक दूसरे से आगे बढ़ोगे। (सही बुख़ारी—2/585)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कसरते माल की ख़्वाहिश नें तुम्हें गाफ़िल कर दिया (और) इन्सान कहता है मेरा माल मेरा माल (हालाँकि) तेरा माल वही है जो तूने खाकर फ़ना कर दिया पहन कर पुराना कर दिया या सद्का करके बाकी रखा। (मुस्नद अहमद—4/24)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

ज्यादा माल वाले हलाक हुये मगर जिसने अपना माल अल्लाह तआला के बन्दों में इस तरह और उस तरह कर दिया (यानी सदका खैरात किया) और ऐसे लोग बहुत कम हैं। (मुस्नद अहमद—2/525)

अल्लाह तआला ने तमाम लोगों के दरमियान इख्तिलाफ रखा है जो तमाम लोगों के लिये बाइसे रहमत है बाज़ लोग इस इख्तिलाफ को समझ नहीं पाते या समझने की कोशिश नहीं करते अल्लाह तआला ने किसी को मालदारी दी किसी को तंगी किसी को अमन चैन किसी को मुहताजी मायूसी और किसी को आफियत (ऐशो आराम) और किसी को तकलीफ व परेशानी और किसी को राहत किसी को ताकत किसी को आजिज़ लेकिन वो हर तरह से इन्सानो को आजमाता है कि कौन ज्यादा अच्छा अमल करता है और कौन मेरा शुक्र गुज़ार है और कौन मेरी रज़ा पर राजी है और तमाम इन्सानों का हिसाब क़यामत के दिन होगा और ज़र्ज़ बराबर भी किसी पर जुल्म नहीं होगा जो लोग दुनियाँ में मसाइबो आलाम से दो चार होते हैं उनसे हिसाब आसान होगा बशर्ते कि वो सब्र व ज़ब्त पर कायम रहें क्योंकि जो दुनियाँ में मुसीबतो परेशानी उठाता है और सब्र करता है तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे दोबारा परेशानी नहीं देगा और मालदारों पर जो ऐशो इशरत में रहे उन पर हिसाब सख्त होगा अगर उन्होंने कसरत से नेक आमाल न किये।

क्योंकि अल्लाह तआला किसी की सूरत या माल नहीं देखता बल्कि वो तो सिर्फ़ इन्सान के आमाल देखता है क्योंकि तमाम इन्सानों को बनाने वाला और उन्हें नेअमतेँ अता करने वाला रब्बुल आलमीन है जो तमाम जहानों को पैदा करने वाला मालिक है और कायनात के निज़ाम को चलाने वाला एक अकेला परवरदिगार है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल न कर दें और जो ऐसा करेगा वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं। (सू०—मुनाफिकून—9)

इरशादे बारी तआला है—

तुम्हें ज्यादा माल पाने की तलब ने (आखिरत से) गाफिल कर दिया

यहाँ तक कि तुम कब्रों में जा पहुँचे हरगिज़ नहीं (माल व दौलत तुम्हारे काम नहीं आयेंगे) तुम अनकरीब (इस हकीकत को) जान लोगे फिर (आगाह किया जाता है) हरगिज़ नहीं अनकरीब तुम्हें (अपना अंजाम) मालूम हो जायेगा हाँ हाँ काश तुम (माल व ज़र की हवस और अपनी गुफ़लत के अंजाम को) यकीनी इल्म के साथ जानते (तो दुनियाँ में खोकर आखिरत को इस तरह न भूलते) तुम (अपनी हिर्स के नतीजे में) दोज़ख़ को ज़रूर देखोगे फिर तुम उसे ज़रूर यकीन की आँख से देख लोगे फिर उस दिन तुमसे (अल्लाह की) नेअमतों के बारे में ज़रूर पूछा जायेगा कि तुमने उन्हें कहाँ कहाँ और कैसे कैसे खर्च किया था। (सू०—तकासुर—1—8)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जायें तो वो उसको इतना तबाह और बर्बाद नहीं करेंगे जितना माल पाने की चाहत दीन को बर्बाद कर देती है। (मुअजम कबीर तिबरानी—19/96) (मिशकात)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कयामत के दिन हर फ़कीर और मालदार इस बात को पसन्द करेगा कि काश दुनियाँ में ज़रूरत के मुताबिक़ रिज़्क मिलता।
(मुस्नद अहमद—6/19)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो हरीस कभी सेर नहीं होते एक इल्म का हरीस और दूसरा माल की हिर्स रखने वाला। (कंजुल उम्माल—10/179)

ज़्यादा माल पाने की ख्वाहिश इन्सान को गुनाहों के दलदल में ले जाती है और इन्सान कई तरह के गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है ज़्यादा माल के सबब इन्सान के अन्दर तकब्बुर पैदा हो जाता है और वो खुद को मुअज़्ज़ज़ और लोगों को हकीर जानता है और ज़्यादा माल पाने की तलब उसे हिर्स की तरफ़ ले जाती है क्योंकि उससे ज़्यादा जब किसी दूसरे पर माल होता है तो वो हसद करता है और उससे ज़्यादा माल हासिल करने की तलब उसे हरीस बना देती है और वो गुनाहगार हो जाता है और लोगों में अपनी तारीफ़ व वाहवाही और इज़्ज़त पाने के सबब वो ऐसे काम करता है जिसमें

दिखावा शामिल होता है और वो इस तरह रियाकारी का गुनाह कर बैठता है हत्ता कि वो अपनी आखिरत के बजाय दुनियाँ बनाने में लग जाता है और आखिरत का ख्याल उसके दिल से निकल जाता है और वो अपनी आखिरत बर्बाद कर लेता है और उसके गुनाह उसे जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं।

मोमिन का दिल उसके माल के साथ होता है अगर उसने आगे भेज दिया तो उससे मिलना चाहता है और अगर आगे न भेजा तो उसके साथ रहना चाहता है हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़सम जो शख्स दिरहम (रुपया पैसा) की इज़्ज़त करता है अल्लाह तआला उसे ज़लील कर देता है कहा गया है कि जब दिरहम व दीनार तैयार हुये तो शैतान ने उनको उठाकर अपनी पेशानी पर रखा फिर उनको बोसा दिया और कहा जिसने तुम दोनों से मुहब्बत की हकीकत में वही मेरा गुलाम है।

इसलिये हमें चाहिये कि हलाल माल को सही मक़सद के लिये जाइज़ तरीक़े से हासिल करें और जाइज़ ज़रूरतों पर खर्च करें और फ़िज़ूल खर्ची से बचें और न कंजूसी करें बल्कि एतदाल पर रहें यानी न हद से ज़्यादा और न हद से कम खर्च करें और अल्लाह तआला की राह में ज़्यादा से ज़्यादा खर्च करें क्योंकि अल्लाह तआला की राह में जो माल खर्च किया जाता है वही माल क़यामत तक हमारा साथी होता है और बाद मौत भी हमारा साथ नहीं छोड़ता और सद्का ख़ैरात भी क़सरत से करें और अपने घर वालों पर खर्च करें और मेहमानों और मुहताजों ग़रीबों और मिसकीनों पर खर्च करें और मुसलमान भाइयों की ज़रूरतों पर खर्च करें और हाजतमंद की हाजत पर उसकी माली मदद करें और मसाजिद और मदारिस में ज़्यादा से ज़्यादा दें और अपने माल की पूरी ज़कात अदा करें।

जो शख्स क़सरत से अल्लाह तआला की राह में खर्च करता है वो सख़ी होता है और अल्लाह तआला सख़ी शख्स को बहुत ज़्यादा पसंद फ़रमाता है और ज़रूरत से ज़्यादा माल की तलब और उसका हासिल करना बहुत बड़ी आफ़त और बबाल है क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा माल अक्सर लोगों को गुनाहों की तरफ़ ले जाता है और

अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की नाफरमानी का सबब बनता है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अगर इन्सान के पास सोने की दो वादियाँ हों तो वो तीसरी वादी की ख्वाहिश करता है और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती। (सही मुस्लिम—1/335)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मुर्दों की मजलिस से बचा करो आप से अर्ज किया गया कि मुर्दों से मुराद कौन लोग हैं आप ने इरशाद फरमाया मालदार (बुरे) लोग (जामअ तिमिजी—269)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज किया गया कि आप की उम्मत के बुरे लोग कौन हैं आपने इरशाद फरमाया मालदार लोग (जो राहे खुदा में खर्च नहीं करते) (शुअबुल ईमान—5/33)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हैं—
जिस माल के ज़रिये आदमी अपनी इज़्जत की हिफ़ाज़त करता है वो सद्का लिखा जाता है (बैहकी—10/244)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
उस शख्स के लिये खुशख़बरी है जिसे इस्लाम की तरफ़ रहनुमाई हासिल हुई और उसका रिज़्क उससे किफ़ायत करता है और वो उस पर क़नाअत करता है। (मुस्नद अहमद—6/19)

अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के नज़दीक कोई शख्स मालो दौलत का ज़ख्बीरा जमा करने से नेक व मुअज़्ज़ज और ग़नी नहीं होता बल्कि कसीर नेकियों को जमा करने और अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल पैरा होने से नेक और ग़नी और मुअज़्ज़ज होता है और ज़रूरत से ज़्यादा माल की तलब व हिर्स इन्सान की परेशानियों और गुनाहों में इज़ाफ़ा करती है और उसकी मसरूफ़ियत उसे अल्लाह तआला से दूर कर देती है और बिल आख़िर उसका माल उससे बेवफ़ाई करता है और एक दिन उसे छोड़ देता है और वो क़ब्र में पहुँच जाता है फिर उसके पास न तो माल होता है न कसीर नेकियाँ बल्कि अपने गुनाहों के बोझ को क़यामत तक उठाये रखता और सख्त अज़ाब में मुब्तिला रहता है।

—: इल्म की फज़ीलत :—

अल्लाह तआला के नज़दीक किसी शख्स का इल्म का सीखना और उस पर अमल करना मेहबूबियत का दर्जा रखता है यानी जो शख्स इल्म सीखे और उस पर अमल करे वो अल्लाह तआला का पसंदीदा बन्दा है और अल्लाह तआला इल्म वालों के दरजात को बुलन्द फरमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और तुम में से जो ईमान लाये और अहले इल्म के दरजात को अल्लाह तआला बुलन्द फरमायेगा। (सू0—मुजादलाह—11)

दुनियाँ में इल्म से बढ़कर कोई नेअमत नहीं और जो इस नेअमत से महरूम रहा वो सबसे बड़ा बदनसीब है क्योंकि जो कुछ दुनियाँ में है उसका तआल्लुक इन्सान की मौत के साथ मुनक़ताअ हो जाता है लेकिन इल्म के सबब जो आमाल किये जाते हैं वो मौत से लेकर कब्र व क़यामत तक उसके साथी और मददगार होते हैं और कभी उससे जुदा नहीं होते।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
इल्म का सीखना हर मुसलमान (मर्द औरत) पर फर्ज़ है
(सुनन इब्ने माजा—20) (मुअज़म कबीर तिबरानी—10/240)

मज़कूरा हदीस से मुराद वो दीनी इल्म व मसाइल हैं जो हर मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने व इबादत और अम्लियात में हमेशा काम आते हैं और इल्म का सीखना दुनियाँ की तमाम चीज़ों से अफ़ज़ल है

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
तुम्हारा सुबह के वक़्त इल्म का एक बाब सीखने के लिये जाना एक सौ रकाअत नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है (कंज़ुल उम्माल—10/258)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
इल्म का एक बाब जिसे कोई सीखे तो ये उसके लिये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है से बेहतर है। (कंज़ुल उम्माल—10/163)

इन अहादीस मुबारका से ये बात वाज़ेह हुई कि इल्म का सीखना कितनी बड़ी फज़ीलत रखता है और इल्म का सीखना हर मुसलमान के लिये बहुत ज़रूरी है लेकिन आज हालात ये हैं कि हम दुन्यावी तालीम को अहमियत और तरजीह दे रहे हैं और दीनी इल्म से किनारा कशी इस्तिथार कर रहे हैं जबकि हकीकत ये है कि दुन्यावी इल्म का नफ़ा (फ़ायदा) हमें कुछ साल तक ही मिलता है जबकि दीनी इल्म का नफ़ा हमें हजारों साल (यानी क़यामत) तक मिलेगा और इसी इल्म के सबब हम जन्नत और उसकी अज़ीम नेअमतों के मुस्तहिक होंगे अगर हम इल्म के मुताबिक़ नेक आमाल करेंगे तो ज़रूर हम उन आमालों की बेहतर जज़ा पायेंगे फिर भी बाज़ लोग इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और दुन्यावी इल्म को अहमियत और तरजीह देते हैं ये अकलमंदी है या बेवकूफी हम खुद फैसला करें आज मदरसे खाली हैं इन मदरसों में गिनती के लोग हैं जो दीनी इल्म और कुरान पाक की तालीम हासिल करते हैं और अंग्रेजी स्कूलों में मँहगी पढ़ाई और मँहगी किताबों के बावजूद अंग्रेजी स्कूल भरे पड़े हैं।

हम अपने बच्चों को दुन्यावी इल्म सिखाते हैं लेकिन बाद वफ़ात ये इल्म न तो हमारे काम आयेगा और न हमारे बच्चों के काम आयेगा लेकिन दीनी तालीम और कुरान दुनियाँ और आख़िरत में हमारे और हमारे बच्चों के काम ज़रूर आयेगा क्योंकि अगर हमने दीनी इल्म के मुताबिक़ नेक अमल किये तो यही नेक अमल हमें अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रखेंगे और अज़ाबे क़यामत से निजात दिलाने हमारे में मददगार होंगे।

और अपने बच्चों को दीनी तालीम और कुरान पाक पढ़ाने से फ़ायदा ये है कि अगर हम पर क़ब्र में अज़ाब हो रहा हो और अगर हमारे बच्चें जिन्हें हमने दीनी तालीम और कुरान सिखाया तो वही बच्चे कुरान पाक की तिलावत और निफ़िली इबादत और सद्क़ात को हमारे लिये ईसाले सबाब करेंगे जिसके सबब अल्लाह तआला हम पर अपना रहमो करम फ़रमायेगा और अज़ाबे क़ब्र से हमें राहत अता फ़रमायेगा जबकि दुन्यावी इल्म हमें क़ब्र व क़यामत के अज़ाब से क़तअन नहीं बचा सकता इसलिये हमें चाहिये कि हम दीनी इल्म सीखें और अपने बच्चों को भी सिखायें और सबसे ज़्यादा इसी को तरजीह दें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

इन्सान का हर अमल मरने के बाद मुनक़ताअ़ हो जाता है मगर तीन अमल बाकी रहते हैं उनमे से एक नेक औलाद है जो उसके लिये दुआ माँगती है। (सही मुस्लिम-2/41)

जब इन्सान इल्म सीखता और दीनी किताबों का मुतालाअ़ करता है और जब वो दोज़ख़ व जन्नत के अहवाल पढ़ता है और लोगों में उसका ज़िक्र करता है तो आतिशे दोज़ख़ और अज़ाब का ज़िक्र नफ़्स में डर पैदा करता है और जन्नत व सवाबे अमाल उसमें उम्मीदें व रग़बत पैदा करते हैं दीनी तालीम व इल्म इन्सान की सबसे बड़ी और अहम ज़रूरत है जो बन्दे के लिये अल्लाह तआला की अता कर्दा बेहतरीन नेअमत है जो इन्सान के तमाम कामों को दुरस्त और बेहतर तरीक़े से अंजाम देने में मददगार होती है इल्म के बाइस इन्सान में अच्छी सोच और समझ की सलाहियत पैदा होती है और इन्सान को अच्छे बुरे जाइज़ व नाजाइज़ हराम व हलाल में फ़र्क़ करना आसान हो जाता है।

इल्म दुनियाँ के तमाम ख़ज़ानों से अफ़ज़ल तरीन ख़ज़ाना है और ये वो दौलत है जिससे इन्सान दुनियाँ व आख़िरत में बेशुमार फ़वाइद हासिल करता है और इसके ज़रिये ज़रर व नुकसानात से बचना और महफूज़ रहना उसके लिये आसान हो जाता है बे इल्म शरूअ पर उसके नफ़्स और शैतान के ग़लबे का ख़तरा और उस पर हावी होने का ख़दशा ज़्यादा होता है जो उसे राहे हक़ से गुमराह करने का सबब बनता है दीनी इल्म के बाइस इन्सान से अच्छे व नेक आमाल सादिर होते हैं और वो जहालत व गुमराहियों के अंधेरो से निकलकर राहे हक़ के उजालों की तरफ़ कूच करता है और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करता है और अल्लाह व रसूल की इत्तेबाअ़ में नेक आमाल का ज़ख़ीरा जमा करता है और वो गुनाहों से दूर रहता और नेक आमाल के बाइस अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी हासिल करता और वो निजात पा जाता है और अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी उसे जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी होती है और वो अल्लाह के ग़ज़ब और अज़ाब से महफूज़ रहता है।

—: कुरान की फज़ीलत :—

कुरान मजीद एक अज़ीम बाबरकत किताब है जिसका देखना, पढ़ना, सुनना बरकत व रहमत और इबादत है और अल्लाह तआला की खुशनुदी और रज़ा हासिल करने और रब तआला से तआल्लुक जोड़ने का का बेहतरीन ज़रिया है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
मेरी उम्मत की बेहतरीन इबादत कुरान पाक की तिलावत है।
(कंजुल उम्माल—1/511)

ये वो बाबरकत किताब है जिसे रब तआला ने नाज़िल फ़रमाया और इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा परवरदिगार ने खुद लिया कायनात में कुरान पाक की कोई मिस्ल नहीं है कुरान पाक की कसरत से तिलावत वाले और लोगों को कुरान पाक तालीम देने वाले और इसकी तरफ़ रग़बत दिलाने वाले अल्लाह तआला के मख़सूस और पसन्दीदा बन्दे हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
बेशक हमने कुरान को उतारा और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (सू0—हिज़र—9)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
कुरान पाक पढ़ने वाले और अल्लाह तआला से तआल्लुक रखने वाले अल्लाह तआला के मख़सूस बन्दे हैं। (कंजुल उम्माल—1/513)

अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमें अपना मख़सूस (ख़ास) बन्दा बनाये और हमारा तआल्लुक रब तआला से वाबस्ता हो तो हमें चाहिये कि हम कसरत से कुरान पाक की तिलावत करें। हम तमाम मुसलमानों पर अल्लाह तआला बड़ा एहसान और रहमो करम है कि कुरान मजीद जैसी बाबरकत किताब हमें अता हुई जो हम तमाम मुसलमानों के लिये हिदायत व शिफ़ा और रहमत है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ईमान वालों के लिये कुरान हिदायत व शिफ़ा है।
(सू0—हामीम सजदा—44)

इरशादे बारी तआला है—

और हम कुरान में उतारते हैं वो चीजें जो ईमान वालो के लिये शिफा और रहमत हैं। (सू0—बनी इसराईल—82)

कुरान पाक की बहुत ज़्यादा फज़ीलतें हैं इसके बावजूद आज हालात ये हैं कि कुरान मजीद घरों में मौजूद है और उस पर धूल छा रही है लेकिन बाज़ लोग उसे खोलकर भी नहीं देखते जबकि दुन्यावी तमाम काम अपने वक़्त पर करते हैं इसके अलावा ज़्यादातर लोग लड़कियों को ही कुरान की तालीम दिलाते हैं लेकिन लड़कों को कुरान पाक पढ़ना नहीं सिखाते तो क्या कुरान का पढ़ना और सीखना सिर्फ़ लड़कियों के लिये मख़सूस है जबकि ये ऐसी बाबरक़त किताब है कि जब कोई शख्स कुरान पाक की तिलावत करता है तो अल्लाह तआला उसे बग़ैर सुनता है और उस तिलावत करने वाले शख्स पर अल्लाह तआला की तरफ़ से बे शुमार रहमतों का नुज़ूल होता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला कुरान मजीद पढ़ने वाले की तिलावत इस क़दर सुनता है कि गाने वाली का मालिक भी उसका गाना इस क़दर नहीं सुनता। (मुस्नद अहमद—4/19)

कुरान पाक की तिलावत ईमान का नूर है गुनाहों का कफ़ारा है कल्ब का सुकून व जिस्म की राहत व मुर्दा दिलों की ज़िन्दा दिली है और हमारी रहनुमाई का सबब व निजात का बेहतरीन ज़रिया है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

इन्सान के दिलों को भी लोहे की तरह जंग लग जाती है जो मौत को कसरत से याद करने और कुरान पाक की तिलावत से ये जंग दूर हो जाती है। (वैहकी)

इरशादे बारी तआला है—

अगर हम ये कुरान किसी पहाड़ पर नाज़िल फ़रमाते तो तू उसे ज़रूर देखता कि वो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से झुक जाता फटकर पाश पाश हो जाता और ये मिसालें हम लोगों के लिये बयान करते हैं ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें (सू0—हशर—21)

कुरान मजीद की तिलावत का सवाब एक हरफ़ के बदले दस नेकियाँ उसके नामे आमाल में लिखी जाती हैं और जहाँ कुरान पाक की तिलावत होती है वहाँ फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और कुरान पाक की तिलावत को सुनते हैं इसलिये हमें चाहिये कि हम क़सरत से कुरान पाक की तिलावत करें ताकि हमारे घरों में भी फ़रिश्तों की आमद हो और रहमते इलाही का नुज़ूल हो और हम पर लाज़िम है कि हम कुरान पढ़ें और दूसरों को भी सिखायें और लोगों को कुरान मजीद की तरफ़ रग़बत दिलायें।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम में से बेहतरीन इन्सान वो है जो कुरान सीखे और दूसरों को सिखाये। (सही बुख़ारी—2/752)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और सुबह कुरान पढ़ो बेशक सुबह के कुरान में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। (सू0—बनी इसराईल—78)

इरशादे बारी तआला है—
और जब कुरान पढ़ा जाये तो कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो। (सू0—ऐराफ़—204)

इरशादे खुदा वन्दी है—
(ऐ महबूब) आप फ़रमां दीजिये अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात पर जमा हो जायें कि वो इस कुरान की मिस्ल (कोई दूसरा कलाम बना) लायेंगे तो (भी) वो इसकी मिस्ल नहीं ला सकेंगे अगरचा वो एक दूसरे के मददगार बन जायें।
(सू0—बनी इसराईल—88)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक ये बड़ी अज़मत वाला कुरान है (इससे पहले ये) लौहे महफूज़ में (लिखा हुआ) है इस को पाक (तहारत वाले बा वुजू) लोगों के सिवा कोई नहीं छुयेगा तमाम जहानों के रब की तरफ़ से उतारा गया है। (सू0—वाकिया—77,—80)

—: आलिम की फज़ीलत :—

आलिम आबिद से अफज़ल होता है क्योंकि आबिद का अमल सिर्फ़ उसे नफ़ा देता है जबकि आलिम का इल्म बहुत लोगों को नफ़ा देता है और उल्माएकिराम वारिसे अम्बिया हैं जो तमाम मुसलमानों की हिदायत व इस्लाह का बाइस हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

आलिम की आबिद पर फ़ज़ीलत इस तरह है जैसे चौदहवीं का चाँद सितारों से अफज़ल है। (सुनन इब्ने माजा—330)

एक और मक़ाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने आलिम की फ़ज़ीलत इस तरह बयान फ़रमाई

कि आबिद पर आलिम की फ़ज़ीलत इस तरह है जैसे मुझे अपने अदना सहाबी पर फ़ज़ीलत हासिल है। (जामअ तिमिज़ी—384)

हज़रत हसन बसरी (रह0) फ़रमाते हैं कि उल्माएकिराम की स्याही को शहीदों के खून से तौला जायेगा तो स्याही खून से ज़्यादा बज़नी होगी उल्माएकिराम का मक़ाम और मर्तबा आम लोगों से दुनियाँ और आख़िरत में अफज़ल व आला है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

आप फ़रमां दीजिये क्या अहले इल्म और वे इल्म बराबर हो सकते हैं (सू0—जुमर—9)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि लोगों को भलाई की तालीम देने वाले के लिये हर चीज़ मग़फ़िरत की दुआ करती है यहाँ तक कि दरिया की मछलियाँ भी। आलिम अपने इल्म को लोगों तक पहुँचाता है तो जितने लोग उस इल्म पर अमल करेंगे तो अमल करने वाले लोगों को सवाब मिलेगा और उनके सवाब के साथ साथ उस आलिम को भी सवाब मिलेगा जिसके सबब इल्म उन लोगों तक पहुँचा और उन लोगों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी अल्लाह तआला क़यामत के दिन उल्माएकिराम को ये शरफ़ अता करेगा कि वो लोगों की सिफ़ारिश करेंगे।

उल्माएकिराम अल्लाह तआला के मुकर्रब व मख्सूस बन्दे होते हैं क्योंकि ये लोग अपने इल्म के मुताबिक अमल करते हैं और शरई अहकामात और सुन्नतों पर अमल पैरा होते हैं और जो उल्मा अपने इल्म पर अमल न करे वो उल्मा ही नहीं बल्कि वो गुनाहगार होते हैं

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

कोई शख्स उस वक्त तक आलिम नहीं हो सकता जब तक वो अपने इल्म पर अमल न करे। (कंजुल उम्माल—10 / 192)

आलिम का हर अमल अल्लाह तआला की रज़ा के लिये होना चाहिये न कि दिखावे के लिये और उसका इल्म उसके अमल के साथ साथ लोगों को नफ़ा पहुँचाने के लिये होना चाहिये न कि दुनियाँ कमाने के लिये बाज़ उल्मा हज़रात अपने इल्म को जरियाये मआश बनाते हैं ऐसे उल्मा कयामत के दिन ख़सारे में होंगे और अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब होंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जो शख्स ऐसा इल्म जिसके जरिये अल्लाह तआला की रज़ा तलाश की जाती है अगर इसलिये हासिल करता है कि इसके सबब दुनियाँ का सामान पाये तो वो कयामत के दिन जन्नत की खुशबू भी नहीं पायेगा। (सुनन इब्ने माजा—22)

शरीअते मुतहरा में उल्माएकिराम की कुछ हदें हैं और उन पर लाज़िम है कि वो उन हदों के अन्दर रहें लेकिन बसा औकात देखा गया है कि बाज़ उल्मा ख़िलाफ़े शरअ मजलिसों में शिर्कत करते हैं और ख़िलाफ़े शरअ काम को रोकने के बजाय खुद उसमें शामिल होते हैं और अल्लाह तआला की रज़ा के लिये हक़ बात नहीं करते क्योंकि उनके अन्दर अल्लाह तआला के बजाय लोगों का डर होता है कि लोग बुरा मान जायेंगे।

आला हज़रात अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी (रह0) फरमाते हैं—

किसी ख़िलाफ़े शरअ मजलिस में जाना जाइज़ नहीं और वहाँ पर खाना भी जाइज़ नहीं अगर खाना दूसरी जगह है तो आम लोगों के खाने में हर्ज नहीं लेकिन आलिम या मुक्तदा का वहाँ पर भी खाना जाइज़ नहीं। (फ़तावा रज़विया—24 / 134)

आलिम के बाअज़ (नसीहत) का असर लोगों पर तब होता है जब आलिम खुद बा अमल हो और उसका हर अमल सिर्फ़ ख़ालिस अल्लाह तआला के लिए हो और उसके दिल में खुद की तारीफ़ व ताज़ीम की ख़्वाहिश न हो बल्कि उसका इल्म सिर्फ़ रब तआला की रज़ा के लिए हो और वो दुनियाँ और मताये दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करे।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आलिम जब अपने इल्म से अल्लाह तआला की रज़ा चाहता है तो उससे हर चीज़ डरती है और जब वो इसके ज़रिये माल जमा करना चाहता है तो वो हर चीज़ से डरता है।

(कंजुल उम्माल—16/630)

उल्माएकिराम पर लाज़िम है कि वो बुरे लोगों कि सुहवत इख़्तियार न करें और उनकी मजालिस से ऐराज़ करें और हमेशा सच और हक़ बात कहें और अपने दिलों में लोगों का ख़ौफ़ न रखें बल्कि ख़ौफ़े इलाही से अपने दिलों को लरजने दें और हर हाल में लोगों को नेक अमल की तरगीब दें और रोज़ा नमाज़ ज़कात सद्कात वगैराह की ताकीद व तल्कीन करें और हर ख़िलाफ़ शरअ काम को रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें और माल का लालच न करें और अल्लाह तआला जितना रिज़क दे उस पर क़नाअत करें और भलाई की दावत दें और बुराई से रोकें और जो आलिम ऐसा नहीं करेगा वो अल्लाह तआला और उसके मेहबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के नज़दीक बुरा आलिम है और अल्लाह तआला उसे सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करेगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बदतरीन इन्सान बुरे उल्मा है (कंजुल उम्माल—10/191)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
कि क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब उस आलिम को होगा जिसके इल्म ने नफ़ा न दिया (कंजुल उम्माल—10/210)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कि आलिम को ऐसा अज़ाब दिया जायेगा कि उसके अज़ाब की सख़्ती के बाइस उसके इर्द गिर्द जहन्नुमी इकट्ठे होंगे।

(मुस्नद अहमद—5/205)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—

जो शख्स अपने इल्म में इज़ाफ़ा करता है लेकिन हिदायत में इज़ाफ़ा नहीं करता वो सिर्फ़ अल्लाह तआला से दूरी बढ़ाता है।

(कंजुल उम्माल-10/193)

बाज़ आलिम बातें तो दरवेशियों व जाहिदों की तरह करते हैं लेकिन उनके आमाल मुनाफ़िकों की तरह होते हैं क्या वो नहीं जानते कि अल्लाह तआला से कोई भी जाहिर व पोशीदा चीज़ मख़फ़ी नहीं है वो अपने बन्दों के छुपे इरादों को भी जानता है जो अम्रे कुन से हर शै: को पैदा फरमाने वाला है और आलिम को चाहिये कि जाहिलों से बहसो मुबाहिसा न करें बल्कि ख़ामोश रहें क्योंकि इल्म और जहालत कभी बराबर नहीं हो सकते क्योंकि इल्म रोशनी है और जहालत तारीकी है इल्म हिदायत है और जहालत गुमराही है और इल्म से इन्सान में ख़ौफ़ व ख़शीयते इलाही पैदा होती है।

इरशादे बारी तआला है—

अल्लाह के बन्दों में से उससे वही डरते हैं जो इल्म रखने वाले हैं।

(सू0-फ़ातिर-28)

हर आलिम पर वाजिब है कि जब वो लोगों से मुलाकात करे या लोग उसकी मुलाकात को आयें तो उनसे खुलूस दिल से मिले और उनसे हुस्ने खुल्क व अच्छे बरताव से पेश आये और अपनी गुप्तगू में दुनियाँदारी की बे मतलब व फ़िज़ूल बातों में मशगूल होकर अपने और उनके वक़्त को ज़ाया न करे बल्कि अपनी गुप्तगू में हुस्ने कलाम से दीनी उलूम व मसाइल से उन्हें मुत्तलाअ करे और कब्र व क़यामत के अज़ाब के बयानात से उनके दिलों में ख़ौफ़ पैदा करे और अल्लाह के ग़ज़ब से डराये बाअज़ व नसीहत के ज़रिये उनकी इस्लाह करे और मुहब्बत व खुलूस के साथ नमाज़, रोज़ा, ज़कात सदकात वगैराह नेक अमल की तरगीब दे जन्नत व उसकी नेअमतों व लज़्ज़तों की तरफ़ रग़बत दिलाये और बिला ज़रूरत लोगों से अपना मेल जोल न रखे बल्कि अल्लाह व रसूल के अहकामात लोगों तक पहुँचाने के लिये उनसे तआल्लुकात और मेलजोल को महदूद रखे और उन तमाम बुरी बातों से ऐराज़ करे जिन बातों के असरात लोगों पर पड़ने का ख़दशा हो क्योंकि आलिम से अगर कोई बुरा फ़ैअल सादिर होता है तो लोगों पर उसके बुरे असरात पड़ने का ख़तरा ज़्यादा होता है और लोग उनके बुरे अफ़आल की पैरवी करते और उसको बुरा फ़ैअल और गुनाह नहीं समझते।

—: नमाज़ की फज़ीलत :—

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर मुश्तमिल है जिसमें सबसे पहली चीज़ ईमान है यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई माअबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं इस पर कामिल ईमान का होना इस्लाम का पहला रुकन है और इस्लाम का दूसरा रुकन नमाज़ है और नमाज़ के लिए पहली शर्त तहारत (पाकी) है यानी तमाम जिस्म का पाक होना और अल्लाह तआला पाक रहने वाले लोगों को पन्सद फ़रमाता है।

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

पाकीज़गी आधा ईमान है (सही मुस्लिम 1/118)

नमाज़ के लिये दूसरी शर्त वुजू है वुजू के बहुत ज़्यादा फ़वाइद हैं वुजू के पानी को क़यामत के दिन नेकियों के पल्ले में रखा जायेगा और बा वुजू रहने वाले शख्स को अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल होती है और वुजू के बाइस उसके गुनाह झड़ते हैं और जो रात को वुजू करके सोता है तो उसके लिये फ़रिश्ते दुआये मग़फ़िरत करते हैं और इसके अलावा वुजू की बहुत फज़ीलतें हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

वुजू का पानी क़यामत के दिन इन्सान की नेकियों के पल्ले में रखा जायेगा। (तिर्मिज़ी—1/593)

वुजू करने के बाद दो रकाअत नमाज़ निफ़िल (तहय्यतुलवुजू) पढ़ने की हदीस पाक में बड़ी फज़ीलत आयी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जिसने अच्छी तरह वुजू किया और दो रकाअत नमाज़ निफ़िल पढ़ी और इस बीच दुन्यावी बात दिल में न लाया तो वो गुनाहों से इस तरह निकल गया जैसे उस दिन था जब उसकी माँ ने उसे जना था (सही बुख़ारी—1/28) (मुस्नद अहमद—4/158)

हर आक़िल बालिग़ मर्द व औरत पर पाँच नमाज़ें अपने वक़्त मुक़र्ररा

पर फ़र्ज हैं जिसे हर हाल में अदा करना होगा नहीं तो गुनाहगार होंगे क़यामत के दिन बन्दे से जब हिसाब लिया जायेगा तो सबसे पहले नमाज़ की पुरसिश (पूछ) होगी और अगर फ़र्ज नमाज़ें कम हुईं तो उन्हें निफ़िलों से पूरा किया जायेगा।

हदीस पाक में है फ़राइज़ के नुकसान को नवाफ़िल के ज़रिये पूरा किया जायेगा। (सुनन वैहकी-2/386)

अल्लाह तआला की याद के लिये नमाज़ सबसे अफ़ज़ल इबादत है और अल्लाह तआला नमाज़ियों को बहुत ज़्यादा पसन्द फ़रमाता है और उन्हें अपना महबूब रखता है जो लोग नमाज़ का एहतमाम करते हैं और मस्जिदों को आबाद करते हैं और मस्जिद से मुहब्बत रखते हैं ऐसे लोगों से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है क़ुरान मजीद व अहादीस मुबारका में नमाज़ की बेशुमार फ़ज़ीलतें आयीं हैं

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे वो अल्लाह के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को देख रहा है। (सू0—बकराह—110)

इरशादे बारी तआला है—
और मेरी याद के लिये नमाज़ कायम करो। (सू0—ताहा—14)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जन्नत की चाबी नमाज़ है। (मुस्नद अहमद—3/340)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
नमाज़ दीन का सुतून है और जिसने इसे छोड़ा उसने दीन को गिरा दिया। (दुर्र मन्सूर—1/296)

हम दुन्यावी तमाम कामों के लिये वक़्त निकाल लेते हैं और उन कामों को बख़ूबी अन्जाम देते हैं और माल कमाने के लिये हम अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त सर्फ़ करते हैं तो क्या हम थोड़ा सा वक़्त नमाज़ के लिये नहीं निकाल सकते हालाँकि जिस रिज़क को

हासिल करने के लिये हम दिन रात मेहनत व मशक्कत करते हैं असल में वो रिज्क हमें अल्लाह तआला अता करता है फिर भी हम उसकी याद के लिये नमाज़ कायम नहीं करते हम मस्जिद में होने वाली अज़ान को सुनते हैं और उन कलिमात को भी सुनते हैं जब मुअज़्ज़िन कहता है आओ नमाज़ की तरफ़ आओ निजात की तरफ़ यानी मुअज़्ज़िन हमें अल्लाह तआला के घर की तरफ़ बुलाता है लेकिन हम सुनी अनसुनी कर देते हैं और अल्लाह तआला के घर की तरफ़ रुख़ न करके बाज़ार और दुनियावी कामों की तरफ़ रुख़ फेर लेते हैं और मस्जिद से मुहब्बत न करके बाज़ार और दुनियाँ से मुहब्बत करते हैं और उसी को तरजीह देते हैं क्या हम ये भी भूल गये हैं कि रोज़ी देना सिर्फ़ रब तआला के इख़्तियार में है वो जिसे जब चाहे जितना चाहे अता करता है इसमें किसी का कोई दख़ल नहीं और हम ये भी भूल गये हैं कि हमें अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया न कि रोज़ी कमाने के लिये तो हम जिस काम के लिये पैदा किये गये और अगर वो काम न करें तो हम खुद को हलाक करने वालों में से हैं और हम अपने आपके सबसे बड़े दुश्मन हैं और हम उस रास्ते पर चल रहे हैं जो हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाता है

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और खुद भी उस पर साबित क़दम रहो हम तुमसे रोज़ी कमवाना नहीं चाहते बल्कि रोज़ी तो तुम्हें हम देंगे और परहेज़गारों का अन्जाम अच्छा है।

(सू०—ताहा—132)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये और नमाज़ कायम की और ज़कात दी उनका नेग उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ अंदेशा हो और न कुछ ग़म (सू०—बक्राह—277)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला ने बन्दों पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं जो शख्स उन्हें अदा करे तो अल्लाह तआला का वायदा है कि उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। (सुनन अबी दाऊद—1/201)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

बेशक पाँच (वक्त की) नमाज़ें गुनाहों को इस तरह खत्म करती है। जैसे पानी मेल को खत्म करता है। (सही मुस्लिम-1/235)

नमाज़ चेहरे की जीनत है दिल का सुकून है जिस्म की राहत है कब्र की रोशनी है गुनाहों का कफ़ारा है जहन्नुम से आज़ादी है कयामत के दिन राहत है और नमाज़ की जज़ा जन्नत है नमाज़ इन्सान को अज़ाबे कब्र से बचाती है और मइयत के लिये आड़ बन जाती है और बन्दा कब्र के अज़ाब से महफूज़ रहता है और कयामत के दिन उसके चेहरे पर नूर होगा और जो लोग नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते वो अज़ाबे कब्र और कयामत की सख्तियों में मुब्तिला होंगे और उनका अंजाम बहुत बुरा होगा बिल आखिर वो जहन्नुम में दाखिल दिये जायेंगे।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

मगर दाहिनी तरफ वाले जन्नत के बागों में मुजरिमों से पूछते हैं कि तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख में ले गई वो कहेंगे हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे (सू0—मुदस्सिर—40)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जिस शख्स ने पाँच नमाज़ों की हिफाज़त की तो ये नमाज़ उसके लिये नूर होगी और जिसने इन नमाज़ों को छोड़ दिया उसका हथ फिरऔन और हामान के साथ होगा। (शुअबुल ईमान—3/46)

जो लोग अल्लाह व रसूल की इताअत करते हुये नमाज़ कायम करते हैं और अल्लाह तआला के दिये माल से अल्लाह की राह में खर्च करते हैं अल्लाह तआला उनके गुनाहों को बर्खा देता है और उनके दरजात को बुलन्द फरमाता है और उन पर रहमतों और बरकतों का नुज़ूल होता है और वही लोग सच्चे मुसलमान हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और जो नमाज़ कायम रखें और हमारे दिये में से हमारी राह में खर्च करें यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये दर्जे हैं इनके रब के पास और बरिश्श और इज़्जत की रोज़ी। (सू0—अनफ़ाल—3,4)

बाज़ लोग जुमे की नमाज़ को भी अहमियत नहीं देते जब दिल

चाहा पढ़ली नहीं तो छोड़ दी और माल कमाने और दुनियावी कामों में इतना मसरूफ़ हो जाते हैं कि उन्हें जुमे की नमाज़ की बिल्कुल परवाह नहीं रहती जैसे कभी उन्हें मरना ही न हो कब्र में जाना ही न हो और वो लोग योमे हिसाब से बे फ़िक्र होते हैं जबकि जुमा तमाम दिनो में अफ़ज़ल है और अल्लाह तआला ने जुमे को ईद करार दिया है और इस दिन में एक ऐसी साअत है जिसमें बन्दे की दुआ कुबूल होती है और गुनाहगारों की बख़्शिश होती है और इस दिन अल्लाह तआला की रहमत बरसती है और इस दिन में बहुत बरकतें हैं यहाँ तक कि शबे जुमा या रोजे जुमा अगर कोई फ़ौत हो जाये तो वो अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रहता है।

कुरान मज़ीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो जुमे के दिन जब नमाज़ की अज़ान हो तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दोड़ो और ख़रीद फ़रोख्त छोड़ दो ये तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह तआला का फज़ल तलाश करो और अल्लाह तआला को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ। (सू०—जुमा—9,—10)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स तीन बार (लगातार) जुमा की नमाज़ बिला उज़र छोड़ता है तो अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर लगा देता है।
(मुस्तदरक हाकिम—1 / 292)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला ने जुमा को मेरी उम्मत के लिये ईद करार दिया है।
(सही बुख़ारी—1 / 120)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
हर बालिग़ पर बाजिब है कि हर जुमा को गुस्ल करे।
(सही मुस्लिम—1 / 280)

हर इन्सान को दुनियाँ में ज़िन्दगी सिर्फ़ एक बार मिलती है और मौत के बाद फिर कोई इबादत और अमल का मौका नहीं मिलेगा

फिर तो उसके आमालो का बदला (सिला) मिलने का वक़्त शुरू होता है और जैसा जिसका अमल वैसा उसका बदला दिया जाता है इसलिये हमें चाहिये कि इस मौके और वक़्त को ज़ाया न करें और अल्लाह व रसूल की इताअत करें और नमाज़ के पाबन्द हो जायें और कसरत से नेक अमल करें और अपना शुमार मुर्दों में न करें क्योंकि मुर्दे नमाज़ नहीं पढ़ते और हम अभी ज़िन्दा हैं इसलिये हमें चाहिये कि जिस तरह हम दुन्यावी कामों को बड़ी फ़िक्र और ज़िम्मेदारी के साथ वक़्त पर करते हैं उससे भी ज़्यादा फ़िक्र के साथ नमाज़ की पाबन्दी करें और वक़्त ज़रूरत या मुकम्मल तौर पर मस्जिद में अज़ान दें और लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलायें इसका बहुत बड़ा सवाब है हदीस पाक में मुअज़्ज़िन के लिये बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने मस्जिद में अज़ान दी और लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया और ये काम रज़ाये खुदावन्दी के लिये किया तो उस शख्स को क़यामत के दिन हिसाब ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और न परेशानी में मुब्तिला होगा। (कंजुल उम्माल-5/832)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मुअज़्ज़िन की अज़ान जिन्न, इन्सान और जो भी चीज़ सुनती है वो क़यामत के दिन उस मुअज़्ज़िन के लिये गवाही देगी।
(सही बुख़ारी-1/86)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ये (रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम भी) अगले डर सुनाने वालो में से एक डर सुनाने वाले हैं आने वाली (क़यामत की घड़ी) करीब आ पहुँची अल्लाह के सिवा उसे कोई ज़ाहिर (और क़ायम) करने वाला नहीं है तो क्या तुम इस कलाम पर तआज्जुब करते हो और तुम हंसते हो और रोते नहीं और तुम (ग़फ़लत के) खेल में पड़े हो सो अल्लाह तआला के लिये सजदा करो और (उसकी) इबादत करो। (सू0-नज़्म-56,-62)

—: नमाज़ के आदाब :—

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक नमाज़ रोकती है बुराई और बेहयाई से (सू०—अनकबूत—45)

कुरान मजीद की इस आयत का मफ़हूम इस बात की दलालत करता है कि नमाज़ बुराई और बे हयाई से रोकती है लेकिन क्या वजह है कि हमारी बुराई और बे हयाई नहीं रुकती इस बात पर हमें ग़ौर करना चाहिये कि ऐसा क्यों है तो जब हम इस बात पर ग़ौर करें तो हमें पता चलता है कि नमाज़ के जाहिरी आदाब तो हम बजा लाते हैं लेकिन बातिनी आदाब अदा नहीं करते यानी नमाज़ में हमारा दिल दुनियाँ की रग़बतों और लज़्ज़तों के ख़्यालों में खोया रहता है यानी हमारा जिस्म तो नमाज़ में होता है लेकिन हमारा दिल कहीं और होता है और जब हम इस तरह की नमाज़ पढ़ते हैं तो हमारी नमाज़ कुबूल नहीं होती और न हमसे हमारी बुराइयाँ दूर होती हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआला उस नमाज़ को कुबूल नहीं करता जिसमें आदमी अपने जिस्म के साथ अपने दिल को भी हाज़िर न करे।
(दुर्र मन्सूर—5/4)

जब कोई शख्स सही तरीके से वुजू करे फिर अपने जिस्म के साथ साथ अपने दिल को भी अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जै करे और कोई भी दुन्यावी ख़्याल ज़हन में न लाये और अपने जिस्म और दिल का तआल्लुक अपने रब के साथ जोड़कर पूरे आदाब के साथ नमाज़ अदा करे तो ऐसे शख्स के लिये नमाज़ उसके हक़ में अल्लाह तआला से दुआ करती है और नमाज़ी के लिये बख़्शिश व मग़फ़िरत की सिफ़ारिश करती है और जब कोई शख्स इस तरह नमाज़ पढ़ता है कि उसका जिस्म तो नमाज़ में होता है और दिल दुन्यावी ख़्यालों में होता है तो ऐसे शख्स की नमाज़ उसके लिये बददुआ करती है और कहती है कि ऐ बन्दे जिस तरह तूने मुझे ज़ाया किया अल्लाह तआला तुझे भी ज़ाया (बर्बाद) करे और नमाज़ उसके मुँह पर मार दी जाती है अल्लाह तआला फ़रमाता है नमाज़ मोमिन की मेअराज है लेकिन ये रुहानी मेअराज तब है कि जब

बन्दा अपने नफ़्स को पाक करे और अपने दिलो दिमाग में दुनियावी ख्याल को न आने दे और दुनियावी तमाम मामलात से अपना तआल्लुक क़ता करे और सिर्फ़ अल्लाह तआला से अपना तआल्लुक जोड़े और नमाज़ में खुशूअ व खुजूअ पैदा करे तब ये नमाज़ मोमिन की मेअराज बनती है और अल्लाह तआला की उसे कुरबत (नज़दीकी) हासिल होती है और उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब बन्दा नमाज़ में खड़ा होता है और ख़ाहिश चेहरा और दिल अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जै होता है तो वो यूँ लौटता है जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ है (यानी उसके तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं) (कंजुल उम्माल-7/302)

इन्सान को मिट्टी से पैदा किया गया और मिट्टी में ही मिल जाता है इसलिए इन्सान को चाहिए कि खुद की हकीकत को ज़हन में रखे और जब अपने ख़ालिक व मालिक के सामने नमाज़ में खड़ा हो तो खुद को गुलामों की तरह तसव्वुर करे और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से किनारा कशी इख़्तियार करे और किसी चीज़ का ख़्याल दिल में न लाये फिर जब वो इस हालत में सज्दा करता है तो उसका सर सज्दे से उठ भी नहीं पाता उससे पहले अल्लाह तआला उसे अपनी कुरबत में ले लेता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
सज्दा करके कुर्ब (नज़दीकी) खुदाबन्दी हासिल करो।
(सू0-अलक-19)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बन्दा पोशीदा सज्दे से बढ़कर किसी चीज़ के साथ अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल नहीं करता। (कंजुल उम्माल-3/26)

जब हम अल्लाह तआला के घर (मस्जिद) में नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो हमें ये ख़्याल करना चाहिए कि हम उस रब तआला के दरबार में खड़े हैं जो तमाम ज़हानों का ख़ालिक व मालिक है जहाँ बड़े-बड़े बादशाह व हाकिम और अमीर ग़रीब सब अपने सरों को

झुकाते हैं और उस रब के सामने अदना बन्दे की कोई हैसियत नहीं और हम अपनी पेशानी नाक हाथ घुटने सब ज़मीन से मिला देते हैं क्योंकि हम परवरदिगार के सामने सज्दा रेज़ होते हैं और इस हालत में बन्दा अपने रब के सबसे ज़्यादा करीब होता है तो उस वक़्त हमारे दिलो दिमाग़ में दुनियाँ की किसी भी चीज़ का ख़याल नहीं होना चाहिए क्योंकि ख़ालिक और मख़लूक की मुहब्बत दोनों एक साथ जमा नहीं हो सकती और इस हालत में अपने रब से आजिज़ी व इन्क़सारी का इज़हार करें और अपने रब से दुआ करें यही नमाज़ के बातिनी आदाब हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
बेशक उन मोमिनों ने फ़लाह पाई जो अपनी नमाज़ में खुशूअ करते हैं। (सू०—मु—मिनून—१,—२)

इरशादे बारी तआला है—
और वो लोग जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त (निगेहबानी) करते हैं यही लोग (जन्नत के) वारिस हैं ये लोग जन्नत के आला बागात (जहाँ तमाम नेअमतेँ और राहतें और कुर्बे इलाही की लज़्ज़तों की कसरत होगी उन) की विरासत भी पायेंगे वो उनमें हमेशा रहेंगे। (सू०—मु—मिनून—९,—११)

जब हम नमाज़ के लिये क़याम करें तो अपने अन्दर ऐसी कैफ़ियत पैदा करें कि हम अपने रब के सामने खड़े हैं और अपने रब को देख रहे हैं और अगर हम ये हालत पैदा न कर सकें तो कम अज़ कम ये हालत पैदा करें कि मेरा रब मुझे देख रहा है और ये हालत इन्सान को नमाज़ के ज़ाहिरी आदाब के साथ साथ बातिनी आदाब को अदा करने में मददगार साबित होगी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अल्लाह तआला की इबादत इस तरह करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम ये गुमान नहीं कर सकते तो ये गुमान करो कि वो हमें देख रहा है। (सही बुख़ारी—१/१२)

हज़रत गौसुल आजम अब्दुल कादिर जीलानी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नमाज़ में जब तशहूद के लिये कायदा में बैठो और जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर सलाम भेजो यानी जब अत्तह्यातु पढ़ो और जब अस्सलामु अलैका अइयुहन नबीइयु व रहमतुल्लाही व बराकातहु पढ़ो तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का ज़ाहिरी गुमान दिलों दिमाग़ में होना चाहिए कि हम अपने प्यारे आका मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को सलाम अर्ज़ कर रहे हैं और वो हमें गुम्बदे ख़ज़रा से जबाब दे रहे हैं ताकि अल्लाह तआला की कुरबत के साथ साथ हमें सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की कुरबत भी हमें नसीब हो क्योंकि जो कुछ हमें मिला वो हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल मिला है और जो कुछ हमें आख़िरत में मिलेगा वो भी उन्हीं के तुफ़ैल मिलेगा।

और सलाम फेरते वक़्त अगर बा जमाअत हो तो ये गुमान करना चाहिये कि हम मुक्तदियों को सलाम कर रहे हैं और अगर तन्हा नमाज़ पढ़ो तो ये गुमान करना चाहिये कि हम फ़रिश्तों को सलाम कर रहे हैं।

और आदाबे नमाज़ के साथ साथ मस्जिद के आदाब का भी ख़याल रखना चाहिये क्योंकि मस्जिद अल्लाह तआला का घर है और जब मस्जिद में दाख़िल हों तो सबसे पहले दो रकाअत नमाज़ (तहय्यतुल मस्जिद) अदा करें इस नमाज़ का बड़ा सबाब है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअत पढ़े। (सही मुस्लिम—1/248)

और कोई भी बदबूदार चीज़ जैसे बीड़ी सिगरेट तम्बाकू प्याज़ लहसुन वगैराह का इस्तेमाल करके मस्जिद में दाख़िल नहीं होना चाहिये क्योंकि इससे और नमाज़ियों को तकलीफ़ होती है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने बदबूदार चीज़ें खाकर मस्जिद में आने को मना फ़रमाया बल्कि साफ़ कपड़े और खुशबू लगाकर मस्जिद में दाख़िल होना चाहिये और मस्जिद को हर तरह की बदबू और गन्दगी से पाक रखना चाहिये और मस्जिद में शोर शराबा नहीं करना चाहिये यहाँ तक कि मस्जिद में तेज़ आवाज़ से

बोलने की भी मुमानियत है और अपने कदमों को मस्जिद में धीरे-धीरे रखना चाहिये क्योंकि तेज़ कदम से मस्जिद में धमक पैदा होती है जो मस्जिद के आदाब के खिलाफ़ है और लोगों की गर्दने फलौंघते हुए आगे नहीं जाना चाहिये बल्कि जहाँ जगह मिल जाये वहीं बैठ जाना चाहिये और जो लोग लोगों की गर्दने फलौंघते हुये आगे जाते हैं क़यामत के दिन ऐसे लोगों की पीठ दोज़ख़ का पुल होगा और लोग उसे पामाल करेंगे और मस्जिद में कोई बेहूदा कलाम न कहें और न किसी को अज़िज़त पहुँचायें और गर्मी व धूप का परवाह न करें क्योंकि दुनियाँ की गर्मी व धूप क़यामत के मुक़ाबले कुछ भी नहीं है और कभी नमाज़ी के आगे से न गुज़रें क्योंकि नमाज़ी के आगे से नमाज़ की हालत में गुज़रना बहुत बड़ा गुनाह है।

हदीस पाक में है सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अगर लोग जानते कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने का क्या अज़ाब है तो लोग चालीस साल तक खड़े रहते लेकिन नमाज़ी के आगे से न गुज़रते। (कंजुल उम्माल-7/355)

जो लोग तमाम कोशिशों के बावजूद नमाज़ में बातिनी आदाब नहीं ला पाते और नमाज़ में उन्का दिलो दिमाग़ भटक कर दुन्यावी मामलात में चला जाता है तो उन्हें चाहिये कि हज़रत अली करमल्लाहु वजहुल करीम की नमाज़ का तरीक़ा इख़्तियार करें कि जब वो नमाज़ पढ़ते थे तो उनके जिस्म का कोई भी उज़ू (अंग) हरकत नहीं करता था तो उन्हीं का तरीक़ा इख़्तियार करें और क़याम रुकूअ सुजूद और कायदा में अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) को बे वजह हरकत (हिलने डुलने) से बचायें और गुमान करें कि हम रब तआला की बारगाह में खड़े हैं और मेरा रब हमें देख रहा है और अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमें नमाज़ के ज़ाहिरी और बातिनी आदाब अदा करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारी तमाम नमाज़ों को अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल कुबूल फ़रमाये।

—: जिक्रे इलाही :—

जमीनों आसमानों में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह तआला का जिक्र न करती हो हर एक ज़र्रा अल्लाह तबारक व तआला की हम्द के साथ उसकी तसबीह (पाकी) बयान करता है लेकिन हम उसे सुन नहीं सकते जिस तरह हवा को हम देख नहीं सकते क्योंकि इसमें हिकमते इलाही है और हमारे लिये बेहतरी है क्योंकि दुनियाँ में हम तमाम चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं अगर हम उनकी तसबीह सुनने की कुदरत रखते तो हमें उनके इस्तेमाल में दुश्वारी दरपेश आती और हर चीज़ के इस्तेमाल की मुख्तलिफ़ सूरतें होती हैं जैसे पानी का इस्तेमाल हम खाने पीने और तहारत (पाकी) के अलावा ग़लाज़तों व नजासतों को साफ़ व दूर करने के लिये भी करते हैं तो इसी तरह दीगर चीज़ों का इस्तेमाल भी मुख्तलिफ़ सूरतों में होता है इसलिये अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों के जिक्र को हमारी भलाई व बेहतरी के लिये पोशीदा रखा ताकि हमें ज़िन्दगी गुज़ारने में दुश्वारी न हो।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उसमें है सब अल्लाह तआला की तसबीह करते हैं (कायनात में) कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी हम्द के साथ तसबीह न करती हो लेकिन तुम उसकी तसबीह को समझ नहीं सकते। (सू०—बनी इसराईल—44)

अल्लाह तआला की मख़लूक में सबसे अफ़ज़ल तरीन मख़लूक इन्सान है और तमाम इन्सानों में सबसे अफ़ज़ल मुसलमान हैं और मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल वो है जो सबसे ज़्यादा कसरत से अपने रब का जिक्र बुलन्द करते हैं और उनके दिल अल्लाह तआला के जिक्र से मुनव्वर और मुतमईन होते हैं और जिनकी जुबानें अल्लाह तआला के जिक्र से थकती नहीं हैं और ऐसे लोग कुर्बे इलाही की तमाम मन्ज़िलों को तय करते हुये अपने रब के मुक़र्रब और ख़ास बन्दे हो जाते हैं और अल्लाह तआला अपने पसंदीदा बन्दों का चर्चा आसमानों में अपने फ़रिश्तों के सामने करता है और जो लोग अपने रब का जिक्र कसरत से करते हैं वो अल्लाह तआला की अमान में रहते हैं और उन्हीं के दिल चैन पाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूँगा और मेरा हक मानो
और मेरी ना शुक्री न करो। (सू०—बकराह—152)

इरशादे बारी तआला है—

वो जो ईमान लाये उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं
सुन लो अल्लाह की याद में ही दिलों का चैन है। (सू०—राअद—28)

अल्लाह तआला के जिक्र के मुकाबले दुनियाँ की तमाम नेअमतेँ
हकीर हैं क्योंकि जो नेअमतेँ हमें मयस्सर हुई हैं उनका अंता करने
वाला रब्बुल आलमीन है और ये नेअमतेँ हमसे एक दिन जुदा हो
जायेंगी लेकिन अल्लाह तआला के जिक्र का अजर (सवाब) कयामत
तक हमारा साथी और मददगार होगा और अल्लाह तआला की
रहमत और हमारी बख्शिश का सबब बनेगा और अल्लाह तआला
का जिक्र उसकी खुशनुदी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है।

हदीस पाक में है कि अल्लाह तआला फरमाता है—

कि मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वो मेरा जिक्र करता है
(मुस्नद अहमद—2/540)

जब कुछ लोग मिलकर अल्लाह तआला के जिक्र के लिये मजलिस
मुनअकिद करते हैं तो वो मजलिस जन्नत का बाग़ होती है क्योंकि
वहाँ जिक्रे इलाही बुलन्द किया जाता है और उस मजलिस में बहुत
से फरिश्ते जमा होते हैं और उस मजलिस को फरिश्ते अपने परो
से ढाँप लेते हैं और जिक्र इलाही सुनने में मशगूल हो जाते हैं और
उस मजलिस पर अल्लाह तआला की रहमतों का नुजूल होता है
हत्ता कि मजलिस उठने से पहले अल्लाह तआला उन तमाम लोगों
को बख्श देता है जो उस मजलिस में शिरकत करते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

मजलिसे जिक्र जन्नत के बागात हैं। (मुस्नद अहमद—3/150)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

जब कुछ लोग अल्लाह तआला के जिक्र के लिये बैठते हैं तो

फ़रिश्ते उनको ढाँप लेते हैं और उन पर रहमतों का नुजूल होता है और अल्लाह तआला फ़रिश्तों की मजलिस में उनका ज़िक्र करता है। (सुनन इब्ने माजा-277)

अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनियाँ में बेशुमार नेअमतों से नवाज़ा है जिनका शुमार करना ना मुमकिन है इसके बावजूद भी बाज़ लोग अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करते और दुनियाँ और उसकी आराइश में इस क़दर मुब्तला हो जाते हैं कि जिस रब ने उन्हें ये नेअमतें अता की उस रब को ही भूल जाते हैं कितने बदकिस्मत और एहसान फ़रामोश हैं वो लोग जो रब तआला के ज़िक्र से गाफ़िल रहते हैं और यही लोग अल्लाह तआला की नाराज़गी और ग़ज़ब का शिकार होते हैं।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भुला बैठे हैं तो अल्लाह तआला ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं वही लोग फ़ासिक हैं। (सू0-हथ-19)

इरशादे खुदा वन्दी है—
और क्या उन्होंने न देखा जो चीज़ अल्लाह तआला ने बनाई है उसकी परछाइयाँ दाहिने बाँये अल्लाह की तरफ़ झुकती और सजदा करती हैं। (सू0-नहल-61)

किसी शख्स को अगर पूरी दुनियाँ की दौलत और हुकूमत दे दी जाये तब भी उसका दिल राहतो सुकून और चैन नहीं पा सकता जब तक कि वो अपने दिल को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से मुनव्वर न करले और ज़िक्रे इलाही की कसरत से मुअत्तर न कर ले और बन्दा जब अल्लाह तआला के ज़िक्र से मुँह फेरता है तो अल्लाह तआला भी उस बन्दे से अपना रुख़ फेर लेता है और अल्लाह तआला और उस बन्दे के दरमियान तआल्लुक मुनक़ताअ हो जाता है और अल्लाह तआला उस बन्दे को शैतान का साथी बना देता है और उसकी ज़िन्दगी तंगदस्त कर देता है और उस पर बलायें नाज़िल होती हैं और आख़िरत में वो बदकारों के साथ उठाया जायेगा उस पर कई तरह के अज़ाब मुसल्लत किये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

और जो शख्स रहमान के जिक्र से मुँह फेरे हम उसके लिये एक शैतान मुकर्रर कर देते हैं जो उसका साथी होता है।

(सू०—जुखरुफ़—23)

इरशादे बारी तआला है—

और जिसने मेरी याद से मुँह फेरा उसके लिये तंग ज़िन्दगानी है और क़्यामत के दिन हम उसे अन्धा उठावेंगे। (सू०—ताहा—124)

इरशादे बारी तआला है—

पस उन लोगों से मुँह फेर लें जो हमारे जिक्र से मुँह फेरते हैं।

(सू०—नज्म—29)

अल्लाह व रसूल की नाफरमानी करने वाले अल्लाह तआला के अज़ाब को चैलेन्ज कर रहे हैं और उनके दिलों में उसके अज़ाब से बे फिक्री और बे ख़ौफी है और वही लोग उसके जिक्र से गाफ़िल और बे परवाह होते हैं ऐसे लोग दोज़ख़ के ज़्यादा मुस्तहिक और सज़ावार होते हैं।

जब हमारा नफ़्स बिला ज़रूरत लोगों से मुलाकात व उनकी ज़ियारत और उनसे मेल—जोल का मुश्ताक़ हो तो समझ लो कि हम फिज़ूलपन व दीन से ऐराज़ और जिक्रे इलाही से ग़फ़लत और नफ़्स के धोके में मुब्तिला हो गये हैं इन्सान का नफ़्स शहवात व लज़ज़ात की तलब में जिक्रे इलाही से गाफ़िल हो जाता है और उस पर शैतान का वसवसा जो हमें बहकाने और गुमराह करने के मन्सूबे बनाता रहता है ऐसे नफ़्स और शैतान से सुलह या रहम की उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती है बल्कि वो हर वक़्त हमें हलाक़ करने की कोशिश में लगा रहता है इसलिये हमें चाहिये कि ऐसे दुश्मन से बे ख़ौफ़ या गाफ़िल रहना बहुत बड़ी ग़लती व हिमाक़त है जो हमारी हलाक़त की वजह हो सकती है इसलिये इस नफ़्स के धोके और फ़रेब और इसकी मक्कारियों से हमें बचना और तवज्जै के साथ चौकन्ना रहना चाहिये और इस पर काबू और ग़ालिब रहने के लिये हर वक़्त कोशिश व तदाबीर करते रहना चाहिये।

—: रोज़े की फज़ीलत :—

रमज़ान तमाम महीनों में सबसे अफ़ज़ल महीना है और ये बरक़त व रहमत और मग़फ़िरत का महीना है हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया रजब अल्लाह तआला का महीना है और शअबान मेरा और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है एक और मक़ाम पर रमज़ान की फज़ीलत के मुताअल्लिक आपने इरशाद फ़रमाया वो शख़्स हलाक और बर्बाद हो जाये जिसे रमज़ानुल मुबारक का महीना मिले और वो अपनी मग़फ़िरत न करा पाये तो जब रमज़ान का महीना आये तो चाँद देखकर रोज़े की इब्तिदा करें और अगर अब (बादल) या गुबार हो तो तीस की गिनती पूरी करें और दूसरे दिन से रोज़ा रखें।

हदीस पाक में है—

जब तक चाँद न देखो रोज़ा न रखो अगर तुम्हारे सामने अब या गुबार हो तो तीस की गिनती पूरी करो (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात—174)

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो अल्लाह तआला के साथ खुसूसी निसबत रखती है तमाम इबादत ज़ाहिरी इबादत में शुमार होती है लेकिन रोज़ा बातिनी इबादत है लोग ज़ाहिरी अमल व इबादत को देखते हैं लेकिन अल्लाह तआला बन्दे का बातिनी अमल व इबादत को देखता है और उसे पसन्द फ़रमाता है और रोज़े की जज़ा अल्लाह तआला बे हिसाब अता करता है क्योंकि बन्दा रोज़े की हालत में अपनी तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अल्लाह तआला की रज़ा के लिये लिये छोड़ देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है हर नेकी का सबाब दस से लेकर सात सौ गुना तक है सिवाय रोज़े के बेशक रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसकी जज़ा दूँगा। (सही मुस्लिम—1/363)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशादे फ़रमाया—
उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि रोज़दार के मुँह की बू (खुशबू) अल्लाह तआला के नज़दीक कस्तूरी

(मुश्क) से ज़्यादा खुशबूदार है नीज़ फ़रमाया कि उसने अपनी ख़्वाहिश को खाने और पीने को मेरी वजह से रोका तो रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसकी जज़ा दूँगा। (सही बुख़ारी—1/254)

रोज़ेदार रोज़े की हालत में फ़रिश्तों के मिस्ल होता है क्योंकि वो जुहदो तक़्वा इख़्तियार करता है और अपने जिस्म के तमाम आज़ा (अंगो) को बुराई और गुनाहों से बचाता है और वो ये सब कुछ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये करता है और ऐसे रोज़ेदार से अल्लाह तआला राज़ी होता है और अल्लाह तआला ऐसे रोज़ेदार का सोना भी इबादत में लिखता है और उसकी दुआयें कुबूल फ़रमाता है और वो जो कुछ अपने रब से माँगता है रब तआला उसे अता फ़रमाता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
रोज़ेदार की दुआ रद् नहीं होती। (मुस्नद अहमद—2/477)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
रोज़ेदार का सोना भी इबादत है। (कंजुल उम्माल—8/443)

भूके और प्यासे रहने और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने का नाम रोज़ा नहीं है बल्कि इसके साथ-साथ अपने जिस्म के हर आज़ा (अंगो) को बुराई से बचाने और अपने दिल को बदख़्याली से बचाने का नाम रोज़ा है जैसे जुबान को बेहूदा गुप्तगू झूठ ग़ीबत चुगली बद कलामी से पाक रखना और खुद को जुल्म व ज़्यादती व रियाकारी से दूर रखना और दीगर गुनाहों से खुद की हिफ़ाज़त करना और खुद को ज़िक्रे इलाही व नमाज़ और कुरान मजीद की तिलावत में मशगूल रखना और अपने कानों से वो बात न सुने जो मकरुह व हराम हो और अपनी नज़र को हर बुरी चीज़ व शहबत से महफूज़ रखना और अपने हाथ और पाँव को बुराई और गुनाहों से बचाना सही मायनों में असल रोज़ा यही है और जो शख्स रोज़े की हालत में इन तमाम बातों को अमल में लाता है वो जुहदो तक़्वा की मंज़िल पर फ़ाइज़ होता है और उसका रोज़ा अल्लाह तआला की बारगाह में बुलन्द मक़ाम और मक़बूलियत का दर्जा रखता है हत्ता कि उसकी बरिख़िश हो जाती है और उस बन्दे का ज़िक्र अल्लाह तआला फ़रिश्तों में करता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला रोज़दार का ज़िक्र फ़रिश्तों में करता है और फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तो मेरे बन्दे की तरफ़ देखो कि उसने अपनी शहवत व खाना और पीना मेरी रज़ा की खातिर छोड़ दिया है। (कंजुल उम्माल-15/776)

और जो लोग रोज़े की हालत में बुराई और गुनाहों से परहेज़ नहीं करते और अपने जिस्म के आज्ञा (अंगों) को गुनाहों से महफूज़ नहीं रखते उनका रोज़ा अल्लाह तआला की बारगाह में कुबूल नहीं होता और उन्हें अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

कितने ही रोज़दार ऐसे हैं जिनको अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। (सुनन इब्ने माजा-122)

रोज़ा ईमान का चौथा हिस्सा है हदीस पाक में है रोज़ा सब्र का निस्फ़ (आधा) है और सब्र ईमान का निस्फ़ है रोज़ा सब्र के ज़रिये अल्लाह तआला से खुसूसी निसबत रखता है रोज़ा शैतान को कमजोर और उसके रास्तों को तंग कर देता है और इन्सान में शैतानी वसवसों को रोकने और नफ़्सानी ख्वाहिशात व शहवात को तोड़ने में मददगार होता है रोज़ा इन्सान के ईमान में मज़बूती और निखार लाता है और दिलों की तारीकियों को मिटा कर ईमान के नूर से रोशन करता है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

हर चीज़ का एक दरवाज़ा है और इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है। (कंजुल उम्माल-8/448)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जब रमज़ानुल मुबारक का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नुम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों के बेड़ियाँ डाल दी जाती हैं और एक पुकारने वाला पुकारता है ऐ ख़ैर के मुतलाशी आगे बढ़ और बुराई ढूँढ़ने वाले रुक जा। (जामअ तिमिज़ी-1/132)

निफिली रोज़ों से मुताअल्लिक चन्द अहादीस—
माहे रमज़ान के बाद अफ़ज़ल रोज़े माहे मुहर्रम के रोज़े हैं।
(सही मुस्लिम—1/368)

मुहर्रमुल हराम के हर एक दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (तिबरानी)

योमे आशूरा (मुहर्रम की दस तारीख़) का एक रोज़ा एक साल कबूल के गुनाह मिटा देता है। (सही मुस्लिम)

अरफ़ा (ज़िल हिज्जा की नौ तारीख़) का एक रोज़ा एक साल कबूल के गुनाह मिटा देता है। (बुख़ारी, मिश्कात)

जिसने रमज़ान के बाद छः (6) रोज़े रखे तो गोया उसने पूरे साल रोज़े रखे। (मुस्लिम, मिश्कात)

हर महीने की 13,14,15 तारीख़ का रोज़ा ऐसा है कि जैसे हमेशा का रोज़ा। (बुख़ारी तिर्मिज़ी)

जिसने माहे रजब की सत्ताइस (27) तारीख़ का रोज़ा रखा और रात बेदारी और डूबादत में गुज़ारे तो गोया उसने सौ (100) साल के रोज़े रखे और सौ (100) साल शबे बेदारी की। (शुअबुल ईमान)

—: हज की फज़ीलत :—

हज इस्लाम का चौथा रुकन है और हज करना हर आकिल बालिग़ मुसलमान साहिबे निसाब पर फ़र्ज है और अगर कोई शख्स इसकी ताक़त के बावजूद बिना शरई उज़र ताख़ीर (देर) करता है तो वो गुनाहगार और बिना शरई उज़र इसे छोड़ने वाला फ़ासिक है और अज़ाबे जहन्नुम का मुस्तहिक है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और अल्लाह तआला के लिये उन लोगों पर बैतुल्लाह शरीफ़ का हज फ़र्ज है जो उसकी तरफ़ जाने की ताक़त रखता है।
(सू०—आले इमरान—97)

इरशादे बारी तआला है—
और अल्लाह तआला के लिये हज व उम्राह को पूरा करो।
(सू०—बकराह—196)

अल्लाह तआला जिस शख्स को हज करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये तो उसे चाहिये बिना ताख़ीर फौरन हज की तैयारी करे और मनासिके हज अदा करे कि कहीं ऐसा न हो कि उसे मौत आ जाये और वो इस इबादत से महरूम रह जाये और गुनाहगार बन कर दुनियाँ से रुख़सत हो जाये।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो आदमी ताक़त के बावजूद हज किये वग़ैर मर जाये तो वो यहूदी मरा या ईसाई मरा। (जामअ तिमिज़ी—1 / 140)

हज की बे शुमार फज़ीलतें हैं और हर शख्स को चाहिये कि नेक नीयत से हज का इरादा करे और उसमें ज़र्रा बराबर भी रिया न हो सिर्फ़ रब तआला की रज़ा के लिये मनासिके हज अदा करे जो शख्स नेक नीयत और रब तआला की रज़ा हासिल करने के लिये हज के इरादे से घर से निकलता है तो वापसी आने तक वो अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में होता है अगर उसे इस दरमियान मौत आ जाये तो अल्लाह तआला उसे क़यामत तक हज व उम्राह

का सवाब अता फरमाता है और बाद हज उसे मौत आ जाये तो शहादत का दर्जा पाता है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— जो शख्स अपने घर से हज या उम्राह के इरादे से निकला और रास्ते में मर जाये तो उसे कयामत तक हज व उमराह का सवाब अता किया जायेगा और जो शख्स मक्का मुअज्जमा या मदीना मुनव्वरा में इन्तकाल कर जाये वो बिला हिसाब जन्नत में दाखिल होगा। (शुअबुल ईमान—3/474) (वैहकी—5/244)

जो लोग रियाकारी, (दिखावा) तिजारत और सैरो तफरीह के लिये हज करते हैं उनका हज कुबूल नहीं होता बल्कि वो लोग गुनाहगार होते हैं बसा औकात देखा गया है कि जब कोई शख्स बैतुल्लाह शरीफ के हज का इरादा करता है और जाने से पहले लोगों से मुलाकात करता है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग जान जायें कि मैं हज करने जा रहा हूँ और मेरी वापसी पर लोग मुझे हाजी कहें और मेरी इज्जत करें और ऐसे ख्यालात के बाइस उसके अन्दर रिया हाइल हो जाती है इसके अलावा जाने से पहले लोगों की दावत में फिजूल खर्च करता है और लोगों की मुबारक बाद और खुशामदों का मुश्ताक होता है और ये तमाम बातें रिया पर मुश्तमिल हैं जो सख्त गुनाह हैं और वो इस तरह अपने हज को ज़ाया कर देता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया— एक ज़माना ऐसा आयेगा कि लोग सैरो तफरीह और रियाकारी के लिये हज करेंगे। (तारीखे बगदाद—290)

इसलिये हमें चाहिये कि इन बातों पर गौर करें और लोगों से मुलाकात करते वक्त खुद को रिया (दिखावा) से बचायें और किसी तरह की फिजूल खर्ची न करें और हर इबादत सिर्फ अल्लाह तआला के लिये है और अल्लाह तआला ही उसका अजर (सवाब) देता है और लोगों को दिखावा करने से हमें कुछ भी हासिल नहीं होता सिवाये गुनाह के और न ही लोग हमारा कुछ भला कर सकते हैं सिवाये अल्लाह के इसलिये नेक नीयत व इखलास व अच्छे अखलाक और शरई अहकामात के साथ मनासिके हज अदा करें।

और घर से निकलने से लेकर वापसी आने तक ये कोशिश करें कि छोटे से छोटा गुनाह भी हम से वाकैअ न हो और ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल करें और हज के दौरान किसी को अज़िज़यत (तकलीफ़) न दें और लोगों से जो अज़िज़यत मिले उस पर सब्र व ज़ब्त करें और लड़ाई झगड़ा गुस्सा गीबत झूठ शहवत और हर बुरे काम से बचें और खुशदिली और रज़ाये इलाही की नीयत के साथ मनासिके हज अदा करें ताकि हमारा हज बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल हो और मक़बूल हज की जज़ा मग़फ़िरत और जन्नत है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया और उसने न तो कोई गुनाह किया और न बेहयायी की बात की तो वो अपने गुनाहों से इस तरह बाहर आयेगा जिस तरह वो बच्चा जिसे उसकी माँ ने अभी जना हो (सही मुस्लिम—1/436)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मक़बूल हज दुनियाँ और जो कुछ उसमें है से बेहतर है और मक़बूल हज की जज़ा जन्नत है। (सही मुस्लिम—1/436)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मक़बूल हज की जज़ा जन्नत है तो आप से अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह हज की मक़बूलियत किस चीज़ के साथ है आप ने इरशाद फ़रमाया अच्छी गुप्तगू और खाना खिलाना।
(मजमउज़वाइद—3/207)

अल्लाह तआला जमीन वालो की तरफ़ जब नज़रे रहमत करता है तो सबसे पहले हरम वालो की तरफ़ करता है और हरम में सबसे पहले मस्जिदे हराम की तरफ़ नज़रे रहमत करता है और उनमें से जो लोग नमाज़ पढ़ते या तवाफ़ करते या काबा शरीफ़ की ज़ियारत करते अल्लाह तआला उन्हें बख़्श देता है और यहाँ हर नेकी का सबाब हजारों गुना मिलता है पस हमें चाहिये कि अपनी जैब और जीनत को इस्तिथार न करें बल्कि गुलामों की तरह अपने रब की बारगाह में हाज़िरी दें और शहवतों व लज़्ज़तों और बुरी ख़्वाहिशों से परहेज़ करते हुये नेक नीयत और इख़लास के साथ मनासिके हज अदा करें।

—: ज़ियारते मदीना मुनव्वरा :—

मदीना मुनव्वरा बड़ी फज़ीलतों वाला शहर है जहाँ सरवरे कायनात रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जलवये अफ़रोज़ है जहाँ बेशुमार फ़रिश्तों की आमद होती है और बेशुमार रहमतों और बरकतों का नुजूल होता है तो जब हम उनके रोज़े मुबारक में हाज़िरी का शरफ़ पायें तो बा अदब और एहताराम के साथ रोज़े मुबारक में हाज़िर हों और रोज़ये अक़दस में खुशूअ व खुजूअ के साथ दाख़िल हों और शोर शराबा व तेज़ आवाज़ में कलाम न करें बल्कि इस तरह पेश आयें कि वो हमारे आका है और हम उनके गुलाम हैं

और वो तरीक़ा इख़्तियार करें जो आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की हयाते तइयबा में तमाम सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम का तरीक़ा था कि जब सहाबा किराम (रज़ि०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सामने पेश होते तो उनकी ताज़ीम व अदब और एहताराम किया करते थे और उन्होंने कभी ऊँची आवाज़ में आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से कलाम न किया और इसके अलावा दुरुदो सलाम के नज़राने पेश करें और दुआ अस्तग़फ़ार व नमाज़ और कुरान मजीद की तिलावत में मशगूल रहें और कोई ऐसा काम न करें जो शरई तौर पर नाजाइज़ व हराम हो और मस्जिदे नबवी में ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ पढ़ें क्योंकि इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का सवाब हजार गुना ज़्यादा मिलता है।

और हर बुरी और ममनूअ बातों को तर्क कर दें हुस्ने अख़लाक को इख़्तियार करें और किसी को अज़िज़यत न पहुँचायें बल्कि लोगों की मदद करें और उनके साथ नरमी बरतें और ये अकीदा रखें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हमारी हाज़िरी और ज़ियारत को जानते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु ने फ़रमाया—जो शख्स मेरी कब्र के नज़दीक मुझ पर दुरुद पढ़े मैं उसको जानता हूँ। (अलकौलुल बदीअ—154)

और खास बात ये है कि जब मदीना मुनव्वरा जाने का इरादा करें तो सिर्फ़ ये नीयत करें कि हम हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के रोज़े मुबारक की ज़ियारत को जा रहे हैं क्योंकि इस नीयत के सबब हमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की कुरबत मिलती है जो क़यामत के दिन शफ़ाअत का सबब बनेगी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। (मजमउज्जवाइद-4/2)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है मेरी इस मस्जिद (नबवी) में एक नमाज़ मस्जिदे हराम के अलावा दीगर मस्जिद से एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।
(सही मुस्लिम-1/447)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
जिसने मदीना तइयबा की सख़्ती और शिद्दत पर सब्र किया मैं क़यामत के दिन उसकी सिफ़ारिश करूँगा। (सही मुस्लिम-1/444)

मदीना वो शहर है जिसे अल्लाह तआला ने अपने महबूब के लिये पसन्द फ़रमाया और जब मदीने की ज़मीन पर चलें तो बड़े सुकून और संजीदगी के साथ क़दम रखें और तसव्वुर में लायें कि इस ज़मीन पर मेरे मुस्तफ़ा के क़दम मुबारक लगे हैं और मदीना मुनव्वरा की किसी चीज़ को ज़रूर व नुकसान न पहुँचायें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिस शख्स ने अहले मदीना के साथ ज़र्ज़ बराबर भी ज़्यादती का इरादा किया तो अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ की आग में डालकर यूँ ख़त्म कर देगा जैसे नमक पानी में घुलकर ख़त्म हो जाता है।
(सही मुस्लिम-1/445)

एक और मक़ाम पर आपने इरशाद फ़रमाया—
जिसने मदीना में कोई हादसा बपा किया उस पर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है उसके न निफ़िल कुबूल किये जायेंगे न फ़र्ज़। (सही बुख़ारी-1/251)

—: मौत और उसकी सख्तियाँ :—

दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं जिसे मौत का मज़ा न चखना हो चाहे बादशाह हो चाहे भिकारी एक न एक दिन मौत उसे अपनी आगोश में ले लेती है और बड़े-बड़े बादशाह हाकिम व मालदार व गरीब को दुनियाँ के उजालों से उठाकर अंधेरी क़ब्र में ले जाती है और इन्सान दुनियाँ की आराइश व लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों को छोड़कर ज़मीन के नीचे पहुँच जाता है और मौत इन्सान को नरम मुलायम बिस्तरों से उठाकर खाक पर लिटा देती है।

काफ़िर के लिये क़ब्र अंधेरी तंग कोठरी है और उसके लिये क़ब्र में मुख़्तलिफ़ अज़ाब हैं और मोमिन के लिये मौत दुनियाँ की मशक्कतों मुसीबतों व परेशानी से अज़ादी और जन्नत का बाग़ है अल्लाह तआला के नेक बन्दे अपनी मौत को कसरत से याद करते हैं और अपनी मौत पर अफ़सोस नहीं करते बल्कि वो खुश होते हैं और काफ़िर बदकार लोग अपनी मौत को याद नहीं करते बल्कि अगर उनके सामने कोई मौत का ज़िक्र करे तो वो उसे ना पसन्द करते हैं हालाँकि मौत का ज़िक्र करना और कसरत से मौत को याद करना निजात का रास्ता है।

क्योंकि जब इन्सान अपनी मौत को याद करता है तो वो खुद का मुहासिबा करता है और गुज़िस्ता गुनाहों से तौबा करता है और मुस्तक़बिल में गुनाह न करने का अहद करता है और नेक अमल करने लगता है और लोगों में मौत का ज़िक्र करना अच्छा अमल है ताकि लोग गुनाहों से बचें और नेक अमल की तरफ़ राग़िब और मुतवज्जै हों और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से किनारा कशी इख़्तियार करें और अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की तैयारी में लग जायें हदीस पाक में है कि जो शख्स दिन रात में बीस मर्तबा अपनी मौत को याद करता है वो क़यामत के दिन शुहदा के साथ उठाया जायेगा।

इरशादे बारी तआला है—

ऐ ईमान वालो उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब है वो आख़िरत से आस तोड़ बैठे जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से। (सू०—मम्तहिनाह—13)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
हर जान को मौत का मज़ा चख़ना है (और) फिर हमारी तरफ़
फिरोगे (सू०—अनकबूत—57)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (यानी मौत) का कसरत से ज़िक्र
करो। (जामअ तिमिज़ी—335)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मौत का ज़िक्र ज़्यादा किया करो ये गुनाहों से पाक और दुनियाँ से
बे रग़बत करती है। (कंजुल उम्माल—15/543)

मौत के ज़िक्र और उसकी याद के साथ—साथ हमें चाहिये कि मौत
की सख़्तियों पर भी ग़ौरो फ़िक्र करें और उससे डरें और मौत के
वक़्त होने वाली तकलीफ़ों से बचने के लिये नेक अमल के ज़रिये
तैयारी करें हदीस पाक में है कि आसान तरीन मौत की मिसाल
ऐसी है कि जैसे उन में काँटेदार टहनी हो फिर उसे खींचा जाये
तो कुछ न कुछ उन भी खिंची चली आयेगी और अल्लाह तआला
के नेक सालेह फ़रमाबरदार बन्दों की मौत की मिसाल ऐसी है कि
जैसे गुँदे हुये आटे से बाल निकाला जाता है जो शख्स अपनी उम्र
अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की
फ़रमाबरदारी में गुज़ारता है तो जब उसकी मौत का वक़्त आता है
तो अल्लाह तआला बहुत से फ़रिश्तों को भेजता है जो उसकी रुह
को बहुत आसानी से कब्ज़ करते हैं और उसके लिये दुआये रहमत
करते हैं फिर उसकी रुह आसमानों में ले जायी जाती है तो तमाम
आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं फिर अल्लाह तआला
फरमाता है कि इस नेक रुह को वो दिखाओ जो मैंने इसके लिये
तैयार कर रखा है।

और जब काफ़िर बदकार का आख़िरी वक़्त आता है तो
जो फ़रिश्ते उसकी रुह कब्ज़ करने के लिये आते हैं उनके पास
आग का लिबास होता है और जब उसकी रुह आसमानों में ले
जायी जाती है तो उस पर आसमानों के दरवाज़े बन्द कर दिये
जाते हैं और उसे ज़मीन के सबसे निचले हिस्से की तरफ़ फेंक
दिया जाता है और ज़मीन व आसमान सब उस पर लानत करते हैं

और मौत के वक्त काफ़िर बदकार की रूह बहुत ज़्यादा तकलीफ़ों के साथ कब्ज़ की जाती है।

हज़रत इब्राहीम अलैहस्सलाम ने मल्कुल मौत से कहा कि मुझे अपनी वो शक़ल दिखाओ जब तुम काफ़िर बदकार की रूह कब्ज़ करते हो तो मल्कुल मौत (यानी इज़राईल अलैहस्सलाम) ने कहा कि ऐ अल्लाह के ख़लील आप उसे बर्दास्त न कर सकेंगे लेकिन इब्राहीम अलैहस्सलाम के ज़्यादा इसरार करने पर मल्कुल मौत ने अपनी वो शक़ल दिखाई जिस शक़ल में वो काफ़िर बदकार की रूह कब्ज़ करते हैं तो जब इब्राहीम अलैहस्सलाम ने मल्कुल मौत की शक़ल देखी कि एक सियाह (काला) शख्स है जिसके बाल खड़े हैं और उसके पास से बहुत ज़्यादा बदबू आ रही है और नथुनों और मुँह से आग और धुआँ निकल रहा है तो मल्कुल मौत की वो बदसूरत और डरावनी शक़ल देखकर हज़रत इब्राहीम अलैहस्सलाम बेहोश हो गये तो जब अल्लाह तआला के नबी और ख़लील का ये हाल है तो ज़रा सोचो कि हम गुनाहगारों का क्या हाल होगा इसलिये हमें चाहिये कि ऐसे अमल करें कि हम मौत की तमाम तकलीफ़ों से महफूज़ रहें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

सबसे आसान मौत इस तरह है कि भेड़ बालों में हड्डी हो तो क्या वो हड्डी बालों में से बग़ैर बालों के निकलती है।

(कंज़ुल उम्माल-10/561)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है मौत की तकलीफ़ तलवार की तीन सौ ज़रबों की मिक़दार है (तज़किरातुल मौत-213)

हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि०) से मरवी है कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मोमिन की मौत का वक्त आता है तो उसके पास एक रेशमी कपड़ा लेकर फ़रिश्ते आते हैं जिसमें कस्तूरी और रेहान (एक खुशबूदार घास) के बन्डल होते हैं फिर उसकी रूह इस तरह निकाली जाती है जिस तरह गुँदे हुये आटे से बाल निकाला जाता है और कहा जाता है कि ऐ मुतमइन्ना नफ़्स अपने रब की तरफ़ यूँ निकल कि तू अल्लाह तआला से राज़ी और

अल्लाह तआला तुझसे राजी और उसकी रूह को कस्तूरी और रेहान पर रखा जाता है जब काफिर की मौत का वक़्त आता है तो उसके पास टाट में चिंगारिया लेकर फ़रिश्ते आते हैं और उसकी रूह को निहायत सख्ती के साथ निकाला जाता है और फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ खबीस रूह इस हाल में बाहर निकल कि अल्लाह तआला तुझसे नाराज़ है और तेरे लिये ज़िल्लत का अज़ाब है फिर उसकी रूह को अंगारों पर रखा जाता है फिर उसे टाट में लपेट कर सिज्जीन (सबसे निचले दरजे) की तरफ़ ले जाया जाता है। (मुस्तदरक हाकिम-1/353)

इरशादे बारी तआला है—

जब फ़रिश्ते काफ़िरों की रूह कब्ज़ करते हैं वो उनके चेहरों और पीठों पर (हथोड़े से) मारते जाते हैं और कहते हैं कि चख़ब्रो आग का अज़ाब ये (अज़ाब) उन (बुरे आमालों) के बदले में है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे और अल्लाह तआला हरगिज़ बन्दों पर जुल्म नहीं करता। (सू-अनफ़ाल-50)

अक्सर इन्सान की तमाम उम्र दुन्यावी कामों के बाइस मसरूफ़ रहती हैं जैसे तिजारत मकानात की तामीर औलाद की तालीम व तरबियत और उनकी शादी ब्याह बग़ैराह और दीगर तमाम काम जो उसकी ज़िन्दगी से जुड़े होते हैं लेकिन उसे चाहिये कि इन तमाम कामों के साथ-साथ अपनी मौत को न भूले और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल न हो और अल्लाह तआला की इबादत और शरीअत के अहकाम को नज़र अन्दाज़ न करें बल्कि कसरत से नेक अमल करे और नेक अमल को सबसे ज़्यादा तरजीह और अहमियत दे जिसके लिये इन्सान को दुनियाँ में पैदा किया गया है।

क्योंकि इन्सान के दुन्यावी काम सिर्फ़ दुनियाँ तक ही महदूद हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी इबादत और नेक अमल इन्सान को अल्लाह तआला के ग़ज़ब और अज़ाब से बचाते हैं और उसे जन्नत में ले जाते हैं लेकिन बाज़ लोग अपनी उम्मीदों और ख्वाहिशों के पीछे लगे रहते हैं हत्ता कि उन्हें मौत का ख़्याल भी नहीं आता और अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी के ख़्वाबों को पूरा करने में मसरूफ़ रहते हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी मौत का परवाना निकल जाता है और उनकी तमाम उम्मीदें और ख़्वाब सब धरे के धरे रह जाते हैं और मौत आ पहुँचती है और वो ज़िन्दा से मुर्दा हो जाते हैं।

और उनके वो हाथ जिनसे वो काम किया करते थे अब वो मख्खी उड़ाने की भी ताकत नहीं रखते और उनके पाँव (पैर) जिनसे वो दौड़ते और चलते थे लेकिन अब वो हिल भी नहीं सकते और जिस जुबान से वो बोला करते थे उस जुबान से अब वो आह भी नहीं कह सकते और जिन आँखों से वो देखा करते थे उन आँखों की रोशनी चली गई और जिस हुस्नो जमाल पर उन्हें नाज़ था और जिस ताकत पर उन्हें फ़ख़ और तकब्बुर था वो सब मिट्टी हो गया और जिस माल और नेअमतों पर वो इतराते और खुश होते थे वो उन से छीन लिया गया और अब वो दूसरों का हो गया और तमाम दुनियाँ उन के लिये बे मतलब हो गई और दुनियाँ से उनका रिश्ता मुनक़ताअ हो गया और उनके दोस्त अज़ीज़ रिश्तेदार और घर वाले जिनसे वो मुहब्बत किया करते थे वही लोग उन्हें अंधेरी कब्र में तन्हा छोड़कर अपने घरों को वापस आ जाते हैं और वो मिट्टी से बने थे उसी मिट्टी में मिल जाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
भला तुम क्योंकर खुदा के मुन्किर हुये हालाँकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम उसी की तरफ़ पलट कर जाओगे। (सू0—बक्राह—28)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
धोके वाले घर (दुनियाँ) से दूर रहो और हमेशा रहने वाले घर की तरफ़ रुजूअ करो और मौत आने से पहले उसकी तैयारी करो। (मुस्तदरक हाकिम—4/311)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
अचानक मौत मोमिन के लिये राहत है और फ़ाजिर के लिये अफ़सोस का बाइस है। (मुस्नद अहमद—4/219)

हर शख्स को चाहिये कि अपनी मौत को हमेशा अपनी आँखों के सामने रखे क्योंकि किसी को पता नहीं कि सुबह के बाद शाम देखूँगा या नहीं और शाम के बाद सुबह देखूँगा या नहीं और मौत को हमेशा अपने करीब जाने और ये गुमान न करे कि बुढ़ापा होगा

या कोई बीमारी होगी तब मौत आयेगी ऐसा ख्याल करना हिमाकृत है क्या हम लोगों को अचानक वगैर बीमारी या वगैर बुढ़ापे के मरते हुये नहीं देखते हालाँकि हमने बहुत से लोगों को देखा जो अपनी जवानी तक नहीं पहुँचे और बहुत लोग ऐसे थे जो जवानी से बुढ़ापे तक नहीं पहुँचे और उनको मौत आ गई इसलिये आज को कल पर न छोड़ो बल्कि अपनी आखिरत की तैयारी में लग जाओ और अपनी तमाम जिन्दगी अल्लाह व रसूल की फरमाबरदारी में गुज़ारो और अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत में खुद को गर्क कर दो और खौफे खुदा से दिलों को लरज़ने दो और याद रखो ज़मीन के ऊपर चलने वाला हर शख्स एक दिन ज़मीन के नीचे होगा और मुद्दतों वहीं उसका बसेरा होगा

और जो लोग अल्लाह व रसूल की ना फरमानी में अपनी जिन्दगी गुज़ारते हैं उनके लिये सख्त अज़ाब है और अज़ाब की इब्तिदा उनकी मौत से होती है क्योंकि उनकी मौत की तकलीफ़ इतनी सख्त होती है कि जितनी तकलीफ़ तलवार के वार और कैंची की काट से भी नहीं होती और तलवार के वार और कैंची की काट से इन्सान चीख़ता चिल्लाता है लेकिन मौत की तकलीफ़ इतनी सख्त होती है कि इन्सान चिल्ला भी नहीं पाता क्योंकि मौत की सख्त तकलीफ़ इन्तहाई दर्जे की होती है जिसके बाइस इन्सान के अन्दर चीख़ने चिल्लाने की ताक़त नहीं रहती और उस वक़्त सीने से गले तक गरगरे की आवाज़ शुरु हो जाती है और उस वक़्त तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है और होंठ सिकुड़ जाते हैं और जुबान अपनी जड़ की तरफ़ खिंचती है और तमाम जिस्म से रुह खींच ली जाती है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) आप फ़रमां दीजिये जिस मौत से तुम भागते हो वो ज़रूर तुम्हें मिलने वाली है फिर तुम हर पौशीदा और ज़ाहिर चीज़ के जानने वाले रब की तरफ़ लौटाये जाओगे फिर वो तुम्हें सब बता देगा जो कुछ तुम करते थे।
(सू०—जुमआ—८)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तक गरगरे वाली कैफ़ियत पैदा न हो तब तक बन्दे की तौबा

कुबूल होती है। (मुस्नद अहमद-2/132)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशादे फरमाया—मइयत के लिये तीन बातों के वक्त अल्लाह तआला की रहमत का नुजूल समझो जब उसकी पेशानी पर पसीना आये और आँखों से आँसू जारी हों और होंठ खुश्क हो जायें (तो उस पर अल्लाह तआला की रहमत का नुजूल है) और रंग सुर्ख हों और होंठ मटियाले हों तो समझ लो उस पर अल्लाह तआला का अज़ाब नाज़िल हो रहा है। (कंजुल उम्माल-15/562)

हदीस पाक में है कि मौत की तकलीफ़ का एक क़तरा दुनियाँ के पहाड़ों पर रख दिया जाये तो वो सब पिघल जायें हज़रत कअब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मौत उस टहनी की तरह है कि जिसमें बहुत से काँटे हों और उसे किसी के पेट में दाख़िल किया जाये और हर एक काँटा हर एक रंग को पकड़ ले फिर कोई खींचने वाला उस टहनी को खींचे तो सोचो उस शख्स का क्या हाल होगा

काफ़िर बदकार शख्स पर मौत के वक्त जो तकलीफ़ होती है अगर कोई मुर्दा क़ब्र से निकलकर उस तकलीफ़ की ख़बर लोगों को दे तो वो दुनियाँ और दुनियाँ की लज़ज़तों को भूल जायें और उनकी नींदें उड़ जायें और उनका जीना दुश्वार हो जाये तो फिर हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि हम गुनाहगारों का क्या हाल होगा हमें तो मौत की सख़्तियों के अलावा बहुत सी मुसीबतें हमारे गुनाहों के बाइस क़ब्र में आयेंगी इसलिये हमें चाहिये कि अपने गुनाहों से तौबा करें और आख़िरत की तैयारी में कसरत से नेक अमल करें।

हदीस पाक में है अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो फ़रमाता है कि ऐ मौत के फ़रिश्ते फ़लों के पास जाओ और उसकी रुह मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे राहत दूँ उसका यही अमल काफ़ी है कि मैंने उसे आजमाया तो मैं जिस तरह चाहता था उसे उसी तरह पाया फिर मल्कुल मौत पाँच सौ फ़रिश्तों के हमराह उस शख्स के पास आते हैं और उनके पास फूलों की छड़ियाँ और ज़ाफ़रान की शाखें और फूलों के गुलदस्ते होते हैं और वो उस

शख्स को खुश ख़बरी देते हैं और उसकी रुह के इन्तिज़ार में दो सफ़ों में खड़े हो जाते हैं और उसकी रुह कब्ज़ करके बारगाहे खुदावन्दी में ले जाते हैं और मोमिन नेक शख्स को रुह कब्ज़ होते वक़्त च्यूटी के काटने से भी कम तकलीफ़ होती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मौत मोमिन के लिये तोहफ़ा है। (मुस्तदरक हाकिम—4/319)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो फ़रमाता है ऐ मौत के फ़रिश्ते फ़लों के पास जाओ और उसकी रुह मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे राहत दूँ। (दुर्रे मन्सूर)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
मौत के बारे में जो कुछ इन्सान को मालूम है अगर जानवरों को इस बात का इल्म होता तो तुम उनमें से किसी मोटे जानवर का गोश्त नहीं खा पाते (यानी मौत के ख़ौफ़ से जानवर दुबले पतले और कमज़ोर हो जाते। (शुअबुल ईमान—7/353)

जिस शख्स के दिल में दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत होती है तो वो शख्स दुनियाँ की जुदाई से डरता है और ख़याल करता है कि उसकी दुनियाँ उसकी मौत के साथ ही छूट जायेगी और वो शख्स अपनी दुनियाँ छूटने के डर से घबराता है और जो शख्स दुनियाँ से बे रग़बती रखता वो अपनी मौत से नहीं डरता क्योंकि वो अपनी आख़िरत और वहाँ मिलने वाली अज़ीम नेअमतों को पाना चाहता है इसलिये वो अपनी ज़िन्दगी उसी की फ़िक्र में गुज़ारता है और वो गुनाहों से इजतिनाब करता और बुराइयों से दूर रहता और अच्छे अमल करता है हर इन्सान के दिल का झुकाव उसी तरफ़ होता है जिसे वो चाहता है दुनियाँ पसन्द आदमी अपनी मौत के ख़याल को भी दिल में नहीं आने देता और यही बात उसे मौत से गाफ़िल कर देती है।

बाज़ लोग जब किसी की मौत पर उसके घर ताअज़ियत के लिये जाते हैं और उसके जनाज़े और दफ़ीने में भी शिर्कत करते हैं लेकिन वो इससे इब्रत हासिल नहीं करते कि इसी तरह हमारी भी

मौत होगी इसी तरह हमारा भी गुस्ल होगा इसी तरह हमें भी कफ़न पहनाया जायेगा इसी तरह हमें भी लोग अपने काँधों पर लेकर कब्रिस्तान तक जायेंगे और हमारी भी नमाज़ जनाज़ा होगी जिस तरह हम आज इसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ रहे हैं और लोग हमें अंधेरी कब्र में तन्हा छोड़कर अपने-अपने घरों को चले आयेंगे और कब्र में हमारे आमालों के सिवा हमारा कोई साथी न होगा लेकिन ऐसा ख्याल उनके दिलों में न आना सिर्फ़ दुनियाँ की मुहब्बत की वजह से होता है और वो अपने अंजाम से गाफ़िल रहते हैं।

और वक्ते मौत हर शख्स को चाहिये कि अल्लाह तआला के लिये अच्छा गुमान रखे और अल्लाह तआला से पूरी उम्मीद रखे कि अल्लाह तआला हमारे तमाम गुनाहों को बख़्श देगा लेकिन अपने गुनाहों से डरना भी चाहिये और वक्ते मौत अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करना चाहिये और अगर बोलने की ताकत न हो तो दिल में अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिये और मौत से कबूल अपने तमाम गुनाहों की अल्लाह तआला से माफ़ी माँगना चाहिये और वक्ते मौत अल्लाह तआला के लिये हुस्ने ज़न रखना हर मुसलमान के लिये उसके हक में बेहतर है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि—
अल्लाह तआला फ़रमाता है कि बन्दा मुझे अपने गुमान के मुताबिक़ पाता है पस मेरे बारे में जो चाहे गुमान करे (मुस्नद अहमद—2/315)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
वक्ते मौत जिस बन्दे के दिल में ये दोनो बातें इकट्ठी होती हैं (यानी अपने गुनाहों से डरना और अल्लाह तआला से मग़फ़िरत की उम्मीद रखना) तो अल्लाह तआला उसकी उम्मीद को पूरा फ़रमाता है और जिस बात से वो डरता है उसे उस बात से अमन अता फ़रमाता है। (जामअ तिमिज़ी—161)

जब हम किसी फ़ौत होने वाले शख्स के पास मौजूद हों तो हमें चाहिये कि मरने वाले शख्स को कलमये तौहीद की तल्कीन करें और अपनी तल्कीन में नरमी इख़्तियार करें और बार-बार उस फ़ौत होने वाले शख्स से कलमा पढ़ने के लिये न कहें क्योंकि बाज़

औक़ात फ़ौत होने वाले शख्स की जुबान नहीं चलती और उसके लिये कलमे का पढ़ना मुश्किल होता है और वो तुम्हारे बार-बार कहने को बोझ समझे और कलमे को ना पसन्द कर बैठे और ये फ़ौत होने वाले शख्स के लिये बुरे खात्मे का बाइस हो सकता है।

क्योंकि जो कुछ उस पर गुज़रती है वो हम नहीं देख सकते इसलिये एक दो बार कलमा पढ़ने के लिये कहें ज़्यादा न कहें और अगर वो कलमा न पढ़े या कलमा पढ़ने की ताक़त उसके अन्दर न हो तो हमें चाहिये कि कुछ तेज़ आवाज़ से कलमये तौहीद खुद पढ़ें ताकि उसके दिल पर कलमे के अल्फ़ाज़ पूरी तरह बैठ जायें और वो कलमा पढ़ने लगे या न पढ़ने की ताक़त के सबब वो कलमे के अल्फ़ाज़ को दिल में पढ़ने लगे।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने फ़ौत हाने वाले शख्स को कलमा तौहीद की तल्कीन करो।
(सही मुस्लिम—1/300)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
कलमा तौहीद गुज़िस्ता गुनाहों को मिटा देता है।
(मुस्नद अहमद—5/239)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
मौत क़यामत है पस जो फ़ौत हुआ उसकी क़यामत कायम हो गई।
(अल फवाइदुल मजमुआ—267)

ग़म व फ़िक्र खाने की रग़बत ख़त्म कर देती है और ख़ौफ़े इलाही गुनाहों से रोक देता है और रहमते खुदावन्दी की उम्मीद नेक कामों की उम्मीद पैदा करती है और मौत की याद फ़िज़ूल और बुरे व गुनाह व लगू (बेहूदा) कामों की तरफ़ नफ़रत पैदा करती है और नेक कामों की तरफ़ माइल करती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो चीज़ें ऐसी हैं जिनको इन्सान पसन्द नहीं करता एक मौत और दूसरी माल व दौलत की कमी हालाँकि मौत गुमराही के फ़िल्नों में मुब्तिला होने से बेहतर है और दौलत की कमी क़यामत के हिसाबो किताब में कमी का बाइस है। (मुस्नद अहमद)

—: कब्र और उसका अज़ाब :—

कब्र आखिरत की पहली मंज़िल है और जिसने कब्र के अज़ाब से निजात पाई और कब्र की पहली मंज़िल को राहत व आसानी से पार कर लिया तो उसके लिये बाद की मंज़िलें आसान होंगी और मौत हालते तबदीली का नाम है क्योंकि जिस्म से जुदा होने के बाद रूह बाकी रहती है और जब कब्र में अज़ाब होता है तो मुर्दे की रूह बापस जिस्म में लौटाई जाती है और हर शख्स को उसके आमाल के मुताबिक कब्र में अज़ाब या राहत व आराम पहुँचता है।

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया— मेरी उम्मत पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि जब वो पाँच चीज़ों को याद रखेंगे और पाँच चीज़ों को भूल जायेंगे।

- 1—दुनियाँ से मुहब्बत करेंगे मगर आखिरत को भूल जायेंगे।
- 2—माल से मुहब्बत करेंगे मगर योमे हिसाब को भूल जायेंगे।
- 3—मखलूक से मुहब्बत करेंगे मगर अल्लाह को भूल जायेंगे।
- 4—गुनाहों से मुहब्बत करेंगे मगर तौबा को भूल जायेंगे।
- 5—मकानों से मुहब्बत करेंगे मगर कब्रों को भूल जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
हमने तुम्हें ज़मीन ही से पैदा किया और इसी ज़मीन में हम तुम्हें लौटायेंगे। (सू0—ताहा—55)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
कब्र या तो जहन्नुम के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (मजमउज्जवाइद—3/46) (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शख्स हालते सफ़र में मर जाये वो शहीद होकर मरता है और वो कब्र के फ़िल्नों से महफूज़ रहता है और उसे सुबह व शाम जन्नत से रिज़क दिया जाता है। (हुलयातुल औलिया—8/203)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

जो मुसलमान शबे जुमा या जुमे के दिन फौत हो जाये तो अल्लाह तआला उसको अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रखता है।

जो शख्स अपनी आखिरत के मुताअल्लिक ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता और नेक आमाल के ज़रिये उसकी तैयारी नहीं करता तो गोया वो शख्स खुद का सबसे बड़ा दुश्मन है और वो खुद को बहुत बड़ी मुसीबत और नुकसान की तरफ़ ले जाता है हालाँकि वो जानता है कि गुनाहगार के लिये आखिरत बहुत सख्त मुसीबत व आफ़त है फिर भी वो जानकर अंजान बना रहता है और अपनी आखिरत से बे फ़िक्र हो जाता है और वो अपनी आखिरत ख़राब कर लेता है बिल आखिर बाद मौत वो सख्त अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि आखिरी वक़्त में हम पर गुज़रने वाली तमाम बातों को हमेशा ज़हन में रखें और आखिरत के उस मंजर को न भूले जो एक दिन हमारे सामने ज़रूर आकर रहेगा जिस दिन दुनियाँ में मेरा आखिरी दिन होगा और मौत मेरे बहुत करीब होगी और वक़्त मौत हमारी पलकें झुक रहीं होंगी और हमारी आवाज़ बैठ रही होगी और हमारी नज़र धुँधली हो रही होगी और जिस्म की तमाम कुव्वतें ख़त्म हो रही होंगी और मौत हमें चारो तरफ़ से घेर लेगी और हमारे घर वाले और पड़ोसी दोस्त अहवाब अज़ीज़ अक़ारिब सब मेरे नज़दीक जमा होंगे और हमारे जिस्म से रूह खींच ली जायेगी और हम मुर्दार हो जायेंगे।

फिर हमारे गुस्ल का इंतज़ाम किया जायेगा और हमारी क़ब्र तैयार की जायेगी और कुछ लोग हमारे कफ़न के इंतज़ाम में लगे होंगे फिर हमें हमारे चाहने वाले गुस्ल देंगे फिर हमें कफ़न में लपेटकर चारपाई पर लिटा देंगे और हमें हमारे घर से निकाल देंगे और क़ब्रिस्तान में ले जाकर अंधेरी क़ब्र में छोड़ देंगे जहाँ न रोशनी होगी और न हवा के आने जाने का कोई रास्ता होगा और न वहाँ ऐशो आराम के सामान मौजूद होंगे और न नरम मुलायम बिस्तर होंगे और हमें ख़ाक पर लेटना होगा और हमारे चाहने वाले हमें तन्हा क़ब्र में छोड़कर चले आयेंगे और हमारा जो कुछ दुनियाँ में अपना था वो सब पराया हो जायेगा और हमारे घर वाले दोस्त अहवाब अज़ीज़ अक़ारिब सब हमसे जुदा हो जायेंगे और हम पर हमारे गुनाहों के सबब अज़ाब मुसल्लत किया जायेगा।

और उस वक्त हमें उस अज़ाब से बचाने वाला कोई न होगा और न कोई हमारा मददगार होगा सिवाय हमारे नेक आमाल के और हमें मुद्दतों उस अंधेरी कोठरी में रहना होगा जहाँ आग का सख्त अज़ाब है और कीड़े मकोड़ों और साँप और बिच्छुओं से मिलने वाली अज़िज़तों और फ़रिश्तों से मिलने वाली हथोड़े की मार को हमारा नाजुक बदन कैसे बर्दास्त करेगा और हमारे घर वाले अपने घरों में आराम व चैन से होंगे और हमारी छोड़ी हुई मीरास को आपस में बाँट लेंगे और अपनी-अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने में मसरूफ़ हो जायेंगे और हमारी किसी को फ़िक्र न होगी।

हालाँकि हकीकत ये है कि अल्लाह तआला ने हमें अपनी आख़िरत बनाने व संवारने का मौका दिया लेकिन हमने दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत में वो मौका गंवा दिया और अपनी आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया और खुद को ख़सारे में डाल दिया तो जब हमने खुद अपनी फ़िक्र नहीं की तो हमें अपने मुताअल्लिक़ औरों से उम्मीद और भरोसा रखना हिमाक़त है क्योंकि जब हमने खुद अपनी फ़िक्र नहीं की तो दूसरा हमारी फ़िक्र क्यों करेगा।

और अगर हम अपनी आख़िरत से मुताअल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करेंगे और उसके लिये तैयारी करेंगे और कसरत से नेक अमल करेंगे तो क़ब्र में हमारा हाल ऐसा नहीं होगा और हम क़ब्र के अज़ाब से महफूज़ रहेंगे और हमारी क़ब्र सरसब्ज़ व शादाब और जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ होगी इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करें और कसरत से नेक आमाल करें और बुराइयाँ और गुनाहों से दूर रहें और अल्लाह तआला की इबादत करें और उसके फ़रमाबरदार बन्दे बनें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

जब उनमें से किसी एक को मौत आये तो वो कहता है ऐ मेरे रब मुझे वापस भेज दे ताकि मैं अच्छे काम करूँ उनमें से जो छोड़ आया हूँ। (सू०—मु-मिनून—99,—100)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अगर तुम्हें इस बात का इल्म होता जो मैं जानता हूँ तो तुम कम
हँसते और ज़्यादा रोते। (सही बुखारी—1/44)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) फरमाते हैं कि मैंने सरवरे कायनात
सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से सुना है कि आप फरमाते हैं कि
मइयत को इस बात का इल्म होता कि उसे कौन गुस्ल दे रहा है
और कौन उसे उठा रहा है और कौन क़ब्र में उतार रहा है।
(मुस्नद अहमद—3/3)

क़ब्र में मुर्दे को रखने के बाद क़ब्र उस मुर्दे से कहती है कि ऐ इब्ने
आदम तू किस फ़रेब में पड़ा रहा क्या तुझे मालूम न था कि मैं
अंधेरी कोठरी हूँ मैं तन्हाई का घर हूँ मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूँ
और तू मेरे ऊपर इतराता और तकब्बुर करता हुआ चलता था और
अगर वो नेक सालेह होता है तो एक फरिश्ता उसकी तरफ़ से
जवाब देता है कि ऐ क़ब्र ये नेक सालेह फरमाबरदार बन्दा है जो
अच्छी बात का हुक्म देता था और बुरी बात से मना किया करता
था ये सुनकर क़ब्र कहती है कि अगर ऐसा है तो मैं इसके लिये
सर सबज़ और राहत हूँ और अगर वो नाफ़रमान बन्दा होता है तो
क़ब्र कहती है कि मैं इसके लिये सख़्त अज़ाब हूँ।

अल्लाह तआला के फरमाबरदार नेक बन्दों के लिये
क़ब्र रहमत व राहत है और क़यामत के दिन नेक सालेह बन्दे
अपनी अपनी क़ब्रों से खुश खुश निकलेंगे और नाफ़रमान बदकार
बन्दों के लिये क़ब्र बहुत बड़ी मुसीबतों और तरह—तरह के अज़ाबों
का घर है और क़यामत के दिन नाफ़रमान बदकार बन्दे अपनी—
अपनी क़ब्रों से तबाह व बर्बाद होकर निकलेंगे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
मैंने क़ब्र से ज़्यादा हौलनाक मन्जर नहीं देखा (जामअ तिमिज़ी—355)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब मइयत को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उससे कहती है

ऐ बदन बख्त इन्सान तुझे मेरे बारे में किसने धोके में डाला क्या तुझे मालूम न था कि मैं कीड़ों मकोड़ों का घर हूँ मैं अंधेरी कोठरी हूँ और और मैं तन्हाई का घर हूँ जब तू मेरे ऊपर अकड़कर इतराकर चलता था तो तुझे किस चीज़ ने धोके में डाला और अगर वो नेक हो तो उसकी तरफ़ से कोई कहने वाला जवाब देता है कि ये नेक है जो नेकी का हुक्म देता था और बुराई से रोकता था फिर कब्र कहती है अगर ऐसा है तो मैं इसके लिये सर सब्ज हो जाती हूँ उसका जिस्म नूर से बदल जायेगा और उसकी रूह अल्लाह तआला की तरफ़ लौट जायेगी। (हुलयातुल औलिया-6/90)

हज़रत जैद बिन हारिस (रज़ि०) फरमाते हैं कि हम लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हमराह थे कि एक जगह कुछ कब्र वालों पर अज़ाब हो रहा था तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया कि कब्र वालों पर अज़ाब हो रहा है अगर मुझे इस बात का ख़ौफ़ न होता कि तुम लोग मुर्दों को दफ़न करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह तआला से दुआ करता कि तुम लोगों को वो अज़ाब सुनादे जो मैं सुन रहा हूँ। (मिशकात-1/54)

मइयत को दफ़न करने के बाद जब लोग वापस होते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ को सुनता है फिर नकीरैन के सवालों जवाब का सिलसिला शुरू होता है और अगर वो नेक सालेह बन्दा होता है तो वो कामयाब होता है और नकीरैन के सवालों का सही जवाब देता है उसके बाद एक आने वाला जो निहायत ख़ूबसूरत होता है और उसमें उम्दाह खुशबू महकती है और उसके कपड़े भी उम्दाह होते हैं और वो कहता है कि तुझे तेरे रब की तरफ़ से जन्नत की खुशख़बरी हो जिसमें कभी न ख़त्म होने वाली नेअमतेँ हैं फिर मुर्दा कहता है कि तू कौन है वो कहता है कि मैं तेरा अमल सालेह हूँ फिर उसके लिये जन्नत का बिछौना बिछाया जाता है और उसकी कब्र में जन्नत की तरफ़ से दरवाज़ा खोल दिया जाता है और उसकी कब्र रोशन हो जाती है और उसे जन्नती लिबास पहनाया जाता है और उसकी कब्र को हद्दे नज़र तक कुशादा कर दिया जाता है।

और जो नाफ़रमान बदकार बन्दा होता है तो वो नकीरैन के सवालों

का जवाब नहीं दे पाता और फिर एक आने वाला जो निहायत बदसूरत होता है जिसका लिबास बदबूदार होता है और वो कहता है कि अल्लाह तआला की तरफ से नाराज़गी और दायमी अज़ाब कि तुझे ख़बर हो फिर मुर्दा कहता है कि तू कौन है वो कहता है कि मैं तेरा बुरा अमल हूँ फिर उसके लिये जहन्नुमी बिस्तर बिछाया जाता है और जहन्नुमी लिबास पहनाया जाता है और उसकी कब्र तंग कर दी जाती है हत्ता कि उसकी पसलियाँ टूट जाती हैं और हर शख्स को कब्र के अज़ाब से सिर्फ़ उसके नेक आमाल ही बचा सकते हैं अगर उसके पास रोज़ा नमाज़ ज़कात सद्का ख़ैरात और दीगर आमाल हों तो ये तमाम आमाल उसे चारो तरफ़ से घेर लेते हैं और जब अज़ाब के फ़रिश्ते आते हैं तो उसके आमाल उसे अज़ाब से महफूज़ रखते हैं।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तुम में से कोई फ़ौत हो जाता है तो सुबह शाम उसका ठिकाना दिखाया जाता है अगर वो जन्नती है तो जन्नत और अगर जहन्नुमी है तो जहन्नुम दिखाई जाती है और कहा जाता है कि ये तेरा ठिकाना है हत्ता कि क़यामत के दिन उठाया जाये।
(सही बुख़ारी—2/964)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कब्र में दो फ़रिश्ते मुन्कर व नकीर आते हैं और वो मइयत से सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है तो मोमिन कहता है मेरा रब अल्लाह है फिर दूसरा सवाल करते हैं तेरा दीन क्या है तो मोमिन कहता है मेरा दीन इस्लाम है फिर तीसरा सवाल करते हैं कि यह शख्स कौन है जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये तो मोमिन कहता है ये अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं।

फिर आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि बन्दे ने सच कहा इसको जन्नती बिछोने पर सुलाओ और इसको बहिश्ती लिबास पहनाओ और इसकी तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा खोल दो तो उस दरवाज़े से उसकी कब्र में जन्नत की हवा और खुशबू आने लगती है और जहाँ तक उसकी नज़र जाती है वहाँ तक उसकी कब्र कुशादा कर दी जाती है।

और काफिर बन्दे से भी यही तीन सवाल मुनकर व नकीर करते हैं लेकिन वो तीनों सवालों के जवाब में कहता है हाय—हाय मैं तो कुछ नहीं जानता फिर आसमान से एक फरिश्ता पुकारता है ये झूठा है लिहाजा इसके लिये जहन्नुम का बिस्तर बिछाओ और इसको जहन्नुमी लिवास पहनाओ और इसकी तरफ जहन्नुम का दरवाजा खोल दो तो उस दरवाजे से जहन्नुम की गर्म हवा और बदबू उसकी कब्र में आती रहती है और उसकी कब्र इस कदर तंग कर दी जाती है कि मइयत की दाहिनी पसलियाँ बाँयी तरफ और बाँयी पसलियाँ दाहिनी तरफ (इधर उधर) हो जाती हैं। (मिशकात—1/56) (तिर्मिजी)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—कब्र में बदकार शख्स पर एक अंधा गूँगा बहरा फरिश्ता मुकर्रर किया जाता है जो मइयत को लोहे के गुर्ज (हथोड़े) से मारता है अगर जिन्न व इन्सान मिलकर उस गुर्ज को उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते और अगर उस गुर्ज को पहाड़ पर मार दिया जाये तो वो रेजा—रेजा (चकना चूर) हो जाये जब फरिश्ता मुर्दे को गुर्ज से मारता है तो उसकी आवाज़ जिन्न व इन्सानों के सिवा तमाम मख़लूक सुनती है और एक मुनादी ऐलान करता है इसके लिये आग की तख्तियाँ बिछादो और जहन्नुम की तरफ से एक दरवाजा खोल दो। (सुनन अबी दाऊद—2/298)

अगर दुनियाँ में किसी शख्स को अंधेरे कमरे में तन्हा कैद कर दिया जाये तो वो घबराता है तो ज़रा सोचो उस कब्र में हमारा क्या हाल होगा जहाँ अंधेरा और तन्हाई के अलावा भी हम पर बहुत सी मुसीबतें और परेशानियाँ आयेंगी और वहाँ कोई भी हमारा मददगार न होगा जिससे मदद की उम्मीद की जाये तो क्या हम कब्र में मिलने वाले सख्त अज़ाब को बर्दास्त कर सकेंगे लेकिन नेक लोग अपनी सर सब्ज़ कब्रों में राहत व आराम से रहेंगे और नेक सालेह लोगो की रुहें आज़ाद होती हैं और दूसरी रुहों से मुलाकात करती हैं।

हदीस पाक में है कि दुनियाँ में मोमिन की मिसाल माँ के पेट में मौजूद बच्चे की तरह है कि जब वो अपनी माँ के पेट से

दुनियाँ में आता है तो वो रोता है लेकिन जब वो रोशनी देखता है तो दुनियाँ में रहना पसन्द करता है और वापस अपनी माँ के पेट में जाना पसन्द नहीं करता।

इसी तरह मोमिन मौत से पहले घबराता है लेकिन जब वो अपने रब की तरफ़ चला जाता है तो दुनियाँ में वापस आना पसन्द नहीं करता क्योंकि उसको जो नेअमतें और राहतें वहाँ मयस्सर आती हैं उनके मुकाबले दुनियाँ कुछ भी नहीं इसलिये वो उन नेअमतों और राहतों को छोड़कर इस फ़ानी दुनियाँ में आना पसन्द नहीं करता।

दुनियाँ में काफ़िर बदकार शख्स की जो सिफ़त होती है जैसे तकब्बुर रियाकारी बद अख़लाकी गीबत हसद चुगली कीना वगैराह तो उसकी ये सिफ़तें क़ब्र में साँप और बिच्छुओं वगैराह की शक़ल में बदलती हैं और उसे तरह तरह के मुख़्तलिफ़ अज़ाब दिये जाते हैं जैसे बन्दे के गुनाह होते हैं उसी तरह उसको सख़्त या हल्का अज़ाब दिया जाता है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— काफ़िर को क़ब्र में यूँ अज़ाब होता है कि उस पर 99 अज़दहे (बड़े साँप) मुसल्लत कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक मुर्दे को काटते चाटते और फूँकारते हैं और हर साँप के सात फन होते हैं (कंजुल उम्माल—2/30,—31)

हज़रत अबू अइयूब अंसारी (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जब मोमिन की रूह परवाज़ करती है तो अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत वाले लोग उससे इस तरह मुलाकात करते हैं जैसे दुनियाँ में करते थे और बाहम गुफ्तगु करते हैं कि फ़लाँ शख्स का क्या हाल है फ़लाँ की शादी हुई या नहीं इसी तरह दीगर बहुत सी बातें आपस में करते हैं। (मुअज़म कबीर तिबरानी—4/129)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— अपने बुरे आमाल के ज़रिये अपने फौत शुदा लोगों को तकलीफ़ न दो क्योंकि तुम्हारे आमाल अहले कुबूर में तुम्हारे दोस्तों और घर वालों में पेश किये जाते हैं। (कंजुल उम्माल—15/685)

ज़मीन में हर शख्स के दो घर होते हैं एक ज़मीन के ऊपर और एक ज़मीन के नीचे होता है जिस तरह हम ज़मीन के ऊपर वाले घर यानी दुनियाँ में अपने घरों को बहुत सी चीज़ें फराहम करके उसे मुकम्मल आराम दायक बनाते हैं और उस घर के लिये ज़रूरत के मुताबिक बहुत सी चीज़ें हासिल करते हैं ताकि दुनियाँ में हमें किसी तरह की परेशानी न हो और हमारी ज़िन्दगी आराम सुकून और चैन के साथ गुज़रे और खुद को गर्मी सर्दी और बरसात से महफूज़ रखने के लिये कई तरह के इन्तिज़ामात करते हैं और खाने पीने के तमाम सामान और अंधेरों से बचने के लिये रोशनी और गर्मी की शिद्दत से बचने के लिये पंखे कूलर ए.सी. और सर्दी से बचने के लिये गर्म कपड़े वगैराह हत्ता कि अपनी ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करते और हासिल भी करते हैं तो थोड़ी मुद्दत की ज़िन्दगी के लिये हम कितनी बड़ी तैयारी करते हैं और कितनी मेहनत और मशक्कत उठाते हैं लेकिन अपने ज़मीन के नीचे वाले घर यानी कब्र लिये हम तैयारी क्यों नहीं करते जहाँ बरसों हमें रहना है इसलिये हमें चाहिये कि अपनी कब्र के लिये बहुत ज़्यादा तैयारी करें ताकि कब्र में हम हमेशा आराम चैन व सुकून से रहें और हमें कब्र में क़यामत तक हर हाल में रहना है तो अब हमारी मर्ज़ी कि अपनी कब्र को जैसी चाहें वैसी बनायें या तो कसरते नेक आमाल के ज़रिये अपनी कब्र को जन्नत का एक बाग़ बनायें या बुरे आमाल के ज़रिये अपनी कब्र को जहन्नम का एक गढ़ा बनायें।

जिस शख्स को कब्र में अज़ाब होता है उस शख्स के लिये कब्र में एक दिन हजारों साल के मिक़दार होता है और ऐसा कब्र में अज़ाब की सख़्ती के बाइस होता है तो ज़रा सोचो हम उस कब्र में क़यामत तक कैसे रहेंगे अगर हमने उसके लिये तैयारी नहीं की इसलिये हमें चाहिये कि अपनी कब्र की तैयारी उसी क़दर करें जितनी मुद्दत हमें वहाँ रहना है ताकि कब्र में हमें किसी तरह की कोई मुसीबत या परेशानी न हो और कब्र में हमारी तमाम ज़रूरतें पूरी हों और तमाम अज़ाबों से हम महफूज़ रहें।

हर चीज़ के लिये एक मक़सद होता है और उसके लिये एक तैयारी होती है जैसे हम दुनियाँ में दो चार दिन के लिये दूसरी जगह सफ़र पर जाते हैं तो उसके लिये तैयारी करते हैं जैसे कुछ

कपड़े, रुपया, पैसा, दीगर सामान जिसकी सफ़र में ज़रूरत होती है तो जब हम कुछ दिनों के लिये सफ़र पर जाते हैं तो कितनी तैयारी करते हैं तो जहाँ (यानी कब्र में) मुद्दतों के लिये हमें जाना है तो हमें कितनी बड़ी तैयारी करना चाहिये ताकि कब्र में हमारे लिये हमारी ज़रूरत के मुताबिक़ तमाम इन्तज़ामात हों और हमारे आराम के लिये जन्नती बिस्तर हो सुबह शाम जन्नती रिज़क अता हो जन्नती हवा हो कब्र खुशबूदार और रोशन हो और जन्नती लिवास हो और हमारी कब्र कुशादा और सर सब्ज़ हो और हमारी कब्र कीड़े मकोड़े साँप और बिच्छुओं और दीगर तमाम अज़ाबों से महफूज़ हो ताकि कयामत तक हम कब्र में राहत व सुकून चैन और इत्मीनान से रह सकें और हमें तन्हाई का बिल्कुल एहसास न हो।

इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अल्लाह तआला की इबादत करें और गुनाहों से दूर रहें और नेक अमल करें और अल्लाह तआला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत करें ताकि हमारी कब्र बेहतर और उम्दाह और सर सब्ज़ आरामगाह बने और हमें वहाँ किसी भी तरह की कोई तकलीफ़ न हो और रब तआला से दुआ करते रहें कि अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल हमें कब्र में होने वाले कलील व कसीर तमाम अज़ाबों से महफूज़ रखे और हमें अपने अमान में रखे और हमारा आख़िरी कलाम कलमये तौहीद हो और हमारा ख़ात्मा ईमान पर हो।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाहु हो उसे आग नहीं छुयेगी। (मुस्नद अहमद—5/233)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है जो शख्स सच्चे दिल से ला इलाहा इल्लल्लाहु पढ़ता है उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है। (मुअज़म कबीर तिबरानी—5/197)

हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया गया कि लोगों में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद (परहेज़गार) कौन है तो

आपने इरशाद फ़रमाया जो शख्स क़ब्र और गल सड़ जाने को न भूले और दुनियाँ की ज़ीनत छोड़ दे और फ़ना होने वाली पर बाकी रहने वाली को तरज़ीह दे और कल आने वाले दिन को अपनी ज़िन्दगी में शुमार न करे और खुद को क़ब्र वालों में शुमार करे।

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी मौत और क़ब्र को किसी हाल में न भूलें और कसरत से क़ब्रों की ज़ियारत किया करें ताकि इब्रत हासिल हो और क़ब्रिस्तान में पहुँचकर ये ख़्याल करें कि मेरी मौत के बाद अहले कुबूर मेरे पड़ोसी होंगे और जब क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जायें तो सबसे पहले सलाम करें हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जब कोई शख्स क़ब्र के पास से गुज़रे तो सलाम करे तो क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है और फौत शुदा लोगों के लिये ईसाले सवाब और दुआये ख़ैर करें और अक़लमन्द शख्स वही है जो क़ब्रों की ज़ियारत से इब्रत हासिल करता है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़ब्रों की ज़ियारत किया करो ये तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती है
(मुस्तदरक हाकिम—1/374)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क़ब्र में मइयत अपने घर वालों से दुआ की मुन्तज़िर रहती है जब कोई घर वाला उस मइयत के लिये दुआये ख़ैर करता है तो ये दुआ मइयत के लिये दुनियाँ और मताये दुनियाँ से ज़्यादा पसन्दीदा होती है। (मिशकात—206)

जब क़ब्र में मइयत पर अज़ाब होता है तो दूसरे मुर्दे कहते हैं कि ऐ शख्स क्या तूने हम लोगों का हाल देखकर भी इब्रत हासिल नहीं की हम तो क़ब्र में आ चुके थे लेकिन तू तो ज़िन्दा था और तुझे काफी मुहलत मिली थी और उस मुहलत में तू नेक आमाल कर लेता तो इस अज़ाब में मुब्तिला न होता तूने तो उन लोगों से भी इब्रत हासिल नहीं की जिनके अज़ीज़ अक़ारिब ज़मीन के अन्दर दफ़न करके चले गये।

हदीस पाक में है हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

कि ना फरमान की मइयत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वो कहता है हाय मेरी बर्बादी मुझे कहाँ ले जा रहे हो और उसकी ये आवाज़ इन्सान के सिवा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान उसकी ये आवाज़ सुनले तो बेहोश हो जाये फिर भी बाज़ लोग अपनी मौत और कब्र को भूले हुये हैं हालाँकि वो लोगों के जनाज़े और दफ़ीने में शिर्कत करते हैं लेकिन वो दुन्यावी फ़िजूल बातों में मशगूल रहते हैं और बाज़ तो ऐसे लोग हैं जो अपनी गुफ्तगू में हंसी मज़ाक करते और हंसते हैं और बाज़ मरने वाले के अज़ीज़ अकारिब उसके छोड़े हुये माल की तरफ़ मुतवज्जै होते हैं और ये ग़फलत उनके दिलों की सख़्ती है जो गुनाहों और नाफ़रमानियों और दुनियाँ की मुहब्बत व रग़बत के बाइस उनके दिलों में पैदा होती है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने दुन्यावी तमाम कामों के साथ-साथ अपनी आख़िरत को न भूलें और दुन्यावी तमाम कामों पर अपनी आख़िरत को तरजीह और अहमियत दें और अपनी आख़िरत के लिये ज़्यादा से ज़्यादा तैयारी करें और उस पर ग़ौरो फ़िक्र करें और फ़ौत शुदा लोगों के बारे में अच्छा गुमान रखें और न उनकी बुराई करें और न दिल में बुरा जानें क्योंकि हकीक़त में कोई नहीं जानता कि किसकी कब्र में अज़ाब हो रहा है और किसकी कब्र में अल्लाह तआला की रहमतों का नुज़ूल हो रहा है और अल्लाह तआला जिसे चाहता है उसे बख़्श देता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जब तुम्हारा कोई साथी मर जाये तो उसकी बुराइयाँ बयान न करो (सुनन अबी दाऊद—2/315)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया— अपने फ़ौत शुदा लोगों का ज़िक्र अच्छी तरह करो अगर वो जन्नत में से हैं तो बुराई करने का गुनाह तुम पर होगा और अगर जहन्नुमियों में से हैं तो उन्हें वही काफी है। (सही बुख़ारी—2/960)

—: ज़कात और बुख़ल :—

अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर ज़कात अदा करने का हमें हुक्म दिया है और ताकीद फ़रमायी जो इसकी कुदरत रखता हो यानी साहिबे निसाब हो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है और ये इस्लाम का तीसरा रुकन है और जो लोग ताक़त के बावजूद ज़कात नहीं देते तो वो लोग गुनाहगार और ख़सारे का सौदा करने वाले होते हैं और वो सख़्त अज़ाब में मुब्तिला होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और नमाज़ कायम रखो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे वो अल्लाह तआला के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को देख रहा है। (सू०—बकराह—110)

इरशादे बारी तआला है—

ऐ महबूब उनके माल से ज़कात तहसील (वसूल) करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआये ख़ैर करो बेशक तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है।

(सू०—तौबा—103)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने एक और मक़ाम पर यूँ इरशाद फ़रमाया—

ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उसमें से जो हमने ज़मीन से निकाला (सू०—बकराह—267)

ज़कात के लिये मालदार होना शर्त नहीं बल्कि मुसलमान मर्द या औरत साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोने का मालिक हो या उस (सोना या चाँदी) की कीमत के बराबर माल तिजारत या रुपया हो तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है इसके अलावा चरवाहे जैसे भैंस, बकरी, गाय, ऊँट वगैराह जो तिजारत की गरज़ से हों या दुकान, मकान, ज़मीन, प्लाट वगैराह जो तिजारत के लिये हों उस पर ज़कात फ़र्ज़ है यानी कुल माल का चालीसवाँ हिस्सा ज़कात देनी होगी (यानी 100—रु० पर ढाई रुपये ज़कात अदा करनी होगी)

और अगर किसी पर कर्ज हो तो कर्ज निकाल कर जो बचे उस पर ज़कात देनी होगी और जिस चीज़ की ज़कात अदा करनी हो तो उसके लिये शर्त है कि उस माल पर साल गुज़र जाये और अगर साल न गुज़रे तो उस माल पर ज़कात फर्ज नहीं।

और अपनी ज़कात सिर्फ़ उसे दो जो इसके मुस्तहिक हैं जैसे गुरबा, मसाकीन वगैराह और जिसे ज़कात दो तो उसे उसका मालिक बना दो नहीं तो ज़कात अदा नहीं होगी और वगैर बताये सिर्फ़ ज़कात की नीयत से ज़कात देने से ज़कात अदा हो जाती है और ज़कात को मस्जिद या कब्रिस्तान या लावारिस मुर्दे के कफ़न दफ़न में देना या वो जिनसे पैदा है यानी जैसे माँ बाप दादा दादी नाना नानी या उससे जो पैदा हैं जैसे बेटा बेटी पोता पोती नवासा नवासी को देना क़तअन जाइज़ नहीं और किसी भी सइयद (आले रसूल) को भी ज़कात देना जाइज़ नहीं और इस तरह से ज़कात अदा भी नहीं होगी और उन मदरसों में भी ज़कात देना जाइज़ नहीं जिन मदारिस में हीला शरई नहीं किया जाता है हीला शरई का माना ये है कि किसी तालिबे इल्म को तमाम ज़कात के माल का मालिक बनाया जाये फिर वो तालिबे इल्म अपनी मर्जी से बिना किसी जोर ज़बरदस्ती के उस माल को मदरसे में दे दे।

जो आदमी क़ादिर होने बावुजूद ज़कात की अदायगी में ताख़ीर (देर) करे तो वो गुनाहगार होगा हदीस पाक में है कि जो लोग ज़कात नहीं देते तो रोज़े क़यामत उन के लिये आग की तख़्तियाँ बनाई जायेंगी और उनकी पीठों को दागा जायेगा और जब वो ठन्डी हो जायेंगी तो फिर गर्म की जायेंगी और क़यामत का दिन पचास हजार साल का होगा यहाँ तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो उनको यही अज़ाब दिया जाता रहेगा।

इसलिये हमें चाहिये कि नेक नीयत और खुलूस दिल के साथ हलाल व उम्दाह माल से ज़कात अदा करें रोज़ा, नमाज़, हज ये इन्सान की बदनी नेअमतों का शुक्र है और ज़कात माली नेअमतों का शुक्र है और ज़कात निकालने से माल घटता नहीं बल्कि बढ़ता है और जिस माल की ज़कात निकल जाये वो माल हर एक आफ़त से महफूज़ रहता है और ज़कात अदा करने में ताख़ीर न करें बल्कि जल्दी अदा करें क्योंकि इससे गुरबा मसाकीन के दिल खुश होते हैं

और वो खुलूस दिल से ज़कात देने वाले के लिये दुआये ख़ैर करते हैं और जो लोग ज़कात अदा नहीं करते और बुख़ल (कंजूसी) करते हैं वो क़यामत के दिन सज़ा अज़ाब में मुबिला होंगे अल्लाह तआला ने हमें माल इसलिये अता नहीं किया कि सिर्फ़ अपने और अपने घर वालों की ज़रूरतों पर खर्च करें बल्कि इसके साथ-साथ अल्लाह तआला की राह में खर्च करें और ग़ुरबा मसाकीन व फुकरा को दें क्योंकि वो भी अल्लाह तआला की मख़लूक हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

और जो बुख़ल (कंजूसी) करे उस चीज़ में जो अल्लाह तआला ने उन्हें अपने फज़ल से दी तो वो हरगिज़ अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि उनके लिये बुरा है अनक़रीब वो जिसमें बुख़ल किया था क़यामत के दिन उनके गले का तौक होगा और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीनों का और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (सू०—आले इमरान—180)

इरशादे बारी तआला है—

और वो जोड़कर रखते हैं सोना और चाँदी और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें ख़बर सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की जिस दिन वो (माल) तपाया जायेगा जहन्नुम की आग में फिर उससे दागों उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें ये है वो जो तुमने जोड़कर रखा था अब चख़ो मज़ा उस जोड़ने का।

(सू०—तौबा—34,—35)

इरशादे खुदावन्दी है—

और उनमें से कोई वो हैं जिन्होंने अल्लाह तआला से अहद किया था अगर (अल्लाह) हमें अपने फज़ल से देगा तो ज़रूर हम ख़ैरात करेंगे और ज़रूर हम भले आदमी हो जायेंगे तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फज़ल से दिया (तो वो) उसमें बुख़ल (कंजूसी) करने लगे और मुँह फेर कर पलट गये तो अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे बदला उसका कि उन्होंने अल्लाह से झूठा वायदा किया और बदला उसका कि वो झूठ बोलते थे क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी को जानता है और ये कि अल्लाह तआला सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है। (सू०—तौबा—75,—78)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
दो आदतें किसी मोमिन में जमा नहीं हो सकतीं बुख्ल और बद
अखलाकी (जामअ तिमिजी-290)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है
इबादत गुज़ार बखील (कंजूस) से अल्लाह तआला को जाहिल सखी
ज़्यादा पसन्द है। (कंजुल उम्माल-6/392)

ज़कात की अदायगी अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु
अलैह वसल्लम के हुक्म और उनकी मुहब्बत में इखलास के साथ
उसके हकदारों को दें और बुख्ल जैसी बुराई और गुनाह से बचें
और इससे हमेशा परहेज़ करें और बुख्ल इस तरह दूर हो सकता है
कि जब इन्सान माल खर्च करने का आदी हो जाये और अपने नफ़्स
को माल खर्च करने पर मजबूर कर दे और इस तरह माल की
मुहब्बत खत्म हो जायेगी और वो बुख्ल से पाक हो जायेगा और
ज़कात को पोशीदा (छुपाकर) और अल्लाह तआला की रज़ा जोई
के लिये दें ताकि रिया (दिखावा) जैसी बुराई और गुनाह से बचें
और अगर ये गुमान हो कि मेरे ऐलानियाँ ज़कात देने से लोगों में
ज़कात देने की तरफ़ रग़बत पैदा होगी और लोग मेरी इक्त्तदा
करेंगे तो ज़कात को ऐलानियाँ दें लेकिन अपने बातिन को रिया से
पाक रखें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
ये जो तुम बुलाये जाते हो कि अल्लाह तआला की राह में खर्च
करो तो तुम में से कोई बुख्ल करता है और जो बुख्ल करे वो
अपनी जान पर बुख्ल करता है और अल्लाह तआला बे नियाज़ है
और तुम सब मुहताज (सू0—मुहम्मद—38)

इरशादे बारी तआला है—
जिसने माल जोड़ा और गिन-गिन कर रखा क्या वो ये समझता है
कि ये माल दुनियाँ में हमेशा रखेगा हरगिज़ नहीं ज़रूर वो रौधने
वाली में फँका जायेगा और क्या तुम जानते हो रौधने वाली क्या है
अल्लाह तआला की आग है जो भड़क रही है वो दिलों पर चढ़
जायेगी। (सू0—हुमाज़ाह—2,—7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
 किसी बन्दे के दिल में बुख्ल और ईमान दोनो जमा नहीं हो सकते।
 (बैहकी-9/161)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
 तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं वो बुख्ल जिसकी पैरवी की
 जाये वो ख्वाहिश जिसकी इत्तेवाअ की जाये और आदमी का खुद
 पसन्दी में मुब्तिला होना। (कंजुल उम्माल-16/45)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
 अल्लाह तआला ने जिसे माल दिया और अगर उसने जकात नहीं
 दी तो रोजे कयामत उसका माल गंजा साँप बना दिया जायेगा और
 इस साँप को तौक बनाकर उसके गले में डाल दिया जायेगा फिर
 वो साँप कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा खजाना हूँ (सही बुखारी)

—: सद्का फितरा :—

हर साहिबे निसाब पर सद्का फितरा देना वाजिब है और अपनी
 और उन सब की तरफ से सद्का फितरा देना वाजिब है जो लोग
 उसकी कफालत (ज़िम्मेदारी) में हों यानी उसके माँ बाप, वीबी,
 औलाद या करीबी रिश्तेदार वगैराह जिनका खर्च उसके ज़िम्मे हो
 हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया उन
 लोगों की तरफ से सद्का फितरा अदा करो जो तुम्हारी कफालत में
 हों और ईद से पहले सद्का फितरा अदा कर दें जिनको जकात दे
 सकते हैं उन्हें फितरा भी दे सकते हैं इसकी मिकदार ये है गेंहूँ या
 उसका आटा आधा साअ या उसकी कीमत खजूर या जौ या उसका
 आटा एक साअ या उसकी कीमत अदा की जाये यानी गेंहूँ सवा दो
 सेर या जौ साढ़े चार सेर या उसकी कीमत हर शख्स की तरफ से
 दें। (तकरीबन दो किलो सैंतालीस ग्राम गेंहूँ या उसकी कीमत)।

—: राहे खुदा में खर्च :— (सद्का ख़ैरात)

राहे खुदा में खर्च करना अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा अमल है और जो लोग राहे खुदा में खर्च करते और ग़ुरबा मसाकीन को सद्का ख़ैरात करते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें अपना अजीज़ दोस्त रखता है और अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर राहे खुदा में खर्च करने का हमें हुक्म दिया है और अहादीस मुबारका में इसकी बड़ी फज़ीलत आयी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—
ऐ ईमान वालो हमारे दिये में से खर्च करो वो दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद व फरोख्त है। (सू०—बकराह—254)

इरशादे बारी तआला है—
और हमारे दिये में से हमारी राह में खर्च करो क़ब्ल इसके कि तुम में से किसी को मौत आ जाये फिर कहने लगो कि ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुददत तक मुहलत क्यों नहीं दी कि मैं सद्का ख़ैरात कर लेता और नेकोकारों में हो जाता और हरगिज़ अल्लाह तआला किसी जान को मुहलत न देगा जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है और अल्लाह तआला को तुम्हारे कामों की ख़बर है।
(सू०—मुनाफ़िकून—10,—11)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
तुम हरगिज़ नेकी के मक़ाम को न पा सकोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ खर्च न करो और तुम जो कुछ खर्च करो अल्लाह तआला को मालूम है। (सू०—आले इमरान—92)

इरशादे खुदावन्दी है—
जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ कायम करते और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में खर्च करते हैं। (सू०—बकराह—3)

अल्लाह तआला तमाम नेअमतों का मालिक और अपने बन्दों को

अता करने वाला है तो जब हम अल्लाह की राह में माल खर्च करते हैं तो गोया हम अपना कुछ भी खर्च नहीं करते बल्कि अल्लाह तआला का हम पर एहसान और करम है कि अपने ही माल को अपनी राह में खर्च कराकर बदले में हमें उसका अजर (सवाब) अता फरमाता है और जिस माल से अल्लाह की राह में खर्च किया जाता है उस माल को अल्लाह तआला और ज़्यादा बढ़ाता है और उस माल में बरकत अता करता है और हमारी इज़्ज़त और वक़ार को बढ़ाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और अल्लाह की राह में जो कुछ खर्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जायेगा और किसी तरह घाटे में न रहोगे। (सू०—अनफ़ाल—60)

इरशादे बारी तआला है—
और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में खर्च करोगे वो उसके बदले (तुम्हें) और देगा और वो सबसे बेहतर रिज़क देने वाला है।
(सू०—सवा—39)

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
बेशक सद्का देने वाले मर्द और सद्का देने वाली औरतें और वो जिन्होंने अल्लाह तआला को कर्ज़ दिया उनके दूने हैं और उनके लिये इज़्ज़त का सवाब है। (सू०—हदीद—18)

इरशादे खुदावन्दी है—
और अल्लाह सूद को मिटाता है (यानी सूदी माल से बरकत को ख़त्म करता है) और सद्कात को बढ़ाता है (यानी सद्के के ज़रिये माल की बरकत को ज़्यादा करता है) और अल्लाह तआला किसी भी नासिपास (ना शुक्रा) नाफ़रमान को पसन्द नहीं करता।
(सू०—बकराह—276)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लिम ने फरमाया—
अल्लाह तआला हलाल कमाई से दिया हुआ सद्का कुबूल फरमाता है और उसे बढ़ाता है कि एक खजूर का सद्का (सवाब में) उहद पहाड़ के बराबर हो जाता है। (सही मुस्लिम—1/189)

इन्सान के पास चाहे जितना भी माल हो बिल आखिर वो उसके वारिसों का ख़ज़ाना होता है और जो अल्लाह तआला की राह में ख़र्च किया जाता है वही उसका असली ख़ज़ाना है जिसका उसे पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और जो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते और बुख़ल (कंजूसी) करते हैं तो जब उन पर अज़ाब डाला जायेगा तो वो नादिम होंगे और अफ़सोस करेंगे और पछतायेंगे और कहेंगे कि काश अल्लाह तआला हमें थोड़ी मुहलत दे दे तो हम अपना तमाम माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दें लेकिन मौत के बाद किसी को मुहलत नहीं मिलती और आखिरत में वही लोग ख़सारे में होंगे जो अल्लाह तआला के दिये माल से अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन को खिलाने की रग़बत नहीं देते और मीरास का माल हप—हप खाते हो और माल की निहायत मुहब्बत रखते हो हाँ हाँ जब ज़मीन टुकड़ा कर पाश—पाश कर दी जायेगी और आपका रब जलवा फ़रमा होगा और फ़रिश्ते क़तार—क़तार खड़े होंगे और उस दिन जहन्नुम लायी जायेगी उस दिन आदमी सोचेगा और अब सोचने का वक़्त कहाँ (और) कहेगा हाय किस तरह मैंने जीते जी नेकी आगे भेजी होती सो उस दिन न उसके अज़ाब की तरह कोई अज़ाब दे सकेगा। (सू०—फ़ज़—17,—25)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
वो ज़्यादा नुक़सान उठाने वाले हैं जिनके पास ज़्यादा माल है और वो राहे हक़ में ख़र्च नहीं करते। (सही मुस्लिम—1/320)

इसलिये हमें चाहिये कि हम ज़्यादा से ज़्यादा माल अल्लाह की राह में ख़र्च करें और कसरत से ग़ुरबा और मसाकीन और फुक़रा को अपने हलाल माल से सद्का ख़ैरात करें ताकि बारगाहे खुदावन्दी में हमारे सद्कात मक़बूल हों क्योंकि हराम माल का सद्का काबिले कुबूल नहीं होता अगर हम नेक नीयत और अल्लाह तआला की रज़ा जोई के लिये सद्का करें तो ग़ुरबा मसाकीन के हाथों में पहुँचने से पहले अल्लाह तआला उसे कुबूल फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

क्या उन्हें ख़बर नहीं अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा कुबूल फरमाता है और सद्क़े खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है।

(सू०—तौबा—104)

इरशादे बारी तआला है—

और जो नमाज़ कायम रखें और हमारे दिये में से हमारी राह में खर्च करें यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये दर्जे हैं इनके सब के पास और बरिख़ाश और इज़्ज़त की रोज़ी। (सू०—अनफ़ाल—3, 4)

हदीस पाक में है सद्क़ा इन्सान के गुनाहों को इस तरह मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है और क़यामत के दिन लोग फ़ैसला होने तक अपने सद्क़े के साये में रहेंगे जो उन्होंने दुनियाँ में किये होंगे रोज़े क़यामत तमाम लोग एक चटयल मैदान में जमा होंगे जिसकी ज़मीन ताँबे की मिस्ल होगी और सूरज की नज़दीकी के बाइस उसकी गर्मी से लोगों के दिमाग़ ख़ौलते होंगे और वहाँ सब के अर्श के साये के सिवा कोई साया न होगा लेकिन दुनियाँ में सद्क़ा करने वालों के लिये उनका सद्क़ा उनके लिये साया होगा इसलिये जितना ज़्यादा सद्क़ा ख़ैरात हम दुनियाँ में करेंगे उसी के मुताबिक़ हमें रोज़े क़यामत साया अता होगा जो हमें क़यामत के दिन सख़्त गर्मी और धूप से बचायेगा और इस अमल की कसरत हमारी बरिख़ाश और मग़फ़िरत का बाइस होगी और दुनियाँ व आख़िरत में हमें इस अमल का बहुत अज़र (सवाब,) अता होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

असल नेकी ये नहीं कि अपने मुँह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो हाँ असल नेकी ये है कि ईमान लाये अल्लाह और फ़रिश्तों और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मुहब्बत में अपना अज़ीज़ माल दें रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और राहगीरों और साइलों को और गर्दन छुड़ाने में। (सू०—बकराह—177)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ कायम रखते हैं और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं पोशीदा और

ज़ाहिर वो ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिसमें हरगिज़ नुकसान नहीं होगा ताकि अल्लाह उनका अज़र उन्हें पूरा—पूरा अंता फ़रमाये और अपने फज़ल से उन्हें और ज़्यादा अंता फ़रमाये बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शाने वाला बड़ा ही शुक्र कुबूल करने वाला है।
(सू०—फ़ातिर—29,—30)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को लिबास (कपड़ा) पहनाता है तो जब तक उस पर कपड़े का एक टुकड़ा भी बाकी रहता है तो वो (देना वाला) अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में रहता है।
(मिशकात—169)

सबसे बेहतर सद्का वो है जो सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिये हलाल माल से पोशीदा तौर पर दिया जाये पोशीदा सद्का ज़ाहिरन सद्के से सत्तर गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है और दूसरों को दिखाने वाले सुनाने वाले और एहसान जताने वाले का सद्का अल्लाह तआला कुबूल नहीं करता और उसका दिया हुआ सद्का ज़ाया हो जाता है और उस सद्के का अज़र उसके करने वाले को नहीं मिलता इसलिये हमें चाहिये कि अपने सद्का ख़ैरात को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये इख़लास के साथ अल्लाह की राह में दें और दिखावा न करें।

छुपाकर (पोशीदा) सद्का ख़ैरात करने की फ़ज़ीलत कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फ़रमाई—
जो छुपाकर अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं वो उस दाने की मिस्ल है कि जिसने उगाई सात बालियाँ और हर बाली में सौ (100) दाने और अल्लाह इससे भी ज़्यादा बढ़ाये जिसके लिये चाहे अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है (सू०—बकराह—261)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया—
और जो लोग अपने माल अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान व इताअत पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक ऐसे बाग़ सी है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दो गुना फल लाये और

उसे जोरदार बारिश न मिले तो (उसे) शबनम (या हल्की सी फुहार) भी काफी हो और अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल को खूब जानने वाला है। (सू०—बकराह—265)

और दिखावा करके अल्लाह की राह में खर्च करने वालों के लिये कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने यूँ मिसाल बयान फरमाई— जो माल लोगों को दिखाने के लिये खर्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोजे कयामत पर उसकी मिसाल ऐसे चिकने पत्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर जोरदार बारिश हो तो वो उसे (फिर वही) सख्त और साफ़ (पत्थर) करके ही छोड़ दे सो अपनी कमाई से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। (सू०—बकराह—264)

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह ने फरमाया कि मेरी उम्मत के लोग नमाज़ रोज़ो की कसरत की वजह से जन्नत में नहीं जायेंगे बल्कि सखावत और लोगों पर रहम करने की वजह से जन्नत में जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अल्लाह की राह में अपने हलाल माल को खर्च करें गरीब मुहताज मिस्कीन साइल व फ़कीर की माली मदद करें और उनके साथ रहम दिली और हुस्ने सुलूक से पेश आयें।

बाज़ औकात ऐलानियाँ सदका देना अफ़ज़ल है ताकि लोगों में ज़्यादा सदका देने की तरफ़ रग़बत पैदा हो लेकिन अपने आपको रिया (दिखावा) से पाक रखें क्योंकि जिस अमल में शोहरत मकसूद हो वो अमल ज़ाया हो जाता है और उसका कोई अज़र (बदला) नहीं मिलता।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है— वो जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे हुये और ज़ाहिर उनके लिये उनका नेग उनके रब के पास है उनको न कुछ अंदेशा हो न कुछ ग़म। (सू०—बकराह—274)

इरशादे बारी तआला है—

अगर सदका ख़ैरात ऐलानियाँ दो तो ये भी अच्छा है (इससे दूसरों को तरगीब मिलेगी) और अगर छुपाकर फ़कीरों को दो तो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है और (इस ख़ैरात की बजह से) अल्लाह तआला तुम्हारे कुछ गुनाहों को मिटा देगा और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है। (सू०—बकराह—271)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
पोशीदा सदका अल्लाह तआला के गज़ब को बुझा देता है।
(मजमउज्जवाइद-3/115)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सात किस्म के लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआला क़यामत के दिन
साया अता फ़रमायेगा जिस दिन उसके साये के अलावा कोई साया
न होगा उनमें से एक वो शख्स है जो सदका करे दायें हाथ से
और बाँये हाथ को पता न चले कि क्या दिया है।
(सही बुख़ारी-1/191)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
बेहतरीन सदका वो है जो इन्सान मेहनत व मशक्कत से कमाये
और किसी फ़कीर को पोशीदा तौर पर दे।
(सुनन अबी दाऊद-1/204)

अगर अल्लाह तआला राहे खुदा में खर्च करने पर मिलने
वाले अज़ीम अज़र पर किसी शख्स को मुत्तलाअ कर दे तो वो
शख्स अपनी तमाम मालो दौलत राहे खुदा में खर्च कर दे और खुद
मालो ज़र से खाली हो जाये ज़रा ग़ौर करो कि कायनात की हर
एक चीज़ रब्बुल आलमीन की है और वही हर चीज़ का असल और
हकीकी मालिक है हम तो सिर्फ़ इस्तेमाल करते हैं हम मालिक नहीं
हैं तो फिर हम क्यों अल्लाह के अता कर्दा माल पर बुख़ल करें
बल्कि हमें तो चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा राहे खुदा में खर्च करें
ताकि बदले में बेहतरीन अज़र पायें नहीं तो सब माल यहीं रह
जायेगा और हमें सिर्फ़ एक कफ़न में लपेटकर क़ब्र में दफ़न कर
दिया जायेगा और फिर हम क़ब्र में पहुँचकर पछतायेंगे और
अफ़सोस करेंगे कि काश हमने अपनी मौत से कब्ल राहे खुदा में
कसरत से खर्च किया होता तो आज हम उसका सिला पाते।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सिर्फ़ दो तरह के शख्स ऐसे हैं जिन पर रश्क किया जा सकता है
एक वो शख्स कि जिसे अल्लाह तआला हिकमत अता करे और वो
लोगों में फैलाता है और दूसरा वो शख्स जिसे अल्लाह तआला ने
माल दिया और वो अल्लाह की राह में खर्च करता है।
(सही मुस्लिम-1/272)

—: फुकरा की फज़ीलत :—

अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसे आजमाइश में डाल देता है और जब किसी बन्दे से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता है तो उससे माल व औलाद सब ले लेता है और जिन फ़कीरों व ग़रीबों और मिस्कीनों को हम हकारत की नज़र से देखते हैं असल में वो अल्लाह तआला के महबूब तरीन बन्दे हैं और अल्लाह तआला उन्हें अपना दोस्त रखता है जो अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहते हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमायेगा कहाँ हैं वो मेरे पसंदीदा बन्दे तो फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे इलाही वो कौन लोग हैं फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा जो दुनियाँ में मेरी अता पर राज़ी रहे उन्हें जन्नत में ले जाओ जबकि बाकी लोग हिसाबे अमल से गुज़र रहे होंगे। (कंजुल उम्माल—6/378)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरमी है—
मेरी उम्मत के फुकरा मालदार लोगों से पाँच सौ (500) साल क़ब्ल (पहले) जन्नत में जायेंगे। (मुस्नद अहमद—2/296)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग फुकरा हैं जो जन्नत की सैर करते होंगे और अल्लाह तआला मुहताज व तंगदस्त को दोस्त रखता है।
(कीमयाये सआदत—740)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
जब मैंने जन्नत में झाँका तो वहाँ ज़्यादा लोग फुकरा थे और जब मैंने जहन्नुम में झाँका तो वहाँ ज़्यादातर मालदार और औरतें थीं।
(सही बुख़ारी—2/955)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जो मालदार की इज़्ज़त करे और फ़कीर की तौहीन करे वो मलऊन है इसलिये हमें चाहिये कि ग़रीब मिस्कीन व फुकरा की इज़्ज़त इस तरह करें कि जैसे

हम अपने किसी अजीज मुसलमान भाई की इज्जत करते हैं।

जब अम्बियाकिराम अलैहिमुस्सलाम जन्नत में दाखिल होंगे तो उनमें से सबसे आखिर में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अपनी हुकूमत और माल के बाइस सबसे आखिर जन्नत में दाखिल होंगे और इसी तरह सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम में से सबसे आखिर हज़रत अब्दुल रहमान बिन औफ (रज़ि०) अपनी मालदारी की वजह से तमाम सहाबाकिराम में सबसे आखिर जन्नत में दाखिल होंगे।

जब हम किसी फकीर मिस्कीन को कुछ माल या खाना या कपड़ा वगैराह देते हैं तो हम उस पर कोई ऐहसान नहीं करते बल्कि वो फुकरा हम पर ऐहसान करते हैं कि हमारे दिये हुये माल को वो कुबूल करते हैं जिससे हमारा माल तहारत का ज़रिया बनता है और हम उसका अज़र पाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और मंगता को न झिड़को और अपने रब की नेअमत का खूब चर्चा करो। (सू०—जुहा—10—11)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
आदमी का भूके को खाना खिलाना उसे जन्नत में ले जायेगा।
(मजमउज्जवाइद—5/17)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
फुकरा की पहचान ज़्यादा रखो और उनसे नेअमतें हासिल करो क्योंकि उनके पास दौलत है सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह उनकी दौलत क्या है आपने इरशाद फरमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला फुकरा से फरमायेगा कि तुम जन्नत में जाओ और जिस जिस ने तुम्हें खाना खिलाया जिस—जिस ने तुम्हें कपड़ा पहनाया उनका हाथ पकड़कर उन्हें भी जन्नत में ले जाओ। (कंजुल उम्माल—4/468)

गुरबा मसाकीन व फुकरा ये तमाम लोग माल वाले लोगों के लिये बरकत और अल्लाह तआला की रहमत और इनामात का सबब हैं क्योंकि अगर गरीब मिस्कीन फकीर न होते तो हम अपने सद्कात खैरात किसे देते और इसके बाइस मिलने वाले बेशुमार इनामात और सवाब से हम महरूम रहते इनका मक़ाम और मर्तबा हमें आखिरत में देखने को मिलेगा जब अल्लाह तआला इनकी फकीरी और उस पर सब्र के बाइस इन्हें मरातिब और दरजात अता करेगा तब तक लोग इन फुकरा मसाकीन पर रश्क करेंगे और कहेंगे कि काश दुनियाँ में हमें इनसे भी ज़्यादा मुसीबतों परेशानी मिलती ताकि इन इनामात के हम भी मुस्तहिक होते।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
मसाइबो आलाम से दो चार (यानी मुसीबतों परेशानी और रंजोगम में मुब्तिला) होने वाले लोगों को रोज़े क़यामत अल्लाह तआला वो मरातिब (मर्तबे) अता करेगा कि आफियत (ऐशो आराम) वाले लोग कहेंगे कि काश दुनियाँ में मेरी खालें कैचियों से काटी जाती।
(कीमयाये सआदत—707)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिये दरवेशी (फकीरी) पर सब्र करता और राजी रहता है अल्लाह तआला उसे तीन मरातिब अता करेगा जो बादशाहों को भी नहीं मिलेंगे—

- 1—फुकरा अमीर से पाँच सौ साल क़ब्ल (पहले) जन्नत में जायेंगे।
- 2—फुकरा को महल अहले जन्नत दिखाकर देगी।
- 3—फकीर एक बार सुबहान अल्लाह वल हम्दुलिल्लाह कहे और अमीर भी एक बार सुबहान अल्लाह वल हम्दुलिल्लाह कहे और साथ में दस हजार दीनार सद्का भी करे फिर भी फकीर के सबाब और दर्जे को नहीं पा सकता। (कीमयाये सआदत—746)

हज़रत गौसुल आजम अब्दुल कादिर जीलानी (रज़ि०) फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरे बन्दो अगर तुम मेरी दावत करना चाहते हो तो मेरे फाका हाल बन्दों की दावत करो तुम मुझे उन्हीं में पाओगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम एक शख्स के पास से गुज़रे जिसके पास माल व असबाब और दुनियाँ में से कुछ न था आप ने इरशाद फ़रमाया कि अगर इसका नूर तमाम दुनियाँ में तकसीम कर दिया जाये तो पूरा हो जाये इसलिये हमें चाहिये कि किसी फ़कीर मिस्कीन ग़रीब को कमतर न जानें बल्कि उनकी इज्जत करें और उनसे रहम दिली और हुस्ने खुल्क से पेश आयें और उनको खाना खिलायें लिवास पहनायें और माल वगैराह से उनकी मदद करें और खुद को माल के बाइस तकब्बुर से दूर रखें और किसी भी फुक़रा मसाकीन को हक़ारत की नज़र से न देखें और खुद को अच्छा गुमान न करें और फ़कीर मिस्कीन की जो भी बदनी या माली मदद करें तो सिर्फ़ नेक नीयत व अल्लाह तआला की रज़ा और सवाब की नीयत से करें ताकि अल्लाह तआला की बारगाह में मक़बूल हो।

सरवर कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

कयामत के दिन अल्लाह तआला बन्दे से पूछेगा ऐ इब्ने आदम मैं भूका था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया वो अर्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैं तुझे खाना कैसे खिलाता जबकि तू तो तमाम ज़हानों का पालने वाला है अल्लाह तआला फ़रमायेगा तेरा मुसलमान भाई भूका था तूने उसे खाना नहीं खिलाया अगर तू उसे खाना खिलाता तो गोया मुझे खिलाता। (सही मुस्लिम-2/318)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— सबसे बुरा खाना वलीमे का वो है जिसमें मालदार लोगों को बुलाया जाये और फुक़रा (फ़कीरों) को छोड़ दिया जाये।

(सही मुस्लिम-2/778)

जो माल हम फुक़रा मसाकीन को सदका ख़ैरात करते हैं वही माल हमारी आख़िरत का सरमाया है जो क़ब्र व क़यामत में हमारे काम आयेगा ज़रा गौर करो जो माल या अश्या (चीज़ें) हमारे पास मुहैया हैं क्या वो दुनियाँ में हम अपने साथ लाये थे बल्कि वो सब कुछ जो हमारे पास मौजूद है वो मेरे रब ने हमें अता किया है याद रखो इन्सान न तो दुनियाँ में कुछ लेकर आया है न कुछ लेकर जायेगा लेकिन नेक आमाल और जो माल कारे ख़ैर में ख़र्च करता फुक़रा व मसाकीन को सदका ख़ैरात करता वो उसे ज़रूर अपने साथ लेकर जायेगा जो उसकी निजात और बख़्शिश का ज़रिया और अज़रे अज़ीम का बाइस बनेगा।

—: काफिर की दोस्ती :—

अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने हमें गैर मुस्लिम से दोस्ती करने को मना फ़रमाया है और उनसे दोस्ती न करने में एक हिकमत ये भी है कि इन्सान के अन्दर बुरे असरात जल्द आ जाते हैं और अल्लाह तआला चाहता है कि मेरे बन्दे हर बुराई व गुनाह से दूर रहें और सिर्फ अच्छे काम करें और ये सब तआला का रहमो करम है कि अपने बन्दों को बुराई से बचाना चाहता है हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया ।

बेशक अल्लाह तआला किरामन कातिबीन (फ़रिश्तों) से फ़रमाता है— कि जब मेरा बन्दा गुनाह का इरादा करे तो उसे न लिखो जब तक वो उस पर अमल न करे और जब वो उस पर अमल करे तो एक गुनाह लिखो और जब वो नेकी का इरादा करे तो एक नेकी लिख दो और अगर वो उस पर अमल करे तो दस नेकी लिख दो । (सही मुस्लिम—1/78)

कुरान व अहादीस मुबारका में काफिरों से दोस्ती न करने की हमें ताकीद की गई है इसलिये हम तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करें और किसी गैर मुस्लिम से अपने दोस्ताना तआल्लुक न रखें ।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

ऐ ईमान वालों काफिरों को अपना दोस्त न बनाओ (सू०—निसा—144)

इरशादे बारी तआला है—

मुसलमान काफिरों को अपना दोस्त न बनाये (सू०—आले इमरान—28)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

मोमिन के सिवा किसी को अपना साथी न बनाओ । (मिशकात—426)

इरशादे बारी तआला है—

वो जो मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज़्जत तलाश करते हैं तो इज़्जत तो सारी अल्लाह के लिये है । (सू०—निसा—139)

—: अख़लाक़े हसना :—

हर मुसलमान के लिये हुस्ने खुल्क की सिफ़त का रखना उसके लिये बहुत बेहतर और बड़ी फ़ज़ीलत रखता है और कुर्बे इलाही का सबब बनता है और ये सिफ़त बन्दे के लिये रब तआला की नज़दीकी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और अच्छे अख़लाक़ वाले शख्स अल्लाह तआला के महबूब और पसंदीदा बन्दे हैं अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम अच्छे अख़लाक़ (अच्छी आदत) वाले शख्स से मुहब्बत करते हैं और परहेज़गारी की तकमील वगैर हुस्ने अख़लाक़ से नहीं हो सकती।

इसलिये हमें चाहिये कि हम किसी भी शख्स को किसी भी तरह की अज़िज़त (तकलीफ़) न पहुँचायें और उनसे अज़िज़त मिलने पर सब्र करें और खुशी और ग़म व सख़्ती और मशक्कत सभी हालतों में लोगों को राज़ी रखें और हर शख्स से हुस्ने सुलूक व नरमी और अच्छे बरताव से पेश आयें और हमेशा अच्छी बात कहें और लोगों पर रहम करें और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात और गुस्से पर हमेशा ग़ालिब रहें यही अख़लाक़े हसना है और ईमान की मज़बूती और कमाल हर इन्सान को हुस्ने अख़लाक़ से ही मिलता है।

—अख़लाक़े हसना से मुताअल्लिक़ चन्द अहादीस—

1—नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— जो शख्स लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआला उस पर रहम नहीं करता। (मुस्नद अहमद—2/228)

2—सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—बेशक अल्लाह तआला नरम दिल और खुश मिज़ाज शख्स को पसन्द फ़रमाता है। (शुअबुल ईमान—6/254)

3—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— क़्यामत के दिन मीज़ान (तराजू) पर जो सबसे ज़्यादा बज़्नी चीज़ रखी जायेगी वो ख़ौफ़े खुदा और अच्छे अख़लाक़ हैं।

(सुनन अबी दाऊद—2/305)

4—रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
मोमिनो में उस शख्स का ईमान ज्यादा कामिल है जिसका
अखलाक सबसे अच्छा है और वो अपने घर वालों पर ज्यादा
मेहरबान है। (जामअ तिमिजी—375)

5—फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—जो शख्स तुम्हें
महरुम करे तुम उसे अता करो और जो तुमसे ज्यादाती करे तुम
उसे माफ करो और जो तुमसे कता तआल्लुक करे तुम उससे सिला
रहमी (अच्छा सुलूक) करो (शुअबुल ईमान—6/261)(दुर्र मन्सूर—3/153)

6—नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
उस शख्स पर दोज़ख हराम है जो नरम दिल और खुश मिज़ाज
और मिलनसार है। (मजमउज्जवाइद—4/75)

7—सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जहन्नुम से बचो अगरचा खजूर के एक टुकड़े से हो और जो न
पाये वो अच्छी गुप्तगू करे। (सही बुखारी—2/890)

8—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिस आदमी को ये बात पसन्द हो कि उसकी उम्र में बरकत और
रिज़क में कुशादगी हो तो उसे चाहिये कि सिला रहमी (अच्छा
सुलूक) इस्तियार करे। (मुस्तदरक हाकिम—4/161)

9—रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
बेशक मेरे नज़दीक तुम में से सबसे ज्यादा महबूब और क़यामत के
दिन मेरे ज्यादा करीब वो लोग होंगे जिनके अखलाक सबसे अच्छे
हैं। (मजमउज्जवाइद—8/21)

10—फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हैं—
बेशक अच्छे अखलाक गुनाहों को इस तरह पिघला देते हैं जैसे
सूरज जमे हुये पानी को पिघला देता है। (शुअबुल ईमान—6/247)

11—नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—आदमी का
अच्छी बात करना उसे जन्नत में ले जायेगा (मजमउज्जवाइद—5/17)

12—सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—अच्छी गुफ्तगू सदका है। (मुस्नद अहमद—2/316)

13—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—नरम दिल वाले शख्स पर जहन्नुम हराम है। (तिर्मिजी—4/220)

14—रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया— जिस चीज़ में नरमी होती है वो उसे जीनत बख्शाती है और जिस चीज़ में नरमी नहीं होती वो उसे ऐबदार कर देती है। (सही मुस्लिम)

15—फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है— बन्दा अपने अच्छे अखलाक से आखिरत के अज़ीम दरजात को हासिल कर लेता है। हालाँकि वो इबादत में कमजोर होता है। (मुअजम कबीर तिबरानी—1/1060)

16—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— जो मुसलमान हक पर होने के बावजूद झगड़ा नहीं करता तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में आला घर बनाता है। (सुनन अबी दाऊद—2/305)

और बद अखलाकी इन्सान को अल्लाह व रसूल से दूर कर देती और बुराई व गुनाह की तरफ ले जाती है और ये वो बातिनी बीमारी है जिसका इलाज किसी तबीब के पास नहीं है बल्कि इन्सान खुद इसका इलाज है कि उसे चाहिये कि अपने अन्दर खौफ़े खुदा रखे और योमे हिसाब यानी कयामत का यकीन रखे और अपने नफ़्स और गुस्से को काबू में रखे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म और सुन्नतों पर कसरत से अमल करे तो वो इस बीमारी से निजात पा सकता है बद अखलाकी एक ऐसी बुराई है कि इसके साथ नेकियों की कसरत भी उसे फायदा नहीं देती और दुनियाँ में लोगों की नज़रों से वो गिर जाता है और जलील व ख़्वा़र होता है और अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की नाराज़गी का सबब बनता है और आखिरत में वो शर्मसार होगा और सख्त अज़ाब में मुब्तिला किया जायेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

बद अखलाकी ऐसा गुनाह है जिसकी बख्शिष नहीँ और बद गुमानी ऐसी ख़ता है जिससे और गुनाह पैदा होते हैं।

(मुअजम सगीर तिबरानी—1/200)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अल्लाह तआला के नज़दीक बदतरीन मख़लूक वो शख्स हैं जो बहुत झगड़ालू हैं। (सही बुख़ारी—1/332) (मुस्नद अहमद—6/55)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कयामत के दिन सबसे बुरा वो शख्स होगा जिसे लोग बद अख़लाकी की वजह से छोड़ दें। (सही बुख़ारी—2/894)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

बेशक बन्दा अपने बद अख़लाक की वजह से जहन्नुम के निचले गढ़े में पहुँच जाता है। (मजमउज्जवाइद—8/25)

—: तकब्बुर :—

तकब्बुर करना गुनाहे अजीम है और इस बीमारी में मुब्तिला इन्सान अपना ठिकाना जहन्नुम में बनाता है और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होता है और दुनियाँ व आखिरत में वो नुकसान उठाने वालों में से होता है और लोगों में वो ज़लील होता है और अपनी आक़िबत ख़राब कर लेता है और अल्लाह तआला मुताकब्बिर (घमंडी) शख्स को ना पसंद फ़रमाता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

ये उसका बदला है जो तुम ज़मीन पर बातिल पर खुश होते थे और ये उसका बदला है जो तुम इतराते थे जाओ जहन्नुम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना है मगरूरों का। (सू०—मोमिन—75,—76)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

बेशक अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता इतराने वाले और बढ़ाई करने वालों को। (सू०—निसा—36)

इरशादे बारी तआला है—

अल्लाह तआला हर मुताकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है। (सू०—मोमिन—35)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— जिस शख्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर है वो जन्नत में न जायेगा और जिस शख्स के दिल में राई के दाने बराबर ईमान है वो जहन्नुम में न जायेगा। (सही मुस्लिम—1/65)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— बेशक अल्लाह तआला सख्त मिज़ाज मुताकब्बिर (घमंडी) को ना पसंद करता है। (सही मुस्लिम—2/382)

इन्सान की हकीकत ये है कि वो एक नुत्फ़े (वीर्य, मनी) से उसके वुजूद की इब्तिदा हुई और वो औरत की शर्मगाह से दुनियाँ में

आया और दो तरह की नजासतों को रोज़ उठाता है यानी पेशाब और पाखाना और जब वो फौत हो जाता है तो बदबूदार हो जाता है और उसका जिस्म कीड़े मकोड़ों की गिज़ा बनता है हत्ता कि वो खाक हो जाता है इस हकीकत और अंजाम को जानने के बाद भी अगर इन्सान तकब्बुर करे तो वो किस चीज़ पर तकब्बुर करता है जबकि उसकी हकीकत उस पर ज़ाहिर हो गई और अगर फिर भी वो तकब्बुर करे तो वो सबसे बड़ा अहमक है जो खुद को ख़सारे में डालता है और उसका तकब्बुर उसे जहन्नुम में ले जायेगा

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

बेशक आदमी पर एक ऐसा वक़्त गुज़रा कि कहीं उसका नामो निशान भी न था बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से कि वो उसे जाँचे तो उसे सुनता देखता कर दिया बेशक हमने उसे राह बतायी या हक़ मानता या ना शुक्री करता बेशक हमने तैयार कर रखी हैं जंजीरें और तौक और भड़कती हुई आग।

(सू०—दहर—1,—4)

इरशादे बारी तआला है—

इन्सान हलाक हो वो किस क़दर ना शुक्रा है उसे किस चीज़ से बनाया पानी की बूँद से उसे पैदा किया फिर उसे तरह—तरह के अंदाज़ों पर रखा फिर उसके लिये रास्ता आसान किया फिर उसे मौत दी और कब्र में रखवाया फिर जब चाहेगा बाहर निकालेगा।

(सू०—अबस—17,—22)

इरशादे खुदावन्दी है—

और ज़मीन में निशानियाँ हैं यकीन वालों के लिये और खुद तुम्हारे वुजूद में निशानियाँ हैं तो क्या तुम्हें नज़र नहीं आती।

(सू०—ज़ारियात—20,—21)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

क़यामत के दिन तकब्बुर करने वाले चींटियों की शक़ल में उठाये जायेंगे और लोग उनको पाँव से रौधेंगे और उनको जहन्नुम की तरफ़ हाँका जायेगा और उनको बदबूदार कीचड़ और जहन्नमियों की पीप पिलाई जायेगी। (अत्तरगीब वत्तरहीब—4 / 388)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो तकब्बुर करे अल्लाह तआला उसे ज़लील कर देता है और वो
अपने आपको बड़ा समझता है लेकिन लोगों की निगाहों में वो
छोटा होता है। (कंजुल उम्माल)

तमाम तारीफें और तमाम खूबियाँ सिर्फ़ रब तआला
के लिये ही हैं और तकब्बुर भी उसकी सिफ़त है और अगर कोई
शख्स तकब्बुर करता है तो गोया वो अल्लाह तआला से उसकी
सिफ़त के मुताअल्लिक झगड़ा करता है जबकि इन्सान की हकीकत
ये है कि उसका आगाज़ मनी है और अंजाम मुर्दार है और उसकी
मौत के बाद न उसकी ताक़त बाकी रहेगी न उसका हुस्नो जमाल
और न उसकी समाअत न उसकी आवाज़ और न उसका माल और
फिर भी अगर कोई शख्स तकब्बुर करे तो ये उसकी कम अक्ली है
और बेवकूफी है जो उसे जहन्नुम में ले जाने के लिये काफी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और ज़मीन पर इतराता न चल बेशक हरगिज़ तू ज़मीन को न चीर
डालेगा और न बुलन्दी में पहाड़ों को पहुँचेगा और इतराने वाले तेरे
रब को पसन्द नहीं है। (सू०— बनी इसराईल—37,—38)

इरशादे बारी तआला है—
तो वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हैं और
वो मगरूर हैं जबकि हकीकत ये है कि बेशक अल्लाह तआला सब
जानता है जो (वो) छुपाते और ज़ाहिर करते हैं बेशक अल्लाह
तआला मगरूरों को पसन्द नहीं करता। (सू०—नहल—22,—23)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
क़यामत के दिन अल्लाह तआला को अपनी मख़लूक में सबसे
ज़्यादा ना पसन्द वो लोग होंगे जो झूठ बोलते और तकब्बुर करते
हैं। (कंजुल उम्माल—16/70)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अल्लाह तआला तकब्बुर करने वालों को पस्त कर देता है।
(मजमउज्जवाइद—8/82)

जब किसी शख्स के दिल में तकब्बुर पैदा होता है तो वो खुद को दूसरों से बुलन्द और मुअज्जज़ समझता है और दूसरों को खुद के मुकाबिल हकीर और कमतर जानता है और ये नफ़्स की ऐसी बुराई और आफ़त है जो दूसरे गुनाहों की तरफ़ माइल करती है और मुताकब्बिर शख्स इस गुनाह के अलावा दूसरे गुनाहों जैसे हसद, गुस्सा, झूठ, फ़रेब, गीबत, बद अख़लाकी वगैराह में मुब्तिला हो जाता है और बड़ा गुनाहगार बन जाता है और वो इन गुनाहों के सबब जन्नत से दूर और दोज़ख़ के करीब पहुँच जाता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तकब्बुर करने वालों को अल्लाह तआला औंधा करके जहन्नुम में डालेगा। (मजमउज्जवाइद-1/98)

इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा हकीर और गुनाहगार खुद को जानें क्योंकि हो सकता कि हमसे कोई ऐसा गुनाह सरज़द हो जाये और उस गुनाह के बाइस अल्लाह तआला हमें जहन्नुम में डाल दे और हमारे तमाम नेक अमल अकारत हो जायें जिन पर हमें फ़ख़्रो नाज़ है और तमाम नेक अमल और इबादात के बावजूद हम जहन्नुम का ईधन बन जायें।

और जिस शख्स को हम हकीर या कमतर या गुनाहगार ख़्याल करते हैं मगर हो सकता है कि उससे काई एक ऐसी नेकी वाकैअ हो जाये जो अल्लाह तआला को पसन्द आ जाये और उस नेकी के सबब अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श दे और उसे जन्नत का मुस्तहिक़ बना दे क्योंकि दुनियाँ में बहुत लोग ऐसे भी हुये हैं जो ज़ाहिरन गुनाहगार थे मगर उनकी कोई एक ऐसी नेकी अल्लाह रब्बुल इज्ज़त को इतनी पसंद आयी कि अल्लाह तआला ने उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाया और अपने महबूब तरीन बन्दों में शामिल किया और वो अल्लाह के वली कहलाये इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में खुद को सबसे ज़्यादा हकीर व कमतर और गुनाहगार ख़्याल करें और लोगों को खुद के मुकाबिल मुअज्जज़ व बेहतर जानें ताकि हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर जैसी बुराई दूर हो जाये और हम तकब्बुर के बाइस होने वाले गुनाहों से इजतिनाब करने में कामयाब हो जायें और हम

इसके साथ-साथ होने वाले दीगर तमाम गुनाहों से पाक हो जायें और यही असल ईमान है और यही जन्नत का रास्ता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

ऐ ईमान वालो कोई कौम किसी कौम का मज़ाक़ न उड़ाये मुम्किन है वो लोग उन (मज़ाक़ करने वालों) से बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का (मज़ाक़ उड़ाये) मुम्किन है वो औरतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली औरतों) से बेहतर हों और न आपस में ताना ज़नी और इलज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिक व बदकार कहना बहुत ही बुरा नाम है और जिसने तौबा नहीं की वही लोग ज़ालिम हैं। (सू०—हुजरात—11)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक जो लोग हमारी इबादत पर तकब्बुर करते हैं अनक़रीब हम उनको जहन्नुम में दाख़िल करेंगे इस हाल में वो ज़लील व रुसवा होंगे। (सू०—मोमिन—60)

इरशादे खुदावन्दी है—

वो तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और तुम अपनी माँओं के पेट में थे तो तुम अपने आप को बड़ा पाक व साफ़ मत बताया करो वो ख़ूब जानता है (असल) परहेज़गार कौन है।

(सू०—नज्म—32)

इरशादे खुदावन्दी है—

हमने आख़िरत का घर (यानी जन्नत) उनके लिये तैयार की है जो ज़मीन पर तकब्बुर नहीं करते और न फ़साद करते हैं और आक़िबत परहेज़गारों की ही है। (सू०—कसस—83)

हमें किसी भी मामालात में तकब्बुर करने या किसी को खुद से कमतर जानने का हक़ नहीं है क्योंकि तमाम मख़लूक़ को अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि वो किस बन्दे से राज़ी है और किस बन्दे से नाराज़ है और ये भी कोई नहीं जानता कि किसकी इबादत बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हुई और किसकी कुबूल नहीं हुई है तो जब हम कुछ भी नहीं जानते तो हम किस बिना पर दूसरों को खुद से कमतर जानें और तकब्बुर करें जबकि हम अपनी तमाम इबादत व आमाल की कुबूलियत से अन्जान हैं

इसलिये हमें चाहिये कि खुद का मुहासिवा करें और दूसरों के मुताअल्लिक न सोचें बल्कि खुद के मुताअल्लिक गौरो फिक्र करें और अपने अंजाम के बारे में सोचें और कोई भी शरूअ इबादत या नेक अमल अपनी ताकत व कुव्वत की वजह से नहीं कर सकता जब तक अल्लाह तआला का उस पर रहमो करम न हो और तमाम नेअमतें जो हमें मयस्सर हुई हैं वो हमारी कोशिश या हासिल करने की वजह से नहीं बल्कि अल्लाह रब्बुल इज्जत के फज़्लो करम और उसकी तौफीक से हमें अता हुई हैं तो जब सब कुछ करने वाला परवरदिगार है तो हम किसी बात पर भी तकब्बुर करने का हक नहीं रखते हैं।

हज़रत अइयूब अलैहस्सलाम ने अल्लाह तआला से कहा ऐ मेरे रब मैंने बरसों बीमारी और परेशानी में गुज़ारे हैं लेकिन मैं तेरी रज़ा पर राज़ी रहा और सब्र किया तो अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ अइयूब तेरा सब्र करना तेरे खुद के ज़ोरो कुव्वत की वजह से नहीं बल्कि मेरे फज़्लो करम से है जो तूने सब्र किया इसी तरह माल ताकत हुस्नो जमाल इल्म अक़ल वगैराह तमाम नेअमतें अल्लाह तआला के फज़्लो करम से हर इन्सान को मिलती हैं इसमें किसी इन्सान का कोई दख़ल नहीं हम चाहकर भी कोई नेक अमल या इबादत नहीं कर सकते और न किसी दुन्यावी नेअमत को हासिल कर सकते हैं जब तक अल्लाह तआला न चाहे इसलिये हमें चाहिये कि किसी भी मामालात में तकब्बुर न करे क्योंकि सब कुछ रब तआला के इख़्तियार में है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और ज़मीन पर इतराता हुआ न चल बेशक अल्लाह तआला को पसन्द नहीं इतराने वाले और फरख़ करने वाले। (सू०—लुक़्मान—18)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
खाओ पीओ पहनो और सद्का करो लेकिन न तो हद से ज़्यादा और न बतौर तकब्बुर। (सुनन इब्ने माजा—266)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
ज़रूरत से ज़्यादा जो तामीर करता है क़यामत के दिन उसे उस तामीरात को उठाने का हुक्म दिया जायेगा (मुअजम कबीर तिबरानी)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से बुराई का इरादा फरमाता है तो उसके माल को गारे और पानी (यानी तामीरात) में हलाक कर देता है। (मुअज्जम कबीर तिबरानी)

इरशादे बारी तआला है—

इसलिये ग़म न करो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से जाती रही है और उस चीज़ पर न इतराओ जो (अल्लाह) ने तुम्हें अता की है और अल्लाह तकब्बुर करने वाले फख्र करने वालों को पसन्द नहीं करता। (सू0—हदीद—23)

एक बुजुर्ग का कॉल है कि मुताकब्बिर शख्स को अल्लाह तआला उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे अपने अहल व अयाल और खादिमों से ज़लील व ख़्वाब न करा दे और इन्सान अपने पेट में पखाने का बोझ उठाये फिरता है फिर भी तकब्बुर करता है।

इमाम गज़ाली (रह0) फरमाते हैं कि इन्सान के नफ़्स के कई रंग व रूप हैं जो इन्सान को तकब्बुर के अलावा दीगर बुराइयों की तरफ़ राग़िब करता है इन्सान का नफ़्स शहवत के वक़्त हैवान जैसे अफ़आल करता है और गुस्से के वक़्त दरिन्दा बन जाता है मुसीबत के वक़्त छोटे बच्चे की तरह आह बज़ारी (रोना पीटना) करता है और आराम व आसाइश (राहत व चैन) के वक़्त फिरऔन बन जाता है और जब भूका हो तो पागल हो जाता है और जब सेर होता है तो सरकश बन जाता है लेकिन नफ़्स को जब किसी तरफ़ राग़िब करो तो वो उसी तरफ़ राग़िब हो जाता है इस नफ़्स को जब थोड़ी सी चीज़ पर क़नाअत व किफ़ायत करने का आदी बना लो तो वो उसी पर आदी और साबिर हो जाता है यानी नफ़्स को जिस चीज़ का आदी बनालो तो वो उसी का आदी बन जाता है नफ़्स वही हालत इख़्तियार करता है जिस पर इन्सान उसे रखे अगर उसे ख़ूब ख़िलाया जो तो उसकी शहवतें जोश में आती हैं और अगर उसे कम ख़िलाया जाये तो वो उसी पर मुतमईन हो जाता है।

—: खुद पसंदी :—

किसी भी मामलात में खुद को दूसरों से बेहतर जानना और खुद पर फख्र व नाज़ करना ये खुद पसंदी की अलामत है और ऐसा शख्स खुद की तारीफ़ करना और सुनना पसंद करता है जब कोई शख्स कोई नेक अमल करता है जैसे रोज़ा नमाज़ हज ज़कात सदकात वगैराह तो वो ये ख्याल करता है कि मैं नेक आदमी हूँ और नेक काम करता हूँ इस तरह उसके अन्दर खुद पसंदी पैदा हो जाती है लेकिन वो ये भूल जाता है कि उसकी तमाम इबादत और नेक आमाल अल्लाह तआला के रहमो करम और उसकी तौफ़ीक़ से हैं और दूसरी बात वो ये भी भूल जाता है कि उसकी इबादत और नेक अमल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हुये भी हैं या नहीं बल्कि वो खुद पसंदी में इतना मुब्तिला हो जाता है हत्ता कि जो उसने दुनियाँ में गुनाह किये हैं वो उन गुनाहों को भी भूल जाता है।

बाज़ लोग अपनी ताक़त हुस्नो जमाल इल्म अक़्ल और माल के बाइस खुद पसन्दी के गुनाह में मुब्तिला हो जाते हैं और वो ख्याल करते हैं कि जो मेरे पास है वो औरों के पास नहीं है मेरा लिबास दूसरों से बेहतर है मेरी शक्लो सूरत दूसरों से बेहतर व अच्छी है मेरे मकानात दूसरों के मकानात से ज़्यादा खूबसूरत हैं मेरा ओहदा मेरी इज़्ज़त दूसरों के मुकाबले ज़्यादा है मेरी मालदारी दूसरों से ज़्यादा है मेरी अक़्ल दूसरों से ज़्यादा तेज़ है और वो इन तमाम बातों में दूसरों से खुद को बेहतर समझता है और फख्र करता है और गुनाहगार हो जाता है और अल्लाह तआला ऐसे खुद पसन्द शख्स को ना पसन्द फ़रमाता है क्योंकि इन तमाम नेअमती का अता करने वाला तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन है और जब कोई शख्स अल्लाह की अता कर्दा नेअमती पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता और मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार नहीं करता तो रब तआला ऐसे शख्स से सख़्त नाराज़ हो जाता है और नाशुक्रा व खुद पसन्द मुताकब्बिर शख्स अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होता है।

इसलिये हमें चाहिये कि तकब्बुर व खुद पसन्दी से किनारा कशी इख़्तियार करें और इन गुनाहों से बचने के लिये मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और हर वक़्त गुमान रखें कि जो नेअमतेँ हमें मिलीं और जो हमने नेक काम किये और इबादत की वो सब रब तआला के फ़ज़लो करम और उसकी तौफ़ीक़ से है और जब

किसी नेअमत या नेक अमल का जिक्र करें तो यूँ कहें कि मेरे रब का फज़्लो करम है यानी अपने तमाम मामलात में मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और जब कोई किसी नेक अमल या किसी नेअमत का जिक्र या तारीफ़ करें तब भी मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और कहें कि मेरे रब का फज़्लो करम है और खुद की तारीफ़ व तौसीफ़ से बचने की हर मुमकिन कोशिश करें और खुद को दूसरों के मुकाबिल कमतर हकीर और गुनाहगार जानें तो इस तरह हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर व खुद पसंदी जैसी बुराइयाँ दूर हो जायेंगी और हम इससे बचने में कामयाब हो जायेंगे और इससे निजात पा जायेंगे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर तुमसे गुनाह सरज़द न हों तो मुझे तुम पर इससे भी बड़े गुनाह का ख़तरा है और वो खुद पसंदी है।
(अत्तरगीब वत्तरहीब—3/571)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं—1—लालच जिसकी पैरवी की जाये 2—ख़्वाहिश जिसकी इताअत की जाये 3—और आदमी का अपने नफ़्स पर इतराना। (कंजुल उम्माल—16/45)

फ़तह मक्का के बाद जंगे हुनैन हुई जिसमें मुसलमानों की तादाद ज़्यादा थी और कुफ़ारों की तादाद बहुत कम थी उन मुसलमानों में बाज़ लोगों ने कहा कि हम कुफ़ारों पर ज़रूर ग़ालिब आयेंगे क्योंकि हमारी तादाद बहुत ज़्यादा है और उनके अन्दर तकब्बुर व खुद पसंदी आ गई और अल्लाह तआला को ये बात पसंद न आई और फिर जंग हुई और मसलहते इलाही कि मुसलमान कुफ़ार पर ग़ालिब आ गये और माले गनीमत लूटने में मशगूल हो गये इतने में कुफ़ार वापस पलट आये और मुसलमानों पर हमला कर दिया और मुसमानों के पाँव उखड़ गये और मैदाने जंग से भागने लगे फिर दोबारा जंग हुई और अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद फ़रमाई और मुसलमानों ने फ़तह पाई और कामयाब हुये और उनमें से कुछ लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया और मुसलमान हो गये इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला तकब्बुर व खुद पसंदी पर नाराज़ हो जाता है और अपनी मदद व रहमत उठा लेता है इसलिये हमें चाहिये कि जब हम किसी काम का इरादा करें तो ये न कहें

कि हम फलों काम जरूर कर गुजरेंगे या हम फलों पर जरूर गालिब आयेंगे बल्कि यूँ कहें कि इंशा अल्लाह अगर मेरा रब चाहेगा तो हम फलों काम जरूर करेंगे या फलों पर जरूर गालिब आयेंगे। जंगे हुनैन के वाक्यात को कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फरमाया—

और हुनैन के दिन तुम अपनी कसरत पर इतरा गये थे तो वो तुम्हारे कुछ काम न आयी और जमीन इतनी वसीअ होकर भी तंग हो गई फिर तुम पीठ देकर फिर गये फिर अल्लाह तआला ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वो लश्कर उतारे जो तुमने न देखे और काफिरों को अज़ाब दिया और मुनकिरों की यही सज़ा है। (सू०—तौबा—25—26)

इरशादे बारी तआला है—

और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल ये कर दूँगा मगर ये कि अल्लाह चाहे (यानी इंशा अल्लाह कहना) (सू०—कहफ़—23)

बाज़ लोग जब कोई नेक अमल करते हैं तो वो खुद पसन्दी के सबब इतराते और खुद पर फख़्रो नाज़ करते हैं और फिर वो लोगों की तरफ़ निगाह करते कि इस अमल को कौन करता है और कौन नहीं करता इस तरह वो खुद को लोगो से बेहतर व नेक गुमान करते हैं और लोगों को हकारत की नज़र से देखते हैं मिसाल के तौर पर अगर कोई शख्स थोड़े वक़्त से नमाज़ का एहतमाम करने लगे तो फिर वो लोगों में नमाज़ की तरगीब और लोगों की इस्लाह के बजाय अपनी नमाज़ की चर्चा और बे नमाज़ियों की बुराईयाँ शुरू कर देता है बाज़ ऐसे हैं जो अपने इल्म को दूसरों तक पहुँचाने और तलकीन के बजाय तनकीद और शर्मसार करते हैं और अपने नेक आमाल के बाइस तकब्बुर व खुदपसन्दी में मुब्तिला रहते हैं लेकिन वो इस बात से अंजान रहते हैं कि हर शख्स की बरिश्शाश और मग़फ़िरत के लिये अल्लाह तआला की रहमत काफ़ी और जरूरी है।

हदीस पाक में है कि लोगों के आमाल के तीन दफ़्तर होंगे एक नेकियों का और एक बुराईयों का और एक रब तआला की नेअमतों का दफ़्तर होगा और नेकियों को नेअमतों के मुकाबिल लाया जायेगा जब कोई नेकी लाई जायेगी तो उसके मुकाबले में नेअमत रख दी जायेगी यहाँ तक कि नेकियाँ नेअमतों में ख़त्म हो जायेंगी और गुनाह और बुराईयाँ बाकी रह जायेंगी तो फिर अल्लाह तआला को उन पर इस्त्रियार है।

—: तवाजोअ :—

तकब्बुर व खुद पसन्दी किसी मुसलमान के लिये सज़ावार नहीं है बल्कि उसके लिये बेहतर यही है कि वो अल्लाह तआला के लिये तवाजोअ (आजजी) इख्तियार करे और कोई शख्स अपनी इबादत की हलावत (मिठास) उस वक्त तक नहीं पा सकता जब तक कि वो अपनी इबादत में तवाजोअ न लाये और तवाजोअ के सबब इन्सान में अच्छे अखलाक पैदा होते हैं हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया जो शख्स तवाजोअ करता है तो अल्लाह तआला उसकी इज्जत को बढ़ाता है और जो दूसरों पर अपना माल खर्च करे और गरीबों पर रहम करे और उनके पास बैठे और आलिमों की हम नशीनी इख्तियार करे वो नेक वख्त है।

और जो शख्स तवाजोअ के बजाय तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआला उसे लोगों में हकीर कर देता है और वो अल्लाह तआला की रहमत से महरूम रहता है और जो अल्लाह तआला के लिये तवाजोअ करता है तो अल्लाह तआला उसे सर बुलन्द करता है उसके नेक आमाल और उसकी दुआयें कुबूल करता है और उसके गुनाहों को बख्श देता है और ऐसा शख्स जन्नत में अपना आला मकाम बनाता है और अल्लाह के लिये तवाजोअ करने वाले लोग अल्लाह तआला के पसंदीदा बन्दे हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शख्स माफ़ करता है अल्लाह तआला उसकी इज्जत को बढ़ाता है और जो शख्स अल्लाह तआला के लिये तवाजोअ करता है अल्लाह तआला उसका मर्तबा बुलन्द करता है (सही मुस्लिम—2/321)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो शख्स तवाजोअ (आजिजी) करता है अल्लाह तआला उसे बुलन्द मकाम अता करता है और जो आदमी तकब्बुर करता है अल्लाह तआला उसे ज़लील करता है और जो आदमी किफ़ायत शियारी (कम खर्ची) करता है अल्लाह तआला उसे मालदार करता है और जो फिजूलखर्ची करता है अल्लाह तआला उसे मुहताज कर देता है और जो अल्लाह तआला को कसरत से याद करता है तो अल्लाह तआला उससे मुहब्बत करता है। (अत्तरगीब वत्तरहीब—4/197)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिस शख्स की रुह इस हाल में जुदा हो कि वो तीन बातों से बरी
हो तो वो जन्नत में जायेगा—1—तकब्बुर 2—कर्ज 3—खयानत
(अत्तरगीब वत्तरहीब—2 / 597)

एक रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम
अपने दौलत कदाह में चन्द सहाबाकिराम (रज़ि०) के साथ खाना
तनावुल फ़रमां रहे थे कि दरवाज़े पर एक साइल आया जो
अपाहिज था जिससे घिन आती थी आप सल्लल्लाहु अलैह
वसल्लम ने उस साइल को अन्दर आने से की इजाज़त दी जब वो
दाख़िल हुआ तो आपने उसे अपने साथ बिठाया फिर फ़रमाया—
खाना खाओ। (कंजुल उम्माल—11 / 432)

तवाजोअ के लिये सबसे पहले हमें चाहिये कि अपनी हकीकत और
अंजाम को पहचानें और हमेशा ज़हन में रखें ताकि हमारे अन्दर
तवाजोअ की सिफ़त पैदा हो और जब हम किसी से मुलाक़ात करें
तो चाहे वो ग़रीब मिस्कीन फ़कीर या मुहताज हो तो उसके सामने
आजिज़ी का इज़हार करें और खुद को उसके सामने कमतर गुमान
करें और दूसरों को खुद पर फ़ज़ीलत दें और सलाम करने में
पहल करें क्योंकि सलाम में पहल करना भी तवाजोअ है और
अपनी नेकी और अपनी नेअमतों पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा
करना भी तवाजोअ है।

अल्लाह तआला तवाजोअ करने वालों के दरजात को
बुलन्द करता है और जो लोग अपनी नेअमतों पर अल्लाह तआला
का शुक्र अदा नहीं करते तो क़यामत के दिन ये नेअमतें उनके
लिये वबाल बनेंगी तवाजोअ के बग़ैर अल्लाह तआला किसी शख्स
की नमाज़ कुबूल नहीं करता और ग़रीब से अमीर का तवाजोअ
ज़्यादा अच्छा है कि जब वो अपने माल वग़ैराह पर तकब्बुर न करे
बल्कि वो अपनी तमाम नेअमतों पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा
करे और ये गुमान करे कि ये तमाम नेअमतें रब तआला की अता
कर्दा हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जब कोई बन्दा तवाजोअ इख्तियार करता है तो अल्लाह तआला उसे साँतवे आसमान तक बुलंदी अता फरमाता है।

(कंजुल उम्माल-3/112)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

चार बातें ऐसी हैं जो अल्लाह तआला अपने महबूब बन्दों को ही अता करता है 1—खामोशी 2—अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) 3—तवाजोअ (आजिजी) 4—दुनियाँ से बे रगबती

(मुअजम कबीर तिबरानी-1/256)

एक रिवायत में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम खाना तनावुल फरमां रहे थे कि एक सियाह (काला) रंग का आदमी आया जिसे चेचक निकली हुई थी और चेचक के दानों से पानी रिस रहा था वो जिसके पास बैठता था वो खड़ा हो जाता हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने उसे अपने पहलू में बिठाया।

(जामअ तिर्मिजी-273)

इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि तवाजोअ (आजिजी) इख्तियार करे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की तवाजोअ का तरीका अपने अमल में लाये और आपकी सीरते तैइयवा का मुताअला करे और उसकी पैरवी करे हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जानवरों को चारा डालते थे, ऊँटों को बाँधते थे, घर में सफाई करते थे, बकरी का दूध निकालते थे, नालैन मुबारक खुद सी लेते थे, कपड़ों में पैबन्द लगाते थे, खादिम की मदद फरमाते थे, बाज़ार से सौदा लाते थे और छोटा हो या बड़ा ग़रीब हो या अमीर सबसे सलाम करने में पहल करते थे और ज़मीन पर तशरीफ़ फरमां होकर रवाना तनावुल फरमाते थे और फरमाते थे मैं बन्दा हूँ और उसी तरह खाता हूँ जिस तरह बन्दा खाता है और आप जिस बिस्तर पर आराम फरमाते थे वो एक चमड़े का था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी और जो खाना आपके सामने पेश होता वो आप तनावुल फरमां लेते और कभी उसमें नुक्स नहीं निकालते थे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

मैं एक बन्दा हूँ ज़मीन पर खाता हूँ अदना लिबास पहनता हूँ ऊँटों को बाधँता हूँ उँगलियाँ चाटता हूँ और गुलाम की दावत कुबूल करता हूँ और जिसने मेरी सुन्नत से ऐराज़ किया उसका मुझसे कोई तआल्लुक नहीं। (दुर्रे मन्सूर-4/115)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जो शर्र्स शोहरत का लिबास पहनता है अल्लाह तआला उससे अपना रूख़ फेर लेता है। (मुस्नद अहमद-2/92)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— अगर तुम मुझसे मिलना चाहते हो तो मालदार लोगों की मजलिस से बचो और जब तक कपड़े पुराने न हो जायें उनका पहनना न छोड़ो। (जामअ तिमिज़ी-269)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हैं—

अदना लिबास ईमान से है। (सुनन इब्ने माजा-313)

—: मुतफर्रिक आमाल :—

—मुतफर्रिक आमाल से मुताअल्लिक चन्द अहादीस—

1—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम ने सूद खाने वाले खिलाने वाले और उसके गवाह और कातिब पर लानत फरमाई है (जामअ तिमिजी—194)

2—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—सूद का एक दिरहम अल्लाह तआला के नज़दीक तीस ज़िना से ज़्यादा सख्त है। (यानी गुनाह है) (मुस्नद अहमद—5/225)

3—रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—सूद तिहत्तर गुनाहों का मजमुआ है इसमें सबसे हल्का ये है कि आदमी अपनी माँ से ज़िना करे। (सुनन इब्ने माजा—3/72)

4—फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—मर्दों की बेहतरीन खुशबू वो है जिसकी बू ज़ाहिर हो और रंग छुपा हो और औरत की बेहतरीन खुशबू वो है जिसका रंग ज़ाहिर हो और खुशबू छुपी हो। (मिशकात—38)

5—नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—नेकी का हुक्म देना सद्का है और बुराई से रोकना सद्का है और कमजोर का सामान उठवाने में मदद करना सद्का है और रास्ते से तकलीफ ज़दा चीज़ का हटाना सद्का है (सही मुस्लिम—1/242/325)

6—सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—जिस शख्स को अपनी बुराइयाँ बुरी लगें और अपनी अच्छाइयाँ अच्छी लगें वो मोमिन है। (मुस्तदरक हाकिम—1/14)

7—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—फरिश्ते उस घर में दाखिल नहीं होते जिस घर में (जानदार) तस्वीर या कुत्ता या जुन्बी हो (यानी नापाक आदमी जिस पर गुस्ल फर्ज़ हो) (सुनन अबू दाऊद—1/109)

8—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स किसी की एक बालिस्त ज़मीन जुल्म से हासिल करता है
क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसके गले में सातों ज़मीनों का
तौक डालेगा।

9—नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब तुम किसी काम का इरादा करो तो उसके अंजाम के बारे में
सोचो अगर अच्छा है तो करो और अगर उसका नतीजा बुरा है तो
उससे बचो। (कंजुल उम्माल-3/101)

10—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
जल्दबाज़ी शैतान की तरफ़ से है और ठहराव अल्लाह की तरफ़
से है। (जामअ तिमिज़ी-295)

10— हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि०) रावी हैं कि सल्लल्लाहु
अलैह वसल्लम ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले दोनों पर
लानत फ़रमाई है। (मिशकात 2/326)

—: नीयत और रिया :—

हर नीयत पोशीदा (छुपी हुई) होती है और अमल जाहिर होता है और दुनियाँ जाहिर देखती है और अल्लाह तआला बातिन देखता है इसलिये हर अच्छे अमल के लिये अच्छी नीयत का होना जरूरी है और जिस अमल की जैसी नीयत होती है वैसा ही उसका अजर (सिला, बदला) मिलता है अगर नीयत में रिया (दिखावा) हो तो अमल जाया (बर्बाद) हो जाता है और रब तआला की बारगाह में कुबूल नहीं होता और अगर नीयत में इखलास है यानी जो अमल खालिस (सिर्फ) रब तआला के लिये किया जाये और उसमें दिखावा न हो और अल्लाह तआला के सिवा किसी गैर को शरीक न किया जाये तो वो अमल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होता है और उस अमल का कई गुना अजर (सवाब, बदला) अल्लाह तआला अता फरमाता है और अल्लाह तआला हर इन्सान के दिल की धड़कन से भी ज़्यादा करीब है इन्सान जो सोचता है जो करता है और जो करेगा अल्लाह तआला को उसकी ख़बर है और वो सब कुछ जानने और सुनने वाला है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और बेशक जान लो अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों की बातें भी जानता है पस उससे डरो। (सू०—बकराह—235)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
आमाल का दारो मदार नियतों पर है। (सही बुखारी—1/2)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
मोमिन की नीयत उसके अमल से बेहतर होती है।
(मुअजम कबीर तिबरानी—6/185)

जब कोई बन्दा अच्छी (नेक) नीयत से किसी नेक काम को करने का इरादा करता है तो अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाता है कि मेरे बन्दे के नामे आमाल में नेकी लिख दो फरिश्ते अर्ज करते हैं कि बन्दे ने फ़लौं काम तो किया ही नहीं अल्लाह तआला फरमाता है लेकिन उसने फ़लौं काम करने की नीयत तो की है तो उस बन्दे को सिर्फ उसकी नीयत के बाइस उसके नामे आमाल में नेकी लिख दी जाती है।

इसी तरह जो शख्स नमाज़ के इन्तज़ार में मस्जिद में बैठता है तो उसका बैठना भी इबादत में शुमार होता है क्योंकि उसकी नीयत नमाज़ का इन्तज़ार होती है इसी तरह जब कोई शख्स रात को सोने से पहले नीयत करे कि मैं सुबह उठकर फज़्र की नमाज़ पढ़ूँगा लेकिन नींद के ग़लबे या शैतान के वसवसे के सबब वो नमाज़ के लिये न उठ पाये और उसकी नमाज़ फ़ौत हो जाये लेकिन उसके नामे आमाल में नमाज़ पढ़ने की नीयत का सवाब लिखा जाता है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स नेकी का इरादा करे लेकिन उस पर अमल न कर सके तो उसके लिये नेकी का सवाब लिखा जाता है (सही मुस्लिम—1/78)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों और आमालों को देखता है।
(मुस्नद अहमद—2/285)

इसलिये हमें चाहिये कि जब हम इबादत का इरादा करें तो ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये इबादत की नीयत करें न कि रियाकारी (दिखावे) की और दिल में ज़र्ज़ बराबर भी ये ख़याल न लायें कि मेरी इबादत को लोग जानें और हमें इबादत गुज़ार कहें क्योंकि रियाकारी का ख़याल इन्सान की इबादत व अमल को ज़ाया (बर्बाद) कर देती है और उसे अपनी इबादत व अमल का कोई अज़र (सवाब, या बदला) नहीं मिलता बल्कि रियाकारी के बाइस उसके नामे आमाल में गुनाह लिखा जाता है और आख़िरत में रियाकारों के लिये सज़ा अज़ाब है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो अपने सद्क़ात को बातिल न करो एहसान जताकर और ईज़ा देकर उसकी तरह जो अपना माल लोगों को रिया (दिखावे) के लिये ख़र्च करते हैं और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं लाते उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कि एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है फिर उस पर जोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा। (सू0—बक्राह—264)

इरशादे बारी तआला है—

तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से बे ख़बर हैं (यानी उन्हें महज़ हुकूकुल्लाह याद हैं और हुकूकुल इबाद भुला बैठे हैं) वो लोग जो (इबादत में) दिखावा करते हैं (सू०—माऊन—4,—6)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला दूसरों को दिखाने वाले व सुनाने वाले और एहसान जताने वाले का सद्का कुबूल नहीं करता (कंजुल उम्माल—16/32)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— हुज़न (ग़म) के कुँयें से पनाह माँगो सहाबाकिराम (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह वो क्या है आप ने इरशाद फ़रमाया वो जहन्नुम में एक वादी है जो रियाकारों के लिये तैयार की गई है। (सुनन इब्ने माजा—23)

अल्लाह तआला की बन्दगी व इताअत में रिया (दिखावा) करना बहुत बड़ा गुनाह है और शिर्क के करीब है और अल्लाह तआला रियाकार शख्स को ना पसंद करता है और फ़रमाता है कि बन्दा मेरा है इबादत मेरी करता है और दिखाता ग़ैरों को है ताकि लोग उसे पारसा और ज़ाहिद जानें और अपने नेक आमाल लोगों को दिखाकर अल्लाह तआला के यहाँ मक़ाम बनाने की बजाय लोगों में अपना मक़ाम बनाता है और उस पर खुश होता है और लोगों से खुद की तारीफ़ की ख़्वाहिश रखता है रियाकार शख्स से अल्लाह तआला सख्त नाराज़ रहता है और क़यामत के दिन रियाकार शख्स से रब तआला फ़रमायेगा कि जो तूने नेक अमल किये वो सब ज़ाया हो गये और अपना अज़र (बदला,सवाब) उससे ले ले जिसको दिखाने के लिये तूने अमल किये थे अगर वो आमाल तूने मेरे लिये किये होते और मेरे ग़ैर को तू शरीक न करता तो मैं आज तुझे तेरे आमाल का अज़र देता।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

पस जो शख्स अपने रब से मुलाकात की उम्मीद रखता हो तो उसे चाहिये नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (सू०—कहफ़—110)

इरशादे बारी तआला है—

और उनको यही हुक्म दिया गया है कि खालिस अल्लाह तआला के लिये उसकी बन्दगी करें। (सू०—वइयना—5)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
बेशक थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है। (मुस्तदरक हाकिम—3/270)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क्यामत के दिन रियाकार से कहा जायेगा कि ऐ रियाकार तेरे अमल जाया हो गये और सवाब जाता रहा और अपना अजर उससे ले ले जिसके लिये तूने अमल किया। (दूरें मन्सूर—1/30)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
अल्लाह तआला फरमाता है कि जो शख्स मेरे लिये अमल करते हुये किसी गैर को शरीक करे तो तमाम अमल उस गैर के लिये हैं मेरे साथ उसका तआल्लुक नहीं। (अत्तरगीब वत्तरहीब—1/69)

बाज़ लोग नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन उनकी नीयत में रियाकारी शामिल होती है और वो चाहते हैं कि लोग मेरी नमाज़ से वाकिफ़ हों और हमें नमाज़ी गुमान करें और मेरी ताज़ीम व तकरीम करें इसी तरह बाज़ लोग रोज़ा रखते हैं लेकिन उनकी भी यही नीयत होती है इसी तरह बाज़ लोग सद्का ख़ैरात करते हैं ताकि लोग जानें कि वो बहुत बड़े सखी हैं और कुछ हाजियों के दिल भी रिया से खाली नहीं होते और वो इस नीयत के साथ हज करते हैं ताकि लोग हमें हाजी साहब कहकर पुकारें और हमारी इज़्ज़त व तारीफ़ करें।

बाज़ उल्मा भी खुद को रियाकारी से नहीं बचाते और वो चाहते हैं कि मेरे इल्म के बाइस लोग मेरी ताज़ीम करें और लोग हमें सलाम करने से पहल करें और लोगों में मेरे इल्म का चर्चा हो और लोग जाने कि मैं बहुत बड़ा इल्म वाला हूँ और लोग मुझे आलिम साहब कहकर बड़े एहताराम से पुकारें और इस तरह वो रियाकारी में मुब्तिला हो जाते हैं लेकिन ऐसे उल्मा का इल्म क्यामत के दिन उनके लिये वबाल होगा और वो जहन्नुम का ईधन बनेंगे।

रियाकार शख्स के तमाम नेक अमल रियाकारी के बाइस अकारत हो जाते हैं और उसे अपनी नेकियों से कुछ नफा (फायदा) हासिल नहीं होता और रियाकार ने जो इबादत और नेक आमाल करने में जो मेहनत व मशक्कत उठाई या अल्लाह की राह में अपना जो माल खर्च किया वो सब ज़ाया (बर्बाद) हो जाता है और उसकी नेकियाँ उसके कुछ काम नहीं आती बल्कि रियाकारी के सबब उसको अल्लाह तआला के गुज़ब का शिकार होना पड़ेगा और तमाम रियाकार जहन्नुम में दाखिल किये जायेंगे।

इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि अपना हर नेक अमल सिर्फ़ रब तआला के लिये करे न कि मखलूक के लिये क्योंकि हर नेक अमल का सवाब सिर्फ़ रब तआला देता है और मखलूक सिर्फ़ तारीफ़ के सिवा हमें कुछ नहीं दे सकती और जब हम ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये नेक अमल करेंगे तो अल्लाह तआला हमें सवाब के साथ-साथ दुनियाँ व आखिरत में इज़्ज़त का मक़ाम अता फ़रमायेगा और इज़्ज़त व ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआला के दस्ते कुदरत में हैं वो जिसे चाहे अता करता है और इज़्ज़त व ज़िल्लत किसी इन्सान के इख़्तियार में नहीं है जो वो हमें दे सके।

हकीकत ये है कि इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं है तो जब इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं तो हम अपने नेक अमल उसको क्यों दिखायें जिसके पास कुछ भी नहीं बल्कि हमें चाहिये कि हम उस परवरदिगारे आलम के लिये हर नेक अमल करें जो तमाम जहानों का मालिक व ख़ालिक है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
सुनो अल्लाह तआला के लिये ही ख़ालिस बन्दगी है (सू०—जुमर—3)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआला किसी ऐसे अमल को कुबूल नहीं करता जिसमे ज़र्रा बराबर भी दिखावा हो। (अत्तरगीब वत्तरहीब—1/73)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
बेशक मुझे अपनी उम्मत पर शिर्क का ख़ौफ़ है लेकिन वो बुतों या

चाँद या सूरज की पूजा नहीं करेंगे बल्कि वो अपने आमाल में रियाकारी (दिखावा) करेंगे। (मुस्नद अहमद-4/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— मेरी उम्मत पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि लोग सैरो तफरीह व दिखावे के लिये हज करेंगे। (तारीखे बगदाद-1/290)

रियाकारी एक बातिनी बीमारी है इस बीमारी में मुब्तिला आदमी अपना मर्तबा और मशहूरी और इज़्ज़त पाने की तलब में इतना आगे बढ़ जाता है कि वो ये भूल जाता है कि वो खुद का बहुत बुरा और खुद को बहुत बड़े ख़सारे में डाल रहा है और जहन्नुम में अपना ठिकाना बना रहा है।

जब किसी शख्स के नेक आमाल जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, सद्का, ख़ैरात वगैराह को लेकर फ़रिश्ते रब तआला की बारगाह में जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ये आमाल बन्दे ने ख़ालिस (सिर्फ़) मेरे लिये नहीं किये बल्कि मेरे ग़ैर के लिये किये हैं फिर फ़रिश्ते कहते हैं कि उस आदमी पर तेरी लानत हो और हम सब (फ़रिश्तों) की लानत हो और आसमान भी कहते हैं कि उस रियाकार पर हम सब की लानत हो और फिर ज़मीन और जो कुछ उसमें मौजूद है सब उस रियाकार शख्स पर लानत भेजते हैं और उस रियाकार शख्स के आमाल उसके मुँह पर मार दिये जाते हैं और क़ब्र में रियाकारी गंजे साँप की शक्ल में आती है और उसे दर्दनाक अज़ाब दिया जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम नेक अमल पोशीदा (छुपाकर) करें क्योंकि पोशीदा अमल ज़ाहिरी अमल से सत्तर गुना ज़्यादा फज़ीलत रखता है और पोशीदा अमल इन्सान को रियाकारी से बचाता है और अगर ये नीयत हो कि मेरे अमल को देखकर दूसरे लोगों में भी इस अमल को करने की तरफ़ रग़बत (ख़्वाहिश) पैदा होगी और लोग मुझे देखकर मेरी पैरवी करेंगे तो ज़ाहिरी अमल करना बेहतर है लेकिन खुद को रिया (दिखावा) से पाक रखें

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
अगर ख़ैरात को ऐलानियाँ दो तो क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपाकर फ़कीरों को दो तो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है और इसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह तआला को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (सू0—बकराह—271)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेहतर रिज़क वो है जो काफ़ी है और बेहतरीन ज़िक्र वो है जो पोशीदा हो। (मुस्नद अहमद—1/172)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
पोशीदा अमल ऐलानियाँ अमल से सत्तर (70) गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। (शुअबुल ईमान—1/407) (कंजुल उम्माल—1/447)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेहतरीन सद्का वो है जो मेहनत व मशक्कत से कमाकर फ़कीर को पोशीदा तौर पर दें। (सुनन अबी दाऊद—1/204)

एक बुजुर्ग का कॉल है—
इन्सान को चाहिये कि अपनी नेकियों को इस तरह छुपाये जिस तरह वो अपनी बुराइयों को छुपाता है और उसकी जो नेकियाँ ज़ाहिर हो जाये उन्हें अपने आमाल में शुमार न करे क्योंकि हो सकता है कि कहीं उन नेकियों की नीयत में रिया शामिल न हो गई हो।

एक आदमी ने हज़रत सुफियान सूरी (रह0) और उनके साथियों की दावत की तो उस आदमी ने अपने घर वालों से कहा कि उस थाल में रोटी रख कर लाओ जो मैं दूसरे हज के मौके पर लाया था पहले हज वाले थाल में रोटी न लाना तो हज़रत सुफियान सूरी (रह0) ने उस आदमी की तरफ़ देखा और फ़रमाया कि इसने इतनी सी बात कहकर अपने हज को बातिल कर दिया।

—: इख़लास :—

तमाम इबादत व अम्लियात की नीयत में इख़लास का होना शर्त है और जिस नीयत में इख़लास न हो तो वो रिया है और कोई भी नेक अमल जो ख़ालिस (सिर्फ) अल्लाह तआला के लिये न हो वो महज़ दिखावा है और दिखावे का कोई भी अमल काबिले कुबूल नहीं होता और जो शख्स अपने तमाम आमाल में इख़लास रखता है तो अल्लाह तआला उसके दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और उसकी इज़्ज़त को बढ़ाता है।

हदीस पाक में है क़यामत के दिन तीन किस्म के लोगों से सवाल होगा एक वो शख्स जिसे अल्लाह तआला ने इल्म दिया अल्लाह तआला पूछेगा कि मैंने तुझे इल्म दिया इस सिलसिले में तूने क्या किया वो अर्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैंने अपने इल्म को दिन रात दूसरों तक पहुँचाया फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तूने झूठ कहा बल्कि तेरा इरादा ये था कि लोग तुझे आलिम कहें दूसरे शख्स से सवाल होगा कि मैंने तुझे माल दिया तूने उस माल का क्या किया वो अर्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैंने तेरी राह में खर्च किया सद्का ख़ैरात किया रब तआला फ़रमायेगा तूने झूठ कहा बल्कि तेरा मक़सद ये था कि लोग तुझे सखी कहें तीसरे शख्स से सवाल होगा जो राहें खुदा में क़त्ल हुआ था वो कहेगा ऐ मेरे रब मुझे जिहाद का हुक्म मिला और मैंने जिहाद किया और क़त्ल कर दिया गया अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तूने झूठ कहा बल्कि तेरा इरादा ये था कि लोग तुझे बहादुर कहें।

हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू हु़रैरा ये वो लोग हैं जो जहन्नुम में दाख़िल होंगे और इन पर सबसे पहले आग भड़काई जायेगी। (जामअ तिमिज़ी—343)

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम नेक अमल में इख़लास पैदा करें और अपना हर नेक अमल ख़ालिस (सिर्फ) अल्लाह तआला के लिये करें ताकि हमारी बख़्शिश हो और हम जहन्नुम के दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ रहें।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जब कुछ लोग अल्लाह तआला की रज़ा के लिये जमा होकर ज़िक्र करते हैं तो आसमान से एक पुकारने वाला आवाज़ देता है कि इस तरह उठो कि तुम्हें बख़्श दिया गया और तुम्हारी बुराइयाँ नेकियों में बदल दी गयी हैं।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अगर सच्चे दिल से ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाला भरी हुई ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर आयेगा तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा। (अत्तरगीब वत्तरगीब—2/467)

इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन उसका नफ़्स और शैतान है जो उसे रियाकारी की तरफ़ माइल करता है और सिर्फ़ इख़लास ही इन्सान को रिया से बचा सकता है और इन्सान के दिल में इख़लास तभी आ सकता है कि जब वो दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से क़ता तआल्लुक हो जाये और इस फ़ानी दुनियाँ से अपना मुहब्बती रिश्ता तोड़ दे और किनारा कशी इख़्तियार करे क्योंकि इन्सान के आमाल उसके दिल के मुताबिक़ होते हैं और दिल की रग़बत जिस तरफ़ होती है उसके आमाल भी उसी तरफ़ माइल होते हैं और जिसका दिल दुनियाँ से मुनक़ताअ हो और रब तआला की तरफ़ वाबस्ता हो तो उसके दिल में इख़लास पैदा होता है क्योंकि इख़लास का तआल्लुक रब तआला से होता है और जिस अमल में कई मक़सद हों वो अमल बातिल हो जाता है।

हदीस पाक में है कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन को पैदा फरमाया तो ज़मीन हिली तो अल्लाह तआला ने उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया तो ज़मीन का हिलना बन्द हो गया तब फ़रिश्तों ने कहा कि पहाड़ तो बहुत ताक़तवर हैं फिर अल्लाह तआला ने लोहे को पैदा फरमाया जिसने पहाड़ को काट दिया तब फ़रिश्तों ने कहा कि लोहा तो पहाड़ से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआला ने आग को पैदा फरमाया जिसने लोहे को गला दिया फ़रिश्तों ने कहा कि आग तो लोहे से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआला ने पानी को पैदा फरमाया जिसने आग को बुझा दिया फ़रिश्तों ने कहा पानी तो आग से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआला ने हवा को पैदा फरमाया जिसने पानी को गदला कर दिया फ़रिश्तों ने कहा हवा तो पानी

से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया या अल्लाह तेरी मख़लूक में इससे भी ज़्यादा ताक़तवर कोई चीज़ है अल्लाह तआला ने फ़रमाया हाँ है इब्ने आदम (इन्सान) का वो सद्का जो दाँये हाथ से दिया जाये और बाँये हाथ को ख़बर न हो (कि क्या दिया है) (मुस्नद अहमद-3/124)

मज़कूरा बाला हदीस से मालूम हुआ कि पोशीदा अमल जो ख़ालिस (सिर्फ़) अल्लाह तआला के लिये किया जाता है वो बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होता है और इसमें कोई ख़दशा नहीं है और पोशीदा या वो अमल जिसमें इख़लास हो उसका अज़र उसके करने वाले को अल्लाह तआला ज़रूर अता फ़रमायेगा और उसका अमल ज़ाया नहीं होगा और अल्लाह तआला के नज़दीक पोशीदा व ख़ालिस अमल सबसे ज़्यादा पसंदीदा होता है

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक क़यामत के दिन अर्श के साये के सिवा कोई साया न होगा और उस दिन अर्श के साये में वो भी होगा जो दाँये हाथ से सद्का करे और बाँये हाथ को पता न चले।
(सही बुख़ारी-1/191)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपने अमल को ख़ालिस (अल्लाह तआला के लिये) करो थोड़ा भी काफ़ी होगा। (मुस्तदरक हाकिम-4/306)

इमाम गज़ाली (रह0) फ़रमाते हैं कि इन्सान का दिल रब्बुल आलमीन की नज़र का मुक़ाम है तो उस शख्स पर तआज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतमाम करे उसे धोये और मैल कुचैल से साफ़ सुथरा रखे ताकि मख़लूक उसके चेहरे के किसी ऐब पर मुत्तलाअ न हो मगर दिल का एहतमाम न करे जो रब्बुल आलमीन की नज़र का मुक़ाम है उसे तो चाहिये था कि दिल को पाकीज़ा रखे और उसे आरास्ता करे और रिया से ख़ाली और सुथरा रखे ताकि रब्बुल आलमीन उसके दिल में किसी ऐब को न पाये लेकिन अफ़सोस का मुक़ाम है कि दिल तो गन्दगी पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है मगर जिस पर मख़लूक की नज़र पड़ती है उसके लिये कोशिश होती है।

—: अमर बिल माअरुफ व नही अनिल मुन्कर :—
(नेकी का हुक्म देना व बुराई से रोकना)

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वो नेकी का हुक्म दे और बुराई से रोके और मुहतसिब (यानी बुराई या ममनूअ बातों को रोकने वाले) के लिये कामिल ईमान या गुनाहों से पाक होना शर्त नहीं बल्कि फ़ासिक, गुलाम, मर्द व औरत सब पर लाज़िम है कि जहाँ बुराई को देखे तो उसे रोके हों लेकिन हर बुराई से खुद भी बचे और उससे बाज़ रहने की हर मुमकिन कोशिश करे और अल्लाह तआला के नज़दीक ये अमर बहुत बेहतर और पंसदीदा है और इस अमल का बहुत ज़्यादा सवाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और तुम में से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिये जो अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से रोके और यही लोग मुराद को पहुँचे।
(सू०—आले इमरान—104)

इरशादे बारी तआला है—
तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के (भले के) लिये ज़ाहिर की गई है तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो। (सू०—आले इमरान—110)

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हमने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) क्या जब तक हम मुकम्मल तौर पर अमल न करें तो हमें नेकी का हुक्म नहीं देना चाहिये और जब तक हम बुराई से न बचें तो हमें बुराई से नहीं रोकना चाहिये आपने इरशाद फ़रमाया—तुम नेकी का हुक्म दो अगरचा तुम मुकम्मल तौर पर उस पर अमल पैरा न हो और बुराई से रोको अगरचा तुम उस पर कुल्ली तौर पर इजतिनाब (बचाव) नहीं कर रहे हो। (मजमउज्जवाइद—7/277)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया गया कि इन्सानों में सबसे फ़ज़ीलत वाला इन्सान कौन है आप ने इरशाद फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला से डरने वाला, और

ज़्यादा सिला रहमी करने वाला और नेकी का हुक्म देने वाला और बुराई से मना करने वाला हो। (मुअजम कबीर तिबरानी-24/258)

जब कोई शख्स नेकी की दावत दे और बुराई से मना करे तो उसे चाहिये कि नरमी व मुहब्बत व अच्छे अखलाक से तल्कीन करे और वाअज़ व नसीहत करे इसके बाद भी अगर बुराई को न रोक सके तो सख्त कलामी से रोके और अगर इसके बाद भी बुराई को न रोक सके तो ताक़त से रोके और अगर ये सब काम करने की जिसमें ताक़त व कुव्वत न हो तो उसे चाहिये कि उसके सामने होने वाली हर बुराई को दिल में बुरा जाने और जो शख्स किसी बुराई को देखे और ख़ामोश रहे या दिल में भी बुरा न जाने तो वो शख्स गुनाहगार होगा और जो शख्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिये नेक काम करे और बुराई को रोके और नेकी का हुक्म दे और इस अमल के बाइस उसे जो अज़िज़त (तकलीफ़) मिले वो उस तकलीफ़ को बर्दास्त करे और सब्र करे तो अल्लाह तआला उस शख्स को बड़ा अज़र (सिला, बदला) अता फ़रमायेगा।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह कराने का और जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बाद उसके कि हक़ का रास्ता उस पर खुल चुका है और मुसलमानों की राह से जुदा चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह है पलटने की। (सू0—निसा—115)

इरशादे बारी तआला है—

जब उन्होंने इस बात को भुला दिया जिसकी उनको नसीहत की गई थी तो हमने उन लोगों को निजात दी जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को बुरे अज़ाब के साथ पकड़ा जिन्होंने जुल्म किया क्योंकि वो नाफ़रमानी करते थे। (सू0—आअराफ़—165)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जब कोई कौम गुनाहों का अमल करती हो और कोई शख्स उसे रोकने पर कादिर हो और अगर वो न रोके तो अनक़रीब अल्लाह तआला उन सब को अज़ाब में मुब्तिला कर देगा (जामअ तिमिज़ी—435)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके अगर इतनी ताकत न हो तो जुबान से रोके और अगर इसकी भी ताकत न हो तो दिल में बुरा जाने। (सही बुख़ारी—1/51)

जब हम दीनी तबलीग़ करें तो बेहतर ये है कि सबसे पहले हम खुद नेकी का रास्ता इख़्तियार करें और खुद को हिदायत याफ़ता करें और पहले खुद की इस्लाह करें फिर लोगों की इस्लाह करें और उन्हें हिदायत दें और खुद भी गुनाहों और बुराइयों से बचें और नेक अमल करने की कोशिश करते रहें और निहायत नरमी और अच्छे अख़लाक़ के साथ दीनी तबलीग़ करें और मुबल्लिग़ के लिये ज़रूरी है कि वो जिस बात का हुक्म दे रहा है उसे उस बात का इल्म होना चाहिये और नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने में ऐसे कलिमात का इस्तेमाल न करें जिससे किसी मुसलमान भाई को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचे जिससे वो ख़फ़ा हो जाये।

जैसे ग़वार, जाहिल, बेवकूफ़ वगैराह बल्कि जो कलिमात कहें उनमें नरमी और सच हो और न झूठ बोलें और न गुस्सा हों और न नाराज़ हों और बेहूदा कलाम से बात न करें और खुद को तकब्बुर व खुद पसंदी से पाक रखें और किसी से नफ़रत न करें और जो हकीक़तन जाहिल है उन से बहस न करें बल्कि ख़ामोश रहें और उनसे एराज़ करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
उनसे ज़्यादा किसकी बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाता है और खुद भी अच्छे काम करता है। (सू०—हामीम सजदा—33)

इरशादे बारी तआला है—
ऐ महबूब आप दर गुज़र (माफ़) फ़रमाना इख़्तियार करें और नेकी का हुक्म दें और जाहिलों से किनाराकशी इख़्तियार करें।
(सू०—ऐराफ़—199)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स मेरी उम्मत तक पहुँचाने के लिये दीनी उमूर की चालीस हदीसें याद कर लेगा तो उसे अल्लाह तआला क़यामत के दिन

आलिमे दीन की हैसियत से उठायेगा और बरोजे कयामत में उसका शफीअ और गवाह होऊँगा। (शुअबुल ईमान-2/270)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अल्लाह तआला तुम्हारे सबब एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो
वो तुम्हारे लिये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है से बेहतर है।

(सही मुस्लिम-2/279)

अगर कोई शख्स नमाज़ में रुकूअ सुजूद या और कोई रुकन सही तरह से अदा नहीं करता तो हमें चाहिये कि उसको तन्हाई में समझायें ताकि उसकी समझ में आ जाये और उसके दिल को बुरा भी न लगे इसी तरह अगर कोई काम मस्जिद के आदाब के खिलाफ हो जैसे मस्जिद में बेहूदा कलाम दुन्यावी बातचीत खुराफात शोरगुल या खुत्बे के दौरान बातचीत वगैराह तो हमें चाहिये कि हम उसे रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें इसी तरह बाज़ार से तआल्लुक रखने वाली बुराइयों जैसे खरीद फरोख्त में झूठ, फरेब, माल के पैब को छुपाना, कम तौलना, बेईमानी वगैराह को भी हमें रोकना चाहिये इसके अलावा किसी मजलिस या तकरीब और किसी भी मौके पर दावत की महफिल वगैराह में वाकैअ होने वाली बुराइयों को भी हमें रोकना चाहिये।

इसी तरह अगर कोई शख्स किसी पर जुल्म व ज़्यादती करता है तो हमें चाहिये कि उसके जुल्म व ज़्यादती को रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें और इसी तरह हर बुराई को रोकना और नेकी का हुक्म देना हम पर लाज़िम है और बुराइयों को रोकने का बेहतर तरीका ये है कि नरमी और अच्छे अखलाक से रोके और वाअज़ व नसीहत करें और इल्म के ज़रिये समझायें और कुरान व अहादीस की रोशनी में उनकी इस्लाह करें और अल्लाह तआला के ख़ौफ और उसके अज़ाब से डरायें और जहन्नुम, क़ब्र और कयामत के अज़ाब के बयानात से उनके दिल ख़ौफ़ज़दा करें और साथ-साथ जन्नत और उसकी दायमी नेअमतों और खूबियों का बयान करें और उसकी तरफ़ रग़बत दिलायें ताकि बुराई करने वाला शख्स बुराई से रुक जाये और नेकी की तरफ़ माइल हो जाये और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ सख्त कलामी व ताक़त के जोर से बुराई को रोके और बिला

शरई उज़र जो शख्स इस अमर (काम) (यानी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना) को छोड़ेगा वो गुनाहगार होगा।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स हिदायत की तरफ़ बुलाता है और उसकी पैरवी की जाये तो उसे उस नेकी की दावत का सवाब भी मिलेगा और जो लोग उसकी पैरवी करेंगे उनका सवाब भी मिलेगा और उनके (यानी पैरवी करने वालों के) सवाब में कोई कमी न होगी।
(सुनन इब्ने माजा—19)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते रहना वरना अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब भेज देगा और तुम्हारी कोई भी दुआ कुबूल नहीं होगी।
(तिर्मिज़ी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेशक अल्लाह तआला रहमत नाज़िल फ़रमाता है और उसके फ़रिश्ते और आसमानों व ज़मीन वाले यहाँ तक कि चीटियाँ व मछलियाँ सब दुआयें करते हैं उसके लिये जो भलाई की तालीम देता है (मिशकात)

इमाम गज़ाली रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हर अहले इल्म चाहे आलिम हो या आम आदमी उस पर लाज़िम है कि वो अपने इल्म को लोगों तक पहुँचाये और शरीअत के अहकाम और मसाइल लोगों को बताये और सिखाये लेकिन इससे कब्ल (पहले) खुद की इस्लाह करे फिर घर वालों और पड़ोसियों और शहर वालों को तबलीग़ करे और वाअज़ीन में कुछ ख़सलतों का होना ज़रूरी है जैसे इल्म, परहेज़गारी और हुस्ने खुल्क़ क्योंकि इल्म के वगैर वो अच्छे बुरे में इम्तियाज़ (फ़र्क) नहीं कर सकता और अगर उसके अन्दर परहेज़गारी नहीं होगी तो उसका ये काम गरज़ से खाली न होगा और अगर उसका अख़लाक़ अच्छा नहीं होगा तो वो लोगों से नरमी से बाअज़ (नसीहत) व हिदायत नहीं कर सकेगा और वो लोगों से सख़्त कलामी से पेश आयेगा।

और उसमें ये भी ख़सलत हो कि अपनी तबलीग़ पर लोगों से तारीफ़ की उम्मीद न रखे और अपने इल्म के सबब खुद को मुअज़्ज़ज़ (इज़्ज़तदार) और लोगों को जाहिल गुमान न करे।

क्योंकि लोगों को जाहिल समझना गुनाह है और जो खुद को मुअज़्ज़ज़ और लोगों को जाहिल समझता है उसकी मिसाल ऐसी है कि वो लोगों को आग से बचाता है और खुद जल जाता है और ये इन्तिहाई दर्जे की जहालत है और ये शैतान का जाल है जिसमें वो लोगों को फंसा लेता है और जो बच जाये या अल्लाह तआला जिसे उसके नफ़्सानी ऐबों से मुत्तलाअ कर दे तो उसे चाहिये कि पहले खुद की नसीहत करे फिर लोगों को नसीहत करे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और खुद को भूल जाते हो जबकि तुम कुरान पढ़ते हो क्या तुम्हें अक्ल नहीं (सू०—बकराह—44)

इरशादे बारी तआला है—
ऐ ईमान वालो वो बात क्यों कहते हो जो खुद नहीं करते हो।
(सू०—सफ़—2)

रसूले अकरम सल्लल्लहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शब मेअराज मैंने देखा कुछ लोगों के होंठ कैचियों से काटे जा रहे थे मैंने पूछा तुम कौन हो उन्होंने कहा हम नेकी का हुक्म देते थे और खुद अमल नहीं करते थे और बुराई से रोकते थे और खुद नहीं रुकते थे। (अत्तरगीब वत्तरहीब—1/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क़यामत के दिन आलिम को लाया जायेगा फिर उसे आग में डाला जायेगा उसकी आँते बाहर निकल आयेंगी तो वो इस तरह चक्कर लगायेगा जैसे गधा चक्की के गिर्द घूमता है अहले जहन्नुम उससे पूछेंगे तो वो कहेगा कि मैं नेकी का हुक्म देता था लेकिन खुद अमल नहीं करता था और बुराई से रोकता था लेकिन खुद उसका मुरतकिब था। (सही मुस्लिम—2/41)

—: रियाज़त :—

रियाज़त का माना नफ़्स कशी है यानी ख़्वाहिशात पर काबू करना है और नफ़्स का माना दम, रुह व जान से है जहाँ से ख़्वाहिशात पैदा होती है और इन्सान का नफ़्स बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है जो इन्सान को गुनाहों में मुब्तिला कर देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है सिवाये उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाये बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शाने वाला निहायत मेहरबान है। (सू०—यूसुफ—53)

इन्सान के हर बुरे अमल की इब्तिदा उसके नफ़्स से होती है और इस नफ़्स पर जिसने काबू पा लिया और उसकी ख़्वाहिशात से बचा तो वही सिराते मुस्तकीम और निजात की राह पा लेता है हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— जो शख्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश करे फिर अपनी ख़्वाहिश को दूर करदे तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देता है। (कंजुल उम्माल)

इन्सान के गुनाहों की असल जड़ उसका नफ़्स है जो उसे बुराई की तरफ़ ले जाता है और गुनाहों का मुरतकिब (मुजरिम) बना देता है इस नफ़्स को नफ़से अम्माराह कहते हैं और इस नफ़्स के बाइस इन्सान गुमराह व सरकश हो जाता है और नफ़्स के ताबैअ होकर गुनाह पर गुनाह किये जाता है और इस नफ़से अम्माराह की पैरवी में हलाक हो जाता है और अपनी आख़िरत ख़राब कर लेता है और बिल आख़िर जहन्नुम का ईधन बनता है।

दुनियाँ में इन्सान की हलाकत की वजह दो चीज़ें हैं जिनमें से एक ये है कि वो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ना फ़रमानी करता और वो अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात की पैरवी करता है यानी उसका नफ़्स उसे जिस बात का हुक्म देता है वो वही करता है और दूसरा ये है कि जो इन्सान की फ़ितरत में होता है कि वो हमेशा यही चाहता है कि लोग मेरी तारीफ़ व इज़्ज़त करें और यही तारीफ़ व तौसीफ़ की तमन्ना के

सबब वो सही और गुलत में इम्तियाज़ (फ़र्क) नहीं कर पाता और गुनाहों के दलदल में फंसता चला जाता है और वो गुमराह और सरकश हो जाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे
अल्लाह तआला की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह तआला
हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (सू०—क़सस—50)

इरशादे बारी तआला है—

क्या आपने उस शख्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को
माअबूद बना लिया और अल्लाह तआला ने उसे इल्म के बावजूद
गुमराह ठहरा दिया है और उसके कान और उसके दिल पर मुहर
लगा दी है और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है फिर उसे
कौन अल्लाह तआला के बाद हिदायत कर सकता है तो क्या तुम
नसीहत कुबूल नहीं करते। (सू०—जासिया—23)

नफ़्स इन्सान का दुश्मन है जो उसे गुनाहों की तरफ़ रग़बत
दिलाता है और उसके जिस्मी आज्ञा (अंगों) से बुरे और गुनाहों के
काम कराता है जैसे आँख जो बुरा देखती है हाथ जो बुरा करते हैं
जुबान जो बुरा बोलती है कान जो बुरा सुनते हैं और उसके पैर जो
बुराई की तरफ़ जाते हैं और उसका दिल जिसमें बुरे ख़्यालात आते
हैं और उसका दिमाग़ जो बुरा सोचता है इसी तरह दीगर आज्ञा भी
नफ़्स के बाइस बुरा अमल करते हैं और इन्सान बहुत से गुनाहों का
मुरतकिब हो जाता है।

जब किसी मर्द की आँख किसी ग़ैर औरत पर या किसी
औरत की आँख किसी ग़ैर मर्द पर पड़ती है तो उसके नफ़्स में
शहबत की ख़्वाहिश पैदा होती है अगर उस वक़्त नफ़्स को काबू न
किया जाये तो हालात यहाँ तक पहुँचते हैं कि इन्सान जिना (औरत
से हराम कारी) जैसे कबीरा गुनाह का मुरतकिब (मुजरिम) हो जाता
है इसलिये अल्लाह तआला ने मर्द व औरत को अपनी निगाहें नीची
रखने का हुक्म दिया और औरत को पर्दा करने का हुक्म दिया

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

मुसलमान मर्दों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफाज़त करें ये उनके लिये बहुत सुथरा है अल्लाह तआला को उनके कामों की ख़बर है। (सू०—नूर—30)

इरशादे बारी तआला है—

और मुसलमान औरतों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफाज़त करें और अपना बनाओ सिंगार न दिखायें मगर जितना खुद ज़ाहिर हो और अपने दुपट्टे गिरेवानों पर डाले रहें। (सू०—नूर—31)

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी निगाहों की हिफाज़त करें जैसा कि हमें हुक्म है ताकि हम इसकी वजह से वाकैअ होने वाली तमाम बुराईयों और गुनाहों से बच सकें और निगाहों की हिफाज़त के लिये हमें अपने नफ़्स पर काबू करना होगा और उस पर ग़ालिब आना होगा और जो लोग अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात पर काबू पा लेते और उस पर ग़ालिब आ जाते हैं। वही लोग गुनाहों से बचने में कामयाब होते हैं और वो निजात पाते हैं और जो अपने नफ़्स व उसकी ख़्वाहिशात पर काबू पाने में कामयाब नहीं होते वो गुनाहों में मुब्तिला हो जाते और जहन्नुम के मुस्तहिक बन जाते हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

नज़र ज़हर में बुझा हुआ एक शैतानी तीर है तो जिस शख्स ने अपनी निगाहों को ग़ैर मेहरम (पराई औरत) को देखने से बचाया तो अल्लाह तआला उसे ऐसा ईमान अता करेगा जिसकी हलावत (मिठास) वो अपने दिल में महसूस करेगा (मुस्तदरक हाकिम—4/314)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— पहली नज़र (बे इख़्तियारी) माफ़ है और दूसरी (इख़्तियारी) नज़र गुनाह है (मुस्नद अहमद—5/351)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

लोगों की राह गुज़र पर खड़े न हो ताकि वहाँ से गुज़रने वालों को हकारत की नज़र से देखो और वहाँ से गुज़रने वाली औरतों

को बुरी नज़र से देखो और जो शख्स (लोगों की राह गुज़र पर) इस इरादे से खड़ा रहा (कि वहाँ से गुज़रने वाले लोगों को हज़ारत की नज़र से देखे और वहाँ से गुज़रने वाली औरतों को बुरी नज़र से देखे) तो वो शख्स उस वक़्त तक हरकत नहीं कर सकता जब तक उस पर दोज़ख़ वाजिब न हो जाये। (कीमयाये सआदत-645)

हर इन्सान के साथ एक शैतान होता है जो उसके अन्दर खून की तरह गर्दिश करता है और बुरे कामों की तरफ़ माइल करता है और नेक काम करने से रोकता है और कई तरह की ख़्वाहिशात पैदा करता है जो असल में गुनाह होती हैं इसलिये शैतान हमारा सबसे बड़ा और खुला दुश्मन है इसलिये हमें चाहिये कि हमेशा इस बात को ज़हन में रखें और इससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करें। कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है पस उसे अपना दुश्मन ही समझो। (सू0-फ़ातिर-61)

इरशादे बारी तआला है—
शैतान तुम्हें (अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये) मुहताजी से डराता है और बे हयायी का हुक्म देता है।
(सू0-बक़राह-268)

पस जिसने ख़्वाहिशात की पैरवी की वो गुमराह हो जाता है और अल्लाह तआला के ज़िक्र और उसके ख़ौफ़ से बे परवाह हो जाता है और अपनी आख़िरत ख़राब कर लेता है और जो लोग अपने रब से डरते और आख़िरत पर ईमान रखते हैं वो लोग अपने नफ़्स की पैरवी करने से बचते हैं और अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ करते हुये नेक अमल करते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और उसका कहा न मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वो अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया। (सू0-कहफ़-28)

जो शख्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चलता है तो गोया वो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करता है क्योंकि वो अपने नफ़्स

के हुक्म का ताबैअ होता है जिसके सबब वो हलाल हराम जाइज़ व नाजाइज़ की तमीज़ खो बैठता है और उसे वही बात बेहतर लगती है जो उससे उसका नफ़्स कहता है और वो अपने रब को छोड़कर अपने नफ़्स को अपना माअबूद बना लेता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सबसे बुरा माअबूद जिसकी दुनियाँ में पूजा की जाती है वो ख्वाहिश है। (मजमउज्जवाइद—1/188)

नफ़्स की कई किस्में हैं जिनमें एक नफ़से लव्वामा होता है ये उन लोगों का नफ़्स होता है जो लोग बुरा काम या कोई गुनाह करने के बाद नादिम (शर्मिन्दा) होते और पछतावा करते हैं और कहते हैं कि हमसे गुनाह हो गया अब हम दोबारा ऐसा गुनाह नहीं करेंगे और अपने रब से गिड़गिड़ाते और तौबा अस्तग़फ़ार करते हैं तो अल्लाह तआला उनकी मदद फ़रमाता है और दोबारा उन गुनाहों की तरफ़ ले जाने वाले नफ़्स से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो नफ़्स से बचाये गये वही कामयाब है। (सू०—हश्म—9)

अल्लाह तआला अपने पसंदीदा बन्दों को अपनी रहमत से ये इनाम अता फ़रमाता है कि वो नफ़्सानी ख्वाहिशात से पाक हो जाते हैं और ऐसे लोगों का नफ़्स नफ़से मुतमइन्ना कहलाता है और अल्लाह तआला उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है और वो अल्लाह तआला के मख़सूस और मुकर्रब हो जाते हैं।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
जिसने अपने नफ़्स को पाक किया बेशक उसने फ़लाह पाई।
(सू—शम्स—9)

इन्सान के ज़हन में कभी—कभी ऐसे बुरे ख्यालात उसके न चाहते हुये भी आ जाते हैं और इन्सान सोचता है कि हमसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया है लेकिन ऐसे बुरे ख्यालात और वहम शैतान की तरफ़ से आते हैं जो माफ़ होते हैं जब तक कि वो बुरे ख्यालात

इन्सान की जुबान पर न आयें या जब तक उस पर अमल न हो।
 रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
 मेरी उम्मत से वो बातें माफ़ की गई हैं जो दिल में हों मगर जुबान
 पर न आयें या उस पर अमल न करें। (सही बुखारी—1/343)

हदीस पाक में है नफ़्स के साथ जिहाद बेहतरीन जिहाद है क्योंकि
 अपने नफ़्स पर काबू करना इन्सान के लिये बड़ा मुश्किल काम है
 लेकिन जो लोग अल्लाह व रसूल और आखिरत पर ईमान रखते हैं
 जिनके दिल अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से लरज़ते हैं वो लोग जरूर
 अपने नफ़्स पर काबू पाते हैं और वही लोग अक़लमन्द और
 निजात पाने वाले हैं जो अपने नफ़्स का मुहासिबा करते और
 उसको काबू करने की तदबीरें करते और उनकी कोशिश अल्लाह
 तआला के फज़्लो करम से कामयाब होती है और वो अपने नफ़्स
 और उसकी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आ जाते हैं और वो गुनाहों से
 दूर रहते और नेक अमल करते हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
 अक़लमन्द लोग वो हैं जो अपने नफ़्स का मुहासिबा करते हैं और
 मौत के बाद के लिये अमल करते हैं। (मुस्नद अहमद—4/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
 समझदार आदमी वो है जिसका नफ़्स उसका तावैअ हो और वो
 मौत के बाद के लिये अमल करे और बेवकूफ़ आदमी वो है जो
 नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चले। (सुनन इब्ने माजा—324)

हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल कादिर जीलानी (रज़ि०) फ़रमाते हैं
 कि अपने नफ़्स की इत्तेबाअ (पैरवी) न करो और इससे इजतिनाब
 (परहेज़) करो और अपनी मिलिकयत से माजूल होकर सब कुछ
 अपने रब के सपुर्द करके अपने क़ल्ब के दरवाज़े पर इस तरह
 पहरा दो कि उसमें रब तआला के अहकामात के अलावा कोई
 दूसरी चीज़ दाख़िल न हो सके इसके अलावा अपने क़ल्ब में हर
 उस चीज़ का दाख़िला बन्द कर दो जिससे तुम्हें रोका गया है और
 जिन ख़्वाहिशात को तुमने अपने क़ल्ब से निकाल फेंका है उनको
 दोबारा अपने क़ल्ब में दाख़िल न होने दो और न उसकी पैरवी करो
 क्योंकि इन्सान की ख़्वाहिशात उसे राहे खुदा से गुमराह कर देती है

—: गीबत :— (जुबान की आफ़त)

किसी शख्स के पोशीदा (छुपे हुये) ऐब को किसी के सामने बयान करना या पीठ पीछे किसी की बुराई करना गीबत कहलाता है और गीबत गुनाह कबीरा (बड़ा गुनाह) है और अल्लाह तआला के नज़दीक ना पसंदीदा फेअल है और रब तआला की नाराज़गी का बाइस है किसी शख्स के पोशीदा ऐबों को ज़ाहिर करना किसी मुसलमान के लिये सज़ावार नहीं है बल्कि ये बहुत बुरा अमल है और गीबत करने वाले शख्स के लिये मुख़्तलिफ़ अज़ाब हैं जो उसे भुगतने होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और (लोगों के) ऐब न दूढों और न पीठ पीछे किसी की बुराई (गीबत) किया करो क्या तुम में से कोई शख्स पसंद करेगा कि वो अपने मुर्दा भाई का गोस्त ख़ाये तो ये तुम्हें ग़वारा न होगा और अल्लाह तआला से डरो बेशक अल्लाह तआला बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (सू०—हुजरात—12)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शबे मेअराज मेरा गुज़र ऐसी कौम के पास से हुआ वो लोग अपने नाखूनों से अपने चेहरे छील रहे थे मैंने पूछा ऐ जिबरईल ये कौन लोग है जिबरईल ने कहा ये वो लोग हैं जो लोगों की गीबत करते थे। (सुनन अबी दाऊद—2/313)

किसी की ग़ैर मौजूदगी (यानी पीठ पीछे) उसकी बुराई करना अगरचा वो बात सच हो वो गीबत है और अगर वो बात झूठ हो तो वो बोहतान है जो गीबत से भी बड़ा गुनाह है और गीबत ज़िना (औरत से हराम कारी) से भी बड़ा गुनाह है हर वो बात जिसमें बुराई ज़ाहिर होती हो वो गीबत है जैसे वो बद अख़लाक है नमाज़ नहीं पढ़ता, झूठ बोलता है, ज़कात नहीं देता, हराम माल खाता है, बुरा लिबास पहनता है, या वो बहुत मोटा है या बहुत ज़्यादा काला है या आँखों से भेंड़ा है, लूला लंगडा अपाहिज है या बहुत ज़्यादा कमज़ोर है वगैराह यानी किसी की ऐसी बुराई जो अगर उसके

सामने की जाये तो उसे नागवार गुज़रे और वो उसे ना पसंद करे वो गीबत है गीबत करने वाला और सुनने वाला दोनो गुनाहगार होते हैं लेकिन सुनने वाला उस बुराई को अगर बुरा जाने तो सुनने वाला गुनाहगार न होगा और गीबत जुबान के अलावा हाथ आँख और इशारे से भी होती है जो हराम व गुनाह है जैसे लंगड़े की चाल चलना या टेढ़ी आँख बनाना वगैराह ताकि किसी शख्स का हाल जाहिर हो और अगर किसी शख्स का नाम न लें और ये कहें कि एक शख्स ने ऐसा काम किया है तो गीबत नहीं लेकिन हाज़िरीन को मालूम हो जाये कि ये इशारा किस शख्स की तरफ़ मकसूद है तो वो गीबत है।

गीबत जुबान की बहुत बड़ी आफ़त है और इस आफ़त व गुनाह से बचने के लिये हमें हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिये और दूसरों की बुराईयाँ और ऐबों को देखने की बजाय अपनी बुराईयाँ और ऐबों को देखें और उन्हें दूर करें ताकि गुनाहों से बचें और इसके सबब होने वाले अज़ाब से महफूज़ रहें।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

ख़राबी है उस शख्स के लिये जो (लोगों के मुँह पर) ताना ज़नी करे (और पीठ पीछे) बुराई (गीबत) करे। (सू०—हुमाज़ाह—1)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

गीबत सुनने वाला भी गीबत करने वालों में से एक होता है। (तारीख़े बग़दाद—8/266)

हज़रत आयशा सिद्दीका रज़िअल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हाथ के इशारे से कहा कि फ़लों औरत पस्त (छोटा) कद है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया तुमने गीबत की है। (मुस्नद अहमद—2/384) (दुर्रें मन्सूर—6/94)

ईमान की असल तो ये है कि जो चीज़ अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को ना पसंद हो वो हमें भी ना पसंद होना चाहिये अगर हम मानते हैं कि हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के उम्मीती हैं जब हम किसी की बुराई (गीबत) करते हैं तो उसके बदले हमें कुछ

भी हासिल नहीं होता सिवाय गुनाह के जिसका अज़ाब आखिरत में हमें मिलेगा क्या कभी किसी शख्स ने किसी की बुराई करने के बदले में माल वगैराह या और कोई चीज़ हमें दी है नहीं हरगिज़ नहीं तो जब हमें किसी की बुराई करने के बदले कुछ नहीं मिलता तो हम क्यों किसी की बुराई करें और गुनाहगार बन जाये और गीबत इन्सान की नेकियों को जाया (बर्बाद) कर देती है इसलिये हमें चाहिये कि इस बात पर गौरो फ़िक्र करें और खुद को गीबत से बचायें और अपने दिलों को बद गुमानी से महफूज़ रखे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो ज़्यादा तर गुमानों से बचा करो बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। (सू०—हुजरात—12)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आग खुशक लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी गीबत इन्सान की नेकियों को ख़त्म कर देती है।
(अल इसरारूल मरफूआ—206)

किसी मुसलमान को ये हक़ नहीं कि किसी मुसलमान भाई की बुराई या तानाज़नी करे क्योंकि जब हम किसी शख्स की बुराई करते हैं और अगर उस शख्स को ये बात मालूम हो जाये कि मेरे मुताअल्लिक़ फ़लाँ शख्स ने बुराई की है तो उसे तकलीफ़ होती है या जब हम किसी शख्स को उसके ऐब के लिये उसे ताना देते हैं तो वो शर्मसार होता है और किसी भी मुसलमान भाई को तकलीफ़ या शर्मसार करना गुनाह है।

अल्लाह तआला व उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने हम तमाम मुसलमानों के दरमियान भाई—भाई का रिश्ता कायम किया है अगर हम इस रिश्ते को मानें और समझे और अहमियत दें तो शायद ये बुराई हमसे खुद व खुद दूर हो जायेगी और हम किसी की गीबत नहीं करेंगे और गुनाहों से बचने में कामयाब होंगे।

जिस तरह हमारी या हमारे घर के किसी शख्स की अगर कोई बुराई करे तो हमें बुरा लगता है और हम उस बुराई करने वाले

शरूब से नाराज़ हो जाते हैं तो इसी तरह जब हम किसी की बुराई करते हैं तो अल्लाह तआला को बुरा लगता है और वो हमसे नाराज़ हो जाता है क्योंकि हमने जिसकी बुराई की है वो भी अल्लाह तआला का बन्दा है जिस तरह हम उसके बन्दे हैं और जिस तरह तमाम इन्सान अल्लाह तआला के बन्दे हैं उसी तरह हम तमाम मुसलमान एक दूसरे के भाई हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों पर हंसें (न मज़ाक उड़ाये) हो सकता है कि वो उन (हंसने वालों) से बेहतर हों और न औरतें औरतों पर हंसें (न मज़ाक उड़ाये) हो सकता है वो उन हंसने वाली औरतों से बेहतर हों और न आपस में ताना ज़नी और न इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिफ़ व बद किरदार कहना बहुत ही बुरा नाम है और जिसने तौबा न की तो वही लोग ज़ालिम हैं।
(सू०—हुजरात—11)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
एक दूसरे से हसद न करो और बाहम (आपस में) दुश्मनी न करो और एक दूसरे की ऐब जोई न करो और न ही एक दूसरे की बुराई (गीबत) करो और अल्लाह के बन्दो भाई—भाई बन आओ।
(सही मुस्लिम—2/316)

अल्लाह तआला इन्सान के तमाम गुनाहों को बरूश देता है जब बन्दा सच्चे दिल से तौबा करता है लेकिन अल्लाह तआला गीबत करने वाले को माफ़ नहीं करता जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी गीबत की गई है इससे अन्दाज़ा लगायें कि देखने में छोटा लगने वाला गुनाह असल में गुनाहे अज़ीम है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अपने आप को गीबत से बचाओ बेशक गीबत ज़िना (औरत से हरामकारी) से भी बड़ा गुनाह है क्योंकि आदमी ज़िनाकारी के बाद तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देता है लेकिन गीबत करने वाले का गुनाह उस वक़्त तक माफ़ नहीं होता जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी गीबत गई हो (दुर्र मन्सूर—6/96)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कोई शख्स अपने मुसलमान भाई को उसके किसी ऐसे गुनाह का ताना दे जिससे वो तौबा कर चुका हो तो उस (ताना देने वाले को) उस वक्त तक मौत नहीं आयेगी जब तक कि वो खुद उस गुनाह में मुब्तिला न हो जाये (जिस गुनाह का उसने ताना दिया है)। (अत्तरगीब वत्तरहीब-3/310)

इसलिये हमें चाहिये कि किसी के गुनाह या उसके ऐब पर उसे ताना न दें और न किसी की बुराई (गीबत) करें और हम इस बुराई पर तभी काबू पा सकते हैं जब हम अपने नफ्स को काबू करें और अपनी जुबान को ज़ायद (ज़्यादा) गुफ्तगू (बात चीत) से रोकें अगर हम ज़्यादा (फिजूल) बात करेंगे तो गीबत से नहीं बच सकते इसलिये हमें चाहिये जब भी हम कुछ बोलें तो सिर्फ अच्छी बात करें या फिर ख़ामोश रहें और हमेशा बुरी बातों से परहेज़ करें ताकि हम गुनाहों से बच सकें और हमारी नेकियाँ ज़ाया (बर्बाद) न हों और हम आख़िरत में मिलने वाले दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ रहें और जन्नत के मुस्तहिक बन जायें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो शख्स मुझे जुबान और शर्मगाह की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ। (जामअ तिमिज़ी-347)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स अपने मुसलमान भाई की ऐब पोशी करेगा तो अल्लाह तआला दुनियाँ व आख़िरत में उसकी ऐब पोशी करेगा। (सही मुस्लिम-2/320, 345)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— जो शख्स अल्लाह तआला और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे। (सही बुख़ारी-2/889)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है— उस शख्स के लिये खुशख़बरी है जो जुबान की ज़ायद गुफ्तगू को रोक ले और माल में ज़ायद को (अल्लाह की राह) में ख़र्च करे। (बैहकी-4/182)

बाज़ औकात गीबत की वजह से फ़िल्ना फ़साद होता है हत्ता कि लड़ाई झगड़े होते हैं जिससे लोगों के दरमियान आपसी तआल्लुक ख़राब हो जाते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो लोगों में गीबत और चुगल ख़ोरी करके आपस में तफ़रीक़ (फ़र्क़) डालते हैं और इस काम को वो लोग बहुत अच्छा जानते हैं हालाँकि ये फ़ेअल बहुत बुरा और काबिले मज़म्मत है जो इनसान को जन्नत से दूर और जहन्नुम के करीब कर देने वाला है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
चुगल ख़ोर जन्नत में नहीं जायेगा। (सही बुख़ारी—2/895)
(मुस्नद अहमद—5/381)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
लोगों में तफ़रीक़ (फ़र्क़, जुदाई) डालने वाला जन्नत में नहीं जायेगा
(मुस्नद अहमद—4/83)

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके दो चेहरे होते हैं जब वो किसी शख्स के पास जाते हैं तो उनके मुँह पर उनकी झूठी तारीफ़ करते हैं और तरह तरह के मुबालगे करते हैं और उनसे झूठी हमदर्दी दिखाते हैं और उसकी बुराई या चुगली करते हैं जिससे उस शख्स का झगड़ा या मनमुटाव हुआ हो ताकि बदले में खुद की वाहवाही और इज़्ज़त हासिल करें फिर वो उस शख्स के पास हैं जिसकी बुराई पहले शख्स से की थी और वही सब बातें करते हैं जो पहले शख्स से की थीं ताकि खुद की वाहवाही और इज़्ज़त हो यानी इसकी बुराई उससे और उसकी बुराई इससे करते हैं और दो लोगों के झगड़े या मनमुटाव को ख़त्म करने की बजाय बढ़ाते हैं और उन दोनों के दरमियान दूरियाँ बढ़ाते हैं ऐसे शख्स को अल्लाह तआला क़यामत के दिन सख्त अज़ाब में मुब्तिला करेगा जो दो चेहरे वाला होता है यानी इसके मुँह पर इसके जैसी और उसके मुँह पर उसके जैसी बात करता है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स दुनियाँ में दो चेहरे वाला होता है तो क़यामत के दिन उसकी दो जुबानें आग की होंगी। (सुनन अबी दाऊद—2/312)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
कयामत के दिन तुम उस आदमी को सबसे बुरा आदमी पाओगे
जिसके दो चेहरे हैं। (सही बुखारी-1/496)

किसी की गीबत करना असल में अपनी नेकियों को जाया करना है
कयामत के दिन गीबत करने वाले को अपनी नेकियाँ उन लोगों को
देना पड़ेंगी जिस जिस की दुनियाँ में उसने गीबत की होगी तो
ज़रा सोचो और गौर करो नेकियाँ कमाना कितना मुश्किल है और
उन्हें जाया करना कितना आसान है यानी हम जिसकी गीबत करते
हैं तो जाहिरन तो हम उसकी गीबत करते हैं लेकिन असल में हम
उसे अपनी नेकियाँ फ्री (मुफ्त) में देते हैं और बदले में गुनाह लेते हैं

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनकी बुराई (गीबत) उनके ऐब के
साथ करना शरअन जाइज़ है और उनके ऐब लोगों में जाहिर करें
ताकि लोग उससे बचें और अगर हमने उनके ऐबों को लोगों में
जाहिर न किया तो लोग उसकी सुहवत पाकर कहीं उस गुनाह में
मुब्तिला न हो जायें जिस गुनाह में वो मुब्तिला हैं कुछ बुराईयाँ या
ऐब ऐसे होते हैं चाहे ऐलानियाँ हों या पोशीदा जिनके बुरे असरात
लोगों पर पड़ने का ख़दशा हो तो ऐसे बुरे काम करने वाले फ़ाजिर
(बदकिरदार) शख्स की बुराई उसके ऐब के साथ करना चाहिये
मिसाल के तौर पर अगर कोई शख्स शराबी है चाहे पोशीदा हो या
ऐलानियाँ हो तो ऐसे शख्स की सुहवत में कोई भी शख्स शराबी हो
सकता है इसी तरह चोर, जुआरी वगैराह या जो शर्म हया की
चादर उतार दे और ऐलानियाँ बड़े गुनाह करे तो उसकी भी बुराई
उसके ऐब के साथ करो ताकि लोग उससे बचें यानी किसी शख्स
में ऐसी बुराई हो जिसकी सुहवत से किसी की दुन्यावी या उख़रवी
या उसके ईमान के नुकसानात का ख़दशा (ख़ौफ़, डर) हो तो ऐसे
शख्स की बुराई उसके ऐब के साथ करना चाहिये।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
फ़ाजिर (बदकिरदार) की बुराई उसके ऐब के साथ करो ताकि लोग
उससे बचें और ये गीबत नहीं है। (बैहकी-10/210)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो आदमी अपने चेहरे से हया (शर्म) की चादर उतार दे उसकी
गीबत नहीं होती। (बैहकी-10/210)

गीबत करने वाले के गुनाह तब तक माफ़ न होंगे जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी गीबत की गई है इसलिये हमें चाहिये कि हमने जिसकी गीबत की है हम उससे माफी माँगे और नादिम (शर्मिन्दा) हों अगर किसी वजह से माफी माँगना मुमकिन न हो तो उसके लिये बख्शिश की दुआ माँगे क्योंकि उसके लिये बख्शिश की दुआ माँगना गीबत का कफ़ारा है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तुम जिसकी गीबत करते हो उसके लिये बख्शिश (की दुआ) माँगना गीबत का कफ़ारा है। (तारीख़े बग़दाद—7/303)

जुबान अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेअमत है लेकिन ईमान या कुफ़र और ज़िक्रे इलाही या बुरे कलिमात सब इसी जुबान से जाहिर होते हैं और बहुत से गुनाह इसी जुबान के बाइस सरज़द होते हैं और इस जुबान पर वही शख्स काबू पाता है जिसके दिल में अल्लाह तआला और आख़िरत का ख़ौफ़ रहता है और वो शख्स अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म की इत्तेबाअ करते हुये इस जुबान में लगाम डाल देता है इन्सान को गुमराह करने और गुनाहों में मुब्तिला करने के लिये ये जुबान शैतान का बहुत बड़ा हथियार है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
इन्सान की अक्सर (ज़्यादातर) ख़तायें उसकी जुबान से होती हैं।
(शुअबुल ईमान—4/241)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिस शख्स को पसन्द हो कि वो सलामत रहे तो उसे चाहिये कि ख़ामोशी इख़्तियार करे। (शुअबुल ईमान—4/241)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है जो ख़ामोश रहा उसने निजात पाई। (मुस्नद अहमद—2/159)

हज़रत उकबा बिन आमिर (रज़ि०) से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह निजात क्या है आपने इरशाद फ़रमाया अपने ऊपर जुबान को रोक दो और अपने गुनाहों पर रोया करो।
(जामअ तिमिज़ी—347)

जुबान की आफतें बे शुमार हैं और इसकी आफतों और गुनाहों से बचने के लिये सबसे बेहतर तरीका खामोशी है इसलिये हर शख्स को चाहिये कि बिला ज़रूरत कुछ न बोले क्योंकि जायद गुफ्तगू से बहुत सी बातें जुबान से ऐसी निकल जाती हैं जो गुनाह होती हैं और जायद (ज्यादा) गुफ्तगू (बात चीत) में अच्छी और बुरी बातों में तमीज़ करना दुश्वार हो जाता है इसलिये खामोशी ही इन्सान को इस बवाल से बचा सकती है जुबान की आफतों में जैसे—बेहूदा कलाम, गाली गलोज, बद कलामी, ताना ज़नी, हंसी मज़ाक, किसी को तकलीफ पहुँचाना मस्खरी किसी का मज़ाक उड़ना, राज़ फाश करना, गीबत, चुगली, झूठा वायदा, रियाकारी वगैराह है और कभी कभी ऐसे कलिमात जुबान से निकल जाते हैं जो कुफ़्र होते हैं।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अच्छी बात के अलावा जुबान को रोके रखो क्योंकि इसके ज़रिये शैतान गालिब आ जाता है। (दुर्रै मन्सूर—6/99)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जिस शख्स की गुफ्तगू ज़्यादा हो उसकी ग़लतियाँ भी ज़्यादा होती हैं और जिसकी ग़लतियाँ ज़्यादा होती हैं उसके गुनाह ज़्यादा होते हैं और जिसके गुनाह ज़्यादा होते हैं वो जहन्नुम के ज़्यादा लायक होता है। (मजमउज्जवाइद—10/302)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फरमाये जो गुफ्तगू करता है तो नफ़ा हासिल करता है या खामोश रहकर सलामती हासिल करता है।
(शुअबुल ईमान—4/241)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से मरवी है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—बन्दे का ईमान उस वक़्त तक दुरस्त नहीं हो सकता जब तक उसका दिल ठीक न हो और उसका दिल उस वक़्त तक ठीक नहीं हो सकता जब तक उसकी जुबान दुरस्त न हो और वो शख्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से महफूज़ न हो।
(मुस्नद अहमद—3/198)

एक ऐराबी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया मुझे कोई ऐसा अमल बतायें जिसके बाइस में जन्नत में दाखिल हो जाऊँ तो आपने इरशाद फ़रमाया— भूके को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको और ऐसा न कर सको तो अपनी जुबान को भलाई की बातों में महदूद रखो (यानी अपनी जुबान से सिर्फ़ अच्छी बात कहो) (मुस्नद अहमद—4/299)

हर शख्स को चाहिये कि बे वजह व बे मक़सद गुफ्तगू न करे क्योंकि जो गुफ्तगू (बात चीत) बे मक़सद होती है उससे इन्सान को कुछ भी हासिल नहीं होता बल्कि वो अपना कीमती वक़्त को ज़ाया (बर्बाद) करता है जबकि वो वक़्त फिर उसे दोबारा नहीं मिलेगा इसलिये उसे चाहिये कि उस वक़्त में खुद को ज़िक़रे इलाही में मशगूल रखे या दुरुद शरीफ़ का विर्द करे या दीनी तबलीग़ करे और अच्छी बात करे और ऐसा कोई काम करे जो उसे दुनियाँ व आख़िरत में नफ़ा (फ़ायदा) दे यही उसके लिये सबसे बेहतर है और यही उसके लिये निजात का रास्ता है

और हमें चाहिये कि खुद का मुहासिवा करें और अपने ऐबों को देखें और उन्हें दूर करें और अपनी आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक़र करें और इल्म हासिल करें और अल्लाह तआला की नेअमतों पर उसका शुक्र अदा करें और अपने गुनाहों पर नादिम (शर्मिन्दा) हों और तौबा करें और अपनी बरिश्शाश की दुआ माँगें ताकि हमारी दुनियाँ और आख़िरत बेहतर हो जाये और नेक काम करें ताकि उसका अज़र पायें और बे मक़सद गुफ्तगू और दुनियाँ दारी की फ़िज़ूल बातों में अपना वक़्त ज़ाया न करें या फिर ख़ामोश रहें क्योंकि फ़िज़ूल बात करने से बेहतर ख़ामोशी है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— इन्सान के हुस्ने इस्लाम में बे मक़सद बातों का छोड़ना भी है। (सुनन इब्ने माज़ा—295)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है अच्छी गुफ्तगू सदका है। (मुस्नद अहमद—2/316)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
 मैं तुम्हें वो अमल न बताऊँ जो बदन पर हल्का हो और मीज़ान पर
 भारी होगा आप से अर्ज किया गया वो क्या है आप ने फरमाया—
 वो ख़ामोशी, अच्छे अख़लाक़ और बे मक़सद बात को छोड़ देना है।
 (अत्तरगीब वत्तरहीब—3/533)

और हमें चाहिये कि अपनी जुबान से किसी को बुरा न कहें बल्कि
 खुद को बुरा जाने और खुद में बुराई ढूँढ़ें और उसे दूर करें बाज़
 लोग बिना सोचे समझे किसी को काफ़िर या फ़ासिक कह देते हैं
 और ऐसा कहना गुनाह है जब तक कि उसकी पूरी तरह से
 तहकीक़ न कर लें और न किसी को उसके ऐब या गुनाह के लिये
 ताना दें कि हो सकता है कि उसने अपने गुनाहों से तौबा कर ली
 हो और न किसी का मज़ाक उड़ायें कि कहीं ऐसा न हो कि मज़ाक
 उड़ाने वाला खुद मज़ाक न बन जाये और झूठी कसम या किसी से
 झूठा वायदा न करो और न किसी का राज़ फाश करो क्योंकि
 किसी का राज़ उसके पास अमानत होता है और ज़्यादा कसम
 खाना झूठा होने की अलामत है और जुबान से कभी बेहुदा कलाम
 न कहें और जब भी कोई बात कहें तो पहले उसको खूब सोचें फिर
 अगर अच्छी बात हो तो कहें वरना ख़ामोश रहें और कोई ऐसी बात
 न कहें जो बुरी या गुनाह हो या जिसके कहने से किसी को बुरा
 लगे लेकिन हक़ बात हमेशा कहें चाहे उसका अंजाम कुछ भी हो
 परवाह न करें और यही हर मुसलमान के हक़ में बेहतर है।

अक्लमन्द शख्स वो है लोगों की वजाय खुद में
 बुराई ढूँढ़े और उसे दूर करने की हर मुम्किन कोशिश और तदबीरें
 करे और बेवकूफ़ शख्स वो है जो अपनी बुराइयों की बजाय लोगों
 की बुराइयाँ देखे और अपने वक़्त को ज़ाया करे और गुनाहगार हो
 जाये अब ज़रा सोचें और गौर करें कि हम अक्लमन्द हैं या बेवकूफ़
 हालाँकि किसी की बुराई ढूँढ़ने या बद गोई या गीबत करने से हमें
 सिवाय नुक़सान के कुछ भी हासिल नहीं होता तो फिर हम क्यों
 किसी की बुराई करें और गुनाह कमायें इसलिये हमें चाहिये सिर्फ़
 अपनी बुराइयों और गुनाहों का मुहासिबा करें और उन्हें दूर करें
 और खुद को नेक अमल की तरफ़ माइल करें ताकि अल्लाह
 तआला से हम उसका बेहतर अज़र पायें।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने आप को फुहश कलामी (बेहुदा बात) से बचाओ बेशक अल्लाह
तआला फुहश कलामी को पसन्द नहीं करता।
(मुस्नद अहमद-2/195)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
ऐ ईमान वालो वायदों को पूरा करो। (सू0-मायदा-1)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
वायदा पूरा करना अतिया देना है। (मजमउज्जवाइद-4/166)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मोमिन ताअन करने वाला लानत भेजने वाला फुहश गोई करने
वाला और बद कलामी करने वाला नहीं होता। (बैहकी-10/243)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
कोई शख्स किसी दूसरे पर कुफ़ या फ़िस्क का इल्जाम लगाता है
तो अगर वो शख्स ऐसा न हो तो वो बात कहने वाले की तरफ़
लौट आती है। (सही बुख़ारी-2/893)

अच्छी गुप्तगू से ईमान ताज़ा होता है और ज़ायद
व फ़िजूल और बेहुदा गुप्तगू से गुनाह सरज़द होते हैं हदीस पाक
में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख्स
अपने मस्ख़रेपन से लोगों को हंसाता है तो अल्लाह तआला उस
पर गुस्सा व नाराज़ होता है हत्ता कि जब तक उसको जहन्नुम में
दाख़िल (होने का फैसला) न कर दे राज़ी नहीं होता।
(बुख़ारी, मुस्लिम)

मनकूल है कि हज़रत इमाम हसन बसरी (रह0) से किसी
शख्स ने कहा कि फ़लाँ शख्स ने आपकी ग़ीबत की है तो आपने
ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का एक थाल भर कर उसके
पास भेजा और साथ में कहला भेजा कि सुना है तुमने मुझे अपनी
नेकियाँ हदया की हैं तो मैंने उसका मुआवज़ा देना बेहतर समझा
इसलिये मैंने खजूरों से भरा थाल तुम्हारे पास भेजा है।

—: गुस्सा :—

गुस्सा इन्सान का दुश्मन है और जो दुश्मन को दोस्त बनायेगा तो वो उससे सिर्फ नुकसान उठायेगा बाज़ औकात तो गुस्से की वजह से इन्सान को बड़े-बड़े नुकसान उठाने पड़ते हैं जो उसके लिये बहुत बड़ी परेशानी का सबब होते हैं फिर उसके पास सिवाये पछतावे के कोई चारा नहीं होता और इस गुस्से के बाइस इन्सान को दुनियावी नुकसान के साथ आखिरत का भी नुकसान होता है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जिस तरह एलवा (कड़वा फल) शहद को ख़राब कर देता है। (कंजुल उम्माल-3/140)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स गुस्सा करता है वो जहन्नुम के किनारे जा लगता है।
(दुर्रे मन्सूर-4/99)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो शख्स अपने गुस्से को रोकता है तो अल्लाह तआला उससे अपने ग़ज़ब को रोक देता है।

गुस्सा इन्सान की अक़ल को खा जाता है और जब इन्सान में अक़ल नहीं रहती है तो उसमें सोचने समझने की ताक़त नहीं रहती फिर वो ऐसे काम करता है जिसमें उसे सिर्फ नुकसान उठाना पड़ता है और बाज़ औकात गुस्से के सबब इन्सान से बड़े-बड़े गुनाह सरज़द हो जाते हैं जिनका अंजाम बहुत बुरा और तकलीफ़ ज़दा होता है जो इन्सान को भुगतना पड़ता है और कुछ गुनाहों के सबब आखिरत में अज़ाब की शक़ल में कई तरह की मुसीबतों परेशानी से इन्सान को दो चार होना पड़ेगा गुस्सा इन्सान के नफ़्स की तरफ़ से है और शैतान का बेहतर हथियार है जो इन्सान को गुनाहों की तरफ़ माइल करता है।

और जो शख्स अपने नफ़्स पर काबू कर लेता है तो वही शख्स गुस्से को भी काबू करने में कामयाब होता है और उस पर ग़ालिब आ जाता है और जो शख्स अपने गुस्से को काबू रखते हुये

उसे पी जाता है और जो ऐसा अल्लाह तआला की रज़ा के लिये करता है तो अल्लाह तआला उस शख्स को बेहतर अज़र (इनाम) अता फ़रमाता है और उसके दिल को ईमान से भर देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स गुस्से को पी जाता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस शख्स को ये इश्तिyार देगा कि वो जिस हूर को चाहे पसन्द करे। (मुस्नद अहमद—3/440)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— अल्लाह तआला को उस घूँट से ज़्यादा कोई घूँट पसन्द नहीं जिसे कोई बन्दा पी लेता है तो अल्लाह तआला उसके दिल को ईमान से भर देता है। (कंज़ुल उम्माल—15/873)

अल्लाह तआला रहीमो करीम है जो अपने बन्दों की भलाई चाहता है इसलिये अपने बन्दों से फ़रमाता है कि गुस्सा तुम्हारे लिये बेहतर नहीं है इसलिये इसे काबू में रखो और मेरी रज़ा के लिये इसे पी जाया करो ताकि तुम्हें किसी तरह का नुकसान न उठाना पड़े और तुम हर परेशानी से महफूज़ रहो और जो लोग अल्लाह तआला की रज़ा के लिये अपने गुस्से पर ग़ालिब रहते और उसे पी जाते हैं तो अल्लाह तआला उन लोगों को अपना ख़ास और मुक़र्रब बन्दा बना लेता है और उनकी दुनियाँ व आख़िरत दोनों बेहतर हो जाती हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

और गुस्सा पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले और नेक लोग अल्लाह तआला के महबूब हैं। (सू0—आले इमरान—134)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— कोई बन्दा उस घूँट से ज़्यादा अज़र (सवाब) वाला घूँट नहीं पीता जो वो अल्लाह तआला की रज़ा के लिये गुस्से का घूँट पीता है। (सुनन इब्ने माजा—319)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—जो शख्स अपनी जुबान को रोके तो

अल्लाह तआला उसकी पर्दा पोशी करता है और जो शख्स अपने गुस्से को रोके और उसे काबू में रखे तो अल्लाह तआला उसे अज़ाब से महफूज़ रखेगा और जो शख्स अल्लाह तआला की बारगाह में उज़्र पेश करे (यानी तौबा करे) तो अल्लाह तआला उसकी माअज़रत को कुबूल फ़रमाता है।

(अत्तरगीब वत्तरहीब-3/525)

इमाम गज़ाली (रह0) फ़रमाते हैं नफ़्स अम्माराह बहुत सरकश जिद्दी और बदफ़ितरत शै: है और इसकी शरारतों से बचना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ये निहायत नुकसान देने वाला दुश्मन है और इसकी आफ़तें निहायत सख़्त हैं और इसका इलाज बहुत मुश्किल काम है इसकी बीमारी निहायत ख़तरनाक बीमारी है और इसकी दवा सब दवाओं से ज़्यादा दुश्वार है और नफ़्स घर का चोर है और चोर जब घर में ही छुपा हो तो उससे महफूज़ रहना मुश्किल होता है और वो ज़्यादा नुकसान पहुँचाता है और ये एक महबूब दुश्मन है जब इन्सान को किसी से मुहब्बत होती है तो उसे उसके ऐब नज़र नहीं आते बल्कि मुहब्बत की वजह से महबूब के ऐबों से अन्धा रहता है क्योंकि मुहब्बत वाली आँख हर ऐब से अन्धी होती है अगर इस नफ़्स को बहुत ज़लील व ख़वार रखा जाये तो इस पर लगाम लगाई जा सकती है और इसे काबू किया जा सकता है।

हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—जबरदस्त वो नहीं जो (कुश्ती लड़ने में) अपने मुक़ाबिल (सामने वाले) को पछाड़ दे बल्कि जबरदस्त वो है जो गुस्से के वक़्त अपने आप को काबू में रखे। (बुख़ारी शरीफ़)

—: हसद :—

अल्लाह तआला की किसी शख्स को अता कर्दा नेअमत जैसे माल, औलाद इल्म मर्तबा ओहदा जमीनो जायदाद वगैराह पर जलना या ये सोचना कि ये नेअमत किसी तरह इससे छिन जाये और ये इस नेअमत से महरुम हो जाये तो इस तरह की सोच व ख्याल को हसद कहते हैं और ये ऐसा गुनाह है जो दूसरे गुनाहों की तरफ रागिब करता है क्योंकि जब कोई शख्स किसी से उसकी नेअमत के बाइस हसद करता है तो सोचता है कि उसे उसकी नेअमतों से कैसे महरुम किया जाये फिर वो नई-नई तरकीबें लगाता है और कई तरह की तदबीरें करता है और सही व गलत और जाइज़ व नाजाइज़ में तमीज़ खो बैठता है और नतीजा ये होता है कि वो इस हसद के बाइस कई तरह के गुनाहों में मुब्तिला हो जाता है जैसे— झूठ, चुगली, गीबत, चोरी, डकैती, कत्ल, आगजनी वगैराह।

और इसके अलावा वो तमाम काम ऐसे करता है जो गुनाह होते हैं और वो ये तमाम काम इसलिये करता है ताकि अल्लाह तआला ने जो नेअमत उसे दी है वो किसी तरह उससे छिन जाये और इन तमाम गुनाहों के सबब वो (हासिद) अपनी दुनियाँ व आखिरत ख़राब कर लेता है और उस अज़ाब को भूल जाता है जो उसे क़ब्र, क़यामत और जहन्नुम में भुगतने होंगे।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
क्या वो लोगों से उस फज़ल व नेअमत पर हसद करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अता फ़रमाई (सू0-निसा-54)

तमाम जमीनो व आसमानों और जो कुछ उनमें मौजूद है उन सब का हकीकी मालिक सिर्फ़ रब्बुल आलमीन है और अल्लाह तआला ने हम तमाम इन्सानों को दुनियाँ में कुछ चीज़ों का जाहिरी मालिक बनाया है तो दुनियाँ में हम जिन चीज़ों के मालिक होते हैं तो हमें ये इख़्तियार होता है कि हम जिस चीज़ के मालिक हैं उस चीज़ को हम जैसे चाहें वैसे इस्तेमाल में लायें और अपने माल को जहाँ चाहें वहाँ खर्च करें चाहे मोटर वाहन खरीदें या घर बनायें, ज़मीन खरीदें या घर के कामों में खर्च करें या चाहे किसी को दे दें चाहे

अल्लाह की राह में खर्च करें क्योंकि हमें पूरा इख्तियार होता है और हमसे कोई भी कुछ नहीं कह सकता और न हमारे हाथों को माल सर्फ (खर्च) करने से रोक सकता है क्योंकि हम उस माल के मालिक हैं और अपनी मर्जी के मुताबिक खर्च करते हैं।

इसी तरह अल्लाह तआला पूरी कायनात का मालिक है और अपनी मर्जी के मुताबिक जिसे जो चाहे अता करता है और उसे पूरा इख्तियार है इस पर किसी को एतराज़ करने का हक नहीं बनता और जो लोग उसकी अता कर्दा नेअमत पर हसद करते हैं तो गोया वो अल्लाह तआला पर एतराज़ करते हैं और ये बहुत बड़ा गुनाह है और ऐसा गुनाह करने वाला जहन्नुमी है।

हदीस पाक में वारिद है कि हासिद (हसद करने वाला) वगैर हिसाब जहन्नुम में दाखिल होगा हमारी इस्लामी खवातीन में हसद की बीमारी बहुत ज़्यादा पाई जाती है जब वो दूसरी औरतों के कपड़े, सोने, चाँदी के ज़ेवरात, मकान, माल वगैराह को देखती हैं तो उनके दिलों में हसद पैदा होता है और वो हसद के बाइस अपने ईमान को बर्बाद कर लेती हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मोमिन के दिल में ईमान और हसद दोनों एक साथ जमा नहीं हो सकते। (शुअबुल ईमान—5/266)

हसद करने से हमें कुछ भी हासिल नहीं होता सिवाये मुसीबतों परेशानी और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब के और इसके अलावा हासिद हसद की बीमारी में इतना मुबिला हो जाता है जो उसे दिन रात खाये जाती है हसद के बाइस वो अपने गुनाहों में दिन रात इज़ाफ़ा करता रहता है और इसके साथ साथ वो अपनी नेकियों को भी जाया (बर्बाद) करता रहता है और अपने रब और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से दूरी बनाता है और उनकी नाराज़गी का सबब बनता है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
हसद करने वाले, चुगली करने वाले और काहिन का मुझसे और मेरा उनसे कोई तआल्लुक नहीं। (मजमउज्जवाइद—8/172)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है। (सुनन इब्ने माजा—320) (सुनन अबी दाऊद—4/360)

इसलिये हमें चाहिये कि हसद जैसे गुनाह से बचने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें और इससे बचने का एक बेहतर तरीका ये भी है कि हम हर मामलात में हमेशा अपने से नीचे वाले शख्स को देखें जिसे अल्लाह तआला ने हमसे कमतर रखा और जब हम किसी ऐसे शख्स को देखें तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें कि अल्लाह तआला ने हमें इससे बेहतर बनाया है और अगर अपने से ज़्यादा नेअमत वाले शख्स को देखें तो हसद न करें बल्कि अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमें भी वो नेअमत अता करे जो उसे अता की है फिर देना या न देना अल्लाह तआला की मर्जी और उसके इख्तियार में है।

क्योंकि अल्लाह तआला हर इन्सान को उसकी मर्जी के मुताबिक अता नहीं करता बल्कि इन्सान के लिये जो बेहतर होता है उसे वही अता करता है और इसमें हिकमते इलाही है जो हम छोटी सी अक्ल वाले समझ नहीं सकते इसलिये हमें चाहिये हम सिर्फ ये गुमान रखें कि जो मेरे रब ने हमें दिया है वही मेरे लिये बेहतर है और इसी में मेरी भलाई पोशीदा (छुपी हुई) है और अल्लाह तआला की हर एक नेअमत पर उसका शुक्र बजा लायें और जो नेअमत न मिले उस पर सब्र करें यही हर इन्सान के लिये बेहतर है।

क्योंकि अल्लाह तआला किसी को दुनियाँ में ज़्यादा नेअमतें अता करता है और किसी को आखिरत में ज़्यादा अता करेगा और उसके लिये आसानी और राहत होगी और अपने किसी मुसलमान भाई से हसद न करो बल्कि ज़रूरत के वक़्त हर मुसीबतो परेशानी में उसकी माली और बदनी मदद करो और जो शख्स किसी मुसलमान भाई की मुसीबतो परेशानी में खुश होता है तो अल्लाह तआला खुश होने वाले शख्स को मुसीबतो परेशानी में मुब्तिला कर देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अपने भाई की परेशानी पर खुशी का इज़हार मत करो कहीं (ऐसा
न हो कि) अल्लाह तआला उसे उस (परेशानी) से निजात दे दे
और तुम्हें उसमें मुब्तिला कर दे। (जामअ तिमिज़ी-4/227)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है
अपने से नीचे दर्जे वाले की तरफ़ देखा करो ऊपर के दर्जे के
लोगों की तरफ़ नज़र मत करो अगर तुम इस तरह करोगे तो
अल्लाह तआला की किसी भी नेअमत को तुम हकीर न जानोगे।
(सुनन इब्ने माजा-4/443)

हर इन्सान को अपनी किस्मत का ही मिलता है
और किसी दूसरे की किस्मत का हमें नहीं मिल सकता और हमारी
किस्मत का किसी दूसरे को नहीं मिल सकता क्योंकि किसी की
किस्मत किसी दूसरे पर तक़सीम नहीं की जाती ज़रा सोचो कि
कुछ चीज़ें ऐसी भी हमारे पास मौजूद हैं जो हमें बेहद पसन्द हैं
और अगर हमारी पसंदीदा चीज़ों को हमसे छीन कर किसी दूसरे
शख्स को दे दी जायें तो हम कैसा महसूस करेंगे इसलिये हमें
चाहिये कि किसी की किसी भी नेअमत पर हसद न करें क्योंकि
किसी भी नेअमत पर हसद करना हिमाक़त व ज़हालत और गुनाह
है और अपनी तक़दीर पर क़नाअत करना (राज़ी रहना) और
शाकिर रहना हमारे लिये दुनियाँ व आख़िरत में बेहतर और अज़रे
अज़ीम का बाइस है।

हसद व तक़ब्बुर के बाइस शैतान की अस्सी (80) हज़ार
साल की इबादत जाया हो गई और वो हमेशा के लिये ज़लालत व
लानत और गुमराही के गहरे समुन्दर में गुर्क हो गया एक बुजुर्ग
का कौल है कि कीना रखने वाला दीनदार नहीं हो सकता और
लोगों के ऍब निकालने वाला इबादत गुज़ार नहीं हो सकता और
चुगल ख़ोर को अमन नसीब नहीं हो सकता और हासिद नुसरते
खुदावन्दी से महरुम रहता है।

—: क़यामत का बयान :—

हज़रत इसराफ़ील (अलै०) जब पहली बार सूर फूँकेंगे तो आसमानों और ज़मीनों वाले तमाम लोग बेहोश हो जायेंगे यानी हर ज़िन्दा चीज़ मर जायेगी सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह तआला बाकी रखे फिर इसराफ़ील (अलै०) दोबारा सूर फूँकेंगे जिसकी शिद्दत से तमाम क़ब्रें फट जायेंगी और तमाम मुर्दे बाहर निकल आयेंगे।

सूर एक सींग की तरह है जैसे बिगुल होता है और उसकी गोलाई ज़मीन व आसमान की चौड़ाई जैसी है और सूर का फूँकना एक सख़्त चीख़ होगी और सूर इसराफ़ील (अलै०) के मुँह के करीब है और वो रब तआला के हुक्म के मुन्ताज़िर हैं कि कब उन्हें सूर फूँकने का हुक्म मिले और वो सूर फूँकें।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और जब दोबारा सूर फूँका जायेगा तो वो दिन (यानी क़यामत) काफ़िरोँ पर बड़ा सख़्त होगा (और) उन पर हरगिज़ आसान न होगा। (सू०—मुदस्सिर—8,—10)

अल्लाह तआला क़ुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है—
और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूँका जायेगा तो वो फ़ौरन अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने रब की तरफ़ तेज़ी से चलेंगे (और) वो कहेंगे हाय हम बर्बाद हो गये हमें किसने सोते से जगा दिया ये (ज़िन्दा होना) वही तो है जिसका खुदा ए रहमान ने वायदा किया था और रसूलों ने सच फ़रमाया था। (सू०—यासीन—51,—52)

इरशादे बारी तआला है—
और उन्होंने अल्लाह तआला की क़द्र न जानी जैसा उसका हक़ था और वो क़यामत के दिन समेट देगा सब ज़मीनों को और सब आसमान लपेट दिये जायेंगे और सूर फूँका जायेगा तो जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में हैं सब बेहोश हो जायेंगे सिवाये उसके जिसे अल्लाह चाहेगा फिर जब सूर फूँका जायेगा (तो) वो सब अचानक देखते हुये खड़े हो जायेंगे (सू०—जुमर—67,68)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जब अल्लाह तआला ने मुझे मबऊस फरमाया तो सूर फूँकने वाले फरिश्ते को पैगाम भेजा पस उसने सूर को मुँह से लगाया हुआ है और वो इन्तज़ार में है कि कब फूँकने का हुक्म दिया जाये सुनो उस फूँक से डरो। (तारीख़ इब्ने असाकर-3/22)

फिर कब्रों से निकलने के बाद तमाम लोग नंगे पाँव नंगे जिस्म मैदाने महशर की तरफ़ तेज़ी से चलेंगे सिवाय अल्लाह तआला के मख़सूस और मुकर्रब बन्दों के और मैदाने महशर की ज़मीन हमवार (बराबर) होगी उसमें न कोई ऊँच नीच होगी और न कोई टीला होगा और वहाँ सब तआला के अर्श के साये के अलावा कोई और साया न होगा और वो ज़मीन दुनियाँ की ज़मीन की तरह न होगी बल्कि उसे बदल दिया जायेगा और लोगों के दिल ख़ौफ़ ज़दा होंगे और आँखें झुकी हुई होंगी और मैदाने महशर में तमाम मख़लूक जमा होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

जिस दिन ज़मीन व आसमान दूसरी ज़मीन से बदल जायेंगे और सब लोग अल्लाह तआला के सामने खड़े होंगे। (सू0-इब्राहीम-48)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— क़यामत के दिन लोगों का हशर एक सफ़ेद ज़मीन पर होगा जिस तरह छने हुये आटे की रोटी और उसमें किसी के लिये कोई आड़ न होगी। (सही बुख़ारी-2/965)

क़यामत के दिन ज़मीनों आसमानों में कुछ भी बाकी न रहेगा और वो अपने अन्दर की हर चीज़ को बाहर निकाल कर फेंक देगी और सितारे झड़ पड़ेंगे और चाँद व सूरज बे नूर हो जायेंगे और चारो तरफ़ अंधेरा छा जायेगा समुन्दर सूख जायेंगे और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह उड़ाये जायेंगे और लोग बिखरे हुये पतंगों की तरह होंगे और क़यामत के दिन लोगों की शर्मगाहें खुली होने के बावजूद लोग क़यामत की हौलनाकियों और सख़्त मुसीबतों परेशानी के बाइस उसे देखने से बे नियाज़ रहेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

जब धूप लपेटी जायेगी और जब तारे झड़ पड़ेंगे और जब पहाड़ चलाये जायेंगे और जब बहशी जानवर जमा किये जायेंगे और जब समुन्दर सुलगाये जायेंगे और जब रुहें बदनों से मिला दी जायेंगी और जब जिन्दा दफन की हुई लड़की से पूछा जायेगा कि वो किस गुनाह के बाइस कत्ल की गई थी और जब नामे आमाल खोले जायेंगे और जब आसमान जगह से खींच लिया जायेगा और जहन्नुम भड़काई जायेगी और जन्नत पास लायी जायेगी तो हर शख्स जान लेगा जो कुछ उसने हाज़िर किया है (सू०—तकवीर—1, 14)

इरशादे बारी तआला है—

उस दिन हर शख्स अपनी-अपनी फिक्र में होगा जो उसे (दूसरी तरफ़ देखने से) बे नियाज़ करेगी। (सू०—अबस—37)

इरशादे खुदावन्दी है—

हर चीज़ फ़ानी है सिवाये रब तआला की ज़ात के (सू०—क़सस—37)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

क़यामत के दिन लोग नंगे पाँव नंगे बदन (जिस्म) और ख़ल्ना किये हुये उठेंगे और उनको पसीने ने लगाम डाल रखी होगी।

(मुस्तदरक हाकिम—4 / 564)

मैदाने महशर में चीख़ पुकार मची होगी पुल सिरात और मीज़ान कायम किया जायेगा और जहन्नुम भड़काई जायेगी और लोगों को उनके आमाल नामे उनके हाथों में दिये जा रहे होंगे और वो उसमें देखेंगे जो उन्होंने दुनियाँ में अच्छे और बुरे काम किये होंगे और लोग सख़्त ख़ौफ़ और परेशानियों में घिरे होंगे सिवाय अल्लाह तआला के मुक़र्रब नेक सालिहीन बन्दों के और वो अल्लाह तआला की रहमत के साये में होंगे और कुछ लोग जहन्नुम में डाले जा रहे होंगे और कितने ही लोग ज़लील व रुसवा होंगे और कितनों की परदा पोशी होगी और कितने ही लोग शर्मसार हो रहे होंगे और बहुत लोग निजात पा जायेंगे और बहुत से लोग अज़ाब में मुब्तिला होंगे और कई लोगों को अल्लाह तआला की रहमत हासिल होगी और हमें अपना पता नहीं कि मेरा हाल क्या होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

और एक चिंघाड़ होगी वो सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जायेंगे तो आज किसी जान पर जुल्म न होना और तुम्हें बदला मिलेगा

अपने किये का बेशक जन्नत वाले आज दिल पसन्द मशागिल में लुत्फ अन्दोज होंगे वो और उनकी बीवियाँ सायों में होंगी तख्तों पर तकिया लगाये उनके लिये मेवा है और उनके लिये जो माँगे उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फरमाया हुआ (सू०—यासीन—53,—58)

इरशादे बारी तआला है—

दिल दहलाने वाली क्या वो दिल दहलाने वाली और क्या तुम जानते हो दहलाने वाली क्या है वो योमे कयामत है जिस दिन (सारे) लोग फैले पतंगे की तरह होंगे और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह हो जायेंगे पस जिस (के आमाल) के पलड़े हल्के होंगे तो उनका ठिकाना हाविया होगा और क्या तुम जानते हो हाविया क्या है (वो जहन्नुम की) सख्त दहकती हुई आग (का इन्तिहाई गहरा गढ़ा) है। (सू०—कारिया—1,—8)

इरशादे खुदावन्दी है—

हरगिज़ काम न आयेंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद कयामत के दिन (अल्लाह तआला) तुम्हें इन से अलग कर देगा और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों को देख रहा है (सू०—मुत्तहिना—3)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और गुमराह लोगों को हम कयामत के दिन उनके मुँह के बल उठायेंगे अंधे, गूँगे और बहरे और उनका ठिकाना जहन्नुम है जब कभी (आग) बुझने पर आयेगी हम उसे और भड़का देंगे। (सू०—बनी इसराईल—97)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जिसने हलाल तरीके से दुनियाँ तलब की और (बिला ज़रूरत) भीक मांगने से बचा और अपने पड़ोसी पर रहम किया तो अल्लाह तआला कयामत के दिन उस शख्स से इस हाल में मुलाकात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता होगा (मिशकात)

मैदाने हश्र में तमाम मख़लूक जिन्न, इन्सान, शैतान, जानवर, दरिन्दे, परिन्दे सब जमा होंगे और सूरज उनके बहुत ज़्यादा करीब होगा जिसकी गर्मी की शिद्दत के बाइस लोगों के दिमाग़ खोलते होंगे।

और जुबानें सख्त प्यास की वजह से बाहर को खिंच रहीं होंगी और लोगों के दिल ख़ौफ़ से जल रहे होंगे और हर बाल के नीचे से पसीना बह रहा होगा हत्ता कि वो ज़मीन पर जारी हो जायेगा बाज़ का पसीना उसके घुटनों तक बाज़ का सुरीन और बाज़ का पसीना कानों की लौ तक और कुछ लोग उस पसीने में गायब होने के करीब होंगे और लोग चालीस साल तक टकटकी बाँधे खड़े रहेंगे इस दरमियान किसी का हिसाबो किताब न होगा और न मीज़ान कायम होगा और लोग ख़ौफ़ ज़दा परेशान हाल खड़े होंगे और मुन्तज़िर होंगे कि अल्लाह तआला लोगों का हिसाबो किताब शुरू करे इस बीच कुछ लोग कहेंगे ऐ मेरे रब मुझे इस मुसीबतो परेशानी और हिसाब के इन्तज़ार से निजात दे और वो दिन पचास हज़ार साल का एक दिन होगा जिसमें तमाम मख़लूक का हिसाब होगा।

इसलिये हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआला की राह में इस दुनियाँ में इस क़दर पसीना बहायें ताकि क़यामत के दिन निकलने वाले पसीने और क़यामत की सख़्तियों और तकलीफ़ों से महफूज़ रहें और नमाज़, रोज़ा, हज, जिहाद, मोमिन की हाजत रवाई, नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना और दीगर नेक अमल और इबादत में अपना पसीना बहायें ताकि क़यामत के दिन राहत व अमन पायें और क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से निजात पायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
वो अज़ाब का दिन (यानी क़यामत) जिसकी मिक्दार पचास हज़ार बरस है। (सू0—मआरिज—4)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन एक शख्स को हिसाबो किताब के लिये खड़ा किया जायेगा तो उससे इतना पसीना निकलेगा कि एक सौ प्यासे ऊँट सैराब हो जायें। (मुस्नद अहमद—1/304)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—क़यामत के दिन लोगों को पसीना आयेगा हत्ता कि उनका पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ फैल जायेगा और उनके मुँह को बन्द करके कानों तक चला जायेगा।
(सही बुख़ारी—2/967)

हज़रत उकबा बिन आमिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—क़यामत के दिन सूरज ज़मीन के करीब हो जायेगा तो लोगों को पसीना आयेगा बाज़ लोगों का पसीना उनकी ऐड़ियों तक जायेगा बाज़ का पिन्डली के निस्फ़ तक बाज़ का घुटनों तक पहुँचेगा कुछ का रानों तक और बाज़ का पसीना मुँह तक पहुँचेगा और बाज़ का पसीना उसे ढाँप देगा। (मुस्नद अहमद—4/157)

जिस दिन ज़मीन में ज़लज़ला पैदा होगा और ज़मीन अपने तमाम बोझ बाहर निकाल देगी और जब समुन्दर उबलेंगे उस दिन यानी योमे क़यामत तमाम लोग अपने रब के हुज़ूर पेश होंगे और उनकी आँखें ख़ौफ़ से खुली हुई और दिल परेशान होंगे और लोग अपने हिसाबों किताब के इन्तज़ार में खड़े होंगे लेकिन रब तआला न उनसे कलाम करेगा और न उनके मामलात में नज़र करेगा और लोग भूके प्यासे बुरे हाल में होंगे उस दिन दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे से गाफ़िल हो जायेगी और हमल वाली औरतों का हमल साक़ित हो जायेगा और उस दिन हर शख्स अपने किये हुये आमाल को अपने सामने पायेगा।

उस दिन कोई किसी के काम न आयेगा माँ बाप औलाद के काम न आयेंगे बीवी ख़ाविन्द से दूर भागेगी भाई—भाई को नहीं पहचानेगा औलाद अपने माँ बाप से दूर भागेगी और उस सख्त दिन में सबको अपनी—अपनी पड़ी होगी और कोई किसी को नफ़ा न दे सकेगा और उस दिन अल्लाह तआला के ग़ज़ब से बचाने वाला कोई न होगा और कुछ लोगों को जहन्नुम की तरफ़ ले जाया जायेगा और बाज़ को औंधा करके मुँह के बल जहन्नुम में डाला जायेगा।

और ज़ालिमों की माअज़रत भी उन्हें कोई फ़ायदा न देगी और पोशीदा बातें ज़ाहिर होंगी और लोगों की जुबानें गूँगी कर दी जायेंगी और उनके जिस्म के आज़ा (अंग) उनके आमालों की गवाही देंगे और मीज़ान (तराजू) कायम की जायेगी और जहन्नुम सामने लायी जायेगी और आग़ भड़काई जायेगी और उस दिन लोगों को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र होगी कि किसी तरह अल्लाह तआला के ग़ज़ब से बच जायें लेकिन उस दिन कुछ लोग हंसते खुशियाँ मनाते होंगे और उनके चेहरे रोशन होंगे ये वो लोग होंगे जिन्होंने दुनियाँ की

बजाय आखिरत को तरजीह दी और अपनी तमाम उम्र अल्लाह तआला व उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फरमाबरदारी में गुज़ारी होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

जब ज़मीन थरथरा दी जायेगी जैसा उसका थरथराना ठहरा है और ज़मीन अपने (तमाम) बोझ बाहर फेंक देगी और आदमी कहेंगे इसे क्या हुआ उस दिन वो अपनी ख़बरें बतायेगी इसलिये कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे कई राह होकर ताकि अपना किया दिखायें तो जो एक ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा वो उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा वो उसे देखेगा। (सू०—ज़िलज़ाल—1,—8)

इरशादे बारी तआला है—

आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और (उनके) हाथ हमसे बात करेंगे और उनके पाँव उनके आमाल की गवाही देंगे। (सू०—यासीन—65)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

फिर जब आयेगी वो (क़यामत) कान फाड़ने वाली चिंघाड़ उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और अपने माँ बाप और जोरु और बेटों से उनमें से हर एक को उस दिन एक ही फ़िक्र होगी कि वही उसे बस है कितने मुँह उस दिन रोशन होंगे हंसते खुशियाँ मनाते और कितने ही मुँह पर उस दिन गर्द पड़ी होगी उन पर स्याही चढ़ रही होगी ये वही हैं काफ़िर बदकार (सू०—अबस—33,—42)

इरशादे बारी तआला है—

तुम तो (गुनाह करते वक़्त) उस ख़ौफ़ से भी पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें (गवाही देंगी) लेकिन तुम गुमान करते थे कि अल्लाह तआला तुम्हारे बहुत से कामों को नहीं जानता और तुम्हारा यही गुमान जो तुमने अपने रब के बारे में कायम किया तुम्हें हलाक कर गया सो तुम नुकसान उठाने वालों में से हो गये हो।

(सू०—हामीम सज्दा—22,—23)

इरशादे खुदावन्दी है—

ऐ लोगो अपने रब से डरो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध

पीते बच्चे को भूल जायेगी और हमल वाली अपने हमल को साकित कर देगी तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में और वो नशे में न होंगे कि अल्लाह की मार बड़ी सख्त होगी। (सू०-हज-१,-२)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अगर माँ बाप का औलाद पर कर्ज होगा तो माँ बाप अपनी औलाद से कर्ज माँगेंगे वो जवाब देगा मैं तो तुम्हारी औलाद हूँ इस जवाब का उन पर कोई असर न होगा बल्कि वो तमन्ना करेंगे कि इस पर हमारा और ज्यादा कर्ज होता। (तिबरानी)

रोजे कयामत हर छोटी बड़ी चीज के मुताअल्लिक सवाल होगा और लोग कई तरह की सख्तियों और परेशानियों में मुब्तिला होंगे और उनके तमाम आज्ञा (अंग) काँप रहे होंगे और उस वक्त कुछ लोग तमन्ना करेंगे कि काश मैं खाक हो जाता और कुछ लोग ये तमन्ना करेंगे कि हमारे आमाल हमारे रब के सामने पेश न हों ताकि हम जलील व रुसवा होने से बच जायें और बाज़ लोग यूँ कहेंगे ऐ मेरे रब हमें वापस दुनियाँ में भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें तो हमें चाहिये कि हम यही गुमान करें कि हमें अल्लाह तआला ने दुनियाँ में वापस भेजा है और हम कसरत से नेक आमाल करें और अल्लाह तआला के फरमाबरदार बन्दे बनें ताकि कयामत के दिन हम गुनाहगारों की फेहरिस्त में खड़े न हों और अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत के साये में जगह अता करे।

और दुनियाँ के थोड़े दिनों में ज्यादा दिनों के लिये तैयारी करें ताकि कयामत के दिन अपने नेक आमालों का नफ़ा उठायें जिसकी खुशी बे इन्तिहा होगी इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम गुनाहों से तौबा करें और अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के अहकामात पर अमल पैरा हो जायें और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का बताया हुआ रास्ता इख्तियार करें और उनके फ़ैअल और सुन्नतों पर कसरत से अमल करें क्योंकि जब कयामत के हौलनाक मंजर का तसव्वुर इन्सान को ख़ौफ़ ज़दा कर देता है तो ज़रा सोचो हकीकत में जब वो मंजर हमारी आँखों के सामने होगा तो हमारा क्या हाल होगा।

लेकिन ज्यादातर लोगों के दिलों में आखिरत पर ईमान मज़बूत नहीं है इसकी दलील ये है कि दुनियाँ की गर्मी सर्दी और

अपनी ज़िन्दगी की ऐशो इशरत व तमाम राहतों व आराम के लिये हम कई तरह के इन्तज़ामात व कोशिश और तदबीरें करते हैं लेकिन कब्र क़यामत व जहन्नुम की गर्मी और निहायत सख़्ती व अज़ाब और बेशुमार मुसीबतों परेशानी का हम इन्तज़ाम नहीं करते और न कोशिश न तदबीर करते हैं हालाँकि हम आख़िरत का जुबान से इज़हार करते हैं लेकिन हमारे दिल उससे गाफ़िल हैं और यही ग़फलत हमें बहुत बड़े ख़सारे की तरफ़ ले जा रही है जो हमारी हलाकत का सबब बनेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

जब आसमान शक़ हो और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार यही है और जब ज़मीन दराज़ की जाये और जो कुछ उसमें है (उसे बाहर) डाल देगी और ख़ाली हो जायेगी और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार यही है ऐ आदमी बेशक़ तुझे अपने रब की तरफ़ ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना है तो वो जो अपना नामये आमाल दाहिने हाथ में दिया जायेगा उससे अनक़रीब आसान हिसाब लिया जायेगा और (वो) अपने घर वालों की तरफ़ खुशी-खुशी पलटेगा। (सू०—इनशिकाक—1,—15)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

गोया जिस दिन वो (यानी क़यामत) को देखेंगे तो कहेंगे कि हम तो दुनियाँ में रहे एक शाम या दिन चढ़े। (सू०—नाज़िआत—46)

और कुछ लोग यूँ कहेंगे इरशादे खुदावन्दी है—

ऐ मेरे रब हमने देखा और सुना पस तू हमें लौटा दे ताकि हम अच्छे काम करें। (सू०—सजदा—12)

नबी अकरम सल्लल्लहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

क़यामत का दिन मोमिन पर आसान होगा हत्ता कि दुनियाँ में फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी से भी थोड़ा वक़्त मालूम होगा।

(मुस्नद अहमद—3/75)

क़यामत के दिन रब तआला के हुक्म से जहन्नुम को लाया जायेगा और वो मख़लूक की तरफ़ दहाड़ेगी और जोश मारती हुई उन लोगों की तरफ़ आयेगी जिन्होंने दुनियाँ में अल्लाह तआला की

नाफरमानी की होगी और बुरे काम किये होंगे और वो (जहन्नुम) काफिर बदकार जालिम और मुजरिमों की तरफ चिंघाड़ती हुई आयेगी तो उस वक्त हालते मन्ज़र क्या होगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता और लोगों के दिल खौफ से भरे होंगे और कुछ लोग जहन्नुम में जा गिरेंगे।

उस दिन अल्लाह तआला लोगों से सवाल करेगा कि मैंने तुझे जवानी दी तूने उसे कहाँ खर्च किया मैंने तुझे मुहलत दी उस मुहलत में तूने क्या किया मैंने तुझे माल दिया उस माल को तूने कहाँ खर्च किया मैंने तुझे इल्म के ज़रिये इज्ज़त बख्शी तूने उस इल्म का क्या किया क़यामत के दिन इन्सान अपनी जगह से हिल न सकेगा जब तक उससे चार बातों की पूछ न हो जाये— 1—उम्र किस काम में गुज़ारी, 2—अपने इल्म पर कितना अमल किया, 3—माल कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया, 4—और अपने जिस्म को किस काम में लगाया।

दुनियाँ में लोग अपने घर वालों से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते हैं और बाज़ लोग तो ऐसे हैं जो अपने घर वालों की तमाम ख़्वाहिशात को पूरा करने लिये माल कमाने में दिन रात लगे रहते हैं हत्ता कि हराम व हलाल का तमीज़ भी नहीं रखते लेकिन क़यामत के दिन अज़ाब की सख्ती का आलम ये होगा कि अज़ाब में गिरफ़्तार लोग ये आरजू करेंगे कि काश मेरे अज़ाब के बदले मेरी बीवी मेरे बच्चे मेरे भाई मेरे ख़ानदान वालों को अज़ाब दे दिया जाये और मुझे इस अज़ाब से निज़ात (रिहाई) मिल जाये।

और उस दिन अल्लाह तआला अपने नेक सालेह मोमिन बन्दों के गुनाहों की परदापोशी फ़रमायेगा और हर एक शख्स को आमाल नामा दिया जायेगा जिसमें उसके तमाम आमाल दर्ज होंगे जो इन्सान ने दुनियाँ में किये होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है— वो उसे (यानी क़यामत) को दूर समझ रहे हैं और हम उसे नज़दीक देख रहें हैं जिस दिन आसमान होगा गली हुई चाँदी और पहाड़ ऐसे हल्के हो जायेंगे जैसे ऊन और कोई दोस्त किसी दोस्त से बात

न पूछेगा और उन्हें देखकर मुजरिम आरजू करेगा काश इस दिन के अज़ाब के छुटने के बदले में दे दें अपने बेटे और अपनी बीवी और अपना भाई और अपना खानदान जिसमें वो रहता था और जितने ज़मीन में हैं (वो) सब फिर ये बदला देना (क्या) उसे बचा लेगा हरगिज़ नहीं वो तो भड़कती हुई आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है उसको जिसने पीठ दी और मुँह फेरा।
(सू०—मआरिज—6.—17)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
रोज़े क़यामत हर मर्द व औरत के आमालों के गवाही ज़मीन देगी जिसकी पीठ पर इन्सान ने जो आमाल किये होंगे।
(मुस्नद अहमद व तिर्मिज़ी)

सरवरे कौनने सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
(क़यामत के दिन) अल्लाह तआला तुममें से हर एक से इस तरह सवाल करेगा कि दरमियान में कोई पर्दा हाइल न होगा।
(मुस्नद अहमद—4/377)

रोज़े क़यामत मख़लूक को तीन जमाअतों में बाँटा जायेगा एक वो होंगे जिनके पास कोई नेकी न होगी तो जहन्नुम से एक सियाह गर्दन निकलेगी और उन लोगों को उचक ले जायेगी और वो जहन्नुम में चले जायेंगे और दूसरी जमाअत में वो लोग होंगे जिन पर कोई गुनाह न होगा और एक मुनादी आवाज़ देगा जो लोग हर हाल में अल्लाह तआला की रज़ा पर राजी रहे और सब्र व शुक्र पर कायम रहे और गुनाहों से बचते रहे और नेक अमल करते रहे वो लोग खड़े हो जायें और जन्नत की तरफ़ चल पड़ें।

और तीसरी जमाअत में वो लोग होंगे जिनकी नेकियाँ और गुनाह मिले जुले होंगे लेकिन उन्हें मालूम न होगा कि उनके गुनाह ज़्यादा हैं या नेकियाँ ज़्यादा हैं तो उनको ये बात बताने के लिये अल्लाह तआला मीज़ान कायम करेगा हालाँकि अल्लाह तआला से ये बात मख़्फी (छुपी) नहीं क्योंकि वो हर ज़ाहिर व पोशीदा का जानने वाला है और वो तमाम मख़लूक का हाल जानता है और हर शख्स के दिलों के राज्यों से बा ख़बर है जो इन्सान करता है या जो करने वाला है अल्लाह तआला उसे बखूबी जानता है।

लेकिन वो लोगों को उनके गुनाहों और नेकियों के कम या ज़्यादा होने की पहचान करायेगा।

ताकि माफी के वक़्त उसका फज़लो करम और अज़ाब के वक़्त उसका अदल व इन्साफ़ ज़ाहिर हो ताकि कोई ये न कहे कि मेरे साथ इन्साफ़ नहीं हुआ और लोगों की आँखें उस तराजू पर लगी होंगी और दिल काँप रहे होंगे और ये वक़्त निहायत ख़ौफ़ का वक़्त होगा।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

जब हो जायेगी होने वाली उस वक़्त उसके होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को परत करने वाली और किसी को बुलन्दी देने वाली (यानी क़यामत) जब ज़मीन थरथरा कर काँपेगी और पहाड़ रेज़ा—रेज़ा हो जायेंगे जैसे धूप में गुबार के बारीक फेले हुये ज़र्रे और तुम तीन किस्म के हो जाओगे तो दाहिनी तरफ़ वाले कैसे दाहिनी तरफ़ वाले और बाँयी तरफ़ वाले कैसे बाँयी तरफ़ वाले और जो सबक़त ले गये वो तो सबक़त ले गये।

(सू०—बाकिआ—1,—9)

इरशादे बारी तआला है—

और बाँयी तरफ़ वाले कैसे बाँयी तरफ़ वाले जलती हवा और ख़ौलते हुये पानी में जलते धुयें की छाँव में जो न ठन्डी हो न इज़्ज़त की बेशक वो इससे पहले नेअमतों में थे और बड़े गुनाह की हट रखते थे और कहते थे जब हम मरकर हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम ज़रूर उठाये जायेंगे और क्या हमारे बाप दादा भी तुम फ़रमादो सब अगले और सब पिछले ज़रूर इकट्ठा किये जायेंगे एक जाने हुये दिन की मियाद पर तो ज़रूर थोहड़ के पेड़ में से खाओगे फिर उससे पेट भरोगे फिर उस पर खोलता हुआ पानी पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊँट पीते हैं ये उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन।

(सू०—रहमान—39,—57)

एक दिन नबी अकरम सल्लल्लहु अलैह वसल्लम अपना सरे अनवर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका (रज़ि०) की गोद में था कि आप को औन्च आ गई इस दौरान उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका (रज़ि०) को आख़िरत की याद आ गई और आप रो पड़ी

हत्ता कि आपके आँसू बह निकले और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के रुख़सार मुबारक पर जा पड़े आप बेदार हुये तो आपने पूछा ऐ आयशा क्यों रो रही हो आपने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मुझे आख़िरत का ख़्याल आ गया था कि आप क़यामत के दिन अपने घर वालों को याद रखेंगे या नहीं तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की कसम जिसके कब्जे कुदरत में मेरी जान है कि हम ज़रूर याद रखेंगे मगर तीन जगह हर शख्स अपने आप को याद रखेगा जब तराजू पर (आमाल का) वज़न किया जायेगा हत्ता कि आदमी देखेगा कि उसका तराजू हल्का है या भारी और आमाल नामा मिलने के वक्त वो देखेगा कि उसका आमाल नामा दाँये हाथ में आता है या बाँये हाथ में और पुल सिरात के पास। (सुनन अबी दाऊद-2/298)

क़यामत के दिन अल्लाह तआला तमाम मख़लूक में अदल व इन्साफ़ फ़रमायेगा अगर किसी शख्स का किसी दूसरे शख्स पर कोई हक़ बाकी है तो उसकी नेकियाँ उस हक़दार को दे दी जायेंगी और अगर उसके पास नेकियाँ कम हुई तो हक़दार के गुनाह उसे दे दिये जायेंगे इस तरह अल्लाह तआला लोगों के दरमियान इन्साफ़ करेगा ताकि किसी पर किसी का कोई हक़ बाकी न रहे और सबको इन्साफ़ मिल जाये मिसाल के तौर पर दुनियाँ में किसी शख्स का किसी दूसरे शख्स पर कर्ज़ है और उसने वो कर्ज़ अदा नहीं किया तो क़यामत के दिन उस कर्ज़दार को अपनी नेकियाँ उस कर्ज़ के बदले देनी होंगी इसी तरह जैसे किसी ने किसी की अमानत में ख़्यानत की या किसी को गाली दी या किसी तरह की अज़िज़त (तकलीफ़) पहुँचाई, किसी का हक़ मारा या किसी यतीम का माल खाया, किसी की बेईमानी की या किसी का क़त्ल किया या किसी पर जुल्म व ज़्यादती की वगैराह।

तो जिन नेकियों को हासिल करने के लिये हम दुनियाँ में मशक्कत उठाते और अपना माल खर्च करते हैं तो वो नेकियाँ हमसे छीन ली जायेंगी और उन्हें दे दी जायेगी जिनके हुक्क हमारे ज़िम्मे थे और हम नेकियों से खाली हो जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि मरने से पहले अपने गुनाहों से तौबा करें क्योंकि तौबा का मौका वहाँ नहीं मिलेगा और जो फ़राइज़ हमसे छूट गये हैं उन्हें अदा करें और गुनाहों से बचें और कसरत से नेक अमल करें।

और जिनके हुक्क हमारे ज़िम्मे हैं उन्हें अदा करें और उनसे माफी तलब करें और जिन हुक्कों को अदा करना किसी वजह से मुश्किल या नामुमकिन हो तो हमें चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमायें ताकि क़यामत के दिन उन हक़दारों को दे सकें जिनके हुक्क हमारे ज़िम्मे हैं और हम नेकियों से बिल्कुल खाली न हों क्योंकि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने हम कोई उज़र पेश न कर सकेंगे और न हमारी माअज़रत कुबूल की जायेगी और वो दिन इन्तिहाई सख्त होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
आज हर जान को उसके आमाल का (पूरा) बदला दिया जायेगा (और) आज कोई ना इन्साफी न होगी बेशक अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (सू0—मोमिन—17)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
मेरी उम्मत का मुफ़लिस (ग़रीब) वो शख्स है जो क़यामत के दिन रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात (वगैराह) के साथ आयेगा लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी या किसी का माल खाया होगा या किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा होगा पस उस (हक़दार) को उसकी कुछ नेकियाँ दे दी जायेंगी और दूसरों को भी फिर अगर उसकी नेकियाँ ख़त्म हो गईं तो हक़दारों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे। (मुस्नद अहमद—2/390)

जिन गुनाहों का तआल्लुक हुक्कुल्लाह से है जैसे रोज़ा, नमाज़, हज ज़कात वगैराह और अगर हमने इनकी अदायगी में कोताही की या किसी वजह से हम अदा नहीं कर सके लेकिन फिर भी उम्मीद है कि अल्लाह तआला अपने महबूब के सद्के और तुफ़ैल हमें माफ़ फरमायेगा और अपनी बरिश्शाश की रब तआला से उम्मीद की जा सकती है लेकिन जिसके ज़िम्मे लोगों के हुक्क हैं और अगर हमने उनकी अदायगी नहीं की या उन हक़दारों से हमने माफी नहीं माँगी या उन हक़दारों ने हमें माफ़ न किया तो वो तब तक माफ़ न होंगे जब तक वो हक़दार हमें माफ़ न कर दें जिनके हुक्क हमारे ज़िम्मे हैं लेकिन अल्लाह तआला अपने मख़सूस और मुकर्रब बन्दों के

गुनाहों को माफ़ कराने के लिये उसके हकदारों को किसी न किसी तरह राजी करेगा और उनके हकदारों से उन्हें माफी दिलवायेगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत करें ताकि हम भी अल्लाह तआला के मख़सूस और मुकर्रब बन्दे बन जायें और अपनी इबादत और नेक अमल अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिये इख़लास के साथ करें न कि लोगों को दिखाने के लिये करें।

ख़ालिस अमल जो सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की नीयत से किया जाता है जिसमें बिल्कुल दिखावा न हो वही अमल अल्लाह तआला की बारगाह में कुबूल होता है और जो लोग अपने तमाम नेक अमल सिर्फ़ रब तआला के लिये करते हैं वही लोग अल्लाह तआला के मख़सूस और मुकर्रब बन्दे होते हैं और कुछ गुनाह ऐसे भी होते हैं जिन्हें हम छोटा समझते हैं लेकिन असल में वो अल्लाह तआला के नज़दीक बड़े गुनाह होते हैं इसलिये हमें चाहिये कि हम छोटे-छोटे गुनाहों से भी बचें और उनसे परहेज़ करें कि ना मालूम किस गुनाह पर हमारी पकड़ हो जाये और हम अज़ाब में मुब्तिला कर दिये जायें।

हज़रत अनस (रज़ि०) से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप एक दिन तशरीफ़ फ़रमां थे तो हमने देखा कि आप हंस रहे हैं हत्ता कि आपके दाँत मुबारक नज़र आने लगे हज़रत उमर फ़ारुक (रज़ि०) ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों हंसने की वजह क्या है आपने फ़रमाया मेरी उम्मत के दो आदमी अल्लाह तआला के सामने दो ज़ानू हुये उनमें से एक ने कहा ऐ मेरे रब मेरे इस साथी से मेरा हक़ दिलादे अल्लाह तआला ने फ़रमाया अपने भाई का हक़ अदा करो उसने कहा ऐ मेरे रब मेरी नेकियों में से तो कुछ भी न बचा अल्लाह तआला ने तलब करने वाले से फ़रमाया इसके पास तो कोई नेकी बची ही नहीं तो उसने कहा ये शख्स मेरे गुनाह ले ले फिर अल्लाह तआला ने तलब करने वाले से फ़रमाया अपना सर उठाओ और जन्नत में देखो जब उसने जन्नत की तरफ़ देखा और कहा मुझे सोने और चाँदी के बुलन्द महल दिखाई दे रहे हैं जिनमें मोती जड़े हुये नज़र आते हैं और ये किस नबी या सिद्दीक़ या

शोहदा के लिये हैं अल्लाह तआला ने फरमाया जो इसकी कीमत अदा करे उसने अर्ज किया ऐ मेरे रब इसकी कीमत कौन अदा कर सकता है अल्लाह तआला ने फरमाया तू दे सकता है उसने अर्ज किया इसकी कीमत क्या है अल्लाह तआला ने फरमाया तू अपने इस भाई को माफ़ कर दे उसने कहा ऐ मेरे रब मैंने इसको माफ़ कर दिया फिर अल्लाह तआला ने फरमाया अपने इस भाई का हाथ पकड़कर जन्नत में चले जाओ इसके बाद हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया ऐ लोगो अल्लाह से डरो और आपस में सुलह रखो बेशक अल्लाह तआला मोमिनो के दरमियान सुलह कराता है। (मुस्तदरक हाकिम-4/576)

इन होलनाक और दिल दहलाने वाले मन्ज़र के बाद लोगों को पुलसिरात की तरफ़ ले जाया जायेगा और वो जहन्नुम के ऊपर एक पुल है जो तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक है तो जब हम उस तेज़ी और बारीकी को देखेंगे जिस पर हमें गुज़रना होगा तो हमारे दिल कितने ख़ौफ़ ज़दा होंगे और इस पुल के नीचे जहन्नुम होगी जिसमें शोले मारती हुई आग होगी और लोग उसमें फिसल फिसल कर गिर रहे होंगे तो वो मन्ज़र कितना ख़ौफ़नाक होगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— पुल सिरात तलवार से ज़्यादा तेज़ होगी मोमिन मर्द और मोमिन औरतों को फरिश्ते इससे बचा लेंगे और उस दिन फिसलने वालों की तादाद ज़्यादा होगी। (शुअबुल ईमान-1/331)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—कि लोग जहन्नुम के पुल के ऊपर से गुज़रेंगे जिसके दाँये बाँये काँटेदार मुड़े हुये सिरे वाले लोहे होंगे पस कुछ लोग बिजली की चमक की तरह गुज़रेंगे कुछ हवा की तरह कुछ दौड़ने वाले घोड़े की तरह कुछ आम चाल से कुछ घुटनों के बल कुछ सुरीन के बल और कुछ घसिटते हुये पुल के ऊपर से गुज़रेंगे फिर शफ़ाअत की इजाज़त दी जायेगी (मुस्नद अहमद-3/26)

कयामत के दिन अल्लाह तआला अम्बियाकिराम (अलैहिमुस्सलाम)

के अलावा सिद्दीकीन, शुहदा, उल्मा और अल्लाह तआला के यहाँ जिसे मकाम हासिल है उनकी शफ़ाअत कुबूल फ़रमायेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

उस दिन किसी की शफ़ाअत काम न देगी मगर उसकी खुदाये रहमान ने जिसे इज़्ज़ (व इजाज़त) दे दी है और जिसकी बात से वो राज़ी हो गया है। (सू०—ताहा—109)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जब क़यामत का दिन होगा तो मैं तमाम नबियों का इमाम व ख़तीब और उनके लिये शफ़ाअत का दरवाज़ा खोलने वाला होऊँगा।
(मुस्नद अहमद—5/137)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक मैं क़यामत के दिन ज़मीन पर पड़े हुये पत्थरों और ढेलों की तादाद से ज़्यादा लोगों की शफ़ाअत करूँगा (मजमउज्जवाइद—10/380)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मैं औलादे आदम (अलैहस्सलाम) का सरदार हूँ लेकिन मुझे इस पर फख़्र नहीं मैं वो हूँ जिसके लिये सबसे पहले क़ब्र खुलेगी मैं सबसे पहले शफ़ाअत करूँगा और सबसे पहले मेरी शफ़ाअत कुबूल होगी और मेरे ही हाथ में हम्द का झंडा होगा जिसके नीचे आदम (अलैहस्सलाम) और सब लोग होंगे। (मुस्नद अहमद—3/2)

क़यामत के दिन जब लोग इतिहाई सख़्तियों और तकलीफ़ों से गुज़र रहे होंगे फिर वो एक दूसरे से कहेंगे कि तुम्हारी क्या हालत हो गयी है क्या तुम किसी ऐसे शख्स को तलाश नहीं करते जो रब तआला के यहाँ तुम्हारी सिफ़ारिश करे फिर वो एक दूसरे से कहेंगे कि हज़रत आदम अलैहस्सलाम के पास जाओ चुनौचा फिर वो हज़रत आदम अलैहस्सलाम के पास जायेंगे और कहेंगे क्या आप नहीं देखते कि हमारी क्या हालत हो गयी है और हम कितनी मुसीबतों परेशानी से गुज़र रहे हैं आप रब तआला से हमारी सिफ़ारिश फ़रमायें फिर हज़रत आदम (अलैह०) फ़रमायेंगे आज मेरा रब बहुत ग़ज़बनाक है जो इससे पहले कभी न हुआ और न कभी इतने ग़ज़ब में होगा तुम मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ

फिर वो हज़रत नूह अलैहस्सलाम के पास जायेंगे फिर वो हज़रत इब्राहीम अलैहस्सलाम के पास जायेंगे फिर वो हज़रत मूसा अलैहस्सलाम के पास जायेंगे लेकिन सबके पास यही जवाब मिलेगा मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ मेरा रब आज बहुत ग़ज़बनाक है जो इससे पहले न कभी हुआ और न कभी होगा फिर वो ईसा अलैहस्सलाम के पास जायेंगे और उनसे भी यही जवाब पायेंगे कि मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ मेरा रब आज बहुत ग़ज़ब में है फिर ईसा अलैहस्सलाम फ़रमायेंगे कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के पास चले जाओ।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया फिर लोग मेरे पास आयेंगे और अर्ज़ करेंगे ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम आप अल्लाह तआला के रसूल और आख़िरी नबी हैं हमारी शफ़ाअत फ़रमायें आप नहीं देखते कि हमारी क्या हालत हो गयी है और हम किस मुसीबतों परेशानी में हैं फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—पस मैं अर्श के नीचे आऊँगा और अपने रब के हुज़ूर सजदा रेज़ हो जाऊँगा।

फिर कहा जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) अपना सर मुबारक उठायेँ और माँगे आपको अता किया जायेगा नीज़ शफ़ाअत फ़रमायें कुबूल की जायेगी चुनाँचा मैं अपना सर उठाऊँगा और कहूँगा या अल्लाह मेरी उम्मत को बख़्श दे पस कहा जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं उन्हें जन्नत के दरवाज़े से दाख़िल कर दें। (सही मुस्लिम—1/111)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—हर नबी के लिये एक मक़बूल दुआ होती है और मैंने उस दुआ को कयामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये छुपाकर रख दिया है। (सही मुस्लिम—1/83)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—कयामत के दिन अम्बियाकिराम (अलैह०) के लिये सोने के मुनब्वर होंगे पस वो उन पर बैठेंगे

और मेरा मुनब्बर बाकी रह जायेगा मैं उस पर नहीं बैठूँगा बल्कि मैं अपने रब के सामने खड़ा रहूँगा मुझे ये खौफ़ लाहक़ होगा कहीं मैं जन्नत में न चला जाऊँ और मेरी उम्मत पीछे न रह जाये मैं कहूँगा या अल्लाह मेरी उम्मत मेरी उम्मत अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) आप क्या चाहते हैं मैं आपकी उम्मत से क्या सुलूक करूँ मैं कहूँगा ऐ मेरे रब इनका हिसाब जल्द कर दें पस मैं शफ़ाअत करूँगा। (मजमउज्जवाइद-10/380)

हम मुसलमानों को कयामत के दिन अल्लाह तआला की रहमत शफ़क़त और बरिश्शाश सिर्फ़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल और उनकी शफ़ाअत के बाइस मिलेगी क्योंकि हमारे पास इतने नेक आमाल नहीं जो हमें जन्नत में ले जाने के लिये काफी हों कयामत दिन अगर हमारा कोई सहारा होगा तो वो सिर्फ़ प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का सहारा होगा जो हमें जहन्नुम से बचाकर जन्नत में ले जायेंगे बहुत लोग ऐसे होंगे जिन्हें जहन्नुम के हवाले कर दिया गया होगा और वो जहन्नुम के सख़्त अज़ाब में मुब्तिला होंगे।

लेकिन हमारे आका हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की शफ़ाअत के सबब वो जहन्नुम से निकाल लिये जायेंगे अल्लाह तआला फ़रमायेगा जिसके अन्दर एक राई के दाने के बराबर भी ईमान है उसे जहन्नुम से निकाल लो तो ये उन मुसलमानों के लिये कितनी बड़ी खुशी होगी जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

हमारा मुसलमान होना अल्लाह तआला की सबसे बड़ी रहमत और नेअमत है जो हमें सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल में हमें अता हुई है और हमारा मुसलमान होना हमारे लिये बड़े फ़ख़ की बात है लेकिन हमें भी चाहिये कि जिनकी शफ़ाअत का हम दम भरते हैं हम उनकी हर बात मानें और उनके बताये हुये रास्तों पर चलें ताकि कयामत के दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की हमें कुरबत हासिल हो और उनके नज़दीक जाने में हमें शर्मिन्दगी न हो इसलिये हमें चाहिये कि उनकी सुन्नतों पर अमल करें और कसरत से दुरुदो सलाम के नज़राने पेश करें और अल्लाह की इबादत और नेक अमल के ज़रिये सरवरे कायनात

सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के दिल को खुशी पहुँचायें ताकि उम्मती होने का हक अदा हो और हम फख्र से कह सकें कि हम अल्लाह तआला के नेक बन्दे हैं और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के उम्मती हैं और आखिरत के अज़ाब से बे फ़िक्र और महफूज़ हो जायें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला के यहाँ सौ रहमतें हैं जिनमें से एक रहमत उसने ज़िन्नों, इन्सानों, परिन्दों, जानवरों और कीड़े मकोड़ों के दरमियान रखी है उसी के ज़रिये वो एक दूसरे पर रहम व मेहरबानी करते हैं और निन्नियानवे (99) रहमतों को रोक रखा है उनके ज़रिये क़यामत के दिन वो अपने बन्दों पर रहम फ़रमायेगा।

(सही मुस्लिम-2/356)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़रमायेगा जिस शख्स ने मुझे एक दिन या एक मक़ाम पर भी याद किया या डरा उसे जहन्नुम से निकाल दो। (अत्तरगीब वत्तरहीब-4/261)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क़यामत के दिन हर मोमिन को किसी दूसरे दीन का एक शख्स दिया जायेगा और मोमिन से कहा जायेगा कि ये तेरे बदले दोज़ख़ में जायेगा। (सही मुस्लिम-2/360)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

अल्लाह तआला क़यामत के दिन मुसलमान की जगह किसी यहूदी या ईसाई को जहन्नुम में दाख़िल करेगा। (सही मुस्लिम-2/360)

—: सच और हक :—

झूठ बोलना गुनाह कबीरा और जहन्नुम में ले जाने वाला अमल है और सच व हक बात कहना अल्लाह तआला के नज़दीक पसंदीदा अमल है और अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और हमेशा सच व हक बात कहने वाले शख्स के दरजात को अल्लाह तआला बुलन्द फ़रमाता है हदीस पाक में है अगर कोई शख्स किसी हाकिम या बादशाह के सामने हो और उसे मालूम हो कि अगर मैंने इसके सामने सच या हक बात कही तो ये हमें क़त्ल कर देगा तो उसे चाहिये कि सच व हक बात कहे अगरचा क़त्ल कर दिया जाये तो उसे शहादत का दर्जा मिलेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

ऐ ईमान वालो इंसाफ़ पर ख़ूब कायम हो जाओ (और) अल्लाह तआला के लिये गवाही देने वाले हो अगरचा इसमें तुम्हारा अपना नुक़सान हो या माँ बाप का या रिश्तेदारों का और जिस पर गवाही दो (चाहे) ग़नी हो या फ़कीर। (सू०—निसा—135)

इरशादे बारी तआला है—

और जब तुम लोगों में फैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फैसला करो (सू०—निसा—58)

इरशादे खुदावन्दी है—

बेशक अल्लाह तआला इंसाफ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है (सू०—मायदा—42)

मज़कूरा बाला आयात से वाज़ेह हुआ कि इन्सान को हमेशा सच और हक़ पर कायम रहना चाहिये चाहे उसका किसी भी तरह का नुक़सान हो क्योंकि थोड़ा सा दुन्यावी नुक़सान उसे सच और हक़ के बाइस मिलने वाले अज़ीम सवाब से महरुम कर देता है और इसके साथ—साथ सच व हक़ बात न कहने वाला गुनाहगार हो जाता है और आख़िरत में अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है और जो शख्स सच व हक़ बात नहीं कहता और झूठ बोलता है और ना इंसाफी करता है तो वो कुछ वक़्त के लिये थोड़ा सा नफ़ा उठाता है और इस गुनाह के बाइस मिलने वाले अज़ाब को भूल जाता है।

जो निहायत सख्त होगा और क़यामत के दिन वो ज़लील व रूसवा और शर्मसार होगा।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जब बात कहो इंसाफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिश्तेदार का मामला हो (सू०—अनआम—160)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपने आप को झूठ से बचाओ कि झूठ बोलने वाला बदकार के साथ है और वो दोनों दोज़ख़ में होंगे। (मुस्नद अहमद—1—7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
झूठ रिज़क़ को घटाता है। (अत्तरगीब वत्तरहीब—3/596)

अल्लाह तआला सच व हक़ बात कहने वालों को महबूब रखता है और सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम भी उस शख्स से मुहब्बत करते हैं जो सच और हक़ बात कहता है और नाहक़ और झूठ बोलने वाला शख्स अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब बनता है और जब बन्दा झूठ बोलता है तो रहमत के फ़रिश्ते उससे दूर चले जाते हैं और वो फ़रिश्ते उससे नफ़रत करते हैं और उसके नामये आमाल में गुनाह लिख देते हैं।

हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं और अल्लाह व रसूल पर हमारा ईमान है तो हमें चाहिये कि उनकी फ़रमाबरदारी करें और हमेशा हक़ और सच पर कायम रहें चाहे दुनियाँ में हमें कितनी भी बड़ी परेशानी का सामना करना पड़े और जब तक कोई शरई उज़्र न हो तब तक झूठ न बोलें जैसे दो मुसलमान भाइयों की जुदाई या बाहमी झगड़ा हो और उसे ख़त्म कराने के लिये झूठ बोलना जाइज़ है इसी तरह अगर झूठ से कौम या मज़हब का कोई शरई फायदा हो या जिहाद के मौक़े पर झूठ बोलना जाइज़ है लेकिन अगर शरई उज़्र न हो तो झूठ बोलना बहुत बड़ा गुनाह है और जो लोग सच व हक़ पर कायम रहते हैं तो अल्लाह तआला उनकी इज़्ज़त को बढ़ाता है और उनके इस फ़ैअल के बाइस बेशुमार इनामात अता फ़रमाता है और आख़िरत में इस अमल के सबब बेहतर अज़र अता

फरमायेगा सच व हक बात कहना अफ़ज़ल जिहाद है और नाहक व झूठ बात का कहना अल्लाह व रसूल और कुरान पर कामिल ईमान न होने की दलील है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
झूठ तो सिर्फ़ वो लोग बोलते हैं जो अल्लाह तआला की आयात पर ईमान नहीं रखते। (सू0—नहल—105)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
बेशक जब बन्दा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है क्योंकि झूठ से बू फैलती है। (जामअ तिमिज़ी—291)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सबसे अच्छा जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने हक बात कहना है
(सुनन इब्ने माजा—199)

—: हलाल व हराम और तिजारत :—

हलाल माल को अल्लाह तआला पसन्द फरमाता है और हराम माल अल्लाह के ग़ज़ब को बढ़ाता है और हराम माल वो आफ़त है जो दुनियाँ व आख़िरत के लिये वबाले जान है और ये शैतान का जाल है जिसमें वो इन्सान को आसानी से फंसा लेता है और हराम माल कमाने की तरफ़ उसे राग़िब करता है और इन्सान समझता है कि हराम माल कमाकर उसने फ़ायदे का सौदा किया है और वो इस पर खुश होता है लेकिन असल में उसने बहुत बड़े ख़सारे का सौदा किया है जो दुनियाँ व आख़िरत में उसके लिये बहुत बड़े नुकसान और सख़्त अज़ाब का सबब होगा क्योंकि हराम माल की बुनियाद झूठ, फ़रेब, धोका और बेईमानी पर होती है जो गुनाह है या फिर वो किसी की अमानत में ख़यानत करता या किसी का हक़ मारता तो क़यामत के दिन उसे इसका हिसाब देना होगा और अपनी नेकियों को उस माल के बदले उस हक़दार को देनी होगी और माल के बदले नेकियाँ देना कितनी बड़ी हिमाक़्त है और अपनी नेकियों को ज़ाया (बर्बाद) करना खुद के नुकसान और हलाक़्त का सबब है और नेकियाँ कमाना मुश्किल काम है क्योंकि शैतान हमें नेक काम करने से रोकता है और बुरे काम की तरफ़ राग़िब करता है और हमारा नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात हराम माल के ज़रिये हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो आदमी हराम माल कमाता है और अगर उसमें से सद्का करे तो अल्लाह तआला कुबूल नहीं करता और अगर वो हराम माल छोड़कर मर जाये तो वो माल जहन्नुम का सामान बनता है। (बैहकी-4/84)

इसलिये हमें चाहिये कि वक़्त और असबाब कैसे भी हों चाहे हमारे मुवाफ़िक़ हों या हमारे ख़िलाफ़ हों हमें हमेशा हराम माल से बचना चाहिये और सिर्फ़ हलाल माल हासिल करना चाहिये यही हमारे लिये बेहतर है और अक़लमन्द शख्स वही है जो हलाल माल कमाये और अपनी दुनियाँ और आख़िरत के लिये फ़ायदे का सौदा करे और बेवकूफ़ शख्स वो है जो हराम माल कमाये और अपनी दुनियाँ और आख़िरत ख़राब कर ले और नुकसान उठाये और घाटे का सौदा करे

और हलाल रोजी कमाने के साथ साथ हमें चाहिये कि हम शरीअत के तमाम अहकामात और फ़राइज़ को भी न भूलें और उन पर अमल पैरा रहें और अपनी तिजारत के दरमियान नमाज़, रोज़ा वगैराह दीगर इबादात और नेक अमल का एहतमाम करते रहें और तिजारत और दुन्यावी कामों की मसरुफ़ियत में भी हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआला की याद से गाफ़िल न हों और हर हाल में हर वक़्त अल्लाह तआला की याद और उसका ख़ौफ़ अपने दिलों में रखें और नेक अमल करते रहें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

कुछ लोग वो हैं जिन्हें उनकी तिजारत (ख़रीद फ़रोख़्त) और सौदा गिरी अल्लाह तआला के ज़िक्र नमाज़ और ज़कात की अदायगी से नहीं रोकती वो डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जायेंगे दिल और आँखें। (सू०—नूर—37)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स दुनियाँ में रिज़्क हासिल करने में मुब्तिला हुआ लेकिन इस अमल ने उसे आख़िरत के अमल से न रोका तो क़यामत के दिन उस शख्स को हिसाब ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और न वो किसी परेशानी में मुब्तिला होगा। (कंज़ुल उम्माल—5/832)

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिये कि हर जानदार ज़मीन पर चलने वाले का रिज़्क अल्लाह तआला के ज़िम्मे करम पर है और इन्सान का जितना रिज़्क उसके मुक़द्दर में होता है वो हर हाल में उस तक पहुँचता है और किसी इन्सान का रिज़्क कोई दूसरा हरगिज़ नहीं खा सकता इसलिये इन्सान को चाहिये कि अपने रिज़्क के लिये कोशिश व तदबीर और अपनी किस्मत पर हमेशा कायम रहे तो जब अल्लाह तआला हर जानदार को रिज़्क अता करता है तो फिर हम क्यों हराम माल कमायें और गुनाहगार बनें और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का बाइस बनें।

इन्सान चाहे जितना हराम माल जमा करे बिल आख़िर उसे छोड़कर जाना है क्योंकि कफ़न में जेब नहीं होती और उसका छोड़ा हुआ माल उसकी मौत के बाद उसके लिये बे मतलब और बे मायनी

हो जाता है और वो माल उसके वारिसों का खज़ाना होता है तो वो शख्स कितना बड़ा अहमक है जो हराम माल कमाये और अपने वारिसों के लिये छोड़ जाये ताकि वो लोग उस माल पर ऐश करें और खुद उस हराम माल के बाइस कब्र में अज़ाब भुगतें और क़यामत के दिन उस माल का अल्लाह तआला के सामने हिसाब दे और उस दिन तमाम मख़लूक के सामने शर्मिन्दगी और ज़लालत उठाये और जहन्नुम का ईधन बने।

इसलिये हमें चाहिये कि सच व हक़ और ईमानदारी से माल कमायें और झूठ, धोका, फ़रेब और बेईमानी जो कि शैतान की सिफ़्त और उसका जाल है उससे खुद को बचायें और सिर्फ़ ईमानदारी से हलाल रिज़क कमायें ताकि अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी हासिल हो और हमारी नेक व जाइज़ तमन्नायें और दुआयें बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हों और हमारी दुनियाँ और आख़िरत बेहतर और बाख़ैर हो और अल्लाह तआला के ग़ज़ब से हम महफूज़ रहें और हमारा ख़ात्मा बा ईमान हो।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सच्चा ताजिर (ब्यापारी या दुकानदार) क़यामत के दिन सालिहीन (नेक लोग) व शुहदा के साथ उठाया जायेगा। (जामअ तिमिज़ी-195)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो आदमी हलाल रिज़क की तलब से थक कर शाम करे तो वो रात यूँ गुज़ारता है कि उसकी बख़्शिश हो जाती है और वो सुबह यूँ करता है कि अल्लाह तआला उससे राज़ी होता है।
(मजमउज्जवाइद-4/63)

हज़रत सईद रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप बारगाहे खुदावन्दी में दुआ कर दें कि अल्लाह तआला मेरी हर दुआ को कुबूल कर लिया करे तो आपने इरशाद फ़रमाया—हलाल रोज़ी खाओ तुम्हारी हर दुआ कुबूल होगी। (मजमउज्जवाइद-10/295)

बाज़ लोग अपनी तिजारत में हलाल हराम का इम्तियाज़ (फ़र्क) नहीं

रखते और वो इसलिये माल कमाते हैं ताकि वो लोगों पर सबक़त ले जायें और वो ज़्यादा माल कमाने में लगे रहते हैं और अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं करते और माल कमाने की मशगूलियत के सबब उनके पास रोज़ा, नमाज़ हज वगैराह के लिये उनके पास वक़्त नहीं रहता और माल को बढ़ाने और जमा करने के बाइस वो ज़कात की अदायगी नहीं करते बस यूँ ही थोड़ा बहुत लोगों को दिखाने के लिये ग़रीब मिस्कीन को देते हैं ताकि लोग जानें कि फ़लाँ शख्स ज़कात ख़ैरात करता है और वो अल्लाह तआला की याद से गाफ़िल रहते हैं और रात दिन माल कमाने में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर देते हैं।

हालाँकि हर शख्स जानता है कि वो चाहे सोने और चाँदी के पहाड़ जमा करले या चाहे जितने माल के ख़ज़ाने उसके पास हों बिल आख़िर सब छोड़कर जाना है और माल व सोने और चाँदी से कोई अपनी भूक या प्यास नहीं मिटा सकता बल्कि हर शख्स वही खाता है जो रब तआला ज़मीन से पैदा करता है और हर चीज़ अल्लाह तआला की मिल्कियत है हम सिर्फ़ उसका इस्तेमाल करते और दुनियाँ से कूच कर जाते हैं और जो माल इन्सान दुनियाँ में छोड़ जाता है उस माल से वो नफ़ा नहीं उठा सकता और न ही वो उस छोड़े हुये माल का मालिक होता है लेकिन जो माल वो अल्लाह की राह में खर्च कर देता है वो माल क़यामत तक उसका साथी और मददगार होता है और उस माल से वो नफ़ा उठाता है और उस माल से वो अल्लाह तआला से बेहतर जज़ा पाता है।

सरवरे कौनेने सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स इसलिये माल कमाता है कि अपने माँ बाप और औलाद को बेनियाज़ करे और खुद भी बेनियाज़ रहे और माँगने से बचे तो वो अल्लाह तआला के रास्ते पर है और जो दूसरों पर तकब्बुर करने और माल बढ़ाने की गरज़ से माल कमाता है तो वो शैतान के रास्ते पर है। (मुअजम कबीर तिबरानी—19/139)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो आदमी दस दिरहम के बदले एक कपड़ा ख़रीदे और उसमें एक दिरहम हराम का हो तो जब तक उस पर वो कपड़ा रहेगा तब तक अल्लाह तआला उसकी नमाज़ कुबूल नहीं करता।

(मुस्नद अहमद—2/98)

बाज़ार लोग जब रात को सोते हैं तो उन्हें ये फ़िक्र नहीं रहती कि सुबह उठकर वक़्त फ़ज्र नमाज़ अदा करनी है मस्जिद जाना है कुरान पाक की तिलावत करनी है और अल्लाह तआला का ज़िक्र करना है जो हमें रोज़ी देता है खिलाता है पिलाता है पहनाता है और जिसने हमें दुनियाँ में नेअमतेँ अता कीं और वही आख़िरत में जन्नत अता करेगा बल्कि उन्हें माल और तिजारात की फ़िक्र रहती है कि सुबह उठकर जल्दी बाज़ार पहुँचेंगे ताकि ज़्यादा माल कमायें ताकि लोगों में हम मुअज़्ज़ज़ हो जायें और वो ज़्यादा माल कमाने के सबब हलाल व हराम का तमीज़ नहीं रखते और दुनियाँ को तरजीह देते और आख़िरत को भूल जाते हैं और खुद का दुनियाँ में आने का मक़सद सिर्फ़ माल कमाना और उस माल से ऐशो आराम करना ख़्याल करते हैं और इसी में मुब्तिला रहते हैं और दिनो रात हराम माल कमाने के साथ-साथ अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करते हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— ज़मीन पर सबसे अच्छी जगह मस्जिद और सबसे बुरी जगह बाज़ार है और बाज़ार वालों में सबसे बुरे लोग वो हैं जो सबसे पहले बाज़ार जाते हैं और सबसे आख़िर में वापस आते हैं। (मिशकात-71)

इसलिये हमें चाहिये कि हम सुबहो शाम अपनी तिजारात से मुताअल्लिक मुहासिबा (हिसाबो किताब) करें और देखें कि हमसे आज क्या-क्या गुनाह हुये क्या-क्या ग़लतियाँ हुई हैं और जो माल हमने कमाया उसमें हराम माल है या नहीं और अपनी तिजारात के दरमियान जो भी हमसे गुनाह या ग़लतियाँ या बुराइयाँ हमसे हुई हों उन्हें दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करें।

सिर्फ़ हलाल माल कमायें और अल्लाह तआला से दुआ करते रहें कि तिजारात के दरमियान हाइल होने वाले गुनाहों और हराम माल कमाने से अल्लाह तआला हमें बचाये और शैतान के शर से महफूज़ रखे ताकि हमारे माल में बरकत हो और हमें चाहिये कि अपने माल को बेचते वक़्त झूठ न बोलें अगर माल में कोई ऐब हो तो ख़रीददार को बता दें और बेईमानी, धोका, फ़रेब और झूठ से कोई सौदा न बेंचे बल्कि अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक तिजारात करें।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
झूठी कसम से सौदा तो बिक जाता है लेकिन ये बरकत को मिटा
देती है। (सही बुख़ारी—1/280)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
किसी सौदा बेचने वाले को ये हलाल नहीं कि उसके ऐब को
जाहिर न करे। (अत्तरगीब वत्तरहीब—2/574)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
लालच से बचो इसने तुमसे पहले बहुत लोगों को हलाक किया है।
(मुस्नद अहमद—2/191)

इमाम गज़ाली (रह0) फरमाते हैं कि हराम गिज़ा
खाने वाला शख्स नेक काम करने से महरूम रहता है और अगर
इत्तफ़ाक़न कोई कारे ख़ैर (नेकी का काम) उससे हो जाये तो वो
अल्लाह तआला के नज़दीक मक़बूल व मन्ज़ूर नहीं होता बल्कि
रद्द कर दिया जाता है तो ऐसा शख्स नेक काम के करने में जो
वक्त और कुव्वत सर्फ़ करता है तो उसे बे फायदा मशक्कत व
मेहनत और वक्त जाया करने के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) रिवायत है अल्लाह तआला ऐसे शख्स
की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसके शिकम में गिज़ाये हराम पड़ी
हो।

—: ख़शीयते इलाही :— (ख़ौफ़े खुदा)

अल्लाह तआला तमाम ज़मीनों और आसमानों का ख़ालिक व मालिक है और कायनात की तख़लीक करने वाला और उसके निज़ाम को चलाने वाला और तमाम मख़लूक को रिज़क अता करने वाला परवरदिगार है जन्नत और दोज़ख़ बनाने वाला जज़ा और सज़ा देने वाला हाकिमुल हाकिमीन है और कायनात में कोई ऐसा ज़र्' नहीं जो उसकी तसबीह बयान न करता हो और उसके सिवा हर चीज़ फ़ानी है तो जब हर चीज़ का मालिक रब्बुल आलमीन है तो हमें चाहिये कि हम उसकी इबादत करें और उसी का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखें और उसकी नाराज़गी और उसके अज़ाब से डरें जिससे कोई बचाने वाला नहीं सिवाय खुद अल्लाह तआला के और अल्लाह तआला का अज़ाब बड़ा सख़्त है जिसका लाखवाँ हिस्सा भी कोई बर्दास्त नहीं कर सकता अगर एक लम्हे के लिये क़ब्र, क़यामत या जहन्नुम के अज़ाब की एक झलक इन्सानों को दिखा दी जाये तो दुनियाँ में इन्सान का जीना दुश्वार हो जाये और वो गुनाह के नाम से भी काँप उठे और हम उस मालिके कायनात के बन्दे हैं इसलिये हमें चाहिये कि उसकी बन्दगी करें और उसके बन्दे होने का सबूत पेश करें और अपने रब के तमाम अहकामात पर अमल पैरा हो जायें और कसरत से नेक अमल करें और ख़ौफ़े दुनियाँ को दिलों में जगह न दें बल्कि सिर्फ़ अपने रब से डरें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और तुम मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (सू०—आले इमरान—175)

इरशादे बारी तआला है—

तुम फ़रमादो कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से और कौन मालिक है तुम्हारे कान और आँखों का और कौन निकालता है ज़िन्दे को मुर्दे से और मुर्दे को ज़िन्दे से और कौन तमाम तदबीरें करता है तो कहेंगे अल्लाह तआला तो तुम फ़रमादो क्यों नहीं डरते (सू०—जुमर—73)

ख़ौफ़े खुदा हमें गुनाह करने से रोकता है और नेक अमल की तरफ़ राग़िब करता है और जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके दिल

अल्लाह के ख़ौफ़ के बाइस लरज़ते हैं और उनकी आँखें अल्लाह की मुहब्बत और ख़ौफ़ के सबब रोती हैं वो जन्नत वाले हैं और अल्लाह तआला ने उन पर दोज़ख़ को हराम कर दिया है और अल्लाह तआला उनकी तमाम ख़ताओं को अपने रहमों करम से माफ़ कर देता है और उन्हें अपना दोस्त रखता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं और डर वालों का दोस्त अल्लाह है। (सू०—जासिया—19)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शरूख़ अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से रोता है वो हरगिज़ जहन्नुम में दाख़िल न होगा। (अत्तरगीब वत्तरहीब—2/271)

जो लोग अल्लाह तआला की रज़ा और उसके ख़ौफ़ के सबब दुनियाँ और लोगों से बे परवाह रहते हैं वही लोग दुनियाँ और आख़िरत में कामयाब होते हैं चाहे लोग उनके मुताअल्लिक कुछ भी कहें या उनके बारे में कैसा भी गुमान रखें लेकिन उन्हें तो बस हर वक़्त हर हाल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रहता है और डरते हैं उस दिन से (यानी क़यामत से) कि जब अल्लाह तआला के हुज़ूर खड़ा होना होगा और अपने तमाम आमाल का हिसाब देना होगा जिस दिन कोई किसी के काम न आयेगा सिवाय उसके नेक आमाल के और वो डरते हैं उस जहन्नुम से जिसका ईधन इन्सान और पत्थर हैं और इस ख़ौफ़ के बाइस वो गुनाहों से बचते हैं और नेक अमल करते हैं और उन्हें उनके नेक आमाल के बदले अल्लाह तआला तमाम अज़ाबों से महफूज़ रखेगा और उन्हें जन्नत अता करेगा जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत है।
(सू०—नाज़िआत—40)

और जो लोग अल्लाह से नहीं डरते और जिनके दिल से अल्लाह तआला का ख़ौफ़ निकल जाता है तो उनके दिल से आख़िरत का

भी ख़ौफ़ निकल जाता है और वो गुनाहों की तरफ़ माइल हो जाते हैं और उसी में मुब्तिला रहते हैं और वो दुनियाँ और जो कुछ उसमें मौजूद है उसी को सब कुछ समझते हैं और वो अल्लाह व रसूल का रास्ता छोड़कर शैतान के रास्ते पर चल पड़ते हैं और उनका हर अमल दुनियाँ और दुनियाँ के लोगों के लिये होता है और वो अपनी आख़िरत से बे ख़बर हो जाते हैं और खुद को बहुत बड़ी मुसीबत और हलाकत में डालते हैं और जो शरख़्स अल्लाह तआला से नहीं डरता तो उसे दुनियाँ की हर चीज़ ख़ौफ़ ज़दा करती है और जिसका हर अमल सिर्फ़ रज़ाये इलाही और दिल में ख़ौफ़े खुदा होता है तो दुनियाँ की हर चीज़ उससे डरती है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शरख़्स अल्लाह तआला से डरता है तो उससे हर चीज़ डरती है और जो ग़ैरुल्लाह से डरे उसे हर चीज़ ख़ौफ़ ज़दा करती है। (शुअबुल ईमान—1/483)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

जो शरख़्स लोगों की नाराज़गी में अल्लाह तआला की रज़ा तलाश करता है तो अल्लाह तआला उसे मशक्क़त (सख़्ती) से बचा लेता है और जो आदमी लोगों की रज़ा हासिल करने के लिये अल्लाह तआला को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआला उसे लोगों के सपुर्द कर देता है। (मजमउज़्ज़वाइद—10/225)

मज़कूरा बाला अहादीस मुबारका से मालूम हुआ कि हमें हर हाल में सिर्फ़ अल्लाह तआला का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखना चाहिये और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना चाहिये न कि लोगों की और लोग अगर नाराज़ हो तो बेशक हो जायें लेकिन हमसे हमारा रब कभी न नाराज़ हो हमें ऐसे काम करना चाहिये और हमेशा अपने दिल में अपने रब का ख़ौफ़ रखते हुये उसकी मर्ज़ी और रज़ा के मुताबिक़ हर अमल करना चाहिये चाहे हमें कितनी भी मुसीबतों परेशानी का सामना करना पड़े ताकि हमें अल्लाह तआला की कुर्बत (नज़दीकी) हासिल हो और हम अपने हर नेक अमल का बेहतर सिला (बदला) पायें और हमारी मग़फ़िरत हो जाये और हम जन्नत के मुस्तहिक़ बन जायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

और जो अपने रब से डरते हैं उनकी सवारियाँ गिरोह के गिरोह जन्नत की तरफ चलाई जायेंगी जब वो वहाँ पहुँचेंगे और जन्नत के दरवाजे खुले होंगे और (जन्नत) के दरोगान (निगरान) उनसे कहेंगे तुम पर सलाम हो तुम खूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने को (सू०—जुमर—73)

जब दुनियाँ में हमसे कोई ऐसा गुनाह हो जाता है जो कानूनन जुर्म होता है तो हम गुनाह करने के बाद बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं और पुलिस के डर से भागे भागे फिरते हैं और हमारा अमन चैन चला जाता है और कानून और पुलिस के ख़ौफ़ के बाइस हम रात को सो नहीं पाते क्योंकि हमारे दिल में उसका डर रहता है कि कहीं अगर पुलिस ने हमें पकड़ लिया तो हमें सज़ा देगी और ज़लील व ख़्बार करेगी और हमें कैद करके जेल भेज देगी और हमें मारेगी और पीटेगी।

और अगर किसी तरह हम पुलिस से बच भी गये और अदालत में हाज़िर हो गये तो हमें फिर उस जज का ख़ौफ़ सताता है जो हमारा फैसला करेगा और उस जज के सामने हमारी पेशी होगी और हम ख़ौफ़ ज़दा होंगे कि कहीं जज हमारे गुनाह के सबब हमें सज़ा न दे दे और हमें जेल में कैद करदे और हम उस वक़्त जज के सामने कितने डरे हुये होते हैं और हमारी आँखें डर की वजह से डरी हुयी होती हैं और हमारा दिल काँप रहा होता है और जिस्म के तमाम आज़ा (अंगो) में अजीब हरकत होती है और उस वक़्त हम तमाम दुनियाँ को भूल जाते हैं और हमारा ज़हन और हमारी निगाहें सिर्फ़ जज के फैसले पर लगी होती हैं कि ना मालूम जज हमारे मुताअल्लिक क्या फैसला दे और हमें कौन सी सज़ा सुना दे।

तो जब एक गुनाह के बाइस हमें पुलिस और जज का इतना ज़्यादा ख़ौफ़ रहता है और हम दुन्यावी सज़ा से डरते हैं जो कि सिर्फ़ कुछ मुद्दत की कैद है तो ज़रा सोचो हमसे दुनियाँ में हजारों गुनाह सरज़द हुये हैं तो हमें उन हजारों गुनाहों के सबब रब तआला के यहाँ क़यामत के दिन मिलने वाली सज़ाओं से

कितना ज़्यादा डरना चाहिये और अपने रब का कितना ज़्यादा खौफ़ रखना चाहिये जो तमाम जहानों का हाकिमुल हाकिमीन है और हमें अपने रब के सामने पेश होना होगा और अपने तमाम आमालों का हिसाब देना होगा और हमारा रब हर शख्स का फैसला करेगा और हमें अपने-अपने गुनाहों के बाइस जो सज़ा मिलेगी वो इतनी निहायत सख्त और दर्दनाक होगी जिसके मुकाबले दुनियाँ की सज़ा कुछ भी नहीं और आखिरत की सज़ा इतनी सख्त है कि जिसका तसव्वुर इन्सान को खौफ़ ज़दा कर देता है तो उसकी हकीकत का आलम क्या होगा।

जब हमारे जिस्म को कीड़े-मकोड़े साँप और बिच्छु खा रहे होंगे और हम पूरी तरह से आग में ग़र्क हो जायेंगे और खाने को काँटेदार खाना और पीने को खौलता हुआ पानी और पीप और आग और लोहे की जंजीरों में जकड़े हुये होंगे तो उस वक़्त हमारा क्या हाल होगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला का खौफ़ हमेशा अपने दिलों में रखें और गुनाहों से बचें और अल्लाह व रसूल के मुताबिक़ नेक अमल करें और उनके फ़रमाबरदार बनें और जो गुनाह हम से हुये हैं उन गुनाहों की अल्लाह तआला से माफ़ी माँगें और मुस्तक़बिल में कोई गुनाह न करने का अहद करें ताकि क़यामत के दिन जब रब के सामने हमारी पेशी हो तो मेरे रब का फैसला हमारे हक़ में बेहतर हो और हम रब तआला के अज़ाब से महफूज़ रहें और जन्नत और उसकी दायमी नेअमतों के वारिस बन जायें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआला के खौफ़ से जिस मोमिन की आँख से आँसू निकलता है चाहे वो मरख़्बी के पर के बराबर हो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ हराम कर देता है। (शुअबुल ईमान—1/491)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—जब मोमिन का दिल अल्लाह तआला के खौफ़ से लरज़ता है तो उससे उसकी ख़तायें इस तरह झड़ जाती हैं जिस तरह दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं। (शुअबुल ईमान—1/491)

—: सब्र की फज़ीलत :—

ईमान किसी एक चीज़ का नाम नहीं है बल्कि तमाम इबादात और अमलियात के मुकम्मल होने पर ईमान मुकम्मल होता है और सब्र ईमान का निष्फ (आधा) और अहम हिस्सा है और अल्लाह तआला की कुर्बत (नज़दीकी) हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और सब्र दोज़ख़ से आज़ादी का सबब है और जन्नत का रास्ता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सब्र आधा ईमान है। (अत्तरगीब वत्तरहीब-4/277)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सब्र जन्नत के खज़ानों में से एक खज़ाना है (इसरारुल मरफूआ-145)

इन्सान के लिये सबसे मुश्किल अमल सब्र करना है क्योंकि शैतान हमें इस अमल के करने से रोकता है और जब वो हमारे नफ़्स पर ग़ालिब आ जाता है तब हमारे लिये सब्र करना बहुत मुश्किल हो जाता है और जो शख्स अपने नफ़्स पर काबू पा लेता है उसके लिये सब्र करना आसान हो जाता है कुरान मजीद और अहादीस मुबारका में सब्र की बहुत फज़ीलत आयी है अल्लाह तआला सब्र करने वालों को अपने महबूब बन्दों में शुमार करता है और अल्लाह तआला उनके साथ होता है और उनकी मदद फ़रमाता है और अल्लाह तआला जिस बन्दे का साथी और मददगार हो जाये और उसे अपना महबूब बनाले फिर उस बन्दे का मक़ाम और मर्तबा सर बुलन्द हो जाता है और अल्लाह तआला तमाम मुश्किलात से उसे निजात देता है और उसके दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और क़यामत के दिन वाक़ैअ होने वाली सख़्तियों से वो महफूज़ रहेगा और हिसाब उसे ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और अपने सब्र के बाइस वो जन्नत में दाख़िल होगा और अल्लाह तआला साबिरों को पसन्द करता है और उन्हें अपनी रहमत के साये में जगह अता फ़रमाता है

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो बेशक अल्लाह तआला साबिरों (सब्र करने वालों) के साथ है। (सू0-बक्राह-153)

इरशादे बारी तआला है—

सब्र वाले अल्लाह तआला के महबूब हैं। (सू०—आले इमरान—159)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

ना पसंदीदा पर सब्र करने में बहुत भलाई है।

(मुस्नद अहमद—1/307)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला फरमाता है कि जब मैं अपने बन्दे को किसी
आज़माइश में डालता हूँ और वो अपनी बीमारी में किसी से शिकवा
व शिकायत नहीं करता और सब्र करता है तो मैं उसे पहले से
ज़्यादा सेहतमंद करता हूँ और उस पर कोई गुनाह बाकी नहीं
रहता और अगर मैं उसे मौत दूँ तो उसे अपनी रहमत में छुपा लेता
हूँ। (बैहकी—3/375)

सब्र की कई किस्में हैं जैसे किसी मुसीबत या परेशानी में
सब्र करना और इताअत व इबादत की मशक्कतों पर सब्र करना
और नफ़्स को गुनाहों की तरफ़ जाने से रोकने पर पर सब्र करना
और नेक अमल और इबादत में नीयत को रिया (दिखावा) से पाक
रखना भी सब्र है और जुबान, दिल नज़र हत्ता कि जिस्म के तमाम
आज़ा (अंगो) को गुनाहों से पाक रखना भी सब्र है और किसी की
जुल्म व ज़्यादती पर गुस्सा न आना और उसका बदला न लेना भी
सब्र है इसके अलावा माल का ज़ाया होना या दीगर दुन्यावी
नुकसान या बीमारी वगैराह पर किसी से शिकवा शिकायत न करना
बल्कि अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना और दिल में ये ख्याल
करना कि मेरा रब अगर चाहता तो हमें इससे भी बड़ी परेशानी दे
सकता था या इससे भी ज़्यादा हमारा नुकसान हो सकता था या
इससे भी ज़्यादा हमारा माल ज़ाया हो सकता था ऐसा गुमान
रखना भी सब्र है

और जो इन तमाम बातों पर सब्र करता है वो अल्लाह
तआला का मुक़र्रब बन्दा बन जाता है और अल्लाह तआला साबिरों
को उनके सब्र पर बे हिसाब अज़र अता फरमाता है और सब्र करना
हुक्मे इलाही है और जो सब्र नहीं करता गोया वो खुद का और
ज़्यादा नुकसान करता है मिसाल के तौर पर अगर हम पर किसी

भी तरह की मुसीबतों परेशानी आ जाये या हम किसी बीमारी में मुक्तिला हो जायें या हमारा माल ज़ाया हो जाये या दीगर नुकसान हो जायें और हम लोगों से उसका शिकवा शिकायत करें तो क्या वो लोग हमारी परेशानी से हमें निजात दिला सकते हैं या हमारी बीमारी को दूर कर सकते हैं या हमारे ज़ाया माल को वापस दिला सकते हैं हरगिज़ वो ऐसा नहीं कर सकते और अगर हम सब करेंगे तो अल्लाह हमसे राज़ी होगा और हमारी तमाम मुसीबतों परेशानी को दूर करेगा और हमें सब्र करने के बदले अल्लाह तआला बेहतर सिला अता फ़रमायेगा तो हर मामलात में सब्र करना हमारे लिये बेहतर और अज़र का बाइस है और जो सब्र नहीं करता उसे ख़सारे के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

आप फ़रमा दें ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाये और रब से डरे और जिन्होंने भलाई की उनके लिये इस दुनियाँ में भी भलाई है और सब्र करने वालों को उनका सवाब भरपूर दिया जायेगा बे गिनती (बे हिसाब)। (सू०—जुमर—10)

इरशादे बारी तआला है—

और अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो। (सू०—दहर—26)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला फ़रमाता है जो मेरी कज़ा (हुक्म) पर राज़ी नहीं और जो मेरी अता पर मेरा शुक्र गुज़ार नहीं उसे चाहिये कि मेरे सिवा कोई दूसरा खुदा तलाश करले। (शुअबुल ईमान—1/218) (तारीख़ इब्ने असाकर—6/128)

हर इन्सान को अपनी ख़्वाहिश व मर्जी के मुताबिक़ दुनियाँ में सब कुछ नहीं मिलता किसी न किसी चीज़ की कमी ज़रूर रह जाती है हर इन्सान दुनियाँ में माल, औलाद, बीवी बच्चे ताक़त शक्ल सूरत ज़मीन जायदाद मर्तबा सब कुछ अपने मुताबिक़ चाहता है जो उसे नहीं मिलता बल्कि अल्लाह तआला जिसे जो चाहता है वो अता करता है और वही उसके लिये बेहतर होता है और अल्लाह तआला

कायनात का ख़ालिफ़ व मालिक है और वही उसके निज़ाम को चलाता है और किसको क्या देने और क्या न देने में अल्लाह तआला की हिकमत है अगर हर इन्सान को उसकी ख़्वाहिश और मर्ज़ी के मुताबिक़ दुनियाँ में मिलता तो दुनियाँ का निज़ाम (सिस्टम) बिगड़ जाता और हर इन्सान को ज़िन्दगी जीने में दुश्वारी हो जाती क्योंकि कोई भी शख्स छोटा या कम दर्जे वाला काम नहीं करता और कोई मजदूरी नहीं करता किसान मेहनत मशक्कत उठाते हुये खेतों में ग़ल्ला नहीं उगाता और कोई भी शख्स ग़न्दगी साफ़ नहीं करता और कौन हमारे मकानों की तामीर करता और कौन हमारे लिये ज़मीन से पानी निकालता और कौन हमारे लिये पहनने को कपड़े तैयार करता वगैराह बहुत से काम ऐसे हैं जिसमें धूप और उसकी शिद्दत को बर्दास्त करना पड़ता है तो उन कामों को कोई भी नहीं करता।

हत्ता कि इन्सान के खाने पीने पहनने और मकानों की तामीरात और सफ़र पर आने जाने के सामान वगैराह तमाम चीज़ों का निज़ाम बिगड़ जाता और ये सारे काम इन्सान खुद नहीं कर सकता था और इन्सान को अपनी दुन्यावी तमाम ज़रूरतों को पूरा करना उसके लिये ना मुमकिन हो जाता है और इस तरह दुनियाँ का निज़ाम बिगड़ जाता और इन्सान को अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने में इन्तिहाई व बे शुमार मुश्किलें और परेशानियाँ दरपेश आती इसलिये अल्लाह तआला ने इन्सान की भलाई व आसानी और बेहतरी व राहत के लिये तमाम इन्सानों में इख़्तिलाफ़ रखा है जो उसके लिये अल्लाह तआला की रहमत है और अल्लाह तआला किसी के साथ ज़र्ज़ बराबर भी ना इंसाफ़ी नहीं करता।

अल्लाह तआला ने जिसे ग़रीबी दी या किसी बीमारी में मुब्दिला किया या दीगर परेशानियाँ दी तो उससे आख़िरत में उसी तरह आसान हिसाब लिया जायेगा और अगर मज़कूरा हालातों पर उसने सब्र किया तो वो उसका बेहतर अज़र पायेगा जिसका वो तसब्बुर भी नहीं कर सकता अल्लाह तआला सब्र करने वालों के गुनाहों को नेकियों में बदल देता है और अल्लाह तआला ने जिसे दुनियाँ में अमीरी व आफ़ियत दी तो अल्लाह तआला उससे उसी तरह हिसाब लेगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला हमें जिस हाल में भी रखे हम उसके शुक्र गुज़ार रहें और हर मुसीबतों परेशानी में सब्र व

तहम्मुल (जब्त) पर मजबूती से कायम रहें और उस पर इस्तिकामत हासिल करें ताकि हम इसका बदला पायें और इसी में हमारी भलाई व बेहतरी है और दुनियाँ व आखिरत में कामयाबी व कामरानी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—
और करीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वो तुम्हारे हक में बेहतर हो और करीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आये और वो तुम्हारे हक में बुरी हो और अल्लाह तआला जानता है और तुम नहीं जानते। (सू0—बकराह—216)

इरशादे बारी तआला है—
और जो कुछ तुम्हारे पास है वो ख़त्म हो जायेगा और जो अल्लाह तआला के पास है वो बाकी रहेगा और ज़रूर सब्र करने वालों को (हम) उनका सिला देंगे। (सू0—नहल—96)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अल्लाह तआला जिसके लिये भलाई चाहता है उसे तकलीफ़ में मुब्तिला कर देता है। (सही बुख़ारी—2/873)

दुनियाँ आजमाइश का घर है और इन्सान की आफ़ियत (ऐशो आराम) और उसकी मुसीबतों परेशानी में उसकी जाँच होती है कि वो कैसे अमल करता है और दुनियाँ में कोई ऐसा शख्स नहीं जिसे अल्लाह तआला ने आजमाइश में न डाला हो और जो शख्स इस आजमाइश में ख़रा उतरता है वो अल्लाह तआला के इम्तिहान में पास हो जाता है और वही कामयाबी की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ होता है और वो निजात पाने वालों में से हो जाता है और बेशुमार अज़र व इनामात का मुस्तहिक् बन जाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—
और ज़रूर हम तुम्हें आजमायेंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और खुशख़बरी है उन सब्र वालों के लिये कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो वो कहें कि हम अल्लाह तआला के माल हैं और हमको उसी तरफ़ फिरना है। (सू0—बकराह—155—156)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक तुम्हारी आजमाइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में
(सू0—आले इमरान—185)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

अम्बियाकिराम (अलै0) को आजमाइश में डाला गया फिर औलिया
इजाम को फिर उनके मुशाबा (मिस्ल) को फिर उसके बाद उन
जैसे लोगों को आजमाया गया। (मुस्तदरक हाकिम—3/323)

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिये कि दुनियाँ
और जो कुछ उसमें मौजूद है उसका हकीकी मालिक अल्लाह
तआला है और जो नेअमतें हमें मयस्सर हुई हैं उनका बरतना कुछ
दिनों का है बिल आखिर वो नेअमतें एक दिन हमसे छिन जायेंगी
क्योंकि वो अल्लाह तआला की अमानत है और अगर वो नेअमतें
हमसे छिन जायें तो हमें किस बात का ग़म करना चाहिये जबकि
हकीकतन वो नेअमतें हमारी थी ही नहीं जैसे दुनियाँ में हम कुछ
माल या कोई चीज़ किसी को वक़्त ज़रूरत देते हैं और फिर कुछ
वक़्त के बाद अपना माल या कोई चीज़ जो हमने उसे दी थी तो
उससे वापसी का मुतालबा करते हैं और वापस ले लेते हैं जैसे
हमने किसी को कुछ रूपया बतौर उधार दिया और कुछ वक़्त बाद
उससे वापस ले लिया।

तो वापस करने वाले शख्स को किसी बात का ग़म
या परेशानी नहीं होनी चाहिये क्योंकि वो माल तो उसका था ही
नहीं वो तो हमारा था और हमने वापस ले लिया बल्कि उसे तो
हमारा एहसान मानना चाहिये कि उसने हमारे माल को कुछ वक़्त
तक इस्तेमाल किया इसी तरह हर चीज़ का असल मालिक अल्लाह
तआला है अगर वो हमें कोई नेअमत अता करे तो हम उसका शुक्र
अदा करें और अगर कोई नेअमत हमें न मिले तो उस पर सब्र करें
और कोई नेअमत आकर चली जाये या कोई दुन्यावी नुकसान हो
जाये तो हमें चाहिये ग़म न करें बल्कि ये गुमान करें कि ये नेअमत
तो हमारी थी ही नहीं ये नेअमत तो अल्लाह तआला की थी तो हम
क्यों और किस बात पर ग़म करें इसी तरह हम सब अल्लाह
तआला की अमानत हैं अगर हम में से कोई बच्चा बड़ा या बूढ़ा
फौत हो जाये तो ग़मगीन न हो बल्कि सब्र करें और कहें कि फौत

होने वाला तो अल्लाह तआला की अमानत था जो उसने वापस ले लिया और अपनी हर मुसीबतो परेशानी या बीमारी में सब्र करें क्योंकि हर मुसीबतो परेशानी या बीमारी को दूर करना सिर्फ़ सब्र तआला के दस्ते कुदरत में है न कि किसी इन्सान के इस्तियार में है जो वो हमारी परेशानी को दूर कर सके तो हर परेशानी में सब्र करें और अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारी तमाम परेशानियों को अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफ़ैल दूर फरमाये और हमें इससे निजात दे और इसके साथ-साथ हम ये भी गुमान रखें कि दुनियाँ में जो परेशानी या बीमारी हमें मिली है तो हो सकता है कि ये हमारी आजमाइश हो या हमारे गुनाहों की सज़ा हो जो हमें अपने गुनाहों के सबब मिल रही है या फिर हमारी मुसीबतो परेशानी के ज़रिये सब्र तआला हमारे गुनाहों को मिटा रहा हो और उन्हें नेकी में बदल रहा हो हालाँकि दुनियाँ की बड़ी से बड़ी सज़ा और सख्त से सख्त मुसीबत व परेशानी और इन्तिहाई तकलीफ़ ज़दा बीमारी आख़िरत की निहायत सख्त और दर्दनाक मुसीबतो परेशानी के मुकाबले कुछ भी नहीं है और सब्र तआला जिसको दुनियाँ में उसके गुनाहों की सज़ा देता है तो आख़िरत में उसे उस गुनाह की दोबारा सज़ा नहीं देगा।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अल्लाह तआला जिसको उसके गुनाहों के सबब दुनियाँ में सज़ा देता है तो आख़िरत में अल्लाह तआला उसको दोबारा सज़ा नहीं देगा। (सुनन इब्ने माजा—190)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जिसकी चोरी न हो या बीमार न हो तो वो ख़ैर से खाली है।
(कंजुल उम्माल—11/101)

जो शख्स रात भर बीमार रहे और सब्र और ज़ब्त से काम ले और अल्लाह का शुक्र अदा करे और ख़याल करे कि अल्लाह तआला ने हमें जो बीमारी या परेशानी दी है अगर वो चाहता तो इससे भी बड़ी बीमारी या परेशानी हमें दे सकता था क्योंकि हर चीज़ उसके कब्ज़े कुदरत में है तो अल्लाह तआला उस शख्स के गुनाहों को माफ़ फरमा देता है जो मुसीबतो परेशानी हमें मिलती हैं अगर हम दूसरों की मुसीबतो परेशानी पर ग़ौर करें तो हमें अपनी परेशानी

छोटी और कमतर लगेगी और जब हम उस पर सब्र करेंगे तो बेहतर सिला पायेंगे और अगर हम सब्र न करें और लोगों से अपनी मुसीबतों परेशानी के मुताअल्लिक शिकवा शिकायत करें तो हमें कुछ भी हासिल न होगा और न हमारी परेशानी कोई दूर कर सकेगा बल्कि सब्र के सबब मिलने वाले सवाब से भी हम महरूम रह जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि हर हाल में हमेशा सब्र पर कायम रहें और दुनियाँ में जो भी मुसीबतों परेशानी हमें मिले उसे अपने गुनाहों का कफ़ारा गुमान करें और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो मुसीबतें तुम्हें पहुँचती हैं तो उस (बद आमाली) के सबब से पहुँचती हैं जो तुम्हारे हाथों ने कमायी होती हैं हालाँकि बहुत सी (कोताहियों) को वो माफ़ फ़रमा देता है। (सू०—शूरा—30)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं किसी बन्दे पर उसके माल या उसकी जान या उसकी औलाद पर बला नाज़िल करूँ और बन्दा सब्र और ज़ब्त से काम लेता है तो क़यामत के दिन मुझे इस बात पर हया आयेगी कि मैं उसका हिसाब लूँ और उसके लिये मीज़ान कायम करूँ। (अल फिरदौस—3/172)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
दुनियाँ मोमिन के लिये कैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है। (सही मुस्लिम—2/407)

हमें हर हाल में साबिर व शाकिर रहना चाहिये और जो हमें अपनी किस्मत से मिले उस पर क़नाअत करना चाहिये और अपने तमाम मामलात को अल्लाह तआला के सपुर्द कर देना चाहिये यही हमारे लिये बेहतर है और अल्लाह तआला के हर हुक्म और उसकी रज़ा को दिल से तसलीम करें और अल्लाह व रसूल के अहकामात की ताअमील व तकमील करें और मेरा रब हमें जिस हाल में भी रखे उस हाल पर हम खुश व राज़ी रहें क्योंकि वो मेरा मालिक और ख़ालिक है और हम उसके बन्दे और गुलाम हैं और मेरे तमाम अहवाल के मुताअल्लिक मेरे रब का जो फ़ैसला हो हम उस फ़ैसले पर राज़ी रहें और सब्र व शुक्र पर कायम रहें जिस तरह बन्दा जब

अपनी माँ के शिकम (पेट) में होता है तो उस वक्त उसके तमाम मामलात अल्लाह तआला के इख्तियार में होते हैं और वही पाक ज्ञात उस बन्दे को उसकी माँ के शिकम (पेट) में रिज्क अता करता है और उसके आज्ञा (अंगों) को बनाता है और उसकी हड्डियाँ और उन पर गोस्त चढ़ाता है और उसकी शक्लो सूरत को बनाता है और उसी के हुक्म से उसका दिल और दीगर आज्ञा हरकत में आते हैं इसी तरह हमें चाहिये कि अपने दुन्यावी तमाम मामलात को अल्लाह तआला के सपुर्द कर दें और अपनी हर मुसीबतों परेशानी या आफ़ियत और तंगी या फ़राखी हर हाल में सिर्फ़ अपने रब पर तवक्कुल रखें और अपने उस हाल को खुशी खुशी कुबूल करें और सब्रो इस्तकामत और शुक्र पर हमेशा कायम रहें ताकि अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी और कुर्बत हमें हासिल हो जो हमारे लिये अल्लाह तआला की रहमतों और राहतों और मशरतों का बाइस बने और हमें कामयाबी व कामरानी और फ़राखी हासिल हो और जिन चीज़ों के मुताअल्लिक अल्लाह व रसूल ने हमें मुमानियत की है उन चीज़ों से हमेशा इजतिनाब करें और उनसे बचने व दूर रहने की हर मुमकिन कोशिश करें।

और अपने तकलीफ़ ज़दा हालातों पर बारगाहे खुदावन्दी से कभी मायूस व ना उम्मीद न हों बल्कि सिद्क दिल से अपने रब से माअज़रत और आजिज़ी के साथ दुआ करते रहें और अपनी दुआ की मक़बूलियत के मुन्तज़िर रहें और यकीन रखें कि रब तआला हमारी दुआओं को ज़रूर कुबूल फ़रमायेगा और अपनी तमाम परेशानियों और तंगी के वक्त अपने रब के लिये हुस्ने ज़न रखें और उसी पर भरोसा रखें कि अल्लाह तआला के सिवा हमारी परेशानियों से हमें कोई दूसरा निजात नहीं दिला सकता और हमारी हाजतों को मेरे रब के सिवा कोई पूरा नहीं कर सकता क्योंकि तमाम इन्सानों की हाजतों की तकमील सिर्फ़ रब तआला के दस्ते कुदरत में है इसलिये सिर्फ़ अपने रब पर मुकम्मल भरोसा रखें और उसी से सवाल करें और अपने रब के सिवा तमाम मख़लूक से बेनियाज़ रहें इन्सान पर कभी एक सा वक्त नहीं रहता और उसमें तबदीली होती रहती है पस हमें चाहिये कि अपनी परेशानी के वक्त घबरायें नहीं और ना ही अपने दिलों में ना उम्मीदी को जगह दें और न जल्दबाज़ी करें बल्कि सब्र और ज़ब्त से काम लें और वक्त व हालातों की तब्दीली का इन्तज़ार करें क्योंकि हर चीज़ का एक

वक्त मुअइयन (मुकरर) होता है और हर चीज़ की एक इन्तिहा होती है जैसे रात सुबह में तब्दील होती है और गर्मी सर्दी में और सर्दी गर्मी में तब्दील होती है और अगर कोई शरख्स रात के वक्त दिन के उजाले का मुतलाशी हो तो उसे सिर्फ तारीकियों ही हासिल होंगी और अपने रब से किसी भी हाल में ना खुशी और ना शुक्रा का इज़हार न करें बल्कि उसकी रज़ा पर राजी रहें और अपनी तकदीर की तल्खी और शीरी दोनों हालतों में साबिर व शाकिर रहें।

कज़ाये इलाही पर इज़हारे नाराज़गी से ग़ज़बे खुदावन्दी का ख़तरा है रिवायत में है कि किसी नबी ने अपनी किसी तकलीफ़ पर अल्लाह तआला की बारगाह में शिकवा किया तो रब तआला की तरफ़ से वही आई कि तू मेरा शिकवा करता है हालाँकि मैं मज़म्मत और शिकवा का मुस्तहिक नहीं हूँ और तू ऐसी ना मुनासिब बात का इज़हार कर रहा है और मेरी कज़ा (हुक्म) पर नाराज़गी का इज़हार कर रहा है क्या तू ये चाहता है कि मैं तेरी खातिर दुनियाँ बदल दूँ या तेरी खातिर लौहे महफूज़ में तबदीली कर दूँ और ऐसी चीज़ तेरे लिये मुकददर कर दूँ जिसे तू चाहे अगरचा मैं उसको न चाहूँ और ऐसी चीज़ तेरे लिये मुहैया करूँ जो तुझे पसन्द हो और मुझे पसन्द न हो मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की कसम अगर तेरे दिल में आइन्दा कभी इस तरह का ख़्याल गुज़रा तो मैं ज़रूर तुझसे नबूवत का मुकददस लिबास उतार लूँगा और तुझे नारे जहन्नुम में डाल दूँगा। इसलिये ज़रा सोचो और होश के साथ गौर करो कि रब तआला अपने नबियों और बरगज़ीदा बन्दों से ऐसी गुफ्तगू फरमा कर डाँट रहा है तो हमारे साथ कैसी गुफ्तगू कर सकता है कि जिसने सारी उम्र में सिर्फ़ एक बार शिकवा किया तो उन पर रब तआला के गुस्से और नाराज़गी का ये आलम है तो उस शरख्स पर गुस्से और नाराज़गी का आलम क्या होगा जो बेसब्री के बाइस चीखे और चिल्लाये और जिसकी सारी उम्र शिकवा और शिकायतों में गुज़री हो तो उसका अंजाम क्या होगा।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया कि मोमिन को जो भी बीमारी या परेशानी या रंजो ग़म या जो भी अज़िज़त पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी लगता है तो अल्लाह तआला इन चीज़ों के ज़रिये उसके गुनाह मिटाता है। (बुख़ारी शरीफ़)

—: शुक्र की फज़ीलत :—

अल्लाह तआला ने हमें बेशुमार नेअमतों से नावाज़ा है जिनका शुमार करना नामुमकिन है अगर हम सिर्फ़ अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) पर गौर करें जो तमाम नेअमतों का मजमुआ है और हमारा इन्सान होना और उस पर मुसलमान होना सबसे बड़ी नेअमत है और अल्लाह तआला हमारी दुन्यावी ज़रूरतों को फ़राहम करता है और वही पाक ज़ात जो हमें खिलाता पिलाता और पहनाता और वही माल औलाद वगैराह अता करता है और उसी पाक ज़ात ने जन्नत और उसकी नेअमतें और लज्ज़तें हमारे लिये पैदा फ़रमाई हैं जो हमें हमारे नेक आमाल के सबब हमें अता करेगा इसलिये हमें चाहिये कि हम उस परवर दिगार के शुक्र गुज़ार बन्दे बनें और अपने रब का कसरत से शुक्र अदा किया करें हालाँकि अल्लाह तआला की तमाम नेअमतों का शुक्र अदा करने के लिये अगर हम अपनी पूरी जिन्दगी सर्फ़ कर दें फिर भी उसका शुक्र अदा नहीं कर सकते क्योंकि उसकी तमाम नेअमतों के मुक़ाबले हमारी पूरी जिन्दगी का शुक्र एक ज़र्ज़ बराबर भी नहीं है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और अगर तुम अल्लाह तआला की नेअमतों का शुमार करना चाहो तो नहीं कर सकोगे बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है (सू०—नहल—18)

इरशादे बारी तआला है—

और अनकरीब हम शुक्र करने वालों को उनका सिला देंगे। (सू०—आले इमरान—145)

इरशादे खुदावन्दी है—

अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा और अगर ना शुक्र करोगे तो मेरा अज़ाब सख़्त है। (सू०—इब्राहीम—7)

अगर किसी शख्स की आँख की रोशनी चली जाये तो उसे एहसास होता है कि आँख कितनी बड़ी नेअमत है इसी तरह जिस्म का कोई भी हिस्सा ख़राब हो जाये या जिस्म से जुदा हो जाये तो इन्सान को पता चलता है कि वो कितनी बड़ी नेअमत है और इसके अलावा

तमाम नेअमतेँ जो हमें मयस्सर हुई हैं वो सब अल्लाह रब्बुल इज्जत की अता कर्दा हैं इसमें किसी गैर का दखल नहीं है और न किसी के इख्तियार में है इसलिये हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआला के शुक्र गुज़ार बन्दे बनें ताकि अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी हमें हासिल हो जब हम दुनियाँ में किसी के साथ कोई नेकी या भलाई का काम करते हैं तो वो शख्स नेकी और भलाई के बदले में शुक्रिया कहता है तो हम उसके शुक्रिया कहने पर बहुत खुश हो जाते हैं और उसे अच्छा शख्स गुमान करते हैं और मुस्तक़बिल में दोबारा उसके साथ नेकी या भलाई करने के लिये तैयार रहते हैं

तो जब हम किसी के शुक्रिया कहने पर खुश हो जाते हैं और दोबारा उसके साथ भलाई करने का इरादा करते हैं तो ज़रा सोचो जब हम अपने रब का शुक्र अदा करेंगे तो वो हमसे कितना ज़्यादा खुश और राज़ी होगा और हमारा परवरदिगार गफ़ूर व रहीम है जिसकी रहमत और शफ़क़त के हज़ारवें हिस्से का शुमार करना या अंदाजा लगाना नामुमकिन है वो पाक ज़ात तो इतनी रहीमो करीम है कि वो अपने फ़रमाबरदार बन्दों और नाफ़रमान बन्दों को भी नेअमतेँ अता करता है उस मालिके कायनात की रहमत इतनी वसीअ है कि जिसमें नेक और बदकार ज़ालिम बन्दों को भी जगह मिलती है जब गुनाहगार ज़ालिम बन्दे अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करते हैं और नेक अमल करते हैं तो रब तआला उनकी तौबा को कुबूल फ़रमाता है और अपनी रहमत से उन्हें बख़्श देता है और जो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता है तो अल्लाह तआला उससे खुश व राज़ी हो जाता है और शुक्र करने वालों को उनके शुक्र के बदले दुनियाँ व आख़िरत में बेशुमार इनामात से सरफ़राज़ फ़रमाता है और अल्लाह तआला शाकिरोँ (शुक्र करने वालों) को पसन्द फ़रमाता है और जो लोग उसकी नेअमतों पर शुक्र अदा नहीं करते तो अल्लाह तआला उन्हें नापसन्द फ़रमाता है और उनसे नाराज़ रहता है और उनकी नाशुक्री के बाइस अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब में मुब्तिला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई पाकीज़ा चीज़ें और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करते हो।

(सू०—बकराह—172)

इरशादे बारी तआला है—

तो अल्लाह तआला की दी हुई हलाल पाकीजा रोजी खाओ और अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र अदा करो। (सू०—नहल—114)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
खाना खाकर शुक्र अदा करने वाला सब करने वाले रोज़दार की तरह हैं। (मुस्नद अहमद—4/343)

अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक में इख़्तिलाफ़ रखा है किसी को अमीर बनाया किसी को ग़रीब बनाया किसी को मेहनत व मशक्क़तों में डाला किसी को ऐशो इशरत में रखा किसी को मुसीबतों परेशानी में मुब्तिला किया और किसी को अफ़ियत व फ़राख़ी में रखा और ये तमाम इख़्तिलाफ़ हिकमतों इलाही हैं और मख़लूक के लिये आसानी व राहत व बेहतरी और अल्लाह तआला की रहमत हैं और अल्लाह तआला हमें जिस हाल में भी रखे हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिये ताकि आख़िरत में हम बेहतर जज़ा के पायें।

क्योंकि दुनियाँ की ज़िन्दगी हमेशगी का घर नहीं है बल्कि थोड़े दिनों का बरतना है और हमेशगी का घर तो आख़िरत है जहाँ इन्सान को हमेशा रहना है दुनियाँ रास्ता है मंज़िल नहीं है और हर इन्सान की मंज़िल आख़िरत है और हम मुसाफ़िर हैं जो दुनियाँ के रास्तों पर सफ़र कर रहे हैं और हर मुसाफ़िर वापस अपने घर को आता है तो हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ अपने हमेशगी वाले घर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करें और दुनियाँ में हमें जो मिले उस पर रब तआला का शुक्र अदा करें और जो न मिले उस पर सब्र करें और उससे बेपरवाह रहें।

क्योंकि हर चीज़ का बरतना थोड़े दिनों का है और हमेशा दुन्यावी तमाम मामलात में अपने से नीचे वाले लोगों को देखें कि उन पर कितनी मुसीबतों परेशानी है तो हम पर ये हकीकत वाज़ेह हो जायेगी कि हमें अल्लाह तआला ने उन लोगों से ज़्यादा बेहतर नेअमतें अता की हैं तो इस तरह हम अपने रब के शुक्र गुज़ार बन्दे बन जायेंगे जो बड़ा करम करने वाला है इसलिये हमें चाहिये कि चाहे जैसे भी असबाब हों हम अल्लाह तआला का कसरत से शुक्र

अदा करें और अल्लाह व रसूल के अहकामात पर अमल पैरा हो जायें और कसरत से नेक अमल करें और अपने रिज़क व नेअमतों व तकलीफों और परेशानियों के मुताअल्लिक न ग़मगीन हों और न फ़िक्र करें क्योंकि जो कुछ हमारे मुक़द्दर में होगा वो हमें हर हाल में अता होगा उसे कोई दूसरा हासिल नहीं कर सकता चाहे लाख कोशिश करे क्योंकि हर जानदार का रिज़क अल्लाह तआला के इस्तिथार और उसके ज़िम्मे करम पर है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा (जानदार) नहीं कि जिसका रिज़क अल्लाह तआला के ज़िम्मे करम पर न हो। (सू०—हूद—6)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स दुन्यावी मामलात में अपने से नीचे वाले लोगों को देखे और दीनी मामलात में अपने से ऊपर वाले लोगों को देखे तो अल्लाह तआला उसे साबिर व शाकिर लिखता है (यानी सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला लिखता है) (कंजुल उम्माल—3/231)

शुक्र की कई किस्में हैं जिसमें सबसे बड़ी व अहम ये है कि तमाम नेअमतों को खुदा की दैन समझना शुक्रे ऐन है और हर शख्स के लिये भलाई चाहना और किसी से किसी भी मामलात में हसद न करना ये दिल का शुक्र है किसी भी तरह की मुसीबतों परेशानी व रंजो अलम या आफियत व खुशहाली इन तमाम हालतों में अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाना ये जुबान का शुक्र है और नज़र से किसी ना मेहरम को न देखना और कोई भी बुरी चीज़ न देखना और नज़र को बुरी ख्वाहिशात से पाक रखना ये नज़र का शुक्र है और अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) को नाजाइज़ व हराम कामों से महफूज़ रखना ये जिस्म के आज़ा का शुक्र है नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सद्का ख़ैरात वगैराह नेक अमल करना भी अल्लाह तआला का शुक्र है और अगर इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) कोई काम करता है तो गोया वो अल्लाह तआला का शुक्र अदा नहीं करता और अल्लाह तआला के नज़दीक वो ना शुक्रा और ना पसंदीदा बन्दों में शुमार किया जाता है और वो अल्लाह तआला की रहमत से महरुम रहता है और अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब बनता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

बेशक अल्लाह तआला उसे राह नहीं देता जो झूठा हो या ना शुक्रा हो। (सू०—जुमर—3)

इरशादे बारी तआला है—

अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता ना शुक्रा और बड़ा गुनाहगार। (सू०—बकराह—276)

इरशादे खुदावन्दी है—

इन्सान हलाक हो वो किस कदर ना शुक्रा है उसे किस चीज़ से बनाया पानी की बूंद से उसे पैदा किया फिर उसे तरह—तरह के अंदाजों पर रखा फिर उसके लिये रास्ता आसान किया फिर उसे मौत दी और कब्र में रखवाया फिर जब चाहेगा उसे बाहर निकालेगा (सू०—अबस—17,—22)

हर इन्सान की ज़िन्दगी कई तरह के उतार चढ़ाव से गुज़रती है कभी खुशी कभी ग़म कभी आराम कभी तकलीफ़ और इन तमाम हालातों में हर इन्सान को सब्र व शुक्र पर कायम रहना चाहिये क्योंकि इन तमाम हालातों में अल्लाह तआला की रज़ा व खुशनूदी और बन्दे की आजमाइश मख़्फी (छुपी) होती है और हमारे ज़हन में कभी ये ख़्याल नहीं आना चाहिये कि हम फ़लों चीज़ से महरूम हैं बल्कि हर मुसीबत परेशानी में ये गुमान रखें कि इससे भी बड़ी और सख़्त तर परेशानियाँ हैं जो हमारे सब ने हमें नहीं दीं और कुछ नेअमतेँ ऐसी भी हमारे पास मौजूद हैं जो औरों के पास नहीं हैं और ऐसा गुमान रखना भी अल्लाह तआला का शुक्र है।

बाज़ लोग कहते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़लों शख्स को बहुत ज़्यादा माल और बहुत सी नेअमतेँ अता की हैं जबकि वो बदकार और ज़ालिम है फिर भी अल्लाह तआला उस पर मेहरबान है और फ़लों शख्स नेक सालेह है और वो कई तरह की परेशानियों में मुत्तिला है और अल्लाह तआला ने उसे ज़्यादा माल और कई तरह की नेअमतों से महरूम रखा है और उस पर अल्लाह तआला की मेहरबानी नहीं है तो इस तरह के गुमान बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद होते हैं।

बल्कि इस तरह के तमाम मामलात मशीयते इलाही पर मबनी होते हैं और उनमें कई तरह की हिकमतें छुपी होती हैं जिसे हर शख्स नहीं समझ सकता है लेकिन रब तआला जिसे इल्म और हिकमत की समझ अता करे वही इस फलसफे को समझ सकता है अल्लाह तआला किसी को बहुत ज़्यादा नेअमतें अता करता है और किसी को मुफ़लिसी में मुब्तिला कर देता और इस तरह अल्लाह तआला दोनों तरह के लोगों की आजमाइश करता है कि कौन कैसे अमल करता है और नेक लोगों के उनके गुनाहों के बाइस दुनियाँ में कई तरह की परेशानियाँ देकर अल्लाह तआला उन्हें बाईमान उठाता है और उनकी परेशानियों के सबब उनके गुनाहों को बख़्श देता है और उनकी आख़िरत बेहतर हो जाती है और वो लोग आख़िरत में अल्लाह तआला के गुजब और अज़ाब से अम्नो अमान में रहेंगे और कयामत की सख़्तियों से अमन चैन व राहत और आराम पायेंगे और बाज़ ना फरमान बदकार को उनकी कुछ नेकियों का बदला जो वो दुनियाँ में करता है अल्लाह तआला उसे दुनियाँ में ही कई तरह की नेअमतें देकर पूरा करता है क्योंकि जब नाफ़रमान बदकार शख्स से दुनियाँ में कोई नेकी सरज़द होती है तो अल्लाह तआला उसे उस नेकी का बदला दुनियाँ में ही दे देता है लेकिन आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होता है और अल्लाह तआला उसे बदकार व बेईमान उठाता है और आख़िरत के अज़ाबों में मुब्तिला कर देता है।

अल्लाह तआला किसी के साथ ना इंसाफी नहीं करता है अल्लाह तआला किसी को उसके गुनाहों की सज़ा दुनियाँ में देता है और किसी को दुनियाँ में ढील देता है और उसके गुनाहों की सज़ा उसे आख़िरत में भुगतनी होगी तो आख़िरत की सज़ा से दुनियाँ की सज़ा लाख गुना बेहतर है पस हमें चाहिये कि हम इन पोशीदा बातों और हिकमतों में न पड़ें बल्कि अल्लाह तआला हमें जिस हाल में भी रखे हम सब्र और शुक्र पर कायम रहें और हमेशा ये गुमान रखें कि अल्लाह तआला जो करता है वो हर इन्सान के हक़ में बेहतर होता है और अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है और हम कुछ भी नहीं जानते इसलिये हमारा हर हाल में सब्र व शुक्र पर कायम रहना ही दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर है और हर इन्सान को अल्लाह तआला एक वक़्त मुक़रर तक मुहलत देता है अब बन्दे की मर्ज़ी है चाहे तो अल्लाह

व रसूल का रास्ता इख्तियार करे और नेक अमल करे और दुन्यावी परेशानियों और तकलीफों पर सब्र व शुक्र पर हमेशा कायम रहें और अल्लाह तआला की रजा व खुशनुदी हासिल करें और अपनी आखिरत बेहतर बनाये या फिर उस मुहलत में चाहें तो शैतान का रास्ता इख्तियार करे और अल्लाह व रसूल की नाफरमानी करें और गुनाह व बदकारी करें और सब्र व शुक्र पर कायम न रहें और अल्लाह तआला को नाराज करें और अपनी आकिबत ख़राब कर लें हमें हमेशा ये यकीन रखना चाहिये कि हर नेक अमल का अजर व तआला हमें ज़रूर अता करेगा चाहे दुनियाँ में मिले या आखिरत में मिले और ऐसा यकीन रखना मज़बूत ईमान की दलील है और हर वक़्त हर हाल में सब्र व शुक्र पर कायम रहना असल ईमान है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और अल्लाह तआला ज़ालिमों के आमाल से बे ख़बर नहीं बल्कि वो उस दिन तक के लिये मुहलत दे देता है जिस दिन आँखें खुली की खुली रह जायेंगी। (सू0—इब्राहीम—42)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और उस बात के पीछे न पड़ो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।
(सू0—बनी इसराईल—36)

इरशादे बारी तआला है—
और हम उन्हें इसलिये मुहलत (ढील) देते हैं कि वो और गुनाह में पड़ें और उनके लिये मेरे पास ज़िल्लत का अज़ाब है।
(सू0—आले इमरान—178)

इरशादे खुदावन्दी है—
और अगर अल्लाह तआला लोगों को उनके जुल्म पर गिरफ़्त करता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़ता मगर उन्हें एक ठहराये हुये वायदे (मुक़रर वक़्त तक) मुहलत देता है फिर जब उनका वायदा आयेगा न एक घड़ी पीछे हटेंगे और न आगे बढ़ेंगे।
(सू0—नहल—61)

हमें हमेशा ये गुमान रखना चाहिये कि अल्लाह तआला के सिवा हमें

कोई भी नफ़ा या ज़रर (नुक़सान) नहीं दे सकता और हुक्मे इलाही के वगैर हमारा कोई भी भला नहीं कर सकता और अताये इलाही के वगैर हमें कोई भी नेअमत नहीं मिल सकती और हमारी मुसीबतों परेशानी या आफ़ियत (अमन चैन आराम) भी रब तआला की मर्ज़ी और क़ज़ा में है

और वो जिसे चाहता है उसे वही मिलता है और उसकी अता से ही हर बच्चे का रिज़क उसके वालिदैन् को मिलता है जिससे उसकी परवरिश होती है और हकीकत में हम अपनी जानों और मालों के सिर्फ़ अमीन (अमानतदार) हैं और हर चीज़ का असल मालिक सिर्फ़ अल्लाह तआला है और जो चीज़ हमें लोगों से हासिल होती है वो भी रब तआला के हुक्म से होती है।

और हमें चाहिये कि अपनी तमाम नेअमतों को अपनी ताक़त व कुव्वत की तरफ़ या किसी ग़ैर की तरफ़ या अपनी कोशिश व तदबीर या तिज़ारत की तरफ़ मन्सूब न करें बल्कि सिर्फ़ अपने रब की तरफ़ मन्सूब करें और कहें कि ये मेरे रब का फज़्लो करम है और तंगी व फ़राख़ी दोनों हालतों में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और सब्र व शुक्र पर कायम रहते हुये अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल पैरा हो जायें।

जब अल्लाह तआला हमें दुनियाँ की नेअमतों से महरुम रखे और हमारी मुसीबतों परेशानी में इज़ाफ़ा करे तो हमें चाहिये कि अल्लाह तआला पर मुकम्मल एदकाद (अक़ीदा, यकीन और भरोसा) रखें और हुस्ने ज़न के साथ गुमान करें कि अल्लाह तआला हमें सिराते मुस्तकीम पर चलाना चाहता है और अपनी बारगाह में मेरी इज़ज़त और मरातिब को बढ़ाना चाहता है और इन असबाब के ज़रिये मेरी इस्लाह कर रहा है जो हमारे लिये बाइसे ख़ैर है और हमें अल्लाह तआला का एहसान मन्द और शुक्र गुज़ार होना चाहिये कि अल्लाह तआला हमें दुन्यावी लज़्ज़ात से दूर रख कर हमें गुनाहों से महफूज़ रखना चाहता है और हमारी नेकियों का कसीर सवाब अता करना चाहता है और आख़िरत में मुक़र्बीन् के दरजात पर फ़ाइज़ करना चाहता है।

—: तवक्कुल :-

तवक्कुल का माना और मफहूम ये है कि अपनी जुबान के साथ—साथ अपने दिल से भी अल्लाह तआला की तौहीद का इक़रार करना और अल्लाह तआला पर कामिल (मुकम्मल) यकीन (भरोसा) रखने का नाम तवक्कुल है और अल्लाह तआला के हर हुक्म पर राजी रहना और अल्लाह तआला जिस हाल में भी रखे उस हाल पर साबित क़दमी रहना और सब्र व शुक्र पर इस्तिक़ामत पाने का नाम तवक्कुल है और कामिल ईमान के लिये तवक्कुल का होना शर्त है बग़ैर तवक्कुल के किसी का ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता और जिस शख्स के अन्दर तवक्कुल की सिफ़त पाई जाये तो वो कामिल ईमान वाला है और वो अल्लाह तआला का मुक़र्रब और महबूब बन्दा है और अल्लाह तआला तवक्कुल करने वाले शख्स से मुहब्बत करता है और उसे अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल होती है और तवक्कुल के सबब बन्दा उस मक़ाम पर फाइज़ होता है जहाँ उसका तआल्लुक़ रब तआला से जुड़ जाता है और उसकी दुआयें बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होती हैं और वो अल्लाह तआला के ग़ज़ब से महफूज़ रहता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह तआला के महबूब (बन्दे) हैं बेशक अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों से मुहब्बत करता है।
(सू०—आले इमरान—159)

इरशादे बारी तआला है—

अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम ईमान वाले हो।
(सू०—मायदा—23)

इरशादे खुदावन्दी है—

और अल्लाह तआला पर ही मोमिनों को भरोसा करना चाहिये।
(सू०—इब्राहीम—11)

तौहीद की बुनियाद तवक्कुल है यानी अल्लाह एक है जो तमाम जहानों का मालिक व ख़ालिक है और कायनात की हर एक चीज़ उसके हुक्म के ताबेअ है ज़मीनों और आसमानों में ज़र्रा बराबर भी

कोई चीज़ हरकत करती है तो उसे उसकी ख़बर है बग़ैर हुक्मे इलाही के कायनात में कोई भी चीज़ हरकत नहीं कर सकती वो ही तमाम ज़हानों को पालने वाला और उसके निज़ाम को चलाने वाला एक अकेला ख़ालिक व राज़िक है जो हर जानदार पर अपना फज़्लो करम करता है और उन्हें रिज़क अता फ़रमाता है इसलिये हमें चाहिये कि सिर्फ़ अल्लाह तआला पर ही तवक्कुल रखें क्योंकि वो ही ज़मीनों और आसमानों के तमाम ख़ज़ानों का मालिक है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों से उस माँ से भी ज़्यादा मुहब्बत और शफ़क़त करता है जो माँ अपने बच्चों से करती है इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला पर हम तवक्कुल रखें और अपने तमाम मामलात को रब तआला के सपुर्द कर दें चाहे अल्लाह तआला हमें ऐशो इशरत में रखे या मुसीबतों परेशानी या रंजो अलम में मुब्तिला रखे चाहे तो रिज़क दे चाहे तो रिज़क न दे चाहे तो भूका रखे चाहे तो सेर होकर खिलाये यानी हर हाल में अल्लाह तआला पर तवक्कुल रखें और अपने किसी भी हाल पर ग़मगीन न हों और न खुद को कभी मायूस करें बल्कि अपने रब पर भरोसा रखें क्योंकि वही पाक ज़ात है जो हमें तमाम मुश्किलात से निजात दिला सकती है और अपने रिज़क की तंगी के वक़्त परेशान न हों बल्कि रब तआला पर भरोसा रखें क्योंकि हर जानदार के रिज़क का वक़्त मुअ़इयन है जो वक़्त मुक़र्ररा पर उस तक ज़रूर पहुँचता है।

जो लोग अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) करते हैं वो अपनी दुन्यावी तमाम मुश्किलात से निजात पाते हैं और उनकी दुनियाँ व आख़िरत दोनों तवक्कुल के बाइस बेहतर हो जाती हैं और वो बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाते हैं और अज़ाबे इलाही से अमान पाते हैं और उन्हें सिराते मुस्तकीम की सआदत का शरफ़ हासिल होता है वो जन्नत के मुस्तहिक़ हो जाते हैं और जो शरख़्स दुनियाँ और दुनियाँ के असबाब पर तवक्कुल (भरोसा) करता है तो अल्लाह तआला उसे दुनियाँ से जोड़ देता है जो उसका किसी भी तरह का कुछ भी भला नहीं कर सकती क्योंकि अल्लाह तआला के सिवा कोई किसी का भला नहीं कर सकता इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम मामलात में हर मुमकिन कोशिश व तदबीर पर कायम

रहते हुये सिर्फ़ रब तआला पर तवक्कुल करें जैसा कि तवक्कुल करने का हमें हक़ है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और जो अल्लाह से डरे तो अल्लाह तआला उसके लिये निजात की राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क देगा जहाँ उसका गुमान भी न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह तआला उसे काफ़ी है। (सू०—तलाक़—2,—3)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स सबसे तआल्लुक तोड़कर अल्लाह तआला से तआल्लुक जोड़ता है तो अल्लाह तआला उसे हर मशक्कत में किफ़ायत करता है और उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है और उसे वहाँ से रिज़्क अता करता है जिस जगह से उसका गुमान भी नहीं होता और जो शख्स दुनियाँ से तआल्लुक जोड़ता है तो अल्लाह तआला उसे दुनियाँ के सपुर्द कर देता है। (शुअबुल ईमान—2/28)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अगर तुम अल्लाह तआला पर भरोसा करो तो वो तुम्हें इस तरह रिज़्क देगा जैसे परिन्दों को रिज़्क अता फ़रमाता है।
(मुस्नद अहमद—1/30)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो बन्दों से इज्जत तलब करता है तो अल्लाह तआला उसे ज़लील करता है। (कंजुल उम्माल—9/77)

आफ़ियत व मसाइबो आलाम में हर इन्सान की पहचान की जाती है कि इन दोनों हालतों में वो किस हद तक तवक्कुल पर खुद को कायम रखता है और हर इन्सान के लिये राहत व मशरत व अमन चैन अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत व आजमाइश हैं लेकिन इन तमाम हालातों में इन्सान के लिये साबित क़दमी रहना मुश्किल होता है और इन्सान समझता है कि हम पर अल्लाह तआला की बहुत ज़्यादा रहमत और मेहरबानी है जो हमें अल्लाह तआला ने बहुत ज़्यादा नेअमतों से नवाज़ा है और हमें आफ़ियत और मशरत

में रखा है लेकिन वो अपनी इन तमाम हालतों में अपनी आजमाइश को भूल जाता है और शैतान उसे बहकाता है जिसके बाइस वो अपने दिल में ये गुमान करता है कि ये सब कुछ मेरी मेहनत व मशक्कत और मेरी कोशिशों का नतीजा है और उसका नफ़्स उसे इस बात पर मुतमईन कर देता है और वो अल्लाह तआला पर तवक्कुल करना छोड़ देता है और वो दुनियाँ और उसके असबाब पर तवक्कुल (भरोसा) करता है और वो अल्लाह तआला के बजाय दुनियाँ से वाबस्ता हो जाता है और वो बहक जाता है और अपनी तमाम नेअमतों को अल्लाह तआला का अतिया गुमान नहीं करता और इस तरह वो अल्लाह तआला का ना शुक्र हो जाता है और अपने बेहतर हालातों पर वो तकब्बुर करने लगता है और वो गुनाहों की तरफ़ माइल हो जाता है और बड़ा गुनाहगार बन जाता है।

इसी तरह हर मुसीबतो परेशानी या रिज्क की तंगी या किसी बीमारी वगैराह में भी अल्लाह तआला की रहमत व आजमाइश होती है क्योंकि हर परेशानी इन्सान के गुनाहों का कफ़ारा है कि बन्दे के गुनाह उसकी परेशानियों के सबब मिटाये जाते हैं और उसकी आजमाइश की जाती है और अल्लाह तआला देखता है कि बन्दा अपनी तमाम परेशानियों में मुझ पर तवक्कुल रखता है या नहीं रखता और वो सब्र करता है या नहीं करता और अगर वो अपनी तमाम मुसीबतो परेशानी में सब्र पर कायम रहते हुये अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) रखता है तो वो अपनी आजमाइश में पास हो जाता है और इसके सबब उसकी बख़्शिश हो जाती है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम मामलात को अल्लाह तआला के सपुर्द कर दें और अपने इख़्तियार में कुछ भी न रखें और अपनी तमाम मुसीबतो परेशानी के लिये अपने रब से दुआ करें क्योंकि हमें हमारी परेशानियों से सिवाये रब तआला के कोई भी निजात नहीं दिला सकता और यही हमारे हक़ में बेहतर है हदीस पाक में है कि एक दिन का बुखार एक साल के गुनाहों का कफ़ारा है मज़कूरा हदीस से मालूम हुआ कि हर परेशानी अल्लाह तआला की रहमत है जिसके ज़रिये इन्सान के गुनाहों को मिटाया जाता है इसलिये हमें चाहिये कि आफ़ियत और मशररत के वक़्त भी अपने रब को याद रखें और तमाम नेअमतें जो हमें मयस्सर हुई हैं

उन नेअमर्तों को अल्लाह तआला का अतिया गुमान करें और इसी तरह मुसीबतो परेशानी रंजो अलम व रिज़्क की तंगी में भी अल्लाह तआला की रहमत गुमान करें और सब्र करें ताकि हमारे गुनाहों की बख्शिश हो और हमारी मगफिरत हो जाये और इन दोनो हालतों में अल्लाह तआला पर तवक्कुल रखें और अपनी तमाम परेशानियों में हर मुमकिन कोशिश और बेहतर तदबीरें करना न छोड़े जैसा कि किसी बीमारी में दवाई का इस्तेमाल करना ज़रूरी है इसी तरह अपने हर मामलात में अच्छी कोशिश और बेहतर तदबीर करना हम पर वाजिब है और इसके साथ-साथ सिर्फ और सिर्फ रब तआला पर तवक्कुल रखें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला अपने बन्दों को आजमाइश में डालकर उसकी जाँच करता है जिस तरह तुम में से कोई एक सोने को आग में डालकर जाँचता है तो उनमें से बाज़ कुन्दन और बाज़ उसमें कम दर्जे का सोना बनकर निकलता है और उनमें से बाज़ तो काले जले हुये होते हैं। (मुस्तदरक हाकिम—4/314)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है ऐ अल्लाह के बन्दो दवाई का इस्तेमाल किया करो बेशक अल्लाह तआला ने बीमारी और इलाज दोनो को पैदा फ़रमाया है। (सुनन अबी दाऊद—2/183)

हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तआला जब किसी शख्स की दो आँखें लेता है (यानी दुनियाँ में जो अन्धा होता है) तो सवाब के तौर पर अल्लाह तआला उसे जन्नत अता करने से कम पर राज़ी नहीं होता मज़कूरा हदीस मुबारका इस बात पर दलालत करती है कि इन्सान की दुन्यावी हर परेशानी में बेशुमार फ़ायदे हैं जो उसके लिये दुनियाँ व आख़िरत में भलाई व बेहतरी का सबब होते हैं और इन्सान का तवक्कुल उसके लिये राहतो मशरत व कामयाबी व कामरानी का बेहतरीन ज़रिया है पस हमें चाहिये कि जिस तरह कायनात की हर चीज़ उसके ताबैअ है उसी तरह हम भी पूरी तरह से अल्लाह तआला के हुक्म के ताबैअ हो जायें और अल्लाह तआला के फ़रमाबरदार बन्दे बन जायें और उसी पर भरोसा करें और

अल्लाह तआला हर तकलीफो परेशानी के बाद राहत देता है और हर परेशानी के सबब गुनाह मिटाता है और हर परेशानी पर सब्र के सबब अजर अता फरमाता है और अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने और उसके हर हुक्म पर राजी रहने के सबब अल्लाह तआला बेशुमार इनामात अता फरमाता है इसलिये हमें हर हाल में अल्लाह तआला पर ही तवक्कुल करना चाहिये चाहे कितनी भी मुश्किलात से हमें गुजरना पड़े क्योंकि हो सकता है थोड़ी सी परेशानी पर अल्लाह तआला पर हमारा तवक्कुल हमारी निजात व बख्शिश का जरिया बन जाये और वो हमसे खुश व राजी हो जाये क्योंकि अल्लाह तआला निहायत मेहरबान और बड़ा बख्शाने वाला रहीमो करीम है जो हमें हर तकलीफो परेशानी पर सब्र व तवक्कुल के सबब बहुत ज्यादा अजर व इनाम अता फरमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (सू0-इनशिराह-5,-6)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
क्या तुम चाहते हो कि तुम भटके हुये गधों की तरह हो जाओ कि तुम्हें कोई बीमारी न आये। (शुअबुल ईमान-7/164)

जब किसी बन्दे का मुकम्मल एतमाद (भरोसा) मख़लूक से मुनक़ताअ हो जाता है और अल्लाह तआला से वाबस्ता हो जाता है तो उस बन्दे पर अल्लाह तआला की बेशुमार रहमतों का नुजूल होता और उसे वो सब कुछ हासिल होता है जिसका वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता और उसे वो नेअमतें, व राहतें और मशरर्तें मयस्सर आती हैं जो उसके गुमान में भी नहीं होतीं फिर उसे न कोई ग़म रहता और न कोई परेशानी रहती और फिर वो अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल करता है और अल्लाह तआला का मख़सूस व मुकर्रब बन्द़ा बन जाता और दुनियाँ व आख़िरत में वो आला मक़ाम पर फाइज़ हो जाता है इसलिये हमें चाहिये कि अपने तल्ख़ व तुर्श हालातों और मुसीबतों परेशानी के वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) रखें क्योंकि अल्लाह तआला के सिवा कोई भी हमारे तल्ख़ व तुर्श हालातों में तबदीली नहीं ला सकता।

—: अल्लाह व रसूल की मुहब्बत :—

अल्लाह तआला बुलन्द व बाला है और उस पाक ज्ञात की तारीफ़ तमाम तारीफ़ों में अफ़ज़ल व आला है अगर तमाम इन्सान और तमाम जिन्न मिलकर भी रब तआला की तारीफ़ व तौसीफ़ करें तो उस पाक परवर दिगार की तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात कभी ख़त्म न होंगे और उनकी तमाम ज़िन्दगी ख़त्म हो जायेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

आप फ़रमां दीजिये अगर समुन्दर मेरे रब के कलिमात लिखने के लिये रोशनाई हों तो मेरे रब के कलिमात ख़त्म न होंगे और समुन्दर ख़त्म हो जायेंगे। (सू०—कहफ़—109)

इरशादे बारी तआला है—

वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माअबूद नहीं (हकीकी) बादशाह है हर ऐब से पाक है और सलामती देने वाला है अमन व अमान देने वाला हिफ़ाजत फ़रमाने वाला इज्जत व अज़मत देने वाला सल्तनत व किब्ररियाई वाला है। (सू०—हशर—23)

इरशादे खुदावन्दी है—

(ऐ मेहबूब मुकर्रम) आप फ़रमादें वो अल्लाह है जो एक है अल्लाह तआला सबसे बेनियाज़ है न उसकी कोई औलाद और न वो किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उसका हमसर है। (सू०—इख़लास)

अल्लाह तआला की मुहब्बत ईमान है और उससे बेहद मुहब्बत ईमान की जान और ईमान की कमाले इन्तिहा है और मुहब्बते इलाही के वग़ैर हर दिल मुर्दा है और उसका ईमान महज़ दिखावा है हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अपने रब और उसके प्यारे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से करे और तमाम हदों को पार करते हुये उनकी मुहब्बत में गुर्क हो जाये और हमेशा दुनियाँ की हर चीज़ की मुहब्बत पर अल्लाह व रसूल की मुहब्बत ग़ालिब रहे। अल्लाह व रसूल के हर हुक्म की इत्तेबाअ करना और हर हाल में अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार रहना ये अल्लाह व रसूल से मुहब्बत की दलील है और जो शख्स

अल्लाह तआला से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआला उस शख्स से उससे भी ज़्यादा मुहब्बत करता है और अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसके मक़ाम और मर्तबे को दुनियाँ व आख़िरत में बुलन्द फ़रमाता है और जो लोग अल्लाह व रसूल से मुहब्बत नहीं करते वो लोग बे ईमान हैं और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और जो लोग ईमान वाले हैं वो (हर एक से बढ़कर) अल्लाह तआला से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते हैं। (सू०—बक़राह—165)

इरशादे बारी तआला है—

वो (अल्लाह) उनसे मुहब्बत करता होगा और वो उस (अल्लाह) से मुहब्बत करते होंगे। (सू०—मायदा—54)

इरशादे खुदावन्दी है—

आप फ़रमादें अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुँबा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है तुम्हारी पसन्द के मकानात ये चीज़े अल्लाह व रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हैं तो इन्तज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना हुक्म (यानी अज़ाब) लाये और अल्लाह तआला फ़ासिकों (ना फ़रमानों) को हिदायत नहीं देता। (सू०—तौबा—24)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

बेशक अल्लाह तआला उस शख्स को भी देता है जिससे मुहब्बत करता है और उस शख्स को भी देता है जिससे मुहब्बत नहीं करता लेकिन ईमान सिर्फ़ उन लोगों को अता फ़रमाता है जिनसे मुहब्बत करता है। (शुअबुल ईमान—4 / 395)

अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि इन्सान अल्लाह व रसूल से मुहब्बत की तमाम हदों को पार कर जाये यही अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत है और अल्लाह तआला इन्सान को दुनियाँ में जिस हाल में भी रखे वो अपने उस हाल पर राज़ी व

खुश हो और अपने दिल में दुनियाँ की बड़ी से बड़ी नेअमतों की मुहब्बत पर अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को तरजीह दे और अपने दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत को सबसे ज़्यादा जगह दे क्योंकि इस दिल का असल मालिक रब्बुल आलमीन है जिसने इस दिल को बनाया है और अल्लाह तआला हमारा मालिक जो हमारी हयात से लेकर वफ़ात तक इस दरमियान में हमारी ज़रूरतों को फ़राहम करता है।

जब दुनियाँ में हम बहुत ज़्यादा मेहनत व मशक्कत उठाते हैं तब जाकर कुछ माल जमा कर पाते हैं और अपनी ज़रूरत के कुछ सामान फ़राहम करते हैं और मकानात की तामीर करते हैं तो ज़रा सोचो मकान की तामीर और कुछ सामान फ़राहम करने के लिये हम कितनी मेहनत व मशक्कत उठाते हैं तो क्या अल्लाह तआला की जन्नत और उसकी नेअमतें हमें वग़ैर कुछ किये मिल सकती हैं हरगिज़ नहीं मिल सकतीं जब तक कि हम अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत न करें और उनकी फ़रमाबरदारी करते हुये नेक अमल न करें और सच्ची मुहब्बत की दलील ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वो हमें भी पसन्द हो और जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द न हो वो चीज़ हमें भी ना पसन्द हो और सिर्फ़ वही काम करें जिन कामों को करने का अल्लाह व रसूल ने हमें हुक्म दिया है यही सच्ची मुहब्बत और असल ईमान है कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

और जितने ज़मीन में पेड़ हैं सब कलम हो जायें और समुन्दर उसकी स्याही और उसके पीछे सात समुन्दर और हों तब भी अल्लाह तआला की बातें ख़त्म न होंगी बेशक अल्लाह तआला इज़्ज़त व हिकमत वाला है। (सू०—लुक़मान—27)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

तुम में से कोई शरख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि तमाम चीज़ों से ज़्यादा अल्लाह व रसूल तुम्हें महबूब न हो।

(मुस्नद अहमद—3/207)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अल्लाह तआला से मुहब्बत करो क्योंकि वो तुम्हें नेअमतें अता करता है और मुझसे मुहब्बत करो क्योंकि अल्लाह तआला मुझसे मुहब्बत करता है। (मुस्तदरक हाकिम—3/150)

अल्लाह तआला की इबादत और बन्दगी में तब तक लज्जत नहीं आ सकती जब तक कि दिलों में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत न हो और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत के वगैर कोई भी दिल ईमान की हलावत (मिठास) नहीं पा सकता और न ही उसका ईमान कामिल हो सकता है और ईमान के कई दरजात होते हैं जिनमें सबसे आला दर्जा उसका होता है जिसके दिल में अल्लाह व रसूल की सबसे ज़्यादा मुहब्बत होती है।

हमें ये सोचना चाहिये कि दुनियाँ में हमारा वुजूद किसने कायम किया और किसने दुनियाँ में हमें तमाम नेअमतेँ अता की किसने हमारी भूक मिटाई और हमें खाना खिलाया और किसने हमारी प्यास बुझाई और हमें पानी पिलाया और किसने हमें कपड़ा पहनाया और हमें रहने के लिये घर अता किया और किसने हमें औलाद अता की और किसने हमारी ज़रूरतों को पूरा किया किसने हमारे लिये जन्नत और उसकी नेअमतेँ तैयार कीं तो हमें पता चलता है सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरे रब ने ये सब कुछ हमारे लिये किया है तो हमें इस बात पर गौर करना चाहिये कि मेरे मालिक मेरे रब ने मेरे लिये इतना कुछ किया है तो हमें भी चाहिये कि हम उसके फ़रमाबरदार बन्दे बनें और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत करें और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से अपने दिलों को मुनव्वर करें।

मेरा रब अगर चाहता तो दुनियाँ में आने से कबूल या फ़ौरन बाद हमें मौत दे देता लेकिन उसने हमें ज़िन्दगी अता की और अपने रहमो करम के साये में ज़िन्दा रखा हम उस रब तआला की रहमत और उसके तमाम एहसानात का कभी हक़ अदा नहीं कर सकते लेकिन उससे बेइन्तिहा मुहब्बत व उसकी फ़रमाबरदारी करके उसके बन्दे होने का सबूत पेश कर सकते हैं और हमेशा अपने रब को अपना मालिक और खुद को उसका बन्दा और गुलाम तसव्वुर करें और अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह व रसूल की मुहब्बत और उनकी फ़रमाबरदारी में सर्फ़ कर दें और हुक्मे इलाही के ताबैअ रहें यही असल बन्दगी है इसलिये हमें चाहिये अपने प्यारे मुस्तफ़ा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म और सुन्नतों को अपने अमल में लायें और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के

हर हुक्म को अल्लाह तआला का हुक्म जानें क्योंकि अल्लाह व रसूल बाहम जुदा नहीं और ना ही उनकी मुहब्बत जुदा है अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अपने नूर से पैदा फरमाया और नूर आपस में जुदा नहीं होता हर चीज़ का साया होता है लेकिन नूर का साया नहीं होता है इसलिये मेरे मुस्तफा रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के जिस्म अक़दस का साया नहीं था क्योंकि आप सरापा नूर थे रब तआला ने कलमये तइयब में ये बात वाज़ेह कर दी कि मेरे महबूब को कोई हमसे जुदा गुमान न करे यानी ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह इस कलमे में अल्लाह तआला ने फरमाया—नहीं है कोई माअबूद सिवाये अल्लाह के मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह तआला ने अपने और अपने महबूब के नाम के बीच में व या और का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया ताकि कोई मेरे महबूब को हमसे जुदा गुमान न करे बल्कि अपने नाम के साथ अपने महबूब का नाम जोड़ दिया।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने रसूल की इताअत को अपनी इताअत और हुज़ूर की बैत को अपनी बैत और हुज़ूर की अज़्ज़ियत (तकलीफ़) को अपनी तकलीफ़ करार दिया इसलिये हमें चाहिये कि हम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फरमाबरदारी करें जिनके सबब और तवस्सुल से हमें दीन इस्लाम मिला और इन्हीं के सद्के और तुफ़ैल से हमें बख़्शिश और जन्नत मिलेगी और हमें चाहिये कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अपने रब और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से करें और अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें ताकि हम अल्लाह तआला के नेक बन्दे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सच्चे उम्मती होने का शरफ़ पायें और दुनियाँ व आख़िरत में कामयाबी व कामरानी की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हाने की सआदत हमें नसीब हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

(ऐ महबूब) आप फरमा दें अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबाअ करो अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फरमा देगा और अल्लाह तआला निहायत बख़्शाने वाला मेहरबान है। (सू०—आले इमरान—31)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

कोई बन्दा उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके अहल व अयाल और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ। (सही मुस्लिम—1/49)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो कोई गुनाह उसे नुकसान नहीं देता। (दुर्रे मन्सूर—1/261) (यानी जो गुनाह अंजाने में या ना चाहते हुये भी या शैतान के वसवसे के बाइस सरज़द हो जाते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें दर गुज़र फरमा देता है)

हज़रत गौसुल आजम अब्दुल कादिर जीलान (रज़ि०) फरमाते हैं कि सिर्फ अल्लाह तआला की जानिब नज़र रखो जो तुम्हारी तरफ नज़रे करम किये हुये है और उसी की तरफ मुतवज्जै रहो जिसकी तवज्जौ तुम्हारी तरफ है और उसी से मुहब्बत करो जो तुमसे मुहब्बत करता है और अपना हाथ उसी के हाथ में दो जो तुम्हें गिरने से बचाता है और जो तुम्हें जहालत की तारीकियों से निकालकर हलाकत से महफूज़ रखता है और जो तुम्हें बदगुमानियों से निजात देता है और बहुत ज़्यादा बुराइयों का हुक्म देने वाले नफ़स से रिहाई अता करता है और जो तुम्हें बेशुमार नेअमतों से नवाज़ता है और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करता है तो बताओ तुम दुनियाँ की मशगूलियत में कब तक नादान बने रहोगे और अल्लाह तआला से कब तक ऐराज़ करते रहोगे और कब तक ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ में आखिरत से गाफिल रहोगे और कब तक तुम्हारा तआल्लुक खुदा के सिवा गैरों से कायम रहेगा गौर करो कि तुम कहाँ हो और तुम्हारा और सारे जहान का तख़लीक (पैदा) करने वाला कौन है वही अब्बल और वही आखिर है और उसी की तरफ सब को लौटना है और उसके सामने हाज़िर होना है और हर शै: उसके कब्ज़े कुदरत में हैं और उसकी अज़मत व शान बहुत बुलन्द व बाला है

—: रज़ाये इलाही :—

अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहना और उसकी हर अता पर उसके शुक्र गुज़ार रहना ये मोमिन की अलामत है और हर इन्सान पर लाज़िम है कि अपने तमाम मामलात में अपने रब की रज़ा का मुतलाशी और तालिब रहे और हुक्मे इलाही के मुताबिक़ अमल करे यही उसके हक़ में सबसे बेहतर और बाइसे ख़ैर है और यही निजात का रास्ता है जो उसे गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर सिराते मुस्तकीम पर ले आता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

तो मैं डराता हूँ उस आग से जो भड़क रही है बदबख़्तों के लिये जिसने झुठलाया और मुँह फेरा और परहेज़गारों को इस आग से बहुत दूर रखा जायेगा जो अपना माल देता है पाक साफ़ (सुथरा) और किसी पर उसका एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाये वो तो सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है और बेशक़ अनक़रीब वो राज़ी हो जायेगा। (सू०—लैल—14—21)

इरशादे बारी तआला है—

और अपने रब की पाकी बयान करो और सबसे टूटकर उसी के हो रहो (सू०—मुज़म्मिल—8)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अल्लाह तआला फ़रमाता है जो मेरी कज़ा (हुक्म) पर राज़ी नहीं और जो मेरी अता पर मेरा शुक्र गुज़ार नहीं उसे चाहिये कि मेरे सिवा कोई दूसरा खुदा तलाश कर ले। (शुअबुल ईमान—1/218)
(तारीख़ इब्ने असाकर—6/128)

जो बात मर्ज़ी व ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ हो उस पर राज़ी रहना और सब्र करना और फराख़ी (खुशहाली) के वक़्त अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना ये मोमिन का आला मक़ाम है और हर नेक अमल जैसे रोज़ा, नमाज़, ज़कात, सद्का ख़ैरात, दीनी तबलीग़ हज वगैराह दीगर तमाम नेक अमल जो सिफ़ रब तआला की रज़ा हासिल करने के लिये किये जाते हैं तो वो तमाम अमल बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होते हैं और अल्लाह तआला उनसे राज़ी होता है और उनके लिये बड़ा सवाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह कराने का और जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे। (सू०—निसा—114)

इरशादे बारी तआला है—

और जो तुम ज़कात देते हो (सिर्फ़) अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुये तो उन्हीं के दूने हैं। (सू०—रुम—39)

इरशादे खुदावन्दी है—

और खाना खिलाते हैं उस (अल्लाह) की मुहब्बत में मिस्कीन और यतीम को (और) उनसे कहते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये खाना देते हैं तुमसे कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख्त है तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन (यानी कयामत) के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन्हें उनके सब्र पर जन्नत और रेशमी कपड़े (इसके) सिले में दिये जायेंगे (और वो) जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाये (बैठे और लेटे) होंगे ना उसमें धूप देखेंगे न सर्दी और उन (जन्नत के दरख़्तों) के साये उन पर झुके होंगे और गुच्छे झुकाकर नीचे कर दिये जायेंगे। (सू०—दहर—8,—14)

ईमान की मज़बूत रस्सी अल्लाह तआला की मुहब्बत और उसकी रज़ा है इसलिये हमें चाहिये कि इस रस्सी को हर हाल में हमेशा थामे रहें ताकि हमारा ईमान हमेशा सलामत रहे और हमारे क़दम कभी राहे खुदा से डगमगा न पायें अल्लाह तआला हमें दुनियाँ में किसी हाल में भी रखे उसके हर हुक्म की इत्तेबाअ करना और उसकी रज़ा पर राज़ी रहना और खुलूस दिल से अल्लाह तआला को अपना मालिक व मौला और खुद को बन्दा व गुलाम तसलीम करना और अपनी शीरी व तल्ख़ी और परेशानी व खुशहाली इन तमाम हालतों में अपने रब से खुश व राज़ी रहना और सच्चे दिल से उसका इज़हार करना अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत बड़ा मक़ाम है और अल्लाह तआला उन बन्दों को चुन लेता है जिनका हर काम रज़ाये इलाही होता है और जो हर मुसीबतो परेशानी के

वक्त अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें भलाई और हिदायत अता फ़रमाता है और क़यामत के दिन राहतो मशरत और अमनो अमान अता फ़रमायेगा और उन्हें बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल करेगा इसलिये हमें चाहिये कि हम पर कितनी ही बड़ी मुसीबतों परेशानी हो या रिज़क की तंगी या कोई बीमारी हो इन तमाम हालतों में सब्र करें और अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और कहें ऐ मेरे रब तू राज़ी हो जा चाहे मुझे इससे भी ज़्यादा परेशानी दे दे और अपने रब से अपनी परेशानी पर खुशी का इज़हार करें जिस तरह हम आफ़ियत व फ़राख़ी के वक्त या किसी नेअमत के मिलने पर खुश होते हैं और जो हमें अपने नसीब से मिले उस पर क़नाअत करें ताकि अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो जाये और हम बदले में बेशुमार अज़र (सवाब) पायें।

इन्सान की दुन्यावी ज़िन्दगी में चाहे जैसे भी असबाब हों उसके लिये सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी है कि अल्लाह तआला को राज़ी रखे और हर मामलात में उसकी रज़ा तलाश करे और उसे हासिल करने के लिये हर मुमकिन कोशिश व बेहतर तदाबीर का करना बन्दे के लिये दुनियाँ व आख़िरत में सआदत का मक़ाम और नेक बख़्ती की अलामत है और अपनी मसाइबों तक़लीफ़ में रब तआला की रहमत से ना उम्मीद न हो बल्कि सब्रो इस्तिक़ामत के ज़रिये अपने रब को राज़ी करे और मुक़म्मल भरोसा रखे कि अन्नकरीब रब तआला हमारी परेशानियों और तक़लीफ़ों से हमें ज़रूर निजात अता फ़रमायेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वही तमाम मख़लूक में बेहतर है (और) उनका सिला उनके रब के पास है बसने के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहें उनमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे अल्लाह तआला उनसे राज़ी और वो अल्लाह तआला से राज़ी ये उसके लिये है जो अपने रब से डरे। (सू०—बइयना—7,-8)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
उस शख़्स के लिये खुशख़बरी है जिसको इस्लाम की हिदायत दी गई और ज़रूरत के मुताबिक़ रिज़क दिया गया और वो उस पर राज़ी हो। (अल बिदाया वननिहाया—5/94)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो शख्स अल्लाह तआला की तरफ से मिलने वाले थोड़े से रिज्क
पर राजी होता है तो अल्लाह तआला उस शख्स के थोड़े से अमल
पर राजी होता है। (मुस्नद अहमद—6/19)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
रोज़े कयामत अल्लाह तआला कुछ लोगों को ये मर्तबा अता करेगा
कि उड़ते हुये जन्नत में दाखिल होंगे फरिश्ते उनसे पूछेंगे कि तुम
लोग मीज़ान (तराजू) और पुल सिरात देख चुके तो वो कहेंगे नहीं
तो फिर फरिश्ते पूछेंगे कि तुम्हें ये मर्तबा किस अमल के बदले में
मिला है तो वो कहेंगे कि हम गुनाहों से दूर रहते थे और अल्लाह
तआला ने हमें जो रिज्क दिया हम उस पर राजी रहते थे।
(कीमयाये सआदत—900)

हर इन्सान के लिये सबसे बेहतर ये है कि अपनी तमाम उम्र अपने
रब को राजी करने में सर्फ कर दें और अपने रब की रज़ा हासिल
करना अपनी ज़िन्दगी का अहम मकसद बना लें और जब किसी
काम का इरादा करे तो उस काम के मुताअल्लिक गौर करे कि मेरे
इस काम को करने से क्या मेरा रब राजी होगा या नहीं और जब
नतीजा ये पाये कि मेरे इस काम को करने से मेरा रब राजी होगा
तो उस काम को अच्छी तरह अंजाम दे और नतीजा ये पाये कि मेरे
इस काम को करने से मेरा रब नाराज़ होगा तो उस काम को
हरगिज़ न करे इसी में हमारी भलाई व ख़ैर और बेहतरी है।

इसी तरह जब कोई शख्स किसी मुसीबतो परेशानी
में मुब्तिला हो तो वो उस पर सब्र करे क्योंकि सब्र के बाइस
अल्लाह तआला उस शख्स से खुश और राजी होगा और अगर वो
सब्र न करे तो वो ख़सारा उठायेगा क्योंकि सब्र न करने सबब
अल्लाह तआला उससे राजी न होगा और सब्र के बाइस मिलने
वाले बेशुमार अज़र से वो महरूम रहेगा और वो खुद अपनी मुसीबतो
परेशानी से निजात भी नहीं पा सकता क्योंकि किसी इन्सान के
इख्तियार में नहीं है कि वो तमाम आफ़तों और मुसीबतों परेशानी से
खुद को महफूज़ रख सके क्योंकि तमाम चीज़े रब तआला के दस्ते
कुदरत और उसके इख्तियार में हैं और वो जिसे जब चाहे किसी

परेशानी में मुब्तिला कर दे जिसे जब चाहे परेशानियों से निजात दे दे और उसे ऐशो इशरत और नेअमतों से मालामाल कर दे तो उसके लिये बेहतर यही है कि अपनी मुसीबतों परेशानी में सब्र के ज़रिये अपने रब को राज़ी करे और हर इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वो अपने तमाम मामलात में रब तआला की रज़ा को मकसूद रखते हुये अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अमल पैरा हो और हर हाल में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहे और जो लोग अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ करते हैं और उस पर राज़ी रहते हैं तो अल्लाह तआला उनसे राज़ी रहता है और यही लोग दुनियाँ व आखिरत में कामयाब होते हैं और बेशुमार इनामात के मुस्तहिक होते हैं और अज़ाबे इलाही से महफूज़ रहते हैं और जो लोग अल्लाह व रसूल के हुक्म की नाफ़रमानी करते और अपने रब को नाराज़ करते और आखिरत के ख़ौफ़ बे परवाह होते हैं और रब के हुक्म व रज़ा पर राज़ी नहीं रहते वही लोग अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होंगे और उनके लिये निहायत सख़्त अज़ाब है

तमाम फ़राइज़ों की अदायगी और हर नेक अमल में अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है अगर किसी शख्स ने अपने फ़राइज़ों की अदायगी व नेक आमालों में अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करना मकसूद नहीं रखा बल्कि अपने नेक आमालों में किसी ग़ैर की रज़ा को हासिल करना मकसूद रखा या दिखावा किया तो उसके तमाम आमाल अकारत हो जाते हैं और उसके आमाल उसे कोई भी नफ़ा नहीं देते और उसकी सारी मेहनत ज़ाया हो जाती है जो उसने उन आमालों में करने में की थी और उन आमालों के बाइस मिलने वाले अज़र से वो हमेशा महरुम रहेगा।

जिस काम को करने से हमारा रब हमसे नाराज़ हो जाये वो काम बुरा है और जिस काम को करने से हमारा रब हमसे राज़ी हो वो काम चाहे छोटा ही क्यों न हो लेकिन अल्लाह तआला के नज़दीक वो बड़े अज़र का मुस्तहिक होता है इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ करें और वही काम करें जो अल्लाह व रसूल को पसन्द हो और अपने हर अमल में सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा को शामिल करें ताकि हमारा रब हमसे

राज़ी हो जाये और कोई भी काम ऐसा न करें जिसके बाइस मेरा रब हमसे नाराज़ हो जाये और अल्लाह तआला हमें दुनियाँ में जिस हाल में भी रखे हम उस हाल पर अपने रब से राज़ी रहें यही हमारे लिये सबसे बेहतर है और यही तमाम आफ़तों व मुसीबतों और क़ब्र व क़यामत के सख़्त दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ जन्नत का रास्ता है इसलिये इसी को तरज़ीह और अहमियत दें और कसरत से नेक अमल करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का।
(सू०—निसा—59)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पायी। (सू०—अहज़ाब—71)

इरशादे बारी तआला है—
और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने उसके लिये जहन्नुम की आग है जिसमें वो हमेशा रहेंगे। (सू०—जिन्न—23)

इरशादे खुदावन्दी है—
और न किसी मोमिन मर्द को (ये) हक़ हासिल है और न किसी मोमिन औरत को कि जब अल्लाह तआला और उसका रसूल किसी काम का फ़ैसला (या हुक्म) फ़रमादे तो उनके लिये अपने (इस) काम में (करने या न करने) का कोई इख़्तियार हो (और) जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करता है वो यकीनन खुली गुमराही में भटक गया। (सू०—अहज़ाब—36)

और हमें चाहिये कि अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अपने ज़ाहिर व बातिन से फ़ना कर दें और तमाम हरकात व सकनात, ग़म व खुशी, मर्ज़ व सेहत, आराम व तकलीफ़ यानी हर हाल में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और सब्र व इस्तिक़ामत और शुक्र पर कायम रहें

—: तौबा की फज़ीलत :—

अल्लाह तआला का रहमो करम और एहसान है कि जिसने हम तमाम मुसलमानों को तौबा का तोहफ़ा अता किया जो इन्सान के गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया है इन्सान गुनाह करने के बाद जब अपनी जुबान और खुलूस दिल से बारगाहे खुदावन्दी में तौबा करता है तो अल्लाह तआला जो ग़फ़ूरुरहीम है वो अपने बन्दों के तमाम गुनाहों को बख़्श देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
बेशक मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ उस शख्स को जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया और हिदायत पर (फ़ायम) रहा। (सू०—ताहा—82)

इरशादे बारी तआला है—
और वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है और गुनाहों को माफ़ करता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।
(सू०—शूरा—25)

इरशादे खुदावन्दी है—
ये किताब का उतरना अल्लाह तआला की तरफ़ से है जो इज्जत वाला इल्म वाला है गुनाह बख़्शने वाला तौबा कुबूल करने वाला सख्त अज़ाब देने वाला बड़े इनाम देने वाला उसके सिवा कोई माअबूद नहीं उसी की तरफ़ फिरना है। (सू०—मोमिन—3)

अगर अल्लाह तआला इन्सान के गुनाहों के सबब उसे सज़ा देता तो दुनियाँ में चन्द लोगों के सिवा हर इन्सान को सज़ा मिलती क्योंकि शैतान हमें हर वक़्त वसवसों के ज़रिये हमें गुनाहों की तरफ़ राग़िब करता है और हमारा नफ़्स हमें बुरी ख़्वाहिसात की तरफ़ माइल करता है और हमसे कई तरह के छोटे बड़े सगीरा व कबीरा गुनाह सरज़द हो जाते हैं लेकिन जब कोई शख्स गुनाह का इरतिकाब करता है फिर वो अपने गुनाह पर नादिम (शर्मिन्दा) होता और अपने रब की बारगाह में रोता और गिड़गिड़ाता और अल्लाह तआला से माफी तलब करता और दोबारा गुनाह न करने का अहद करता है तो अल्लाह तआला उसके गुनाह को बख़्श देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान करो और उससे बख्शिश माँगो वो बहुत तौबा कुबूल करने वाला है। (सू०—नसर—3)

इरशादे बारी तआला है—

और जो बुराई करे या अपनी जान पर जुल्म करे फिर अल्लाह तआला से बख्शिश चाहे तो वो अल्लाह तआला को बख्शाने वाला मेहरबान पायेगा। (सू०—निसा—110)

इरशादे खुदावन्दी है—

बेशक वो खूब तौबा करने वालों को बख्श देता है।

(सू०—बनी इसराईल—25)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

नदामत (शर्मिन्दगी) ही तौबा है। (मुस्नद अहमद)

एक और रिवायत में है कि जब अल्लाह तआला ने इब्लीस (शैतान) पर लानत फरमाई तो शैतान ने मुहलत माँगी तो अल्लाह तआला ने उसे कयामत तक के लिये मुहलत दे दी तो इब्लीस ने कहा कि जब तक इन्सान के जिस्म में रूह है मैं उसमें से नहीं निकलूँगा यानी उसे बहकाता रहूँगा और गुनाहों की तरफ़ राग़िब करता रहूँगा ताकि इन्सान कसीर (बहुत ज़्यादा) गुनाहों का मुरतकिब (मुजरिम) हो जाये तो अल्लाह तआला ने फरमाया मुझे अपनी इज्जत व जलाल की कसम जब तक इन्सान के जिस्म में रूह है मैं उसकी तौबा कुबूल करता रहूँगा। (मुस्नद अहमद—3/29)

जन्नत के आठ दरवाज़े हैं जो खुलते और बन्द होते हैं लेकिन तौबा का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता जब तक कि सूरज मगरिब (पश्चिम) से न निकलने लगे (यानी कयामत के करीब ये दरवाज़ा बन्द हो जायेगा) अल्लाह तआला चाहता है कि मेरे गुनाहगार बन्दे मुझसे माफी तलब करें ताकि मैं उन्हें माफ़ कर दूँ और अल्लाह तआला तौबा करने वालों को पसन्द फरमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

बेशक अल्लाह तआला बहुत तौबा करने वालों और पाक रहने वालों को पसन्द फरमाता है। (सू०—बकराह—222)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
तुम में से बेहतरीन शख्स वो है जो गुनाहों में मुब्तिला होने की
सूरत में तौबा करे। (शुअबुल ईमान—5/410)

बाज़ लोग ये ख्याल करते हैं कि हमारे गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि
शायद ही अल्लाह माफ़ करे लेकिन असल में ऐसा बिल्कुल नहीं है
और इस तरह का गुमान रखना कम इल्मी व अल्लाह तआला पर
मुकम्मल एतकाद न होने की दलील है इन्सान को अल्लाह तआला
की रहमत से कभी मायूस व ना उम्मीद नहीं होना चाहिये बल्कि
अल्लाह तआला के लिये हमेशा हुस्ने ज़न व अच्छा गुमान रखे चाहे
इन्सान के गुनाह समुन्दर के झाग के बराबर हों पस सच्चे दिल से
तौबा करे और मुस्तक़बिल में गुनाह न करने का अहद करे।

और अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम
की फरमाबरदारी करे और ऐसे काम करे जो अल्लाह व रसूल को
पसन्द हों और अल्लाह व रसूल के ना पसंदीदा कामों से ऐराज़
करे और अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत करे और अपने तमाम
अमल रब तआला की रज़ा के लिये करे और हर हाल में अपने रब
को राज़ी रखे और किसी भी सूरत में अपने रब को नाराज़ न करे
और हर बुराई और गुनाह के इरतिकाब से खुद को मामून (महफूज़)
रखने के लिये हर मुमकिन कोशिश करे तो अल्लाह तआला उसके
तमाम गुनाहों को बख़्श देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

(ऐ महबूब) आप फरमा दें ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर
ज्यादती की है वो अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद न हों
बेशक अल्लाह तआला उनके तमाम गुनाहों को बख़्श देगा बेशक
वही बख़्शाने वाला मेहरबान है और अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करो
और उसके हुज़ूर गर्दन रखो कब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब आये
फिर तुम्हारी मदद न हो। (सू0—जुमर—53,—54)

इरशादे बारी तआला है—

क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा
कुबूल करता है। (सू0—तौबा—104)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अगर तुम गुनाहों का इरतिकाब (जुर्म) करो हत्ता कि तुम्हारे गुनाह आसमान तक पहुँच जायें फिर तुम नादिम (शर्मिन्दा) हो और अल्लाह तआला से तौबा करो तो अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा कुबूल फ़रमायेगा। (सुनन इब्ने माजा—323)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

जब कोई शख्स गुनाहों से तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि बन्दे के सारे गुनाहों को भूल जाओ ताकि कोई उसका गवाह न रहे। (कीमयाये सआदत—645)

जब इन्सान गुनाह करता है तो उस वक़्त वो गुनाहगार होता है लेकिन जब वो तौबा की तमाम शराइतो को अदा करता है तो उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होती है और वो फिर से मोमिन हो जाता है इन्सान को अपनी तौबा की कुबूलियत में शक नहीं करना चाहिये और तौबा की मक़बूलियत की कुछ निशानियाँ भी हैं जैसे बन्दा खुद को गुनाहों से दूर रखता हो और हर बुराई और गुनाह से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता हो और नेक अमल करता हो और दुनियाँ की थोड़ी सी चीज़ पर क़नाअत करता हो और अल्लाह तआला उसे जिस हाल में भी रखे वो अपने उस हाल पर राज़ी रहता हो और वो अपना हर अमल अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत के लिये करता हो और उसका दिल ख़ौफ़े खुदा से लरज़ता हो व उसकी आँखें अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में नम हो जाती हों और वो अपनी जुबान से अच्छे कलिमात कहता हो और वो अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इत्तेबाअ करते हुये सर्फ़ करता हो और ये तमाम बातें और सिफ़ात जिस शख्स के अन्दर पायी जायें तो समझो कि उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हो गयी है और वो गुनाहों से इस तरह पाक हो गया है जैसे उसने कभी कोई गुनाह किया ही न हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख्स की तरह है जिसका कोई गुनाह न हो। (सुनन इब्ने माजा—323)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जब कोई बन्दा गुनाह करने के बाद अल्लाह तआला से बख्शीश
तलब करता है तो अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाता है ऐ
फरिश्तो तुम गवाह हो जाओ मैंने इसे बख्श दिया।

(मुस्नद अहमद-2/492)

हदीस पाक में वारिद है कि तौबा इन्सान के गुनाहों को इस तरह
मिट्टा देती है जैसे पानी मैल को दूर कर देता है और इन्सान के
दिलों को भी लोहे की तरह जंग लग जाती है और तौबा करने से
वो जंग साफ हो जाती है इसलिये हमें चाहिये कि हम खुलूस दिल
से तौबा करें और हर बुराई से बाज़ रहें और गुनाहों से इजतिनाब
करें कहीं ऐसा न हो कि हमें मौत आ जाये और फिर हमें तौबा का
मौका न मिले और हम अंधेरी क़ब्र में क़यामत तक के लिये कैद
कर दिये जायें और वहाँ हमारे गुनाहों के सबब दर्दनाक अज़ाब में
हम मुबिला कर दिये जायें और हमारे ऊपर दहकती आग और
साँप और बिच्छू व कीड़े मकोड़े अज़ाब की शक्ल में मुसल्लत कर
दिये जायें और हम तन्हाई और अंधेरे में चीखते चिल्लाते रहें जहाँ
हमारी कोई भी मदद न कर सकेगा सिवाय हमारे नेक आमाल के।

क्या हमारा नाजुक बदन उस आग की गर्मी व शिद्दत व साँप और
बिच्छुओं व कीड़े मकोड़ों का हमारे जिस्म को काटना और खाना
बर्दास्त कर सकेगा जो दुनियाँ की थोड़ी सी तेज धूप व गर्मी और
काँटे की चुभन को बर्दास्त नहीं कर सकता इसलिये हमें चाहिये कि
अल्लाह तआला के गुज़ब से डरें और सच्चे दिल से तौबा करें और
आइन्दा गुनाह न करने का मज़बूत कसद (पक्का इरादा) करें और
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के वसीले से अल्लाह तआला से
माफी तलब करें ताकि हमारी तौबा जल्द कुबूल हो और कसरत से
नेक अमल करें और अल्लाह व रसूल के फरमाबरदार बन जायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

जब वो अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब (वो) तुम्हारे हुज़ूर
हाज़िर हों और फिर अल्लाह तआला से माफी चाहें और रसूल
उनकी शफ़ाअत फरमायें तो वो जरूर अल्लाह तआला को बहुत
तौबा कुबूल करने वाला बहुत मेहरबान पायें। (सू0-निसा-64)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जिसने अस्तग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया तो अल्लाह तआला उसकी तमाम मुश्किलों में आसानी और हर ग़म से आज़ादी और बे हिसाब रिज़्क अता फ़रमायेगा। (सुनन अबी दाऊद—2/122)

कुछ गुनाह ऐसे होते हैं जिनका तआल्लुक अल्लाह तआला के हुक्क से होता है जैसे रोज़ा, नमाज़ हज, ज़कात शराब नोशी, जुआ, जिना, बदनिगाह वग़ैराह और कुछ गुनाहों का तआल्लुक बन्दों के हुक्क से होता है जैसे चोरी, ग़ीबत, चुगली, माँ बाप या किसी मुसलमान को अज़िज़त (तकलीफ़) देना, बच्चों और वीबी के हुक्कों को अदा न करना, यतीम का माल खाना, किसी की अमानत में ख़्यानत, किसी का कर्ज़ अदा न करना, किसी की बेईमानी करना, किसी पर जुल्म व ज़्यादती करना वग़ैराह।

अल्लाह तआला के हुक्क से तआल्लुक रखने वाले गुनाहों को तौबा के बाद अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देता है लेकिन जो गुनाह बन्दों के हुक्क से तआल्लुक रखते हैं उन्हें अल्लाह तआला माफ़ नहीं करता जब तक कि वो माफ़ न करें जिनके हुक्क हमारे जिम्मे हैं इसलिये हमें चाहिये कि अगर हमने किसी के साथ जुल्म व ज़्यादती की है या किसी का हम पर कोई हक़ बाकी है तो पहले उससे माफ़ी माँगे और अगर किसी का हम पर कोई कर्ज़ बाकी है तो उसे अदा करें और सच्चे दिल से अल्लाह तआला से माफ़ी तलब करें और कसरत से तौबा करते रहें ताकि जाने अनजाने या भूल से जो हमसे गुनाह हो जायें तो उन गुनाहों को अल्लाह तआला माफ़ करदे और चलते फिरते उठते बैठते तौबा अस्तग़फ़ार करते रहें और इस तरह की तौबा की सआदत जिसको हासिल हो जाये वो जहन्नुम की आग से महफूज़ रहेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

बेशक जिन्होंने ईज़ा (तकलीफ़) दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फिर तौबा न की उनके लिये आग का अज़ाब है बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं यही बड़ी कामयाबी है। (सू0—बुरुज—10,—11)

कुछ गुनाह ऐसे भी होते हैं कि जिसकी सज़ा उसके करने वाले को जरूर मिलेगी चाहे वो शख्स नमाज़ी परहेज़गार क्यों न हो और चाहे कितने ही नेक अमल करे लेकिन उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कभी कुबूल न होगी और उसे सख़्ततर अज़ाब भुगतने होंगे और बिल आख़िर वो जहन्नुम में दाख़िल किया जायेगा।

जैसे वो लोग जिन्होंने इमाम आली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन अलैहस्सलाम और उनके अहले खानदान और दीगर तमाम लोगों पर करबला में कहर बरपा किया और उन पर निहायत जुल्म व ज़्यादती व ख़ूरेजी की और उनका ये फ़ेअल हुकूमत और इक्तिदार के बाइस शहीदाने करबला पर निहायत जुल्म था जो अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सख़्त नाराज़गी और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का सबब बना और वो तमाम लोग दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला किये जायेंगे और उन्हें इन्तिहाई सख़्तियों व परेशानियों से गुज़रना होगा और वो जहन्नुम का ईधन बनेंगे और उसमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे हालाँकि वो लोग मुसलमान थे और इस्लाम के अरकानो को भी अदा करते थे लेकिन उनके तमाम नेक अमल उन्हें कोई नफ़ा न दे सकेंगे और उनके तमाम अमल ज़ाया हो जायेंगे।

इसी तरह जो लोग अल्लाह व रसूल की शान में गुस्ताख़ी करते या बदगुमानी करते हैं तो उनकी नमाज़ें उनके रोज़े और उनकी शबे बेदारी और दीगर तमाम नेक अमल उन्हें कोई फ़ायदा न दे सकेंगे और वो जहन्नुम में दाख़िल किये जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि हम इस तरह के अज़ीम गुनाहों से बचें बल्कि उनका तसव्वुर भी अपने दिलों में न लायें और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ताज़ीमो अदब और एहताराम के साथ साथ उनके अहले बैत अतहर और तमाम आले रसूल और औलियाएकिराम व बुजुर्गानेदीन और दीगर वो नेक लोग जिनसे अल्लाह व रसूल मुहब्बत करते हैं इन तमाम लोगों के मुताअल्लिक़ बदगुमानी न करें और छोटी से छोटी भी गुस्ताख़ी करने से बचें क्योंकि कुछ गुनाह और बदगुमानियाँ ऐसी होती हैं जिनकी तौबा नहीं सिर्फ़ सज़ा है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

ऐ ईमान वालो (किसी भी मामले में) अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो (कि कहीं रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की बे अदबी न हो जाये) बेशक अल्लाह तआला (सब कुछ) सुनने वाला और खूब जानने वाला है ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस गैब बताने वाले नबी की आवाज़ से और उनके हुजूर चिल्लाकर बात न करो जैसे तुम आपस में एक दूसरे से करते हो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे सारे आमाल अकारत (बर्बाद) हो जायें और तुम्हें ख़बर भी न हो। (सू०—हुजरात—1,—2)

मज़कूरा आयात से ये बात वाज़ेह हो गई कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की शान में छोटी से छोटी गुस्ताखी भी कुफ़्र है और अल्लाह तआला के नज़दीक सख़्त ना पसन्दीदा है और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का बाइस है क्योंकि अल्लाह तआला को ये ग़वारा नहीं कि मेरे महबूब की शान में कोई ज़र्ज़ बराबर भी गुस्ताखी या बे अदबी करे तो जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से सिर्फ़ ऊँची आवाज़ में बात करने से इन्सान के तमाम आमाल जाया (बर्बाद) हो जाते हैं तो ज़रा सोचो उन लोगों का हश्श क्या होगा जो लोग अपनी बद अकीदगी बद जुबानी और बद गुमानी के ज़रिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की शाने अक़दस में बे शुमार गुस्ताखियाँ करते हैं।

मज़कूरा आयते करीमा से मालूम हुआ सिर्फ़ ऊँची आवाज़ में बात करने से इन्सान के तमाम आमाल यानी रोज़ा, नमाज़, हज़, ज़कात, सद्का, ख़ैरात वगैराह सब अकारत (बर्बाद) हो जाते हैं और उसे ख़बर भी नहीं होती कि हमसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की गुस्ताखी का गुनाह हो गया है और इसमें हिकमत ये है कि अगर बन्दे को ख़बर हो जाये कि हमसे हुजूर की गुस्ताखी का गुनाह हो गया है तो वो अल्लाह तआला से उस गुनाह की माफ़ी तलब करेगा और वो बारगाहे खुदाबन्दी में रोयेगा और गिड़गिड़ायेगा और अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर्रहीम है जो अपने बन्दों की तौबा को कुबूल फरमाता है और उनके गुनाहों को बर्खा देता है इसलिये अल्लाह तआला गुस्ताखे रसूल को इस बात की ख़बर भी नहीं होने देता कि उससे हुजूर की गुस्ताखी का गुनाह हो गया है।

ताकि वो उस गुनाह के लिये मुझसे तौबा न करे और कुफ़्र की हालत में ही उसे मौत आये और फिर मैं उसे सख्त दर्दनाक अज़ाब दूँ तो वो शख्स कितना बदबख्त है कि जिसे अपने गुनाहों की ख़बर न हो और उसे तौबा भी नसीब न हो और तमाम गुस्ताख़े रसूल जहन्नुम में दाख़िल किये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
जो लोग रसूलुल्लाह को (अपनी बद अक़ीदगी, बद गुमानी और बद जुबानी के ज़रिये) अज़िज़त पहुँचाते हैं उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है। (सू०—तौबा—61)

गज़बये तबूक पर जाते हुये रास्ते में तीन मुनाफ़िकों में से दो आदमी बोले कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का ख़्याल है कि हम रोम पर ग़ालिब आ जायेंगे ये ख़्याल बिल्कुल ग़लत है और तीसरा शख्स ख़ामोश था मगर उनकी बात पर हंसता था तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने उन तीनों को बुलाकर पूछा तो वो बोले हम तो यँ हीं रास्ता काटने के लिये हंसी मज़ाक (दिल्ली) करते जा रहे थे तब अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें काफ़िर करार दिया।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया—

और ऐ महबूब अगर तुम उनसे पूछो तो वो कहेंगे कि हम तो सिर्फ़ (सफ़र काटने के लिये) बातचीत और दिल्ली करते थे आप फ़रमां दीजिये क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक करते हो (अब) तुम बहाने न बनाओ बेशक तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये। (सू०—तौबा—65,—66)

मज़कूरा आयते करीमा से ये बात वाज़ेह हुई कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के मुताल्लिक़ बद गुमानी बद अक़ीदगी या बद जुबानी गुनाहे अज़ीम और कुफ़्र है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की तौहीन या बेअदबी अल्लाह तआला की बेअदबी है और ये बात भी वाज़ेह हो गई है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के मुताल्लिक़ अगर कोई बद गुमानी या किसी तरह की गुस्ताख़ी करे और उसे सुनने वाला शख्स ख़ामोश रहे या हंसे और

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की हिमायत में कुछ न कहे तो वो भी उन्हीं में शामिल है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उन पर अल्लाह तआला की लानत है दुनियाँ और आखिरत में और अल्लाह तआला ने उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (सू०—अहज़ाब—57)

अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में कई मकामात पर अपने महबूब के आदाब बयान फ़रमाये हैं कि मेरे महबूब से ऊँची आवाज़ में बात न करो और उनके हुजूर जब पेश हों तो बड़े अदब व एहताराम से पेश हो और जब वो अपने हुजरे मुबारक में आराम फ़रमाँ हों तो उनके आने का इन्तज़ार करो और जब हुजूर के घर दावत पर बुलाये जाओ तो खाना खाकर फ़ौरन चले जाओ और वहाँ ज़्यादा देर तक न रुका करो और वो जो कुछ फ़रमायें उसे व ग़ौर सुना करो और मेरे महबूब को राइना न कहा करो व दीगर तमाम अदबो एहताराम और उनकी ताज़ीमो तकरीम का हमें हर हाल में सही अक़ीदा रखना चाहिये यही असल ईमान है और जिनके दिलों में हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और सही अक़ीदा नहीं तो वो मुसलमान ही नहीं हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

ऐ ईमान वालो (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अपनी तरफ़ मुतवज्जै करने के लिये) राइना मत कहा करो बल्कि (अदब से) यूँ अर्ज करो उन्जुरना (कि हुजूर हम पर नज़रे करम फ़रमाइये) कहा करो और पहले से वग़ौर सुना करो और काफ़िरो के लिये दर्दनाक अज़ाब है। (सू०—बकराह—104)

अगर किसी शख्स से भूले से या अंजाने में हुजूर की शान में गुस्ताख़ी हो जाये और वो सच्चे दिल से बारगाहे खुदावन्दी में माफ़ी तलब करे तो रब तआला उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है लेकिन जो लोग नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की शाने अक़दस में बद अक़ीदी बद जुबानी और बद गुमानी के ज़रिये

गुस्ताखी करते हैं और कुफ़्र की हदों को पार कर आगे बढ़ जाते हैं तो ऐसे लोगों की तौबा हरगिज़ कुबूल न होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

बेशक जिन लोगों ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया फिर वो कुफ़्र में बढ़ते गये उनकी तौबा हरगिज़ कुबूल नहीं की जायेगी और वही लोग गुमराह हैं। (सू0—आले इमरान—90)

अपने गुनाहों पर पशेमान होने और आइन्दा गुनाहों से बाज़ रहने और बुराइयों से इजतिनाब व ऐराज़ के अहद का नाम तौबा है पस खुलूस दिल से तौबा करो और आइन्दा गुनाह न करने का अहद करो क्योंकि जब अल्लाह तआला किसी के दिल को तौबा में सच्चा और ख़ालिस पाता है तो उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है।

—: जहन्नुम का बयान :—

जहन्नुम निहायत बुरी और दर्दनाक सख्त अज़ाब की जगह है अगर किसी शख्स को सिर्फ दूर से ही इसका मुशाहिदा करा दिया जाये तो उसकी ज़िन्दगी दुश्वार हो जाये और उसकी रातों की नींद चली और वो दुनियाँ की तमाम नेअमतों व लज़ज़तों को भूल जाये और वो अपनी तमाम उम्र उसकी फ़िक्र और उससे निजात पाने में सर्फ़ कर दे। दुनियाँ में इन्सान की पूरी उम्र जो सिर्फ़ मुसीबतों परेशानी रंजो अलम में गुज़रे तो वो जहन्नुम की एक दिन की ज़िन्दगी से ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि कयामत के दिन कुफ़्फ़ार में से एक शख्स को लाया जायेगा जो दुनियाँ में नाज़ो नेअमत में पला होगा और फिर कहा जायेगा कि इसको जहन्नुम की आग में एक गोता दो फिर उससे कहा जायेगा तुमने कभी नेअमत देखी है वो कहेगा नहीं फिर जिसने दुनियाँ में सख्त तकलीफ़ उठाई होगी उसको लाया जायेगा और कहा जायेगा कि जन्नत में एक गोता दो फिर उससे कहा जायेगा कि तुमने दुनियाँ में कोई तकलीफ़ देखी वो कहेगा नहीं यानी जहन्नुम की सख्त तकलीफ़ें दुनियाँ की तकलीफ़ों से लाखों करोड़ों गुना ज़्यादा सख्त होंगी और दुनियाँ की तमाम नेअमतें और लज़ज़तें जन्नत के मुकाबले एक ज़र्रा बराबर भी नहीं है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—

(जहन्नुम में) काफ़िर के लिये आग के कपड़े काते गये हैं और उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जायेगा जिससे गल जायेगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें और उनके लिये लोहे के गुर्ज हैं जब घुटन के सबब उसमें से निकालना चाहेंगे तो फिर उसी में लौटा दिये जायेंगे और हुक्म होगा कि चख़ो आग का अज़ाब। (सू०—हज—19—22)

इरशादे बारी तआला है—

और तुममें से कोई ऐसा नहीं कि जिसका गुज़र दोज़ख़ के ऊपर से न हो ये तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर ठहरी हुई बात है फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे जो घुटनों के बल उसमें गिरेंगे। (सू०—मरयम—71,—72)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

अल्लाह तआला के हुक्म से जहन्नुम की आग को एक हजार साल जलाया जायेगा हत्ता कि वो सुर्ख हो गई फिर एक हजार साल जलाया गया कि सफेद हो गई फिर एक हजार साल जलाया गया कि सियाह हो गई और अब वो सियाह अंधेरी है।

(शुअबुल ईमान—1 / 489)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—

जहन्नुमी का निचला होंठ उसके सीने पर गिरा होगा और ऊपर वाला होंठ उसके चेहरे को ढाँप लेगा। (जामअ तिमिजी—371)
(यानी आग की तपिश और उसकी शिद्दत के बाइस जहन्नुमी के होंठ सूज कर निहायत मोटे हो जायेंगे और उस पर शख्त प्यास की शिद्दत से उनका बुरा हाल होगा)

काफिर नाफरमान मुजरिम जहन्नुम के सख्त अंधेरे में होंगे और वो आग में इस तरह लिपटे होंगे कि चारों तरफ से आग उन पर छा जायेगी जो निहायत दर्दनाक होगी और कुछ लोगों को आवाज़ दी जायेगी ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ तूने दुनियाँ में अपनी उम्र ना फ़रमानी में गुज़ारी और बुरे आमाल किये अब चख़ो मज़ा इस आग का और उन्हें औंधा करके आग में फेंक दिया जायेगा जहाँ पीने के लिये खौलता हुआ पानी और जहन्नुमियों का पीप पिलाया जायेगा और बड़े—बड़े साँप और बड़े—बड़े बिच्छू जो उन्हें काटेंगे और फ़रिश्ते जहन्नमियों को गुर्ज से मारेंगे।

तो वहाँ वो चीखेंगे चिल्लायेंगे और मौत की तमन्ना करेंगे लेकिन उन्हें मौत न आयेगी और उनके चेहरे सियाह हो जायेंगे और वो वहाँ अपने गुनाहों पर पछतायेंगे और अफ़सोस करेंगे लेकिन उनकी नदामत और अफ़सोस उन्हें कोई नफ़ा न दे सकेगा और उन्हें आग का तौक पहनाया जायेगा और चेहरों के बल घसीटते हुये आग में फेंक दिया जायेगा और बाज़ तो उस आग में इस तरह डूबे हुये होंगे जैसे कोई शख्स पानी में डूबता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

जहन्नुम उसके पीछे लगी और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा

बा मुश्किल (वो) उसको थोड़ा-थोड़ा घूँट पियेगा और गले से नीचे न उतार सकेगा और उसे हर तरफ़ से मौत आयेगी लेकिन वो मरेगा नहीं और उसके पीछे बड़ा ही सख्त अज़ाब होगा।

(सू०-इब्राहीम-16,-17)

इरशादे बारी तआला है—

जो हमेशा दोज़ख़ में रहने वाले हैं उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जायेगा वो उनकी आँतों को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

(सू०-मुहम्मद-15)

इरशादे खुदावन्दी है—

बेशक अल्लाह तआला मुनाफ़िकों और काफ़िरों को जहन्नुम में इकट्ठा करेगा। (सू०-निसा-140)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जहन्नुमियों को सबसे हल्का अज़ाब ये होगा कि उन्हें आग के जूते पहनाये जायेंगे जिसकी गर्मी से उनका दिमाग़ खौलता होगा।

(सही बुख़ारी-4/262) (सही मुस्लिम-1/115)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

अगर जहन्नुम के पीप का एक डोल दुनियाँ में डाल दिया जाये तो ज़मीन वालों को बदबूदार बना दे। (मुस्नद अहमद-3/83)

जहन्नमियों के लिवास और उनके बिछौने सब आग के होंगे और वो आग में इस तरह उबलेंगे जैसे हंडिया उबलती हैं और जब उनके चमड़े जल जायेंगे तो फिर नये बना दिये जायेंगे और उन्हें तरह-तरह के अज़ाब दिये जायेंगे और उनकी पेशानियों को लोहे के गुर्ज से तोड़ा जायेगा हत्ता कि उनकी पेशानियाँ चूर-चूर हो जायेंगी और उनके जिस्म पर बिच्छू चिमटें होंगे और उनके मुँह से पीप निकलेगी उनके जिगर फट जायेंगे और आँखों के डीले उनके चेहरों पर निकल पड़ेंगे और उनके रुख़सारों का गोस्त गलकर गिर जायेगा और उनकी हड्डियाँ गोस्त से खाली हो जायेंगी और वो जंजीरों में जकड़े हुये घसीटे जायेंगे और आग में दहकाये जायेंगे और इनके अलावा जहन्नमियों को बेशुमार अज़ाब दिये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
बेशक हमने काफिरों के लिये तैयार कर रखी है जंजीरें और तौक
और भड़कती हुई आग। (सू०—दहर—४)

इरशादे बारी तआला है—
और काफिरों को खोलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब (दिया
जायेगा ये) बदला (होगा) उनके कुफ़ का। (सू०—यूनुस—४)

इरशादे खुदावन्दी है—
उन्हें आग का बिछौना है और आग ही ओढ़ना है और ज़ालिमों
को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (सू०—आअराफ़—४१)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जहन्नुम में कुछ साँप हैं जो ऊँट की गर्दन जैसे हैं वो एक मर्तबा
डसेंगे तो उसका दर्द वो चालीस साल तक महसूस करेंगे और
उसमें खच्चर की तरह बिच्छू हैं वो एक बार डसेंगे तो वो उसकी
तकलीफ़ चालीस साल तक महसूस करेंगे (मुस्नद अहमद—४/११९)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
आग ने अपने रब के यहाँ शिकायत करते हुये अर्ज किया ऐ मेरे रब
बाज़ ने बाज़ को खा लिया चुनाँचा उसे दो बार साँस लेने की
इजाज़त दी गई एक साँस सर्दियों में और एक साँस गर्मियों में तो
गर्मियों में जो तुम्हें हरा रत और सर्दियों में जो ठंडक महसूस होती
है ये वही दो साँसे हैं। (सही मुस्लिम—१/२२४)

इन्सान के गुनाहों के मुताबिक़ जहन्नुम में मुख़्तलिफ़
अज़ाब दिये जायेंगे किसी को कम और किसी को ज़्यादा और
जहन्नुम में कई तबकात हैं और उनमें कई वादियाँ हैं जहन्नमियों
को उनके जुर्म व बुरे आमाल के मुताबिक़ अलग—अलग तबकों में
रखा जायेगा और उनमें कुछ तबकात ऐसे हैं जो इन्तिहाई गहरे हैं
जिसकी गहराई का अंदाज़ा लगाना ना मुमकिन है और जहन्नमियों
पर होने वाले अज़ाबों का शुमार करना भी ना मुमकिन है।

हदीस पाक में है कि जहन्नमियों पर भूक का अज़ाब डाला जायेगा

पस वो खाना माँगेंगे तो उनको गले में अटकने वाला काँटेदार खाना दिया जायेगा जो उनके गले में अटक जायेगा फिर उन्हें ख्याल आयेगा कि दुनियाँ में अटके हुये खाने को हम पानी से नीचे उतारा करते थे तब वो पानी माँगेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जब वो पानी उनके करीब किया जायेगा तो उनके चेहरों को भून कर रख देगा और उनके चेहरों की खाल उतरकर गिर जायेगी और जब वो पानी पियेंगे तो जो कुछ उनके पेटों में होगा सब को काटकर रख देगा हत्ता कि उनके पाखाने के मकाम से निकलेगा।

जहन्नुम की आग इतनी तेज़ और सख्त होगी कि अगर जहन्नमियों को दुनियाँ की आग जहन्नुम की आग के बदले में मिले तो वो इस दुनियाँ की आग को लेना पसन्द करेंगे और उसमें खुशी खुशी दाखिल हो जायेंगे हदीस पाक में है कि दुनियाँ की आग को रहमत के सत्तर (70) पानियों से धोया गया है तब इतनी तेज़ और सख्त है तो जहन्नुम की आग का आलम क्या होगा जो तीन हजार साल तक दहकाई गई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला ने फरमाया—

बेशक थूहर (काँटेदार फल) का पेड़ गुनाहगारों की खुराक है गले हुये ताँबे की तरह पेट में जोश मारेगा जैसे खौलता हुआ पानी जोश मारता है फिर (हुक्म होगा) उसे पकड़कर भड़कती हुई आग की तरफ घसीटते हुये ले जाओ फिर उसके ऊपर खौलते हुये पानी का अज़ाब डालो। (सू०—दुखान—43,—50)

इरशादे बारी तआला है—

बेशक हमने जालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर वो पानी की फरियाद करेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जो खौलते हुये धातु की तरह होगा जो उनके मुँह को भून देगा क्या ही बुरा पीना है और दोज़ख़ बुरी ठहरने की जगह। (सू०—कहफ़—29)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जहन्नमियों को गले में फंसने वाली खुराक काँटेदार खाना ज़क्कुम दिया जायेगा जो गले में अटक जायेगा चुनौचा वो पानी तलब

करेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जब वो पानी उनके चेहरों के करीब होगा तो उनके चेहरों को भून देगा और जब वो पानी उनके पेट में दाखिल होगा तो पेट में जो कुछ है (आँते वगैराह) उन्हें काटकर बाहर निकाल देगा। (जामअ तिमिज़ी-370)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया अगर ज़क्कूम (जहन्नमियों के खाने) का एक कतरा दुनियाँ के समुन्दर में गिर जाये तो दुनियाँ वालों की ज़िन्दगी दुश्वार करदे तो उनका क्या हाल होगा जिनका खाना ज़क्कूम होगा। (सुनन इब्ने माजा-331)

जहन्नमियों पर रोना मुसल्लत किया जायेगा और वो इतना रोयेंगे कि आँसू ख़त्म हो जायेंगे फिर वो खून के आँसू रोयेंगे और किसी के मुँह में आग की लगाम दी जायेगी और किसी को दोज़खियों का पसीना पिलाया जायेगा और किसी को दोज़खियों की पीप पिलाई जायेगी और बाज़ लोगों की शर्मगाह में जंजीरें डाली जायेंगी और उसे आग में इस तरह भूना जायेगा जैसे कि सीक में कबाब भूने जाते हैं और बाज़ को खौलते हुये पानी में गोता दिया जायेगा तो उसका तमाम गोस्त गलकर गिर जायेगा और हड्डियों के ढाँचे के सिवा कुछ न बचेगा।

कुछ लोगों के चेहरों पर आग लिपटी होगी और जिसने दुनियाँ में खुदकुशी की होगी उसको जहन्नुम में उसी तरह का अज़ाब दिया जायेगा जैसे किसी शख्स ने किसी ऊँची जगह से कूदकर जान दी होगी तो उस शख्स को जहन्नुम में आग के पहाड़ पर चढ़ाया जायेगा तो उस पर उसे सत्तर साल तक चढ़ाया जायेगा और सत्तर साल तक उसे नीचे गिराया जायेगा इस तरह खुदकुशी करने वालों को मुख़्तलिफ़ अज़ाब दिये जायेंगे और दोज़खियों के चेहरे सियाह होंगे और वो लोग आग के तौक और जंजीरों में जकड़े होंगे और गधों की तरह चिल्लाते होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

बेशक हमारे पास भारी बेड़ियाँ और (दोज़ख की) भड़कती हुई आग है और हलक़ में अटक जाने वाला खाना और निहायत दर्दनाक अज़ाब है। (सू०—मुज़म्मिल—12,—13)

इरशादे बारी तआला है—

जब उनकी गर्दनों में तौक होंगे और जंजीरों से घसीटे जायेंगे फिर खौलते हुये पानी में फिर आग में दहकाये जायेंगे।

(सू०—मोमिन—71,—72)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

अल्लाह तआला ने फरमाया मुझे अपनी इज्जत की कसम मेरे बन्दों में जो भी बन्दा जितनी शराब पियेगा मैं उसे उतनी ही पीप पिलाऊँगा और जो मेरे खौफ से शराब छोड़ देगा तो मैं उसे पाक साफ हौजो से पिलाऊँगा। (मुस्नद अहमद)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— जहन्नमियों पर रोना मुसल्लत किया जायेगा तो वो रोयेंगे हत्ता कि उनके आँसू खत्म हो जायेंगे फिर वो खून के साथ रोयेंगे हत्ता कि उनके चेहरों पर गद्दे पड़ जायेंगे कि अगर उसमें कशियाँ छोड़ी जायें तो वो चल पड़े। (सुनन इब्ने माजा—330)

जहन्नुमी कहेंगे कि काश दुनियाँ में हमने आखिरत कमाई होती तो आज इन दर्दनाक सख्त अज़ाब में मुबिला न होते और जन्नत की दायमी नेअमतों और लज्जतों का लुत्फ उठा रहे होते और सबसे बड़ी नेअमत अल्लाह तआला की मुलाकात और दीदार का शरफ हमें हासिल होता और हम जन्नत में ऐशो आराम से रह रहे होते लेकिन हमने जन्नत के बदले हकीर दुनियाँ व माल का सौदा किया और अजीम नेअमत यानी जन्नत को खो दिया और बहुत बड़े ख़सारे में चले गये और वो दुनियाँ भी हमारी न हुई और अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ना फरमानी ने हमें जहन्नुम में पहुँचा दिया और हमने खुद अपने आप को हलाक कर लिया और कभी न खत्म होने वाले अज़ाब की तरफ आ पहुँचे जहाँ हमें हमेशा अज़ाब भुगतना होगा और न कभी हमें मौत आयेगी।

जहन्नुमी रब तआला से फरियाद करेंगे—

ऐ मेरे रब हमें निकाल दे कि हम अच्छे काम करें जो पहले नहीं करते थे। (सू०—फ़ातिर—37)

फिर रब तआला फरमायेगा—

क्या हमने तुम्हें इस कदर उम्र नहीं दी थी कि उसमें जो नसीहत हासिल करना चाहते तो कर सकते थे और तुम्हारे पास डर सुनाने वाला आया पस अज़ाब चखो ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।
(सू०—फ़ातिर—37)

फिर जहन्नुमी कहेंगे—

हम पर हमारी बदबख्ती ग़ालिब आ गई थी और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल दे पस अगर हम दोबारा वही काम करें तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (सू०—मोमिनून—106,—108)

फिर अल्लाह तआला फरमायेगा—

इसमें ज़िल्लत व रुसवाई के साथ रहो और मुझसे बात न करो।
(सू०—मोमिनून—108)

हम अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिसात के गुलाम हैं और अपने नफ़्स की इताअत व फ़रमाबरदारी करते हैं लेकिन अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ना फ़रमानी करते हैं हम अंधेरी रात में तन्हा वीराने और बयाबान जंगलों में जाने से हम डरते हैं और हमारे दिल ख़ौफ़ से काँपते हैं लेकिन हमारे दिल अपने रब से बे ख़ौफ़ रहते हैं और अंधेरी क़ब्र का डर हमें नहीं सताता जहाँ हमें मुद्दतों रहना है और क़यामत की सख़्तियों और हौलनाकियों और निहायत सख़्त व दर्दनाक अज़ाब और दोज़ख़ की आग के दहकते हुये शोलों से हम ख़ौफ़ज़दा नहीं होते क्या हमारा जिस्म आतिशे दोज़ख़ के शोलों को बर्दास्त कर सकेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

सुन लो जन्नत ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने से हासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात (ख़्वाहिसात व लज़्ज़ात) की पैरवी की वजह से जायेंगे।

—: मुशाबहत :—

अल्लाह तआला की बनाई हुयी किसी भी चीज़ को बदलना बहुत बुरा फ़ैअल है और हर शख्स को इस बुराई से बचना चाहिये तमाम मामलात में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत और उनकी सुन्नतों पर अमल करना चाहिये यही हर शख्स के लिये सबसे बेहतर है और खुद को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत और ईमान के नूर से जीनत दो ताकि हम अल्लाह व रसूल के महबूब हो जायें।

काला ख़िज़ाब और मुशाबहत की मुमानियत व मज़म्मत अहादीस मुबारका में वारिद हैं जिनमें चन्द अहादीस मुन्दरजा ज़ैल है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सियाह (काला) ख़िज़ाब जहन्नमियों का ख़िज़ाब है।
(सही मुस्लिम—2/199)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
सियाह (काला) ख़िज़ाब वाले जन्नत की खुशबू भी न सूघेंगे।
(बैहकी—7/311)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सफ़ेद बाल न उखेड़ो क्योंकि ये मोमिन का नूर है।
(मुस्नद अहमद—2/212)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
सुख़ रंग मोमिन का ख़िज़ाब है। (मुस्तदरक हाकिम—3/526)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो जिससे मुशाबहत करे वो उन्हीं में से है। (मुस्नद अहमद—2/5)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
औरत का अपनी भवों को उखेड़ना और पतला करके ख़ूबसूरत बनाना जाइज़ नहीं और जो ऐसा करे उस पर लानत है।
(सही बुख़ारी—2/880)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो औरत मर्दों जैसी शक्लो सूरत बनाये वो जन्नत में न जायेगी।
(सुनन निसाई)

बुखारी व तिर्मिजी शरीफ की हदीस है रसूले अकरम सल्लल्लाहु
अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—लानत हो जनाना मर्दों और मर्दानी
औरतों पर नीज़ फ़रमाया—इन्हें अपने घरों से निकाल दो।
(दाढ़ी के फ़ज़ाइल—इमाम अहमद रज़ा रह०)

अबू दाऊद व इब्ने माजा की हदीस है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से
मरवी है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने
लानत फ़रमाई उस मर्द पर जो औरत का पहनावा पहने और उस
औरत पर जो मर्द का पहनावा पहने।
(दाढ़ी के फ़ज़ाइल—इमाम अहमद रज़ा रह०)

—: दुरुदो सलाम की फज़ीलत :—

दुरुदो सलाम एक ऐसा महबूब और मकबूल अमल है जो कुर्बे इलाही और कुर्बे रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पाने का बेहतरीन ज़रिया है हम तमाम इबादत और नेक अमल रब तआला के लिये करते हैं लेकिन इन तमाम आमाल के करने में हमसे कुछ कोताही भी हो जाती है या उन आमालों के करने में कुछ ग़लतियाँ भी हमसे हो जाती हैं या हम उनके सही आदाब अदा नहीं कर पाते या इस दरमियान हमसे कुछ गुनाह या ऐसी बुराई वाकैअ हो जाती है जिसके सबब हम ख़याल करते हैं कि मेरी इबादत या नेक अमल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होगा या नहीं और हमें हमेशा इस बात का ख़दशा रहता है लेकिन रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजने के अमल में कुबूलियत का कोई ख़दशा नहीं है क्योंकि ये अमल बारगाहे खुदावन्दी में ज़रूर मकबूल होता है।

दीगर इबादत हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत की अलामत है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजना ये हुजूर से मुहब्बत की अलामत है और मुहब्बते रसूल के सबब हमारा हर अमल बारगाहे खुदावन्दी में काबिले कुबूल होता है तमाम इबादत हुक्मे इलाही है लेकिन दुरुदो सलाम हुक्मे इलाही के साथ-साथ सुन्नते इलाही भी है और अल्लाह तआला और उसके तमाम फरिश्ते हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुद भेजते हैं इसलिये इस अमल को ख़ास और ज़्यादा अहमियत और फज़ीलत हासिल है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले नबी पर तो ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरुद और सलाम भेजो। (सू०—अहज़ाब—56)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जिसने मुझ पर सुबह व शाम दस बार दुरुद पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज्ज़वाइद—10/163)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो मुझ पर पचास मर्तबा दिन भर में दुरुद पढ़ेगा तो क़यामत के
दिन में उससे मुसाफ़ाह करूँगा। (अल कौलुल बदीअ)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो मुसलमान मुझ पर दुरुद पाक पढ़ता रहता है तो फ़रिश्ते उस
पर रहमत भेजते रहते हैं अब बन्दे की मर्ज़ी है कम पढ़े या ज़्यादा।
(इब्ने माजा—1/490)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस
पर दस रहमते नाज़िल फ़रमाता है और दस गुनाह माफ़ करता है
और दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है। (मिशकात, नसाई शरीफ़)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये गुनाहों का कफ़फ़ारा है और
तुम्हारे बातिन की पाकीज़गी है। (अल कौलुल वदीअ)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़े उसके लिये अल्लाह तआला
एक कीरात अज़्र लिखता है और एक कीरात उहद पहाड़ के
जितना है। (अल कौलुल वदीअ) (मुसन्निफ़ अब्दुल रज्ज़ाक—1/39)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिसने मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर
दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और उसके नामे आमाल में दस
नेकियाँ लिखता है। (तिर्मिज़ी—2/27)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम जहाँ पर भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो क्योंकि तुम्हारा दुरुद मुझ
तक पहुँचता है। (मुअज़म कबीर तिबरानी—3/82)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिसने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर

दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मर्तबा दुरुद पढ़े अल्लाह तआला उस पर सौ रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मर्तबा दुरुद पाक पढ़े तो अल्लाह तआला उसकी दोनो आँखों के दरमियान लिख देता है कि ये जहन्नुम की आग से आज़ाद है और अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको शुहदा के साथ रखेगा। (मुअज़म औसत—5/252)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—जब दो दोस्त आपस में मुलाकात करते हैं और मुसाफ़ाह करते हैं और दुरुद पाक पढ़ते हैं तो उन दोनो के जुदा होने से पहले उनके गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (अत्तरगीब वत्तरहीब)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—जिस शख्स को ये बात पसन्द हो कि जब वो दरबारे इलाही में हाज़िर हो और अल्लाह तआला उससे राज़ी हो तो उसे चाहिये कि मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करे। (अल कौलुल वदीअ)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—बरोज़े क़यामत लोगों में से मेरे करीब तर वो लोग होंगे जो दुनियाँ में मुझ पर ज़्यादा दुरुद पाक पढ़ते होंगे। (तिर्मिज़ी—2/27)

हज़रत अबी बिन काअ़ब (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम मेरे पास इबादत से फ़ारिग होकर जो वक़्त बचता है मैं उसमें एक तिहाई वक़्त दुरुदो सलाम में सर्फ़ करता हूँ क्या दुरुदो सलाम के लिये इतना वक़्त काफी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है लेकिन कुछ और बढ़ा दो तो बेहतर है अर्ज़ किया आइन्दा मैं आधा वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करूँगा हुज़ूर ने फ़रमाया ठीक है लेकिन कुछ और बढ़ा दो तो बेहतर है अर्ज़ किया फिर मैं दो तिहाई वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करूँगा फिर फ़रमाया इसमें भी इज़ाफ़ा करो तो बेहतर है जब उन्होंने ये फ़रमान सुना तो बोले फिर मैं सारा वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करूँगा फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—तब अल्लाह तआला तेरे तमाम काम संवार देगा और तुझे किसी चीज़ की हाज़त नहीं रहेगी।

हर दुआ आसमान और ज़मीन के दरमियान ठहरी रहती है जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की बारगाह में हृदय दुरुद दरपेश न किया जाये। (तिर्मिज़ी-2/28)

फ़रिश्तों के कई गिरोह हैं और उनके काम भी मुख्तलिफ़ हैं और उनकी इबादत भी अलग-अलग हैं और जिसको जो काम या इबादत का हुक्म मिला है वो वही काम और वही इबादत करते हैं और उसके अलावा कोई दूसरा काम या कोई दूसरी इबादत नहीं कर सकते जैसे कोई ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहता है कोई अल्लाहु अकबर का विर्द करता है कोई सुबहान अल्लाह की तस्बीह करता है कोई सजदे में कोई क़याम में अल्लाह तआला की इबादत करता है लेकिन दुरुदो सलाम के मामले में अल्लाह तआला ने सबको हुक्म दे रखा है और तमाम फ़रिश्ते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुद भेजते हैं और हम बन्दों के लिये भी यही हुक्म है और तमाम अइयाम में दुरुद पाक पढ़ने की सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत योमे जुमा को है इसलिये जुमा के दिन हमें चाहिये कि कसरत से दुरुद पाक पढ़े और इस दिन दुरुद पाक पढ़ने की हदीस पाक में बड़ी फ़ज़ीलत आई है इसलिये इस दिन बड़े ज़ाँक और शौक के साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की बारगाहे अक़दस में ज़्यादा से ज़्यादा दुरुदो सलाम के नज़राने पेश करें ताकि हमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और कुर्बत हासिल हो और हम इस अमल की बेहतर जज़ा पायें।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शबे जुमा और रोज़े जुमा मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करो और जो ऐसा करेगा तो क़यामत के दिन मैं उसका शफ़ीअ व गवाह बनूँगा। (शुअबुल ईमान-3/111)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स रोज़े जुमा मुझ पर सौ बार दुरुद पड़े तो क़यामत के दिन उसके साथ एक ऐसा नूर आयेगा अगर वो सारी मख़लूक़ में तक़सीम कर दिया जाये तो सब को किफ़ायत करे।
(हिल्यातुल औलिया-8/49)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो शख्स मुझ पर रोजे जुमा दुरुद शरीफ पढ़ेगा तो कयामत के
दिन में उसकी शफाअत करूँगा। (कंजुल उम्माल)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
शबे जुमा व रोजे जुमा मुझ पर कसरत से दुरुद पढ़ो क्योंकि
तुम्हारा दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है (मुअज्जम औसत-1/84)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जिसने मुझ पर रोजे जुमा सौ बार दुरुद पाक पढ़ा उसके दो सौ
साल के गुनाह माफ होंगे। (कंजुल उम्माल)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो शख्स रोजे जुमा और शबे जुमा सौ बार दुरुद पढ़े तो अल्लाह
तआला उसकी सौ हाजतें पूरी करेगा सत्तर आखिरत की और
तीस दुनियाँ की। (शुअबुल ईमान-3/111)

अल्लाह तआला की इबादत के लिये कुछ हदें हैं
और हदों के दायरे में रहकर ही हमें इबादत करनी होती है जैसे
पाँच नमाज़ों का वक़्त मुक़र्रर है इन वक़्तों में ही नमाज़ अदा करने
से नमाज़ अदा होती है और अगर वक़्त निकल जाये तो क़ज़ा
लाज़िम आती है और इन नमाज़ों की भी हद है यानी पाँच से
जायद फ़र्ज़ नमाज़ अदा नहीं कर सकते और अगर करेंगे तो वो
निफ़िली इबादत शुमार की जाती है इसी तरह रमज़ान के रोजे हैं
जिनके लिये रमज़ानुल मुबारक का महीना होना शर्त है और तीस
से ज़्यादा रोजे नहीं रख सकते और अगर रखेंगे तो वो निफ़िली
रोजे शुमार किये जायेंगे और उसमें भी वक़्त मुक़र्रर है यानी सुबह
सादिक से गुरुबे आफ़ताब तक का वक़्त रोजे के लिये मुक़र्रर है
और इस हद से कोई बाहर नहीं जा सकता।

इसी तरह हज के लिये भी दिन मुक़र्रर है
इनके अलावा दीगर अइयाम (दिनों) में हज नहीं हो सकता लेकिन
रब तआला ने दुरुदो सलाम के लिये कोई पाबंदी या हद मुक़र्रर
नहीं की बल्कि हमें पूरी आज़ादी दी कि सुबहो शाम रात दिन

चलते फिरते उठते बैठते जब चाहो जितनी बार चाहो मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजो और जो इस अमल से महरूम रहा उसके लिये हलाकत है और वो कुर्बे इलाही और कुर्बे रसूल से महरूम रहता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जिसके पास मेरा जिक्र हुआ और उसने दुरुद न पढ़ा उसने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (मुअजम कबीर तिबरानी—3/128)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
उस शख्स की नाक खाक आलूदा हो जिसके पास मेरा जिक्र हो और वो मुझ पर दुरुद न पढ़े। (हाकिम)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जिसके पास मेरा जिक्र हो और वो मुझ पर दुरुद न पढ़े तो उसने मुझसे जफा की। (मुसन्निफ अब्दुल रज़्ज़ाक—2/142)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
जो लोग अपनी मजलिस में अल्लाह तआला के जिक्र और मुझ पर दुरुदे पाक पढ़े बगैर उठ गये तो वो बदबूदार मुर्दार उठे। (शुअबुल ईमान—2/215)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वो जन्नत का रास्ता भूल गया। (अल कौलुल वदीअ)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जिसके पास मेरा जिक्र हो वो मुझ पर दुरुद न पढ़े तो वो लोगों में कंजूस तरीन शख्स है। (मुस्नद अहमद—1/429)

जब हम किसी जान पहचान वाले या दोस्त अहवाब या किसी अजनबी से मुलाकात करते हैं तो मुलाकात की इब्तिदा (शुरुआत) सलाम से करते हैं या जब किसी मुसलमान भाई के घर में दाखिल होते हैं तब भी हम सबसे पहले सलाम करते हैं क्योंकि

तआल्लुक का आगाज़ सलाम फिर कलाम से होता है और ये फ़ेअल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा है और हुक्मे इलाही भी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा दूसरो के घरों में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि तुम उनसे इजाज़त न ले लो और उसमें रहने वालों को (दाख़िल होते ही) सलाम न कर लो ये तुम्हारे लिये बेहतर है। (सू०—नूर—27)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

बेशक मग़फ़िरत को बाजिब करने वाली बातों में सलाम का फैलाना और हुस्ने कलाम भी है। (कंज़ुल उम्माल—9/116)

जब हम किसी अजनबी से से राब्ता कायम करते हैं या जान पहचान करते हैं तो सबसे पहले हम सलाम करते हैं और सलाम का सिलसिला जब काफी दिनों तक चलता रहता है तो हमारे तआल्लुकात में मज़बूती आती है और इसी सलाम के तसुलसुल से आपस में मुहब्बत पैदा होती है इसलिये अगर हम चाहते हैं कि हमारा भी तआल्लुक सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से बेहतर और मज़बूत हो और बाहम मुहब्बत पैदा हो तो हमें चाहिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम की कसरत करें ताकि हमारे और उनके दरमियान बेहतर तआल्लुकात और मुहब्बत का रिश्ता कायम हो और हमें उनकी नज़दीकी हासिल हो।

अल्लाह तआला बन्दे की नमाज़ को तब तक कुबूल नहीं करता जब तक कि बन्दा अपनी नमाज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर सलाम न भेजे और किसी शख्स की नमाज़ उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होती जब तक कि वो अल्लाह के महबूब पर सलाम न भेजे।

यानी जब हम नमाज़ में तशहूद के लिये बैठते हैं और कायदा की हालत में जब हम अत्तह्यातु पढ़ते हैं तो जब तक अस्सलामुअलैका अइयुहन्नबीइयु व रहमतुल्लाहि व बराकातहू पूरी न

पढ़ें तब तक नमाज़ मुकम्मल नहीं होती हालाँकि नमाज़ अल्लाह तआला की इबादत है लेकिन अल्लाह तआला को गवारा नहीं कि मेरी इबादत में जब तक मेरे महबूब पर सलाम न भेजोगे तब तक मैं अपनी इबादत को कुबूल नहीं करूँगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जिबरईल (अलै0) मेरे पास आये और कहा कि या रसूलुल्लाह क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आपकी उम्मत से जो शख्स एक बार दुरूद भेजे तो उस पर दस रहमतें नाज़िल हों और जो एक बार सलाम भेजे तो उस पर दस बार सलामती हो।

(मुस्नद अहमद—1/441)

हजरत अबू हु़रैरा (रज़ि0) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— जब कोई शख्स मुझे सलाम भेजता है तो मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ। (अबू दाऊद व बैहकी)

हदीस पाक में है कि अल्लाह तआला ने आपकी कब्र शरीफ़ पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है जो आपके उम्मतियों के सलाम आप तक पहुँचाता है। (मुस्नद अहमद—1/441)

मज़कूरा बाला अहादीस मुबारका से ये मालूम हुआ कि जब हम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर सलाम भेजते हैं तो हमारे आका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम गुम्बदे खज़रा से हमें जवाब देते हैं और सलाम सलामती की दुआ है तो ज़रा सोचो कि हमें हमारे सलाम के जबाब में हमारे आका हमें सलामती की दुआ देते हैं जो हमारे लिये दुनियाँ व आख़िरत में भलाई और ख़ैर और सआदत का मक़ाम है।

और सलाम इस्लाम का बेहतरीन अमल और सलामती पाने का बेहतरीन ज़रिया है और अल्लाह तआला ने अपने तमाम अम्बियाकिराम अलैहिमुस्सलाम को सलाम फ़रमाया इसलिये ये अमल सुन्नते रसूल के साथ—साथ सुन्नते इलाही भी है और सलाम का सिलसिला तो जन्नत में भी कायम रहेगा जब लोग अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे तो रब तआला फ़रमायेगा

अस्सलामु अलैकुम या अहलल जन्नती (यानी ऐ जन्नतियों तुम पर सलाम हो) और जब लोग जन्नत के दरवाजों से जन्नत में दाखिल होंगे तो जन्नत के दरोगान कहेंगे कि तुम पर सलाम हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—
और उस (जन्नत) के दरोगान कहेंगे कि तुम पर सलाम हो तुम खूब रहे तो हमेशा रहने के लिये जन्नत में दाखिल हो जाओ।
(सू०—जुमर—73)

इरशादे बारी तआला है—
वो इस (जन्नत) में न कोई बेहुदगी सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात मगर एक ही बात (कि सलाम वाले हर तरफ से) सलाम ही सलाम सुनेंगे। (सू०—वाकिया—25,—26)

इरशादे बारी तआला है—
उन पर (यानी जन्नत वालों पर) सलाम होगा मेहरबान रब की तरफ से फरमाया हुआ। (सू०—यासीन—58)

इरशादे खुदावन्दी है—
सलाम हो नूह पर सब जहानों में बेशक हम नेकोकारों को इस तरह बदला दिया करते हैं बेशक वो हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे फिर हमने दूसरो को गर्क कर दिया।
(सू०—सफ़फ़ात—79,—82)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
सलाम हो इब्राहीम पर इसी तरह हम मुहसिनो को सिला दिया करते हैं बेशक वो हमारे आला दर्जे के (कामिल) बन्दों में से थे।
(सू०—सफ़फ़ात—109,—111)

इरशादे बारी तआला है—
और तमाम रसूलो पर सलाम हो। (सू०—सफ़फ़ात—181)

—: खाने के आदाब और भूक से :—

कम खाने की फज़ीलत

अल्लाह तआला की बेशुमार नेअमतों में खाना भी एक बड़ी नेअमत है और अगर हमारे खाने का तरीका अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक हो तो वो खाना हमारे लिये बाइसे रहमत और बरकत होता है और भूक से ज़्यादा खाना खिलाफ़े सुन्नत और जिस्म को कई नुकसानात देने वाला होता है जो बहुत सी बीमारियों को पैदा करता है और भूक से कम खाना हमारे लिये हर हाल में बेहतर है अल्लाह तआला ने हर चीज़ की एक हद मुकर्रर की है और खाने की भी एक हद है और इस हद के अन्दर ही रहने में ही हमारी भलाई है क्योंकि हद से आगे बढ़ने वाले अल्लाह तआला को पसन्द नहीं हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और खाओ और पियो और हद से आगे न बढ़ो बेशक हद से आगे बढ़ने वाले उस (परवर दिगार) को पसन्द नहीं हैं। (सू०—आअराफ़—31)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपनी भूक के तीन हिस्से करो एक खाना, एक पानी और एक साँस के लिये। (सुनन इब्ने माजा—248)

अगर कोई शख्स ये गुमान रखे कि कम खाने से इन्सान की सेहत ख़राब हो जाती है और वो कमज़ोर हो जाता है तो उसका ये गुमान बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद है बल्कि ज़्यादा खाने से दुनियाँ और आख़िरत में नुकसान होगा और दुनियाँ का नुकसान ये है कि उसकी सेहत ख़राब रहेगी और ज़्यादा खाने के सबब वो कई तरह की बीमारियों में मुब्तिला होगा और आख़िरत का नुकसान ये है कि कम खाने के सबब आख़िरत में अल्लाह तआला उसे जो इनामात अता करेगा तो वो उन इनामात से महरूम रहेगा और जो शख्स अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक कम खाता है और अपने खाने में अल्लाह तआला की खुशनुदी और रज़ा चाहता है तो अल्लाह तआला उसे दुनियाँ में बीमारियों से महफूज़ रखता और वो सेहतमन्द रहता है और अल्लाह तआला उसे आख़िरत में बेशुमार

इनामात से सरफराज़ फ़रमायेगा और लोग उसके इनामात को देखकर रश्क करेंगे और भूक से कम खाने वाले का दिमाग तेज़ और दिल होशियार होता है और अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक हर काम करना हर शख्स के लिये बेहतर और बाइसे ख़ैर है और भूक से कम खाना अल्लाह व रसूल के नज़दीक पसंदीदा फ़ैज़ल है और ईमान का तकाज़ा ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वही हमें भी पसन्द होना चाहिये।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
हर चीज़ की ज़कात है और जिस्म की ज़कात भूक है।
(सुन्नन इब्ने माजा—126)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स ख़्वाहिश के बावजूद एक लुक़्मा भी छोड़ेगा उसके लिये जन्नत में एक दर्ज़ा बुलन्द होगा।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला फ़रिश्तों के सामने उस बन्दे पर फख़ करता है जो दुनियाँ में कम खाता है और फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तों तुम गवाह हो जाओ मेरा बन्दा खाने के लिये जितने लुक़्मे छोड़ेगा मैं उसे जन्नत में उतने ही दरज़ात अता करूँगा (कंज़ुल उम्माल—15/776)

जब कोई शख्स भूक से कम खाता है तो अल्लाह तआला उस शख्स का ज़िक्र फ़रिश्तों में करता है और कहता है कि ऐ फ़रिश्तों देखो मेरे उस बन्दे को जो मेरी रज़ा के लिये भूक से कम खाता है और उस बन्दे पर अल्लाह तआला फख़ करता है तो वो बन्दा कितना खुशानसीब है जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला फ़रिश्तों में करे फिर अल्लाह तआला उस शख्स के लिये अपनी रहमत के दरबाज़े खोल देता है और जो लोग सेर होकर खाते हैं वो इस रहमत से महरुम रहते हैं और क़यामत के दिन भूके रहेंगे और अल्लाह व रसूल के नज़दीक वो बुरे लोग हैं।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत के बुरे लोग वो हैं जो नेअमतों में पलते हैं और उनका

मकसद तरह-तरह के खाने और उम्दाह लिबास है।

(अत्तरगीब, वत्तरहीब-3/115)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—

मोमिन एक आँत में खाता है और मुनाफ़िक सात आँतों में खाता है।

(सही बुख़ारी-2/812)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो लोग दुनियाँ में कम खाते हैं वो क़यामत में सेर होकर खायेंगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की हयाते तइयबा का अगर हम मुतालाअ करें तो हमें पता चलता है कि अल्लाह तआला के महबूब सरवरे कायनात इमामुल अम्बिया रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के घर कई-कई दिनों तक चूल्हा नहीं जलता था अगर आप चाहते तो सोने के पहाड़ आपकी मिलिकयत में होते लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने अल्लाह तआला की रज़ा के लिये फाका कशी इस्तियार की और आपकी पूरी हयाते तइयबा में आपके दहन मुबारक में कभी दो रंग के खाने एक साथ जमा नहीं हुये और आपका और आपके सहाबाकिराम (रज़ि0) का कई-कई दिनों का फाका हुआ करता था।

दुनियाँ में बे शुमार औलियाकिराम और बुजुर्गानेदीन तशरीफ़ लाये और उनका हमेशा यही मामूल रहा कि वो भूक से कम खाते और अपने खाने में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का तरीका इस्तियार करते थे और खाने के आदाब और सुन्नतों पर अमल करते थे और हम खुद को हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का आशिक और गुलाम कहते हैं तो क्या हम पर ये लाज़िम नहीं कि हम उनके हुक्म और सुन्नतों को अपने अमल में लायें और खाने के तमाम आदाबों पर अमल करें और हमेशा भूक से कम खायें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में उसका बेहतर अज़र पायें।

हदीस पाक में है कि खातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा रोट्टी का एक टुकड़ा लेकर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो आपने

पूछा कि ये टुकड़ा कैसा है तो उन्होंने अर्ज किया कि मैंने एक रोटी पकाई थी तो मैंने आपके बगैर खाना पसन्द नहीं किया इसलिये मैं आपके पास ले आयी फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—ऐ मेरी बेटी फातिमा तीन दिन के बाद ये पहला खाना है जो तुम्हारे वालिद के दहन मुबारक में दाखिल हुआ है। (मुअज्जम कबीर तिबरानी—1/259)

हमें चाहिये कि हमेशा बैठ कर खायें पियें और भूक से कम खायें और खड़े होकर कभी कुछ न खायें पियें और कभी किसी खाने को बुरा न कहें क्योंकि हमारे आका सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने कभी खाने की बुराई नहीं की अगर अच्छा लगा तो तनावुल फरमाया नहीं तो छोड़ दिया और रोटी के चार टुकड़े करके खायें और रोटी अगर ज़मीन पर गिर जाये तो साफ़ करके खालें और रोटी की इज्जत करें और रोटी से कभी हाथ न पोंछें और गर्म खाना न खायें क्योंकि गर्म खाने में बरकत नहीं होती और आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने कभी गर्म खाना तनावुल नहीं फरमाया

और खाने से पहले अपने दानों हाथों को पानी से धोयें लेकिन पोंछें नहीं लेकिन खाना खाने के बाद हाथ धोकर कपड़े से पोंछ लें और दाँतों को उँगली से साफ़ करके कुल्ली करें और दस्तर खान पर बैठकर कुछ लोग मिलकर खाना खायें क्योंकि ऐसे खाने में बरकत ज्यादा होती है और खाना खाते वक्त कोई ऐसी बुरी बात या ऐसी बात जिससे घिन आये न कहें और पानी को तीन साँसों में रोककर पियें और साँस को बर्तन से बाहर लें और अगर कहीं ऐसा मौका आये कि खाना कुर्सी मेज़ पर हो तो अपने जूते चप्पल उतारकर खाना खायें और खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ें और खाना खाने के बाद अलहम्दु लिल्लाह कहें ताकि जो खाना हमें अल्लाह तआला ने खिलाया है उसका शुक्र अदा हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
खड़े होकर और लेटकर पानी न पियें। (सही मुस्लिम —2/173)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
खाने के गिरे हुये टुकड़े को जो उठाकर खाये वो बे फिक्री की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उसकी औलाद बा खैर रहती है।
(अल विदाया वन्निहाया)

—: निकाह और फिजूल खर्ची :—

निकाह करना रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सुन्नत है लेकिन निकाह से जुड़े हुये तमाम कामों को अगर हम सुन्नत के मुताबिक करें तो सही मायने में यही सुन्नत पर अमल है मगर आज हालात ये हैं कि शादी ब्याह में सिर्फ निकाह को छोड़कर बाकी ज्यादातर काम खिलाफे शरअ किये जाते हैं बाज़ लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और गुलामी का दावा करते हैं लेकिन काम जाहलियत और शैतान के करते हैं ज़रा सोचें कि शादी ब्याह में हम कितने काम हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सुन्नतों और तरीकों पर करते हैं।

जब हम अपने लड़के की शादी का इरादा करते हैं तो सबसे पहले हमारे दिल में एक ख्वाहिश पैदा होती है कि लड़की मालदार घर की और खूबसूरत हो ताकि हमें ज्यादा माल मिले और हमारी लोगों में इज्जत और वाहवाही हो लेकिन हम ये भूल जाते हैं कि हर इन्सान का रिज़क और उसके मिलने का वक़्त मुअइयन है जो उसे हर हाल में अपने वक़्त पर मिलकर रहेगा और अल्लाह तआला मालिक व मुख्तार है और इज्जत और ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआला के इख्तियार में है वो जिसे जो चाहे अता करता है और जो चीज़ रब तआला के इख्तियार में है वो चीज़ हम बन्दों से कैसे हासिल कर सकते हैं ये बात गौर करने की है लेकिन हम इस पर गौर नहीं करते और न इसके अंजाम के बारे में गौरो फ़िक्र करते हैं।

अगर हम दुनियाँदार फैशन परस्त नाज़ो नख़रे वाली बे नमाज़ी और अपने से बड़ो की इज्जत न करने वाली घमंडी और खर्चीली लड़की को अगर हम अपने घर की बहू बनाते हैं तो हमारे घर का माहौल बदतर हो जायेगा और अगर दीनदार नमाज़ी रोज़दार नेक सीरत वाली पर्दा नशीन और बड़ो की इज्जत व छोटो पर रहम व शफ़क़त करने वाली नेक लड़की से अगर अपने लड़के का निकाह कर दें तो हमारे घर का माहौल कितना बेहतर और खुशहाल हो जायेगा और वो लड़की अपने शौहर के साथ-साथ अपनी सास व श्वसुर की भी फ़रमाबरदारी करेगी और घर के तमाम लोगों का बेहतर ख़्याल रखेगी और अगर बदसीरत लड़की होगी तो घर को जंग का मैदान बना देगी।

और वो घर में आते ही अपने शौहर के साथ अलग रहेगी घर में किसी का ख्याल नहीं रखेगी घर की खुशियाँ और रौनक खत्म कर देगी और जिस बेटे को हमने अपनी उम्मीदों के साथ परवरिश करके बड़ा किया जिसकी तालीमो तरबियत के लिये हमने बड़ी तकलीफें उठाई और उसके तमाम इख़राजात के लिये हमने मेहनत व मशक्कत उठाई कि वो हमारा सहारा बनेगा लेकिन उस बहू के अलग होते ही वो बेटा भी हमसे अलग हो जायेगा और हमारी तमाम उम्मीदें टूट जायेंगी और हमारे बुढ़ापे का सहारा हमसे छिन जायेगा इसलिये हमें चाहिये कि अपने बेटे की शादी (निकाह) के लिये ऐसी लड़की का इन्तिखाब करें जो सिर्फ़ दीनदार नेक सीरत हो माल व खूबसूरती की ख्वाहिश न करें कि कहीं ये ख्वाहिश हमारे उन ख्वाबों को चकना चूर न कर दे जो ख्वाब हमने अपने लिये सजाये हैं और हम अपनी औलाद के होते हुये भी खुद को बे औलाद महसूस करें और तमाम ज़िन्दगी अपने ग़लत फैसले पर पछताते रहें और अफ़सोस करते रहें।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
औरत से उसके हुस्न (खूबसूरती) और माल की वजह से निकाह न करो बल्कि उसके दीन के बाइस उससे निकाह करो।
(सुनन इब्ने माजा—135)

बसा औकात देखा गया है जब कोई शख्स अपने लड़के के रिश्ते के इरादे से जब किसी लड़की वाले के घर जाता है तो लड़की के घर वालों से एक सवाल करता है कि क्या लड़की कुरान व उर्दू पढ़ी हुई है लेकिन यही सवाल किसी दूसरे से पूछने से पहले क्या कभी उसने अपने आप से भी किया है कि हमारा लड़का कुरान व उर्दू पढ़ा है क्या कुरान मजीद का पढ़ना मर्दों के लिये ज़रूरी नहीं है हालाँकि हर मुसलमान मर्द व औरत के लिये बेहद ज़रूरी है कि वो कुरान मजीद की तालीम हासिल करे ताकि वो दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद और अज़र व इनामात से बहरावर हो।

और बाज़ लोग तो ऐसे भी हैं कि जब उनसे किसी लड़की की शादी के रिश्ते की बात की जाये तो वो लड़की की नेक सीरत व

अख़लाक़ और दीनदारी के मुताअल्लिक नहीं पूछते बल्कि उनका पहला सवाल ये होता है कि शादी कैसी करेंगे और शादी में रुपया और जहेज़ में क्या-क्या देंगे ये शादी है या तिजारत है शादी के नाम पर माल की तिजारत करने वाले क्या वो अपनी मौत से बे ख़बर हैं हालाँकि मौत उनसे बे ख़बर नहीं बल्कि मौत उन्हें हर वक़्त अपने घरे में लिये रहती है और अपने वक़्त मुकर्ररा पर वारिद हो जाती है फिर वो माल जो शादी के नाम पर लिया था वो सब यहीं रह जाता है और उनके किसी काम नहीं आता और वो कब्र में दफ़न हो जाते हैं और उन पर मुख़्तलिफ़ अज़ाब मुसल्लत कर दिये जाते हैं और क़यामत के दिन वो शर्मशार व रुसवा होंगे और उस माल के हिसाब के लिये उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने खड़ा होना होगा और हिसाब देना होगा।

बाज़ लोग अपनी बेटियों की शादी सरमायादार शराबी, जुआरी, और बदआमाली शख्स से कर देते हैं हालाँकि वो उसके बाद आमाली होने पर मुत्तलाअ होते हैं लेकिन उन्हें तो सिर्फ़ लड़के की मालदारी से मतलब रहता है और माल के बाइस उनकी आँखें लड़के में पायी जाने वाली तमाम बुराईयों और ऐबों से अन्धी रहती हैं और वो सोचते हैं कि मेरी बेटी ऐशो आसाइश में रहेगी और इस पर वो फ़ख़ और बहुत खुशी का इज़हार करते हैं और खुद को बहुत अक्लमंद और होशियार समझते हैं हालाँकि वो बहुत बड़े अहमक हैं जो अपनी बेटियों पर आने वाली मुसीबतों परेशानियों से अन्जान रहते हैं क्योंकि अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हुये शादी ब्याह के कामों को अन्जाम देना और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करना फिर अपनी बेटी की ऐशो इशरत व खुशहाल ज़िन्दगी की अल्लाह तआला से उम्मीद व ख़्वाहिश रखना क्या ये हिमाकत नहीं है।

जिस तरह हर मर्द की ख़्वाहिश होती है कि मेरी वीबी नेक सीरत अच्छे अख़लाक़ व खुशमिजाज और फ़रमांबरदार हो इसी तरह हर औरत की भी ख़्वाहिश होती है कि मेरा शौहर नेक व अच्छी आदत वाला हो और उसका बरताव अच्छा हो और हर तरह से मेरा ख़्याल रखे और हमेशा हमसे खुश रहे और कभी

नाराज़ न हो और हमारी ख्वाहिशात व ज़रूरियात का ख्याल रखे लेकिन किसी शराबी, जुआरी, बेदीन और बदआमाली से इस तरह की उम्मीद व ख्वाहिश रखना महज़ बातिल व हिमाकत है और जो लोग अपनी बेटियों की ख्वाहिशों को अपने पैरों तले कुचलकर उनकी शादी किसी बदआमाली, बेदीन शख्स से कर देते हैं और उन्हें हमेशा के लिये ग़म व परेशानियों के दलदल में फेंक देते हैं जहाँ से वो कभी निकल नहीं पातीं और उनकी ज़िन्दगी ग़म व तकलीफ़ों के अंधेरों और मुसीबतों परेशानियों से लबरेज़ रास्तों पर गुज़रती है और उनकी तमाम ख्वाहिशात उनके दिलों में दफ़न हो जाती है क्या हम ज़ालिम हैं जो ऐसा करके अपनी बेटियों पर जुल्म करते हैं।

इसलिये हमें चाहिये अपनी बेटियों की ख्वाहिशों को ज़हन में रखते हुये अपनी बेटी की शादी के लिये ऐसे लड़के का इन्तिखाब करें जो नेक सीरत व दीनदार हो ताकि हमारी बेटियाँ नेक व खुशहाल रहें और उनकी ज़िन्दगी खुशगवार व शादाब हो और वो नेक खाविन्द की सुहवत में नेक अमल करें ताकि उनकी दुनियाँ व आखिरत दोनों बेहतर हो जायें।

लेकिन बसा औकात हमें देखने को मिलता है कि जब कोई शख्स अपनी लड़की की शादी का इरादा करता है तो वो यही ख्वाहिश रखता है कि लड़का दीनदार हो या न हो सिर्फ़ मालदार हो चाहे वो ऐबदार या बदकार हो जब हम अपने से ज़्यादा मालदार लोगों में रिश्ता करते हैं तो हमें उनके मुताबिक़ ज़्यादा खर्च करना पड़ता है चाहे हम कर्ज़दार क्यों न हो जायें और उनके मुताबिक़ हमें जहेज़ व दीगर इन्तज़ामात करने होते हैं लेकिन हमें सिर्फ़ इस बात की परवाह और फ़िक्र होती है कि मेरी बेटी बड़े घर की बहू बन जाये और उसका मुस्तक़बिल बेहतर हो जाये और वो ऐशो आराम की ज़िन्दगी गुज़ारे लेकिन हमें इस बात पर भी ग़ौर फ़िक्र करना चाहिये कि अगर लड़का बदआमाली शराबी जुआरी बेदीन बे नमाज़ी होगा तो कहीं उसकी सुहवत पाकर मेरी लड़की भी अपने दीन से दूर न हो जाये और उसकी दुनियाँ व आखिरत दोनों ख़राब हो जायें और दुनियाँ

की जैबो जीनत में उलझ कर अल्लाह व रसूल की इताअत से बे परवाह हो जायेगी तो ज़रा सोचो अगर हम अपनी लड़की के लिये सिर्फ़ मालदार लड़का देखते हैं और दीनदार लड़का नहीं देखते और उससे अपनी लड़की का निकाह कर देते हैं तो ज़रा सोचो क्या हम उसकी भलाई या बेहतरी चाह रहे हैं या फिर उसे गुनाहों के दलदल में धकेल कर उसे जहन्नुम की तरफ़ ले जा रहे हैं क्या हम अपनी बेटी के दुश्मन हैं जो ऐसा कर रहे हैं।

और इस तरह की ख्वाहिशात की वजह से शादी ब्याह में बहुत ज्यादा इख़राजात और फ़िजूल खर्ची होती है जिसके बाइस निकाह से बरकत चली जाती है क्योंकि जिस निकाह में फ़िजूल खर्ची और ख़िलाफ़े शरअ काम होते हैं उस निकाह में बरकत नहीं होती।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
सबसे बरकत वाला निकाह वो है जिसमें खर्चा सबसे कम हो।
(मिशकात—268)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और वो लोग जो खर्च करते हैं तो न हद से आगे बढ़ें और न तंगी इख़्तियार करें बल्कि इन दोनों के बीच एतदाल पर रहें
(सू0—फ़ुरकान—67)

मुन्दरजा बाला हदीस व कुरान की रोशनी में ये बात वाजेह हुई कि हमें फ़िजूल खर्ची से बचना चाहिये और निकाह में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सुन्नतों और उनके तरीकों और उनके अहकाम को अमल में लाना चाहिये ताकि हमारे निकाह में बरकतों और रहमतों का नुजूल हो और अल्लाह व रसूल की हमें रज़ा और खुशनूदी हासिल हो और जो लोगों की खुशनूदी चाहता है वो अल्लाह तआला की खुशनूदी से महरूम रहता है इसलिये हमारे लिये वही काम बेहतर है जिसमें अल्लाह व रसूल की रज़ा व खुशनूदी शामिल हो और जो काम अल्लाह व रसूल को ना पसन्द हो वो काम हमें नहीं करना चाहिये इसी में हमारी भलाई और बेहतरी है और अल्लाह तआला ने हमारे लिये कुछ हदें मुक़्र्रर की हैं और हमें चाहिये कि उन हदों को न तोड़ें और उन हदों के दायरे में रहकर ही काम करें अगर हम सच्चे मुसलमान हैं और अपना भला

चाहते हैं और खुद को अल्लाह तआला का बन्दा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का उम्मती और गुलाम कहते हैं तो हमें चाहिये अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अमल पैरा हो जायें ताकि हम सब तआला के ग़ज़ब व नाराज़गी से बच जायें और अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार और पसन्द तरीन बन्दों में हमारा शुमार हो और अल्लाह व रसूल की हमें क़ुरबत नसीब हो और हमारी मग़फ़िरत हो जाये और हम निजात पाने वालों में से हो जायें

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और खाओ और पियो और हृदय से ज़्यादा खर्च न करो बेशक वो (अल्लाह तआला) फ़िज़ूल खर्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (सू०—आअराफ़—21)

निकाह होने से कबूल (पहले) हजारों रुपये की फ़िज़ूल खर्ची की जाती है जो बिल्कुल बे मायना और बे मतलब होती है जब लड़की या लड़के का रिश्ता तय होता है तो उस रस्म में सैकड़ों लोग आते हैं जिसमें दोनों तरफ़ से फ़िज़ूल खर्ची होती है और उसमें मोटर वाहन का खर्च और खाने व तरह—तरह के नाश्ते का खर्च फिर उन आने वाले लोगों को नज़राने की शक्ल में कुछ रुपये भी दिये जाते हैं फिर उसके बाद दूसरी रस्म अदा की जाती है जिसे गोद भराई कहते हैं इस रस्म में भी दोनों तरफ़ से बहुत ज़्यादा फ़िज़ूल खर्ची की जाती है और इस दरमियान अगर ईदुल फ़ित्र का त्यौहार आ गया तो दोनों तरफ़ से ईदी के नाम पर एक दूसरे के यहाँ माल व सामान पहुँचाये जाते हैं और हजारों रुपया फ़िज़ूल खर्च होता है।

फिर उसके बाद मंगनी की रस्म अदा की जाती है उसमें भी बहुत ज़्यादा फ़िज़ूल खर्ची होती है फिर उसके बाद निकाह की तारीख़ तय की जाती है तो उसमें भी बहुत लोग शिर्कत करते और हजारों रुपया फ़िज़ूल खर्च हो जाता है इत्ता कि निकाह होने तक रस्मों रिवाज़ के नाम पर हजारों लाखों रुपयों की बर्बादी और फ़िज़ूल खर्ची की जाती है और ये तमाम रस्में और इनके इख़राजात जो ज़िक्र हुये हैं क्या हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और आपके सहाबाक़िराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम में से किसी ने इन रस्मों

और तरीकों को इस्तिथार किया है या इस तरह से फ़िजूल खर्ची की है जो हम कर रहे हैं हालाँकि ये तमाम ग़ैर शरई उमूर हैं और ग़ैर मुस्लिमों के रस्मों रिवाज़ है जिन्हें हम अपना रहे हैं और उस पर अमल कर रहे हैं और फिर भी हम कहते हैं कि हम सुन्नते रसूल अदा कर रहे हैं हालाँकि हकीकत ये है कि हम झूठ बोल रहे हैं और अल्लाह व रसूल की इताअत के बजाय ग़ैर मुस्लिमों की रस्मों रिवाज़ की पैरवी कर रहे हैं और अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को नाराज़ कर रहे हैं और इन तमाम मामलात पर हम बहुत ज़्यादा खुशी का इज़हार करते हैं क्या अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके हमारा खुश होना क्या हमारे लिये बेहतर और दुरस्त है बल्कि हमारे लिये बहुत बुरा है और हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये और शादी ब्याह में ग़ैर शरई उमूर व तमाम बुराइयों को ख़त्म करने की पहल व कोशिश करनी चाहिये और अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ शादी ब्याह से मुताअल्लिक़ तमाम कामों को अन्जाम देना चाहिये।

शादी ब्याह के मौके पर जहेज़ और दीगर कई तरह के इख़राजात जिसमें लाखों रुपये खर्च होते हैं अगर हम अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ शादी ब्याह करें तो हम फ़िजूल खर्ची करने से बच जायेंगे और हमारा माल भी ज़ाया (बर्बाद) होने से बच जायेगा और अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों पर अमल के सबब हम बेहतर अज़र (सवाब) पायेंगे जो हमारी दुनियाँ और आख़िरत के लिये फायदेमन्द और बेहतर होगा।

अक्सर लोग शादी ब्याह में दिखावा और वाहवाही के लिये लाखों रुपया खर्च कर देते हैं लेकिन ऐसे खर्चों ने ग़रीबों के लिये मुश्किल खड़ी कर दी है जहेज़ व दीगर खर्च गुनाह नहीं हैं लेकिन उनका तरीका और उसकी हदें हैं और उन्हीं के मुताबिक़ जहेज़ व दीगर इख़राजात करें ताकि लोगों को किसी भी तरह की परेशानियों से न गुज़रना पड़े इसलिये हमें चाहिये कि बैन्ड बाजा आतिश बाज़ी वगैराह दीगर उन तमाम कामों से बचना चाहिये जिनमें फ़िजूल खर्ची शामिल हो अगर हमें ज़्यादा माल खर्च करने का शौक़ है तो अपने माल को ऐसी जगह खर्च करें कि जिससे हमें फायदा हो जैसे कि अल्लाह तआला की राह में कसरत से खर्च करें

मुहताजों को दें रिश्तेदारों की मदद करें गुरबा मसाकीन की मदद करें ताकि हम उसका बेहतर अजर पायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

और कराबत दारों को उनका हक अदा करो और मुहताजों और मुसाफिरों को भी दो और (अपना माल) फिजूल खर्ची में मत उड़ाओ बेशक फिजूल खर्ची वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है। (सू0—बनी इसराईल—26,—27)

मजकूरा कुरान मजीद की आयात पर हमें गौर करना चाहिये कि अल्लाह तआला ने फिजूल खर्च करने वालों को शैतान का भाई करार दिया है तो क्या हममें से कोई ये पसन्द करेगा कि हम शैतान के भाई कहलायें बाज़ लोग तो अपने लड़कों की शादी बगैर माल लिये या बगैर कुछ तय किये करते ही नहीं और ये ख्याल करते हैं कि हम लड़की वालों पर एहसान कर रहे हैं और लड़की वालों को इस हद तक दबाते हैं कि उन्हें मजबूरन लड़के वालों की माँगें पूरी करनी पड़ती हैं चाहे इसके लिये उन्हें कर्ज़ लेना पड़े क्या ये हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम या सहाबाकिराम का तरीका है क्या हम भूल गये हैं कि हम मुसलमान हैं जबकि हमारा हर काम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के तरीके पर होना चाहिये न कि लोगों के तरीके पर होना चाहिये और जो लोग शादी ब्याह में माल वगैराह की माँग करते तो गोया वो अपनी आखिरत ख़राब करते हैं जिसका अंजाम बहुत बुरा होगा जो उन्हें हर हाल में भुगतना होगा जो लोग हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के तरीकों और सुन्नतों के बजाय गैर मुस्लिमों के तरीकों व रस्मों रिवाज़ पर अमल करते हैं तो वो खुद के लिये बहुत बुरा करते हैं हदीस पाक में है जो जिस कौम का तरीका इख़्तियार करे वो उन्हीं में से है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स माल होने के बावजूद माँगता है तो गोया वो जहन्नुम के अंगारे माँगता है। (सही मुस्लिम—1/333)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

जो शख्स बे नियाज़ी के बावजूद माँगता है तो वो कयामत के दिन

यूँ आयेगा कि उसके चेहरे पर गोस्त नहीं होगा सिर्फ हड्डियाँ होंगी जो हरकत करेंगी। (मुस्तदरक हाकिम—1/407)

इसलिये हमें चाहिये कि शादी ब्याह में माल वगैराह या दीगर कोई भी चीज़ का सवाल न करें क्योंकि बिला ज़रूरत माँगना बहुत बड़ा गुनाह है और जब अल्लाह तआला ने हमें भिकारी नहीं बनाया तो फिर हम क्यों लोगों से भीक माँगे और भिकारियों के मिस्ल हो जायें और साथ ही गुनाहगार भी हो जायें और हमें इस गुनाह के अज़ाब में मुबिला होना पड़े क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की जुबाने मुबारक से निकला हुआ हर कौल हक है क्योंकि कौले रसूल असल में कौले इलाही होता है।

बाज़ लोग कह दिया करते हैं कि अगर हम लोगों की तरह शादी ब्याह नहीं करेंगे तो हमें लोगों के सामने शर्मसार होना पड़ेगा और लोग हमें बुरा आदमी गुमान करेंगे और अगर हमने लोगों की बात न मानी तो लोग हमसे नाराज़ हो जायेंगे और बुरा मान जायेंगे तो उन लोगों के सामने दो रास्ते हैं एक ये कि हम उन लोगों की बात माने जो जाहिलाना और ख़िलाफ़े शरअ काम करते और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हैं ताकि वो लोग हमसे नाराज़ न हों चाहे अल्लाह व रसूल हमसे नाराज़ हो जायें और हम गुनाहगार व अज़ाबे इलाही के सज़ावार हो जायें और चाहे अल्लाह की रहमत व बरकत और खुशनुदी हमें न मिले लेकिन मख़लूक की खुशनुदी हमें ज़रूर हासिल हो और लोग हमसे खुश रहें।

और दूसरा रास्ता ये कि हम अल्लाह व रसूल की इताअत और फ़रमाबरदारी करते हुये अपने तमाम कामों को अंजाम दें और अपने तमाम कामों में अल्लाह व रसूल की रज़ा व खुशनुदी को मकसूद रखें चाहे तमाम लोग हमसे नाराज़ हो जायें लेकिन हमसे कभी भी किसी हाल में भी हमारा रब और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम नाराज़ न हों ताकि हम दुनियाँ व आख़िरत में उसका अज़र पायें और अज़ाबे इलाही से महफूज़ रहें तो इस तरह हमारे लिये दो रास्ते हैं या तो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हुये ख़िलाफ़े शरअ काम करें और लोगों को खुश करें और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करे या फिर अल्लाह व रसूल के मुताबिक़ काम करें और

अल्लाह व रसूल को खुश करें और लोगों को नाराज़ करें अब फैसला आप के हाथ में चाहे तो लोगों को नाराज़ करें या अल्लाह व रसूल को नाराज़ करें ।

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि जहाँ बुराई को देखे तो उसे रोकने की कोशिश करे और अगर बुराई को रोकने की ताक़त न हो तो दिल में बुरा जाने यही अल्लाह व रसूल ने हमें हुक्म दिया है और ख़ासकर उल्मा हज़रात को चाहिये कि वो हर बुराई को रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें क्योंकि उल्मा की बात का लोगों पर ज़्यादा असर होता है और उन्हें चाहिये कि ऐसी मजालिस और तक़रीबों से ऐराज़ करें जहाँ ख़िलाफ़े शरअ काम होते हैं और निकाह पढ़ाने के लिये शर्त रखें कि अगर कोई काम ख़िलाफ़े शरअ होगा तो मैं निकाह नहीं पढ़ाऊँगा और ना ही मैं उसमें शिर्कत करूँगा चाहे उल्मा हज़रात को इसमें कितना ही नुकसान क्यों न उठाना पड़े ।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह करने का और जो अल्लाह तआला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो रसूल के ख़िलाफ़ करे बाद इसके कि हक़ का रास्ता उस पर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा राह चले तो हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह है पलटने की । (सू0—निसा—115)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शरअ बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके अगर इतनी ताक़त न हो तो जुबान से रोके और अगर इसकी भी ताक़त न हो तो दिल में बुरा जाने । (सही बुख़ारी—1/51)

आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है—
किसी ख़िलाफ़े शरअ मजलिस में जाना जाइज़ नहीं और वहाँ पर खाना भी जाइज़ नहीं और अगर खाना दूसरी जगह हो तो आम लोगों को खाने में हर्ज़ नहीं लेकिन आलिम या मुक्तदा (इमाम व पेशवा) का वहाँ पर भी खाना जाइज़ नहीं । (फ़तावा रज़विया—24/134)

इस बदलते दौर में एक नया फैशन ईजाद हुआ है कि लोग खड़े होकर खाना पीना अपनी शान और इज्जत समझते हैं जबकि ये जाहिलाना तरीका है जो खिलाफे सुन्नत और आदाबे खाना के खिलाफ है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

हरगिज़ तुम में से कोई खड़े होकर कुछ न पिये और अगर भूल से पी ले तो उसे चाहिये कि कै (उल्टी) कर दे। (मिशकात-2/373)

क्या हम खाने पीने के आदाब और तहजीब को भूल गये हैं जो हम गैर मुस्लिमों के तरीकों को अपना रहे हैं और बाज़ तो ऐसे हैं कि वो खाने की इज्जत नहीं करते और उसे बर्बाद करते हैं क्या वो लोग नहीं जानते कि ये रिज़के इलाही की बे अदबी और तौहीन है शादी ब्याह व दीगर तकरीबों में गर्म रोटियाँ तलब करते हैं और ठन्डी रोटियों को छोड़ देते हैं जो बाद में कूड़े के ढेर में पड़ी होती हैं और वो खाने की अहमियत को नहीं समझते कि खाना अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेअमत है जो हमारा सब अपने फज़्लो करम से हमें अता करता है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— गर्म खाने में बरक़त नहीं होती लिहाज़ा इसे ठन्डा करके खाओ और आपने कभी गर्म खाना तनावुल नहीं फरमाया। (बैहकी-7/280)

बे पर्दगी और बे हयायी का ये हाल है कि आदमी और औरतें साथ साथ खा पी रहे हैं और वो अल्लाह तआला के हुक्म की नाफरमानी कर रहे हैं और आखिरत के ख़ौफ़ से बे परवाह होकर खुद को हलाकत में डाल रहे हैं इसके अलावा दूल्हा भाती की रस्में हो रहीं हैं जिसमें औरतें और लड़कियाँ मर्दों से बाहम हंसी मज़ाक करते हैं भाभी देवर के काजल लगाती है जबकि देवर और भाभी के दरमियान शरअन पर्दा है और ये सारे काम खिलाफे शरअ हैं और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का बाइस है और हम कितने ना फरमान हैं जो अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके खुशी का इज़हार करते हैं जिसने हमें तमाम नेअमतों से नवाज़ा और हम उसके हुक्मों को नज़र अंदाज़ कर रहे हैं और शैतान की बात मानकर उस पर

अमल कर रहे हैं हमें इन तमाम बातों पर गौरो फ़िक्र करना चाहिये और खुद को बदलना चाहिये।

बाज़ लोग निकाह के बाद तीसरे दिन खाना करते हैं और कहते हैं कि हम वलीमा कर रहे हैं जो सुन्नत रसूल है हालाँकि वलीमा दूसरे दिन के खाने को कहते हैं और तीसरे दिन का खाना सिर्फ़ रिया और दिखावा है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
पहले दिन का खाना हक़ और दूसरे दिन का खाना सुन्नत और तीसरे दिन का खाना रियाकारी (दिखावा) है और जो शख्स शौहरत के लिये ऐसा करेगा तो अल्लाह तआला उसे रुसवा करेगा (सही मुस्लिम—1 / 458)

अक्सर शादी ब्याह व दीगर तक़रीब में कोई शख्स कॉपी पेन लेकर बैठता है जो लोगों का व्यवहार (रूपया पैसा) लिखता है लेकिन रूपया पैसा लिखवाने वालों में ज़्यादातर लोगों की नीयत ये होती है कि हमने जितना रूपया लिखवाया है उससे ज़्यादा हमें वापस मिलेगा जब हमारे यहाँ कोई तक़रीब या शादी का मौका होगा हालाँकि इस नीयत से व्यवहार करना शख्स ना जाइज़ है अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में इसकी मुमानियत फ़रमाई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और ज़्यादा पाने की नीयत से किसी पर एहसान न करो।
(सू0—मुदस्सिर—6)

इसलिये हमें चाहिये कि हर हाल में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करें और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सुन्नत और तरीकों पर अमल करते हुये शादी ब्याह करें ताकि बाइसे रहमत और बरकत हो और अच्छी नीयत के साथ निकाह करें ताकि शादी शुदा ज़िन्दगी बेहतर व खुशहाल और सर सब्ज़ व शादाब हो और पाक दामनी हासिल हो और हमारी ज़िन्दगी दीन के रास्ते पर चलते हुये अमन चैन व मशरर्तों में गुज़रे और दुनियाँ और आख़िरत में हम कामयाबी और कामरानी से सरफ़राज़ हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
निकाह को ऐलानियाँ करो और निकाह को मस्जिद में मुनअफ़िद
करो और उस पर दफ़ बजाओ। (सही बुख़ारी—1/500)
(जामअ तिमिज़ी—175)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
निकाह को जाहिर (ऐलानियाँ) करो चाहे छलनी बजाने से हो।
(बैहकी—7/290)

एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम एक सहाबी
के घर तशरीफ़ ले गये तो वहाँ कुछ लड़कियाँ दफ़ के साथ गा
रहीं थीं तो आपने सुना उन में से एक कहती थी कि नबी अकरम
सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हमारे बीच मौजूद हैं जो कल की बात
(मुस्तक़बिल) को जानते हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने
फ़रमाया इसे छोड़ दो और वही कहो जो पहले कह रहीं थीं।
(सुनन इब्ने माजा—138)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिसने किसी का माल पाने के सबब निकाह किया तो अल्लाह
तआला उसका रिज़क क़ता करेगा और अगर इज्ज़त पाने के सबब
निकाह किया तो अल्लाह तआला उसकी ज़िल्लत में ज़्यादाती करेगा
और अगर इसलिये निकाह किया कि पाक दामनी हासिल हो
अल्लाह तआला उस निकाह में बरकत अता करेगा। (तिबरानी)

आज कल शादी ब्याह व दीगर छोटी बड़ी तक़रीब
में शोहरत और वाहवाही के लिये अक्सर बहुत ज़्यादा इख़राजात
किये जाते हैं जो फ़िज़ूल ख़र्ची पर मबनी होते हैं ताकि लोग हमारी
तारीफ़ और वाहवाही करें और उस पर हम बहुत ज़्यादा खुश होते
हैं लेकिन हम ये नहीं सोचते कि मेरे इस काम से क्या मेरा रब भी
हमसे खुश है या हमसे नाराज़ है हालाँकि हर मुसलमान के लिये
वही काम बेहतर है जिस काम से अल्लाह व रसूल खुश व राज़ी
हों लेकिन हम लोगों को खुश करने और उनसे तारीफ़ और
वाहवाही हासिल करने के लिये उन कामों से भी परहेज़ नहीं करते
जिन कामों की अल्लाह व रसूल ने हमें मुमानियत फ़रमाई है।

ज़रा सोचो कि हम लोगों से तारीफ़ व वाहवाही हासिल करने के लिये हज़ारों रुपये फिज़ूल खर्च कर देते हैं लेकिन बदले में हमें क्या मिलता है क्या लोगों की तारीफ़ हमारा कुछ भला कर सकती है या हमारे खर्च हुये रुपये हमें वापस दिला सकती है जो हमने मेहनत और मशक्कत से कमाये थे और हज़ारों रुपये सिर्फ़ तारीफ़ पाने के लिये खर्च करना महज़ घाटे का सौदा है जो सिर्फ़ बेवकूफ़ लोग करते हैं जो अपनी सौदा को घाटे में बेचते हैं और अपनी तिजारत में नुकसान उठाते हैं और उस पर अल्लाह व रसूल की नाराज़गी जो हमें बहुत बड़े ख़सारे (नुकसान) की तरफ़ ले जाती है

बाज़ लोग तो ऐसे भी होते हैं जो शादी ब्याह व दीगर तकारीब में हज़ारों रुपया फिज़ूल खर्च कर देते हैं लेकिन अगर कोई ग़रीब मिस्कीन मुहताज अगर उनकी तक़रीब में खाना माँगे तो वो उन्हें झिड़क कर भगा देते हैं हालाँकि जो रुपया हम खर्च कर देते हैं वो हमें वापस नहीं मिलता लेकिन ग़रीब मिस्कीन और मुहताज को दिये हुये खाने का अज़र रब तआला हमें ज़रूर अता फ़रमायेगा जो ग़रीब मिस्कीन हमारा खाना खाने के बाद हमारे लिये दुआये ख़ैर करते हैं उनकी दुआ हमारे लिये ख़ैरो बरकत का सबब बनती है इसलिये हमें चाहिये कि जहाँ हम बहुत लोगों के लिये खाने का इन्तज़ाम करें वहीं कुछ फुक़रा मसाकीन मुहताजों के लिये भी इन्तज़ाम करें ताकि हमारे यहाँ से कोई माँगने वाला खाली और मायूस होकर न लौटे और किसी ग़रीब मिस्कीन को खाना खिलाने से कभी कुछ नहीं घटता बल्कि अल्लाह तआला उससे कई गुना ज़्यादा अता करता है और अल्लाह तआला खुश व राज़ी होता है कि मेरे ग़रीब मिस्कीन बन्दों को उसने खाना खिलाया और रब तआला की रहमत जोश में आती है और उस पर रहमतों और बरकतों का नुज़ूल होता है और वो दुनियाँ और आख़िरत में कसीर नफ़ा उठाने वालों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

और मंगता को न झिड़को और अपने रब की नेअमत का ख़ूब चर्चा करो। (सु0—दुहा—10,—11)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

आदमी का भूके को खाना खिलाना उसे जन्नत में ले जायेगा।

(मजमउज्जवाइद—5/17)

इसलिये हमें चाहिये कि हर काम को करने से पहले सोचें कि मेरे इस काम को करने से क्या अल्लाह व रसूल हमसे खुश और राजी होंगे या नहीं और नतीजा ये पायें कि इस काम को करने से अल्लाह व रसूल हमसे खुश व राजी होंगे तो उस काम को जरूर बेहतर तरीके से अंजाम दें और अगर नतीजा ये पायें कि मेरे इस काम से अल्लाह व रसूल हमसे नाराज़ हो जायेंगे तो उस काम को हरगिज़ न करें। शादी ब्याह में शामिल तमाम गैर शरई उमूर व गैर मुस्लिमों के रस्मों रिवाज से परहेज़ करें और बाज़ रहें जैसे बैन्ड बाजा, आतिश बाज़ी, दूल्हे के हाथों में मेंहदी और कंधन और मढ़ा और उसकी रस्में, जैसे पाँच या सात घड़ो में पानी भरना, हल्दी व चावल के छापे लगाना, भात के नाम पर कपड़े वगैराह माँगना और उनका पहनना भाभी का दूल्हे को काजल लगाना, दूल्हा भाती, जूता चुराई की रस्में व घोड़ा उतराई के पैसे माँगना जो भिकारियों का काम है और आदमी औरतों का बाहम मेलजोल व गुफ्तगू व खड़े होकर खाना पीना, बेहूदा नाच गाना व बेपरदगी और घरों में डी.जे. पर बेहूदा गाने बजाना और उस की धुन पर नाचना कूदना वगैराह ये सब काम खिलाफे शरअ व गैर मुस्लिमों के रस्मों रिवाज और शैतानी व जहालत के काम है और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का बाइस हैं और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके कोई भी काम हमारे लिये भला और खैर नहीं हो सकता।

इसलिये हमें चाहिये कि इन तमाम जाहिलाना कामों से इजतिनाब करें और इनसे बचने की हर मुम्किन कोशिश व तदाबीर करें और शौहरत व दिखावे के लिये कभी कोई काम न करें क्योंकि शौहरत व दिखावे के लिये किया गया हर काम इन्सान को ख़सारे (नुकसान) के सिवा कुछ भी नहीं दे सकता सिर्फ़ कुछ वक़्त की तारीफ़ व वाहवाही के लिये खुद को मुसीबत व ख़सारे में न डालें और हमेशा फ़िज़ूल ख़र्ची से बचें अगर हम चाहते हैं कि हमें रब तआला की रहमत व खुशनूदी और उसकी रज़ा हासिल हो तो हमें अल्लाह व रसूल के हुक्म व सुन्नतों और इस्लामी तौर तरीके और शरीयते मुतहरा के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अंजाम दें और हमेशा अपने तमाम कामों में अपने रब का फज़ल और उसकी रहमत व बरकत के मुतलाशी और तालिब रहें ताकि दुनियाँ और आख़िरत में हम कामयाब हों और बेहतर अज़र के मुस्तहिक़ हो जायें।

—: मुसलमानों के हुक्क :-

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जब तुम किसी मुसलमान से मुलाकात करो तो उसे सलाम करो
उसकी दावत को कुबूल करो उसके घींकने पर यरहमूकल्लाह कहो
और वो बीमार हो तो उसकी बीमार पुर्सी करो और अगर मर जाये
तो उसके जनाजे में शरीक हो। (सही बुखारी—1/166)

अपने मुसलमान भाइयों के लिये मुहब्बत और रहम दिली रखना ये
मोमिन की अलामत है जिस तरह हम चाहते हैं कि लोग हमसे
हमेशा मुहब्बत और रहम दिली से पेश आयें और हम पर मेहरबान
रहें तो जो हम लोगों से चाहते हैं वही गुमान हमें लोगों के लिये भी
रखना चाहिये और उनके हुक्कों को जानें और उन्हें अदा करने की
हर मुमकिन कोशिश करते रहें और जो शरूस्स लोगों के लिये अपने
दिल में मुहब्बत रखता है और उनके लिये रहम दिल व मेहरबान
होता है और उनके हुक्कों को अदा करने की कोशिश करता है तो
रब तआला उस शरूस्स से मुहब्बत करता है और उसे अपना महबूब
बना लेता है और उसे अपनी कुर्बत में जगह अता फरमाता है

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी ज़रूरी
है कि तमाम मुसलमान बाहम (आपस में) भाई—भाई हैं और इस
रिश्ते को हम जुबान के साथ—साथ दिल से भी जानें और मानें
जिस तरह हम अपने तमाम कराबत दारों को मानते हैं और जब
हम इस रिश्ते को ज़ाहिर व बातिन से तसलीम करेंगे तो हमें उनके
हुक्कों को अदा करने में किसी भी तरह की दुश्वारी दरपेश नहीं
आयेगी और न हमारे दरमियान कोई बुराई बाकी रहेगी।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

बेशक मोमिन एक दूसरे के भाई हैं। (सू0—हुजरात—10)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

अल्लाह तआला के नज़दीक तुम में से सबसे ज़्यादा महबूब वो लोग
हैं जो दूसरों से मुहब्बत करते हैं और वो उनसे मुहब्बत करते हैं
और सबसे ज़्यादा बुरे लोग वो हैं जो चुगल ख़ोर हैं जो मुसलमान
भाईयों में तफ़रीक़ डालते हैं। (अत्तरगीब वत्तरहीब—3/410)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
बाहमी मुहब्बत और रहम दिली में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म
की तरह है जब जिस्म के किसी उजू (हिस्से) को तकलीफ़ होती है
तो बाकी जिस्म के आज़ा (हिस्से) भी तकलीफ़ महसूस करते हैं।
(सही मुस्लिम-2/321)

मुसलमानों के हुक्क में पहला हक़ ये है कि जब हम
किसी मुसलमान भाई से मुलाकात करें तो सबसे पहले सलाम करने
में पहल करें क्योंकि जो सलाम करने में पहल करता है उसे ज़्यादा
सवाब मिलता है और वो तकब्बुर जैसी बुराई व गुनाह से बचने में
भी कामयाब होता है सलाम के बाद मुसाफ़ाह करने में भी पहल
करें क्योंकि मुसाफ़ाह की पहल करने में भी ज़्यादा सवाब है फिर
बाहम नरम दिली से गुफ्तगू करें और अपने तआल्लुकात को बेहतर
बनायें और आपस में एक दूसरे से मुहब्बत का रिश्ता कायम करें।

हदीस पाक में जो आदमी सलाम करने से पहले गुफ्तगू
शुरू कर दे तो उसकी बात का जवाब न दो इसलिये हमें चाहिये
कि जब हम किसी मुसलमान भाई से मुलाकात करें तो सबसे पहले
सलाम करें फिर मुसाफ़ाह करें फिर अच्छे कलाम और हुस्ने खुल्क़
के साथ बाहम गुफ्तगू करें और जब किसी को सलाम का जवाब दें
तो उम्दाह और बेहतर तरीक़े से जवाब दें ताकि उसका दिल खुश
हो और हमारे नामे आमाल में नेकियों का इज़ाफ़ा हो और हमारे
गुनाहों की बख़्शिश हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
जब तुम्हें सलाम किया जाये तो बेहतर लफ़्ज़ से जवाब दो या वही
लौटा दो बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।
(सू0-निसा-86)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
तुम्हारे दरमियान सलाम की तकमील मुसाफ़ाह से होती है।
(जामअ तिमिज़ी-390)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जब दो मुसलमान मुलाकात करते हुये मुसाफ़ाह करते हैं तो उनके
गुनाह झड़ते हैं। (सुनन अबी दाऊद-2/352)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

जब दो मुसलमान मुलाकात के वक़्त हाथ मिलाते हैं तो उनके अलग होने से पहले उन्हें बख़्श दिया जाता है।

(सुनन अबी दाऊद—2/352)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेशक मग़फ़िरत को वाजिब करने वाली बातों में सलाम का फैलाना और हुस्ने कलाम भी है। (कंजुल उम्माल—9/116)

हम पर लाज़िम है कि मुसलमानों के तमाम मामलात में अदुल व इंसाफ़ करें और किसी पर किसी भी तरह की जुल्म व ज़्यादती न करें ज़रा सोचो अगर हमारे साथ कोई जुल्म या ज़्यादती करे या हमारे साथ कोई धोका, फ़रेब या बदकलामी करे या हमारी अमानत में ख़्यानत करे तो क्या ये तमाम बातें हमें पसन्द या ग़वारा होंगी हरगिज़ पसन्द व ग़वारा न होंगी तो जो बातें हमें पसन्द नहीं हैं तो क्या वो दूसरे मुसलमान भाइयों को पसन्द होंगी क़तअन पसन्द न होंगी इसलिये हमें चाहिये कि दुन्यावी तमाम मामलात में जब हम किसी मुसलमान भाई के साथ बुराई का इरादा करें तो पहले ग़ौर करें कि अगर हमारे साथ कोई ऐसी बुराई करता तो हमें कैसा महसूस होता क्योंकि जो चीज़ हमारे लिये बुरी और तकलीफ़ ज़दा है तो दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये भी बुरी और तकलीफ़ ज़दा होगी और इस तरह हम हर बुराई और गुनाह से खुद को बाज़ रखने में कामयाब होंगे। और हमेशा अपने मुसलमान भाई के लिये वही पसन्द करें जो हम अपने लिये पसन्द करते हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपने मुसलमान भाई की बुराई न चाहो वरना अल्लाह तआला उसे बचा लेगा और तुम्हें उसमें मुब्तिला कर देगा।

(अत्तरगीब वत्तरहीब—3/310)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
तुम में से कोई शख्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वो चीज़ पसन्द न करे जो वो अपने लिये पसन्द करता है। (सही बुख़ारी—1/6)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया— जिस आदमी को पसन्द हो कि उसे जहन्नुम से दूर रखा जाये और जन्नत में दाखिल किया जाये और उसकी मौत इस हालत में हो कि वो अल्लाह तआला की तौहीद और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की रिसालत की गवाही देता हो तो उसे चाहिये कि लोगों को वही चीज़ दे जो उसे खुद पसन्द हो। (सही मुस्लिम—2/126)

जो लोग अपने मुसलमान भाइयों को अज़िज़त (तकलीफ़) पहुँचाते हैं गोया वो अल्लाह व रसूल को अज़िज़त पहुँचाते हैं और अल्लाह व रसूल को अज़िज़त पहुँचाने वाला खुद को मुसीबतों व हलाकत में डालता है इसलिये हमें चाहिये कि अपने मुसलमान भाई को किसी भी तरह की अज़िज़त न पहुँचाये जिससे उनके दिल रंजीदा और गमगीन हो और हम गुनाहगार हो जायें और अपने रब को नाराज़ करें और अपनी नेकियों को ज़ाया करें और बल्कि हमें चाहिये कि अपने मुसलमान भाई की हर मुसीबतों परेशानी में उनकी मदद करें और उनके साथ रहमदिली व हमदर्दी रखें और अपने मुसलमान भाइयों को उनकी तमाम परेशानियों से निजात दिलाने की हर मुमकिन कोशिश करें जिस तरह हम अपने दोस्त अहबाब व घर वाले और अपने कराबतदारों की परेशानियों को दूर करने की हम कोशिश करते और उनकी हर तरह से मदद करते हैं और जो लोग मुसलमान भाइयों को ईज़ा (तकलीफ़) देते हैं वो ये गुमान न करें कि वो अपने लिये अच्छा कर रहे हैं बल्कि वो अपने लिये बहुत बुरा और खुद को हलाकत में डालते हैं और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है जिसमें वो मुब्तिला किये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—
बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह व रसूल को उन पर अल्लाह तआला की लानत है और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (सू0—अहज़ाब—57)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह तआला को ईज़ा दी।
(कंजुल उम्माल—10/164)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
कामिल मुसलमान वो हैं जिनकी जुबान और हाथ से दूसरे
मुसलमान महफूज़ रहें। (सही बुखारी-1/6) (कंजुल उम्माल-1/151)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी—
जो शख्स मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटा देता है
तो अल्लाह तआला उसके लिये एक नेकी लिख देता है और उस
नेकी के बाइस उसके लिये जन्नत वाजिब कर देता है।
(मुस्नद अहमद-6/440)

मुसलमानों के हुक्क में से ये भी है कि हर मुसलमान के साथ हुस्ने
खुल्फ़ और अच्छे बरताव के साथ पेश आयें और किसी से सख़्त या
तक़्बुराना कलाम न करें और अपने से बड़ों की इज्ज़त करें और
छोटों पर शफ़क़त करें और अगर लोगों से हमें किसी तरह की
अज़िज़त मिले तो उस पर सब्र करें और उन्हें माफ़ कर दें ताकि
अल्लाह तआला से हम उसका बेहतर अज़र पायें अल्लाह तआला
दरगुज़र करने वालों को अपना महबूब रखता है और उनकी इज्ज़त
को बढ़ाता है और हमें चाहिये किसी मुसलमान के लिये बुरा न
सोचें क्योंकि किसी का बुरा सोचने से उसका बुरा नहीं होता बल्कि
हम गुनाहगार ज़रूर हो जाते हैं क्योंकि किसी का अच्छा या बुरा
होना सिर्फ़ रब तआला के इख़्तियार में है क्योंकि हर चीज़ अल्लाह
तआला के हुक्म के ताबैअ है और हमें किसी भी हाल में किसी का
बुरा सोचने या बुरा करने का हक़ नहीं बनता बल्कि ज़्यादा से
ज़्यादा लोगों के लिये भलाई करना यही हमारे लिये बेहतर है।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
और बुराई का बदला उसी बुराई के मिस्ल होता है फिर जिसने
माफ़ कर दिया और (माफ़ी के ज़रिये) इस्लाह की तो उसका अज़र
अल्लाह तआला के ज़िम्मे है बेशक वो ज़ालिमों को दोस्त नहीं
रख़ता (सू0-शूरा-40)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
वो शख्स हम में से नहीं जो बड़ों की इज्ज़त नहीं करता और छोटे
पर रहम नहीं करता। (मुस्नद अहमद-2/207)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शख्स किसी मुसलमान की ख़ता को माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी ख़ताओं को माफ़ फ़रमायेगा।
(मुस्तदरक हाकिम 2/45)

अगर कोई शख्स हमारे साथ किसी भी तरह की बुराई या ज़्यादती करे तो हमें चाहिये कि हम उसे माफ़ कर दें ताकि अल्लाह तआला से हम बेहतर अज़र पायें और अगर हमने बुराई का बदला बुराई से दिया तो बदले में हमें कुछ भी हासिल न होगा सिवाय गुनाह के मिसाल के तौर पर अगर किसी शख्स ने हमें गाली दी और जवाब में हमने भी उसे गाली दी तो गाली देने का गुनाह दोनों के सर होगा और दोनों लोग गुनाहगार होंगे इसलिये बुराई का बदला अच्छाई से देना यही हमारे लिये बेहतर है।

हमें चाहिये कि मुसलमान के जानो माल की हिफ़ाज़त करें और अगर कोई शख्स किसी मुसलमान पर जुल्म या ज़्यादती कर रहा हो तो हमें उसके जुल्म व ज़्यादती को रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिये और जुल्म करने वाले को पहले समझायें कि वो जुल्म व ज़्यादती न करे और अगर वो न माने तो सख़्ती के साथ ज़ालिम के जुल्म को रोकें और ज़रूरत के मुताबिक़ ज़ोर व ताक़त से ज़ालिम के जुल्म को रोकना चाहिये।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिस शख्स के सामने किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वो ताक़त के बावजूद उसकी मदद न करे तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे रुसवा करेगा। (मुस्नद अहमद—3/487)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो आदमी दुनियाँ में अपने मुसलमान भाई की इज्ज़त की हिफ़ाज़त करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक फ़रिश्ता भेजेगा जो उसे जहन्नुम की आग से बचायेगा। (सुनन अबी दाऊद—2/313)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अपने भाई की मदद करो चाहे ज़ालिम हो या मज़लूम अर्ज़ किया

गया ज़ालिम की मदद किस तरह करें हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया ज़ालिम को उसके जुल्म से रोककर उसकी मदद करो। (सही बुख़ारी-2/1028)

जब कोई मुसलमान किसी हाजत का हमसे मुतालबा करे तो हमें चाहिये कि हम उसकी हाजत (ज़रूरत) को पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि इसका बहुत ज़्यादा सवाब है हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—जो शख्स किसी मुसलमान की हाजत रवाई के लिये उसके साथ गया तो अल्लाह तआला उसके हर कदम पर सत्तर नेकियाँ उसके नामे आमाल में लिखता है और सत्तर (70) गुनाह मिटाता है और अगर वो हाजत उसके हाथों पूरी हो जायें तो वो गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है जैसे वो अपनी माँ के पेट से अभी पैदा हुआ हो और अगर इस दरमियान उसे मौत आ जाये तो वो बिला हिसाब जन्नत में जायेगा

हाजत रवाई करने की बहुत फ़ज़ीलतें हदीस पाक में वारिद हैं एक और मक़ाम पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान की हाजत रवाई करे तो क़यामत के दिन मीज़ान पर मैं उसके साथ खड़ा होऊँगा और अगर उसकी नेकियाँ कम हुई तो मैं उसकी शफ़ाअत करूँगा तो इन अह्दादीस मुबारका से ये मालूम हुआ कि किसी मुसलमान भाई की हाजत रवाई करना कितनी बड़ी फ़ज़ीलत रखता है और हाजत रवाई करने वाला बहुत बड़े अज़र का मुस्तहिक़ हो जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अपने मुसलमान भाइयों की हाजतों को पूरा करें ताकि हम भी बेशुमार इनामात के मुस्तहिक़ हो जायें चाहे ग़रीब हो या अमीर हो सबके साथ अच्छे अख़लाक़ और हुस्ने कलाम से पेश आयें क्योंकि ग़रीब मिस्कीन भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं और हो सकता है कि वो हमसे बेहतर हों क्योंकि अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहने वाला ग़रीब मिस्कीन व मुहताज और फकीर अल्लाह तआला का दोस्त होता है और उनकी मुसीबतों परेशानी में अल्लाह तआला की रहमत और उनकी भलाई पोशीदा होती है जिसे हम न तो देख सकते हैं और न महसूस कर सकते हैं मुसलमान भाई की हाजत रवाई करना

अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसन्दीदा अमल व कुर्बते इलाही और बेहतर अज्रो सवाब का बाइस है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह के नज़दीक पसन्द तरीन अमल ये है कि मोमिन के दिल को खुशी पहुँचायें या उसके ग़म दूर करें या उसका कर्ज़ अदा करें या भूक की हालत में उसे खाना खिलायें। (कंजुल उम्माल-6/432)

सरवरे कौनेन सल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख्स किसी मुसलमान भाई के काम के लिये दिन या रात की किसी साअत (वक़्त) में जाता है वो उसके काम को कर सके या न कर सके ये अमल उसके लिये दो महीने के एतकाफ़ से बेहतर है। (मजमउज्जवाइद-8/192)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला जब किसी की भलाई चाहता है तो उसे तकलीफ़ में मुब्तिला कर देता है। (सही बुख़ारी-2/873)

और हमें चाहिये कि किसी भी मुसलमान भाई के ऐबो नकाइस को न ढूँढ़ें बल्कि उनके अन्दर अगर कोई ऐब हो तो उसकी ऐब पोशी करें और न उनकी ग़ीबत करें और न चुगली करें और न किसी पर तुहमत लगायें और उनके मुताअल्लिक बद गुमानी से बचें क्योंकि ये तमाम बातें गुनाह हैं और हमें हर हाल में इनसे बचना चाहिये और जो इन गुनाहों से नहीं बचता वो अल्लाह तआला के नज़दीक बदतरीन शख्स है और ऐसा शख्स क़यामत के दिन रूसवा होगा और अज़ाब में गिरफ़्तार किया जायेगा।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख्स अपने मुसलमान भाई की ऐब पोशी करेगा अल्लाह तआला दुनियाँ व आख़िरत में उसकी ऐब पोशी करेगा। (सही मुस्लिम-2/320,345)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
न मुसलमानों को शर्मिन्दा करो और न उनके छिपे ऐब ढूँढ़ें

जो शरूस् किसी मुसलमान के छिपे ऐब ढूँढेगा तो अल्लाह तआला उसके ऐब जाहिर कर देगा। (मिशकात—429)

मुसलमानों के हुक्क में से ये बात भी है कि मुसलमान जब आपस में लड़ें या उनमें बाहम नाराज़गी या निफ़ाक़ हो तो हमें चाहिये कि उनमें बाहम सुलह कराने की हर मुमकिन कोशिश करें और हर तरह की जाइज़ तदबीरें करें ताकि उनके बीच झगड़ा और बाहमी नाराज़गी ख़त्म हो और किसी मुसलमान से बुग़ज़ या कीना ना रखें और न आपस में मुसलमानों को लड़ाये और जो शरूस् मुसलमान भाइयों के दरमियान सुलह कराता है उसके लिये बड़ा सवाब है।

और न किसी की हंसी उड़ाये और न किसी से ऐसा मज़ाक़ करें जो उसके दिल को बुरा लगे और जब किसी से वायदा करें तो उसे पूरा करें वायदा ख़िलाफ़ी न करें और न किसी मुसलमान भाई को उसके गुज़िश्ता गुनाहों का ताना दें जिससे वो शर्मिन्दा हो और अगर किसी मुसलमान से किसी बात को लेकर लड़ाई झगड़ा या नाराज़गी या ना इत्तिफ़ाकी हो जाये तो हमें चाहिये कि हम आपस में सुलह करलें क्योंकि हम आपस में भाई—भाई हैं और सुलह करने के लिये सलाम से पहल करें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे कि एक दूसरे से रुख़ फेर लें और बेहतर है कि सलाम के ज़रिये इब्तिदा करें।

(सही बुख़ारी—2/897)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
और अपने मुसलमान भाई से झगड़ा न करो और न मज़ाक़ करो और वायदा करो तो पूरा करो। (जामअ तिमिज़ी—293)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कोई शरूस् अपने मुसलमान भाई को उसके किसी ऐसे गुनाह का ताना दे जिससे वो तौबा कर चुका हो तो उस शरूस् को उस वक़्त तक मौत न आयेगी जब तक कि वो खुद उस गुनाह में मुब्तिला न हो जाये। (अत्तरगीब वत्तरहीब—3/310)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

क़यामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक अपनी मख़लूक में सबसे ज़्यादा ना पसन्द वो लोग होंगे जो मुसलमान भाइयों से बुग़ज़ रखते हैं। (कंजुल उम्माल-16/70)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे उनमें से जो (सुलह के लिये) पहल करे वो जन्नत में दाख़िल होगा (मुअज़म कबीर तिबरानी-4/144)

हर मुसलमान की तंगी और ज़रूरत के वक़्त उसकी माली मदद करो जब वो कर्ज़ माँगे तो उसे कर्ज़ दो क्योंकि इन्सान की ज़िन्दगी में उसके हालात बदलते रहते हैं कई उतार चढ़ाव के दौर से इन्सान गुज़रता है तो जो तंगी या ज़रूरत आज उस मुसलमान पर है कल हम पर भी आ सकती है और जब हम आज किसी मुसलमान भाई की मदद करेंगे तो कल हमारे बुरे वक़्त में अल्लाह तआला किसी न किसी को हमारी मदद के लिये भेज देगा।

और कर्ज़दार पर अपना एहसान न जतायें क्योंकि एहसान जताने या उस कर्ज़ या मदद के बदले कोई भी दुन्यावी फ़ायदा उठाने की नीयत या उसके हासिल करने से उसका अमल ज़ाया हो जाता है और उसे उसका सवाब नहीं मिलता अगर कर्ज़दार को कर्ज़ अदा करने में किसी वजह से देरी हो जाये तो उस पर ज़्यादती न करें बल्कि उसे मुहलत दें ताकि ज़्यादा सवाब पायें और कर्ज़दार को भी चाहिये कि कर्ज़ अदा करने में देरी न करे बल्कि कर्ज़ को जल्द अदा करने की नीयत व कोशिश करे ताकि वक़्त पर कर्ज़ अदा हो जाये और अल्लाह तआला नेक नीयत पर ग़ैब से मदद फ़रमाता है और बेशुमार अज़र अता फ़रमाता है हदीस पाक में है कर्ज़दार अगर कर्ज़ देने की कुदरत रखता हो और फिर भी कर्ज़ अदा करने में देरी करे तो उसके नामे आमाल में गुनाह लिखा जाता है चाहे वो रोज़े की हालत में हो या नींद की हालत में हो।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स किसी को एक ख़ास वक़्त के लिये कर्ज़ दे तो उसे उस

वक्त तक सद्के का सवाब मिलता है और मुद्दत पूरी होने के बाद मुहलत दे तो उसी के मिस्ल सवाब मिलता है (सुनन इब्ने माजा-176)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और अगर कर्जदार तंगी वाला है तो उसे मुहलत दो आसानी तक और उस पर कर्ज बिल्कुल छोड़ देना (ये) तुम्हारे लिये और (ज्यादा) बेहतर है अगर तुम जानो। (सू0-बकराह-280) (यानी अपने कर्ज का बिल्कुल छोड़ देना अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत बड़ा मक़ाम रखता है क्योंकि तंगदस्त पर अपना कर्ज बिल्कुल छोड़ देना ये ईमान और रहम दिली की अलामत है और अल्लाह तआला के नज़दीक ये अमल बहुत ज़्यादा पसन्द तरीन और महबूब है)।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— सद्के का सवाब दस गुना मिलता है और कर्ज में मुहलत का सवाब अठारह गुना मिलता है। (सुनन इब्ने माजा-177)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— अगर कोई शख्स चाहता है कि अल्लाह तआला कयामत की सख़्तियों से बचाये तो उसे चाहिये कि कर्जदार को मुहलत दे या माफ़ कर दे।

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

जो शख्स कर्ज ले और उसे अदा करने की नीयत करे तो अल्लाह तआला उसके लिये फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो उसकी हिफ़ाज़त करते हैं और उसके लिये दुआ करते हैं यहाँ तक कि वो कर्ज अदा कर देता है। (मुस्नद अहमद-6/72)

जब कोई मुसलमान बीमार हो तो उसकी अयादत (बीमार पुरसी) को जाये और करीब जाकर उसका हाल पूँछे और हमदर्दी के साथ उसको तसल्ली दे और सब्र व तहम्मुल पर इस्तिफ़ामत और शुक्र पर कायम रहने की तल्कीन करे और अगर मुमकिन हो तो उस बीमार शख्स से अपने लिये दुआये ख़ैर कराये क्योंकि बीमार की दुआ फ़रिश्तों के मिस्ल होती है और उस बीमार शख्स के लिये उसकी सेहतमन्दी व शिफ़ा की अल्लाह तआला से खुद भी दुआ करे

और बीमार शख्स को भी चाहिये कि अपनी बीमारी पर सब्र व ज़ब्त से काम ले और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे और अपनी शिफ़ायामी व सेहतमन्दी के लिये सिर्फ़ सब्र तआला पर भरोसा करे क्योंकि अल्लाह तआला के सिवा कोई किसी को शिफ़ा व सेहतमन्दी नहीं दे सकता सिर्फ़ वही पाक ज़ात है जो तमाम लोगों को उनके बीमार होने पर उन्हें शिफ़ा अता फ़रमाता है हर शख्स को चाहिये कि अपनी बीमारी या तकलीफ़ो परेशानी में किसी से शिकवा शिकायत न करें बल्कि अपने सब्र की रज़ा पर राज़ी रहे क्योंकि बीमारी इन्सान के गुनाहों का कफ़फ़ारा है हदीस पाक में है कि एक रात के बुखार के सबब एक साल के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

जब कोई बन्दा किसी बीमारी में मुब्तिला होता है तो अल्लाह तआला उस पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है कि देखें बन्दा सब्र और शुक्र पर कायम रहता है या लोगों से शिकायत करता है और अगर वो सब्र और शुक्र पर कायम रहते हुये अपने सब्र की रज़ा पर राज़ी रहता और किसी से शिकवा शिकायत नहीं करता तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने सब्र और ज़ब्त से काम लिया और मेरा शुक्र अदा किया और मेरी रज़ा पर राज़ी रहा अब ये बन्दा मेरे ज़िम्मे करम पर है अगर मैं इसे शिफ़ा दूँगा तो पहले से ज़्यादा सेहतमन्द करूँगा और इस बीमारी के सबब मैं इसे बख़्श दूँगा और अगर मैंने इसे मौत दी तो मैं इसे अपनी रहमत के साये में जगह अता करूँगा और इसे जन्नत में दाख़िल करूँगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख्स किसी बीमार की अयादत को जाता है तो गोया (वो जितनी देर वहाँ बैठता है) तो वो जन्नत के बागात में बैठता है हत्ता कि जब वो उठता है तो उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर किये जाते हैं जो रात तक उसके लिये दुआये रहमत करते हैं। (सुनन इब्ने माजा—105)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की अयादत (बीमार पुरसी) करता है या उससे मुलाकात करता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है तू अच्छा हुआ तेरा चलना अच्छा हुआ और तूने जन्नत में ठिकाना बना लिया। (सुनन इब्ने माजा—105)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब तू मरीज़ की अयादत को जाये तो अगर मुमकिन हो तो उससे
अपने लिये दुआ कराये क्योंकि मरीज़ की दुआ फ़रिश्तों की मिस्ल
है। (इब्ने माजा)

जब कोई मुसलमान फ़ौत हो जाये तो उसके घर ताअज़ियत के
लिये जाओ और उसके जनाज़े में शरीक हो और दफ़ीना करके
वापस आओ और इस दरमियान फ़िजूल काम या फुहश कलामी
न करो बल्कि अपनी मौत को कसरत से याद करो और दुनियाँदारी
की बातों में खुद को मशगूल न रखो बल्कि अपनी मौत व कब्र से
मुताअल्लिक ग़ौरो फ़िक्र करो कि एक दिन इसी तरह मेरा भी
जनाज़ा उठेगा मेरा भी आख़िरी गुस्ल होगा और लोग मुझे अंधेरी
कब्र तक छोड़कर अपने-अपने घरों को वापस आ जायेंगे और मुझे
उसी अंधेरी कोठरी में क़यामत तक तन्हा रहना होगा और हमें
चाहिये कि मइयत के लिये रब तआला से दुआये मग़फ़िरत करें
ताकि उसकी कब्र उसके लिये बा ख़ैर व जन्नत का बाग़ बन जाये
और मइयत के घर वालों को सब्र की तल्कीन करें और तसल्ली दें
और उनके ग़म में शरीक हों और हर तरह से उनकी मदद करें।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो आदमी किसी मुसलमान के जनाज़े में साथ जाता है तो उसके
लिये एक कीरात के बराबर सवाब है और दफ़ीना तक ठहरे तो
उसके लिये दो कीरात के बराबर सवाब है। (और एक कीरात उहद
पहाड़ के मिस्ल है) (सही बुख़ारी—1/177)

मुसलमानों के हुक्क से भी ज़्यादा हम पर मुसलमान
पड़ोसी के हुक्क हैं और हम पर लाज़िम है कि अपने पड़ोसियों की
इज़ज़त करें और उन्हें किसी भी तरह की अज़िज़यत न दें और अगर
उनसे हमें कोई अज़िज़यत (तकलीफ़) मिले तो उस पर सब्र करें
और उन्हें माफ़ कर दें यही हमारे लिये बेहतर और सवाब का बाइस
है और हमेशा उनके साथ अच्छा सुलूक करें और नरमी से बात करें
और खुशी में उन्हें मुबारक बाद दें और उनके घर तहाइफ़ भेजें
ताकि उनके दिल खुश हों।

और अपने पड़ोसियों की हर खुशी व ग़म में बराबर शरीक हो और उनकी और उनके घरों की हिफ़ाज़त करो और उनके बच्चों से रहम और शफ़क़त से पेश आओ और उनके साथ बेहतर और हुस्ने कलाम के साथ गुफ़्तगू करो और सलाम व मुसाफ़ाह करने में पहल करो और अगर हमारे पड़ोसी ग़रीब हों तो उन्हें हकीर न जानो बल्कि खुद से बेहतर जानो और हर तरह से उनकी बदनी व माली मदद करो अगर वो क़र्ज़ माँगें तो उन्हें क़र्ज़ दो और उनके साथ हुस्ने खुल्क और अच्छे बरताव से पेश आओ और जब घर में कोई अच्छा खाना वग़ैराह या कोई और चीज़ बने तो उनके घरों में भी भेजो और अगर पड़ोसी बीमार हों तो उनकी बीमार पुरसी के लिये जाओ और अगर कोई फ़ौत हो जाये तो उनके घर ताअज़ियत के लिये जाओ और उनके जनाजे में शिर्कत करो और हमेशा उनका ख़्याल रखो कभी सख़्त कलामी से पेश न आओ जिससे उनके दिल रंजीदा हों बल्कि उनसे मुहब्बत और अच्छे तआल्लुकात के साथ बेहतर रिश्ता कायम करो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स तुम्हारा हम साया (पड़ोसी) बने उसके साथ अच्छी हमसायगी रखो (कामिल) मुसलमान हो जाओगे।
(सुनन इब्ने माजा—331)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स अल्लाह तआला और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी की इज़्ज़त करे। (सही बुख़ारी—2/889)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसके शर से महफूज़ न रहे। (सही बुख़ारी—2/889)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—खुदा की क़सम मोमिन नहीं, खुदा की क़सम मोमिन नहीं, खुदा की क़सम मोमिन नहीं दरयाफ़्त किया गया या रसूलल्लाह वह कौन शख़्स है आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जिसका पड़ोसी उससे तकलीफ़ पाता हो (बुख़ारी शरीफ़)

—: वालिदैन के हुक्क :-

वालिदैन के हर हुक्म की इताअत करना हर मुसलमान पर वाजिब है लेकिन वो अल्लाह तआला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ना फरमानी का हुक्म दें तो हम पर वाजिब है कि उनका हुक्म न मानें इसके अलावा हमें अपने माँ बाप के तमाम हुक्मों की फरमाबरदारी करनी होगी और जिसने अपने माँ बाप की नाफरमानी की वो सख्त गुनाहगार होगा और दुनियाँ व आखिरत में अल्लाह तआला के गज़ब और अज़ाब का शिकार होगा कुरान मजीद और अहादीस मुबारका में कई मक़ामात पर वालिदैन की इताअत और उनसे हुस्ने सुलूक की हमें ताकीद की गई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फरमाता है—
और अपने माँ बाप के साथ भलाई करो। (सू०—बकराह—83)

इरशादे बारी तआला है—

और तुम्हारे रब ने हुक्म फरमाया कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तुम्हारे सामने उन में से एक या दोनो बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनसे हूँ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन दोनों से बड़े अदब से बात किया करो और उनके लिये आजीजी व इन्किसारी के बाजू बिछाये रखो और उन दोनों से नरम दिली से पेश आना और अर्ज करना ऐ मेरे रब तू मेरे माँ बाप पर रहम फरमा जैसा कि उन दोनो ने छुटपन (बचपन) में हमें (रहमत व शफ़क़त) से पाला और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है (सू०—बनी इसराईल—23,—26)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

माँ बाप के साथ नेकी करना नमाज़, रोज़ा, सद्का, हज व उमराह और अल्लाह की राह में जिहाद करने से ज़्यादा फज़ीलत रखता है (मजमउज्ज़वाइद—8 / 138)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—

सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराना और माँ बाप की ना फरमानी करना। (सही बुख़ारी—1 / 362)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिये उठा रखे लेकिन माँ बाप की ना फ़रमानी की सज़ा अल्लाह तआला जीते जी (दुनियाँ में) देता है। (मुस्तदरक हाकिम—4/156)

वालिदैन का मक़ाम और मर्तबा औलाद के लिये तमाम मुसलमानों व क़राबतदारों में सबसे ऊँचा है उनकी इताअत व उनसे हुस्ने सुलूक अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा अमल है माँ बाप की इताअत का शरीअते मुताहरा में यहाँ तक हुक्म है कि अगर कोई शख्स निफ़िल नमाज़ पढ़ रहा है और उसके माँ बाप को ये इल्म नहीं कि वो नमाज़ पढ़ रहा है और हालते नमाज़ में अगर माँ बाप या उनमें से कोई एक बुलाये तो उसे नमाज़ तोड़कर जवाब देना होगा।

इसी तरह अगर कोई शख्स अल्लाह की राह में जिहाद के लिये जाना चाहे और उसके माँ बाप अपनी ख़िदमत के सबब उसे जाने से मना करें तो उस शख्स पर वाजिब है कि अपने माँ बाप का हुक्म माने और जिहाद के लिये न जाये और अपने माँ बाप की ख़िदमत करे और उनके लिये हमेशा भलाई के काम करे और उन्हें हमेशा खुश रखे और उनके हुक्म का ताबैअ रहे और अपने माँ बाप से जो हुक्म मिले उसे खुशी-खुशी बजा लाये क्योंकि वालिद की इताअत गोया अल्लाह तआला की इताअत है और उनकी नाराज़गी अल्लाह तआला की नाराज़गी का बाइस है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है— और हमने आदमी को उसके माँ बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई कि उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमजोरी पर कमजोरी झेलते हुये और उसका दूध छुड़ाना भी दो साल में है कि तू मेरा (भी) शुक्र अदा कर और अपने वालिदैन का भी (शुक्र अदा कर) आख़िर तुझे मेरे ही पास आना है। (सू0—लुक़मान—14)

इरशादे बारी तआला है— और माँ बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों से और यतीमों और मुहताजों और पास के हम साये (पड़ोसी) और दूर के हम साये और

करवट के साथी और मुसाफिर (से) और अपनी बाँदी गुलाम से।
(सू०-निसा-36)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
औरत पर सबसे बड़ा हक उसके शौहर का है और मर्द पर सबसे
बड़ा हक उसके माँ बाप का है। (हाकिम-4/175)

अगर वालिदैन अपनी खिदमत के सबब निफिली इबादत को
तर्क करने का हुक्म दें तो हम पर लाजिम है कि निफिली इबादत
को छोड़ दें और उनकी खिदमत करें और उनसे हमेशा नरम दिली
और अच्छे बरताव से पेश आयें और उनके दिलों को खुशी पहुँचायें
और उनसे इस तरह बात करें जैसे गुलाम अपने आका से आजिजी
से बात करता है और कोई काम ऐसा न करें जिससे उनके दिलों
को अज़िज़त पहुँचे और उनके दिल रंजीदा हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शर्क्स इस हालत में सुबह करे कि उसके माँ बाप उससे राजी
हों तो वो यूँ सुबह करता है कि उसके लिये जन्नत के दो दरवाजे
खुलते हैं और जो आदमी इसी हालत में शाम करे उसके लिये इसी
के मिस्ल है और जो शर्क्स इस हालत में सुबह करे कि उसके माँ
बाप उससे नाराज़ हों तो वो यूँ सुबह करता है कि उसके लिये
जहन्नुम के दो दरवाजे खुलते हैं और जो इस हाल में शाम करे तो
उसके लिये इसी के मिस्ल है। (शुअबुल ईमान-2/206)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
चाहे किसी के माँ बाप अपनी औलाद पर जुल्म करें फिर भी औलाद
को चाहिये कि माँ बाप की ना फरमानी न करे (शुअबुल ईमान-2/206)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो अपने वालिदैन को एक बार निगाहे मेहर व रहम से देखे तो
अल्लाह तआला उसके नामे आमाल में एक हज का सवाब लिखता
है। (मिशकात-421)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
माँ बाप तेरी जन्नत और तेरी दोज़ख हैं। (सुनन इब्ने माजा-269)

जब हज़रत याकूब अलैहस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ (अलैह0) के पास तशरीफ़ ले गये तो वो उनकी ताज़ीम के लिये खड़े न हुये तो उनके इस फ़ेअल पर अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ (अलैह0) पर वही भेजी कि ऐ यूसुफ तुम अपने वालिद की ताज़ीम के लिये खड़े होने को बड़ी बात समझते हो मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की कसम मैं तुम्हारी पीठ से कोई नबी पैदा नहीं करूँगा इससे मालूम हुआ कि वालिद की ताज़ीम के लिये खड़ा न होना अल्लाह के नज़दीक कितना ज़्यादा ना पसंदीदा फ़ेअल और नाराज़गी का बाइस है इससे वाज़ेह हुआ कि वालिदैन की नाफ़रमानी करना कितना बड़ा गुनाह है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने माँ बाप की किसी हाल में भी नाफ़रमानी न करें और अपने माँ बाप के फ़रमाबरदार व ख़िदमत गुज़ार बनें ताकि अल्लाह तआला हमें अपने महबूब तरीन बन्दों में शुमार करे और हम ग़ज़बे इलाही से महफूज़ रहें और अल्लाह तआला की नाराज़गी से बचें और अपने माँ बाप से कभी ऊँची आवाज़ में बात न करें न कभी सख़्त कलामी से पेश आयें बल्कि नरमी और रहम दिली से पेश आयें ज़रा सोचें कि कभी हम भी बूढ़े होंगे जब हमारी औलाद हमारी नाफ़रमानी करेगी तो हम कैसा महसूस करेंगे और जब वो बदसुलूकी और सख़्त कलामी से पेश आयेगी और हमारा ख़्याल नहीं रखेगी और हमारी ख़िदमत नहीं करेगी तो उस वक़्त हमारे दिल पर क्या गुज़रेगी।

इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने आने वाले वक़्त को याद रखें और उस पर ग़ौरो फ़िक़्र करें तो हमारी समझ में आ जायेगा कि जिस बात को हम पसन्द नहीं करते तो उस बात को क्या मेरे माँ बाप पसन्द करेंगे हालाँकि जिस तरह की ख़्वाहिश हम अपने दिलों में रखते हैं वही ख़्वाहिश हमारे माँ बाप भी रखते हैं कि मेरी औलाद मेरा कहना माने मेरी ख़िदमत करे मेरे बुढ़ापे का सहारा बने मेरी इज़्ज़त करे और हमसे हुस्ने खुल्फ़ और अच्छे बरताव से पेश आये और जब वो हमसे बात करे तो उसकी बात में आज़िज़ी और हुस्ने कलाम हो।

अगर हम चाहते हैं कि मेरी ख्वाहिश के मुताबिक मेरी औलाद के अमल हों तो हमें भी उसी ख्वाहिश के मुताबिक चलना होगा।

हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की खिदमत में एक शख्स हाज़िर हुआ और जिहाद में जाने की इजाज़त तलब की आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारी वालिदा (माँ) है उसने अर्ज़ किया जी हाँ आप ने फ़रमाया—अपनी माँ के साथ रहो क्योंकि जन्नत माँ के कदमों के नीचे है (सुनन इब्ने माजा—205)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मेरी एक वीबी थी जिसे मैं पसन्द करता था लेकिन मेरे वालिद उसे ना पसन्द करते थे और कहते थे कि मैं उसे तलाक दे दूँ मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया कि मैं क्या करूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने उमर तुम्हारे वालिद जो कहते हैं वही करो और अपनी वीबी को तलाक दे दो। (मुस्नद अहमद—2/20)

माँ बाप की ना फ़रमानी करने वाले का कोई फ़र्ज़ व निफ़िल कुबूल नहीं होता यानी नमाज़ रोज़ा हज ज़कात सदकात वगैराह वालिदैन् की ना फ़रमानी के सबब तमाम नेक आमाल व इबादात ज़ाया हो जाती है और इन्सान अल्लाह तआला के ग़ज़ब और अज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है हदीस पाक में है अपने माँ बाप को सताने वाला मलऊन है और जो अपने माँ बाप को सताता है या उन्हें अज़िज़त पहुँचाता है तो वो अपना ठिकाना जहन्नुम में बनाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
खाक आलूदा हो उसकी नाक जिसने बूढ़े माँ बाप या उन दोनों में किसी एक को पाया फिर जन्नती न हुआ। (मिशकात—418)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तीन शख्स जन्नत में न जायेंगे। 1—माँ बाप की नाफ़रमानी करने वाला 2—दइयूस (बिगैरत भड़वा) 3—वो औरत जो मर्दानी शक्ल बनाये (सुनन निसाई)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

वालिदैन की नाफ़रमानी से बचो इसलिये कि जन्नत की खुशबू हजार बरस की राह तक आती है लेकिन माँ बाप का नाफ़रमान इसकी खुशबू भी न सूँघ सकेगा।

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

तीन दुआयें ऐसी हैं जिनके कुबूल होने में कोई शक नहीं है—
1—मज़लूम की दुआ 2—मुसाफ़िर की दुआ 3—बाप की अपने बेटे पर बद्दुआ। (तिर्मिज़ी—2/13)

जब हम किसी काम का इरादा करते हैं तो बाज़ औकात हम ये फैसला नहीं कर पाते कि फ़लों काम को करूँ या न करूँ और बाज़ काम ऐसे भी होते हैं कि हम उन कामों में इम्तियाज़ (फ़र्क) नहीं कर पाते कि अल्लाह तआला के नज़दीक ये काम सही हैं या ग़लत और अल्लाह तआला मेरे इस काम से राज़ी होगा या नाराज़ और अल्लाह तआला के नज़दीक ये काम पसंदीदा है या ना पसंदीदा है और इस तरह हम बड़ी कशमकश में फंस जाते हैं और हमें उन कामों को करने में बड़ी दुश्वारी दरपेश आती है और न तो हम उन कामों के मुताअल्लिक अपने रब से पूछ सकते हैं और न ही उनके मुताअल्लिक सही और ग़लत का फैसला कर सकते हैं।

इसलिये अल्लाह तआला ने हमें इस कशमकश और दुश्वारी से निजात देने के लिये एक बहुत बेहतर रास्ता और आसानी हमारे लिये मुहैया की है कि मेरे बन्दे जब तू किसी काम की कशमकश में हो तो अपने माँ बाप से पूछ ले जो वो कहें वो सही है और जिस काम के लिये मना करें वो ग़लत है और जिस काम से तेरे माँ बाप राज़ी हों तो उस काम से तेरा रब भी राज़ी होता है और जिस काम से तेरे माँ बाप नाराज़ हों तो तू समझ ले कि तेरा रब भी तुझसे नाराज़ है और तेरे जिस काम से तेरे माँ बाप खुश हों तो उस काम से तेरा रब भी खुश होता है और जिस काम को तेरे माँ बाप पसन्द करें वही काम तेरा रब भी पसन्द फ़रमाता है और जिस काम को तेरे माँ बाप ना पसन्द करें वो काम तेरे रब के नज़दीक भी ना पसन्दीदा है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला की इताअत वालिद की इताअत है और वालिद की नाफ़रमानी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी है (अलमुअज़म औसत)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

अल्लाह तआला की रज़ा वालिद की रज़ा में है और अल्लाह तआला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है। (तिर्मिज़ी)

मज़कूरा बाला हदीस मुबारका से एक मसला हमें मालूम हुआ है कि हमें इस बात का क़तअन इल्म नहीं होता कि मुझसे मेरा रब राज़ी है या नाराज़ लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के कौल मुबारक के ज़रिये हमें ये बात मालूम हो गई है कि जब हम जानना चाहें कि मेरा रब हमसे खुश व राज़ी है या नहीं तो अपने वालिदैन को देखें अगर वो हमसे खुश व राज़ी हैं तो हमसे हमारा रब भी खुश व राज़ी है और अगर हमारे माँ बाप हमसे नाराज़ हैं तो हमें पता चल जायेगा कि हमसे हमारा रब नाराज़ है और फिर हम अपने रब को राज़ी करने के लिये नेक आमाल करेंगे और अपने माँ बाप को खुश व राज़ी करने के लिये उनके हुक्म के मुताबिक़ काम करेंगे ताकि हमसे हमारे माँ बाप खुश व राज़ी हो जायें और मेरा रब भी हमसे राज़ी व खुश हो जाये और इस तरह हम अल्लाह तआला की नाराज़गी और गुज़ब से बचने में कामयाब हो जायेंगे और अपने रब को राज़ी कर लेंगे।

वालिदैन की वफ़ात के बाद हम पर उनके हुक्क ये हैं कि उनके लिये दुआये मग़फ़िरत करें और निफ़िली इबादत करें और उनके लिये रोज़े रखें और सदक़ात ख़ैरात करें और अगर उन पर किसी का क़र्ज़ हो तो उनका क़र्ज़ अदा करें और उनके दोस्तों व रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक से पेश आयें और अल्लाह तआला अगर हमें तौफ़ीक़ दे तो अपने वालिदैन की तरफ़ से हज़ या उमराह करें रहमतें दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जो शख्स वालिदैन की तरफ़ से सदक़ा करे तो उसे भी उन दोनों के बराबर सवाब मिलता है और उसके सवाब में कुछ भी कमी नहीं होती। (कंज़ुल उम्माल-6/428)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—

जो शख्स अपने वालिदैन के लिये दुआये मग़फ़िरत करता है तो अल्लाह तआला उसे वालिदैन से अच्छा सुलूक करने वाला लिखता है। (दुर्रे मन्सूर-4/174)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब तुम में से कोई ख़ैरात करे तो उसे चाहिये कि अपने माँ बाप

की तरफ़ से भी करे कि उसका सवाब उन (माँ बाप) को मिलेगा और उस (सद्का ख़ैरात करने वाले) के सवाब में कोई कमी नहीं आयेगी (यानी कुछ न घटेगा) (तिबरानी)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

जो अपने वालिदैन की तरफ़ से बाद वफ़ात हज करे तो अल्लाह तआला उसके लिये दोज़ख़ से आज़ादी लिख देता है (शुअबुल ईमान)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जो शख़्स अपने माँ बाप की तरफ़ से हज करे या उनका कर्ज़ अदा करें तो वो क़यामत के दिन नेकों के साथ उठेगा। (तिबरानी)

बाज़ अहमक (बेवकूफ़) लोग अपने बेटों से वो ख़्वाहिशें और उम्मीदें रखते हैं जो महज़ बातिल होती हैं जैसे कि मेरा बेटा मेरा सहारा बनेगा मेरी फ़रमांबरदारी करेगा और मेरी ख़िदमत करेगा हालाँकि उनकी ख़्वाहिशें और उम्मीदें झूठे ख़्वाबों और ख़्यालों पर मबनी होती हैं क्योंकि उन्होंने न तो अपने वालिदैन की ख़िदमत गुज़ारी व फ़रमांबरदारी की और न कभी उनका सहारा बना इसके अलावा उसने अपने बेटों को बेहतर दुन्यावी तालीम दिलायी और दीनी इल्म से दूर रखा और वालिदैन के हुक्क और उनका अदबो अहताराम और उनसे हुस्ने सुलूक व अच्छा बरताव करना नहीं सिखाया और न खुद सीखा बल्कि सिर्फ़ दुनियाँ में मुब्तिला रहा और आख़िरत से बेख़बर रहा और वही सब अपने बेटों को सिखाया हालाँकि जो सुलूक हम अपने माँ बाप के साथ करेंगे वही हम बदले में अपने बेटों से पायेंगे फिर भी उनका अपने बच्चों से ये उम्मीद रखना कि मेरा बेटा मेरी उम्मीदों और ख़्वाहिशों पर ख़रा उतरेगा और मेरे साथ अच्छा सुलूक करेगा और मेरी फ़रमांबरदारी करेगा और हर हाल में मेरा ख़्याल रखेगा और मेरा सहारा बनेगा तो उनकी अपने बेटों से ऐसी उम्मीदें रखना क्या हक़ व जाइज़ है।

वालिदैन की वफ़ात के बाद उनके लिये सद्का ख़ैरात व निफ़िली इबादत करना हमारे लिये बहुत ज़्यादा अच्छा अमल है क्योंकि तमाम नेक आमल का सवाब उन तक पहुँचता है और हमारे सवाब में कोई कमी नहीं होती और उनके लिये दुआये मग़फ़िरत करना हमारे लिये ख़ैरो बरकत का सबब बनती है और ऐसा करने वाला शख़्स अल्लाह तआला के नज़दीक नेकोकार और पसंदीदा होता है और अल्लाह तआला उसके गुनाहों को बख़्श देता है वालिदैन से

नेकी करने वाले शरूस् को अल्लाह तआला अपना महबूब रखता है और उसे अल्लाह तआला की कुरबत हासिल होती है इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से सद्का ख़ैरात व निफ़िली इबादात वगैराह अपने वालिदैन् को ईसाले सवाब करें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में मिलने वाले बेहतर व बेशुमार अज़र के हम भी मुस्तहिक हो जायें और हमें चाहिये कि वालिदैन् की वफ़ात के बाद कोई बुरा काम न करें क्योंकि हमारे बुरे अमल से उन्हें तकलीफ़ पहुँचती है बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल करें ताकि उन्हें खुशी हासिल हो क्योंकि हमारे आमालों की ख़बर हमारे फ़ौत शुदा माँ बाप तक पहुँचती है और अगर औलाद के नेक अमल हों तो वो खुश होते हैं और अगर बुरे आमाल हों तो उन्हें तकलीफ़ होती है और उनके दिल रंजीदा होते हैं और हमें चाहिये उनकी क़ब्रों की कसरत से ज़ियारत किया करें और सद्का, ख़ैरात व निफ़िली इबादात और कुरान मजीद की तिलावत वगैराह के ज़रिये ईसाले सवाब किया करें ताकि उनके गुनाहों की बरि़्खाश हो और हम भी मज़कूरा नेक आमाल की बेहतर जज़ा पायें।

और औलाद पर हक़ है कि वो उन बातों पर भी अमल करे जिन बातों के लिये उन्होंने अपनी हयात (ज़िन्दगी) में हमें करने की ताकीद की हो और जो बात उन्हें पसंदीदा थी और जिन कामों को न करने की हमें ताकीद की हो तो हमें चाहिये कि हम उन कामों को न करें यानी उनके तमाम हुक्म जो उन्होंने अपनी हयात में हमें दिये थे उन तमाम हुक्मों की बाद वफ़ात भी इताअत करना हम पर वाजिब है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शरूस् हर जुमा के दिन अपने माँ बाप या उनमें से कोई एक की ज़ियारते क़ब्र करे उसे बरि़्खा दिया जाता है और उसे नेकोकार लिखा जाता है। (मजमउज़्ज़वाइद—3/59)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
माँ बाप के हुस्ने सुलूक से ये बात भी है कि औलाद उनके बाद वफ़ात दुआये मग़फ़िरत करे। (कंजुल उम्माल—16/482)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
आदमी जब अपने माँ बाप के लिये दुआ करना छोड़ देता है तो उसका रिज़क क़ता कर दिया जाता है (कंजुल उम्माल—16/482)

—: मियाँ बीवी के हुक्कूक :—

औरतों के मर्दों पर उसी तरह हुक्कूक है जिस तरह मर्दों के औरतों पर हुक्कूक हैं लेकिन मर्द औरत पर फज़ीलत रखता है और औरत पर मर्द के ज़्यादा हुक्कूक हैं लेकिन मर्दों पर भी लाज़िम है कि वो अपनी औरतों के हुक्कूकों का ख़्याल रखें और उसमें कोताही न करें और उनकी जाइज़ बातों को मानें और अपनी हैसियत से मुताबिक़ उनकी जाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करें और उनके साथ हुस्ने सुलूक से पेश आयें और जब वो कोई बात कहें तो उनकी बात को नज़र अंदाज़ न करें बल्कि उस पर ग़ौर करें और अगर उनकी बात सही और हक़ हो तो उस बात को मानें और उस पर अमल करें अगर उनकी बात ग़लत व ना हक़ हो तो उस बात को हरगिज़ न मानें।

हमें चाहिये कि हुस्ने खुल्क़ व अच्छे बरताव से अपनी बीवियों के दिलों को खुश रखें और उन्हें किसी तरह की अज़िज़यत (तकलीफ़) न दें और मर्दों पर हक़ हैं कि वो अपनी बीवियों के लिये रहम दिल व मेहरबान हों लेकिन अपने नफ़्स की तरह उन्हें ढील न दें क्योंकि ज़्यादा ढील देने से बीवी अपने शौहर के काबू से निकल जाती है और बाहम लड़ाई झगड़ा और बद कलामी के बाइस घर का अमन चैन व खुशहाली चली जाती है या फिर शौहर मजबूर होकर अपनी बीवी का गुलाम बन जाता है और घर का माहौल बिगड़ जाता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

औरतों के मर्दों पर ऐसे हुक्कूक हैं जैसे मर्दों के औरतों पर लेकिन मर्दों को उन पर फज़ीलत है। (सू०—बकराह—228)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

ईमान में सबसे मुकम्मल आदमी वो है जो सबसे ज़्यादा अच्छे अख़लाक़ वाला है और जो अपनी औरतों के लिये बेहतर हो। (तिर्मिज़ी)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— औरत पर सबसे बड़ा हक़ उसके शौहर का है और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ उसके माँ बाप का है। (हाकिम—4/175)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो शरूअ अपनी औरत की बद अखलाकी पर सब्र करे तो उसे
अइयूब अलैहस्सलाम के बराबर सवाब मिलेगा और जो औरत अपने
शौहर की बद अखलाकी पर सब्र करे तो उसे हज़रत आसिया
(रज़ि०) के बराबर सवाब मिलेगा। (सही मुस्लिम)

बीवी पर हक़ है कि वो अपने शौहर के हर हुक्म की इताअत
करे बशर्ते कि वो अल्लाह व रसूल की नाफरमानी का हुक्म न दे
और अपने शौहर की हर तकलीफ़ को दूर करने की हर मुमकिन
कोशिश करे व उसके हर हुक्म को खुशी—खुशी बजा लाये और
नाफरमानी न करे और हर हाल में अपने खाविन्द को खुश व राज़ी
रखे और अपने खाविन्द से बेजा फरमाइशों का मुतालबा न करे
और कोई ऐसी बात न करे जिससे उसका दिल रंजीदा हो।

और बीवी पर हक़ है कि वो अपने शौहर से हमेशा
खुश मिज़ाजी और अच्छे बरताव से पेश आये और वही काम करे
जिस काम से उसका शौहर खुश व राज़ी हो और अपने बच्चों पर
मेहरबान रहे और उसे चाहिये कि कभी अपने खाविन्द की अमानत
से में ख़्यानत न करे और बिला इजाज़त कोई चीज़ किसी को न
दे और न बिला इजाज़त घर से बाहर निकले और न अपने खाविन्द
के माल को ज़ाया (बर्बाद) करे।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
जो औरत इस हाल में मरे कि उसका खाविन्द उससे राज़ी हो तो
वो जन्नत में दाख़िल होगी। (सुनन इब्ने माजा—134)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अगर शौहर के सर से पाँच तक पीप हो और अगर औरत (उस
पीप को) चाट ले तब भी शौहर का हक़ अदा नहीं कर सकती।
(मुस्तदरक हाकिम—2/188)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
औरत पर्दे की चीज़ है जब वो बाहर निकलती है तो शैतान उसे
झाँकता है। (जामअ तिमिज़ी—189)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

अगर शौहर निफिली इबादत के लिये बीवी को मना करे तो बीवी को चाहिये कि निफिली इबादत न करे नहीं तो वो गुनाहगार होगी और बिला इजाजत कोई भी निफिली अमल कुबूल न होगा और जब तक तौबा न करे फरिश्ते उस पर लानत भेजते रहते हैं। (अबू दाऊद)

अगर मियाँ बीवी दोनो लोग आपस में अपने-अपने हुक्कों को सही तरह से अंजाम दें तो उनकी ज़िन्दगी खुशगवार बन जाती है और दुनियाँ के साथ उनकी आखिरत भी बेहतर हो जाती है नहीं तो दुनियाँ व आखिरत में नुकसान के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और हर इन्सान के लिये बेहतर है कि मियाँ बीवी के हुक्कों के साथ-साथ हुक्कुल इबाद के तमाम मामलात में खुद को दूसरों की जगह खड़ा करके देखें तो मालूम हो जायेगा कि सही क्या है और ग़लत क्या है और अच्छा क्या है और बुरा क्या है।

मिसाल के तौर पर अगर हम किसी को कोई नुकसान या तकलीफ़ दे रहे हों या उसके साथ जुल्म या ज़्यादती कर रहे हों तो खुद को उसकी जगह खड़ा करके देखें और फिर गौर करें कि अगर हमारे साथ कोई जुल्म या ज़्यादती करता या हमें कोई नुकसान या तकलीफ़ देता तो हमें कैसा महसूस होता तो इस तरह लोगों के मामलात में खुद को उस जगह तसव्वुर करने से हमें इस बात का इल्म हो जायेगा कि हम कितने ग़लती पर हैं और हमसे बुराई या गुनाह वाकैअ हो रहा है या नहीं और इस तरह हम गुनाहों और बुरी बातों से बचने में कामयाब होंगे और हम हक़ और नाहक़ में इम्तियाज़ (फ़र्क़) कर सकेंगे और मियाँ बीवी के हुक्कों के साथ-साथ तमाम लोगों के हुक्कों को बेहतर तरीक़े से अंजाम दे सकेंगे और हमें किसी तरह की दुश्वारी दरपेश नहीं आयेगी बल्कि हुक्कों की अदायगी के तमाम रास्ते हमारे लिये आसान हो जायेंगे और इस तरह हम बुराई व गुनाहों से महफूज़ रहेंगे और दुनियाँ व आखिरत में इसका बेहतर अज़र पायेंगे।

इसलिये हमें चाहिये कि हम इस बेहतर तरीक़े और रास्ते को चुनें और उस पर अमल करते हुये अपने-अपने हुक्कों

को अदा करें और उसमें किसी तरह की कोई कोताही न करें और अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में मिलने वाले बेशुमार अज़र व इनामात से सरफ़राज़ हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

मैंने जहन्नुम में देखा तो वहाँ औरतों को ज़्यादा पाया तो आप से अर्ज़ किया गया ऐसा क्यों है तो आपने इरशाद फ़रमाया—कि वो अपने खाविन्दों की ना शुक्री व बदगोई करती और ज़्यादा लानतान करती हैं। (सही बुख़ारी—1/44)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वो शौहर को सज्दा करे क्योंकि शौहर का बीवी पर बड़ा हक़ है। (सुनन इब्ने माजा—134)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—जिस औरत से उसका शौहर नाराज़ हो उसकी नमाज़ कुबूल नहीं होती और न कोई नेकी बुलन्द होती है। (बैहकी—3/128)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—

जब तक शौहर अपनी बीवी से राज़ी नहीं तब तक अल्लाह तआला उस बीवी से नाराज़ रहता है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

जिनके दिलों में ख़ौफ़े खुदा और अपनी मौत का मुकम्मल यकीन नहीं होता वो अपने हुक्मों अच्छी तरह अंजाम नही दे पाते और वो लोग इस बात से भी गाफ़िल रहते हैं कि जो सुलूक और बरताव वो दूसरों के साथ करते हैं उन्हें उनके हर बुरे फ़ैअल का बदला दिया जायेगा और किसी शख्स के दिल में उस वक़्त तक ख़ौफ़े खुदा और आख़िरत पर मुकम्मल एतकाद नहीं हो सकता जब तक कि वो दुनियाँ से बे रग़बती और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ न करे इसलिये हमें चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी के अच्छे बुरे तमाम हालातों पर सब्र व तहम्मूल और शुक्र व कनाअत इस्तिआर करें और उस पर कायम मक़ाम व साबित क़दमी रहें और अल्लाह व रसूल के अहक़ाम के मुताबिक़ अपने अपने हुक्मों को अदा करें।

—: मुहब्बत अहले बैत और ताजियादारी :—

अहले बैत की मुहब्बत हर मुसलमान पर फर्ज है क्योंकि अहले बैत की मुहब्बत ईमान की जान और ईमान के लिये शर्त है इनकी मुहब्बत के वगैर किसी के दिल में ईमान दाखिल नहीं हो सकता हदीस पाक में है नबी अकरम नूरे मुजस्सम रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम ने फरमाया—इस्लाम की बुनियाद मेरी और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है और अल्लाह तआला ने हम तमाम मुसलमानों को हुक्म दिया कि अहले बैत से मुहब्बत करो।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) आप मुसलमानों से फरमा दीजिये कि मैं तबलीग पर तुम से कोई बदला या सिला नहीं माँगता अलबत्ता मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे कराबतदारों से मुहब्बत करो। (सू0—शूरा—23)

मिशकात शरीफ में तिर्मिजी के हवाले से रिवायत की गई है कि जब ये कुरान की आयत नाज़िल हुई तो सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम ने दरयाफ्त किया या रसूलुल्लाह आपके कराबतदार कौन हैं तो आपने इरशाद फरमाया—हजरत अली फातिमा हसन व हुसैन (रज़ि0) ये मेरे कराबतदार (अहले बैत) हैं और इनसे मुहब्बत करो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि ऐ अहले बैत तुम से हर नापाकी को दूर कर दें और तुम्हें खूब पाक व साफ़ कर दें। (सू0—अहज़ाब—33)

तिर्मिजी शरीफ में हज़रत जैद बिन अकरम (रज़ि0) से रिवायत है कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—कि मैं तुममें दो चीज़ें ऐसी छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम लोग इसको मज़बूती से थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होंगे और अगर एक को भी छोड़ दिया तो गुमराह हो जाओगे नीज़ फरमाया दोनों एक दूसरे से बड़ी हैं यानी कुरान मजीद और अहले बैत और ये दोनों आपस में जुदा न होंगे यहाँ तक कि दोनों हौजे कौसर पर मेरे पास आयेंगे

—: अहले बैत से मुताअल्लिक चन्द अहादीस :—

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला की कसम किसी शख्स के दिल में उस वक्त तक ईमान दाखिल नहीं हो सकता जब तक मेरे अहले बैत से अल्लाह तआला के लिये और मेरी कराबत की वजह से मुहब्बत न रखे।
(इब्ने माजा—13)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
हसन और हुसैन (रज़ि०) जन्नत में जवानों के सरदार हैं।
(तिर्मिज़ी—2/728)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिसने हसन व हुसैन से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे दुश्मनी रखी उसने मुझसे दुश्मनी रखी।
(इब्ने माजा—1/72) (मिशकात—3/272)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
ऐ अली फातिमा हसन व हुसैन (रज़ि०) तुम जिससे लड़ोगे मैं भी उससे लड़ूंगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं भी उससे सुलह करूंगा। (इब्ने माजा—1/73)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
हुसैन मुझसे है मैं हुसैन से हूँ और जो हुसैन से मुहब्बत रखता है अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखता है। (तिर्मिज़ी—2/732)
(इब्ने माजा—1/82)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
इलाही मैं हुसैन से मुहब्बत रखता हूँ तू भी उससे मुहब्बत रख और उस शख्स से भी मुहब्बत रख जो हुसैन से मुहब्बत रखता हो
(सही मुस्लिम—2/33)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
जो शख्स मेरे अहले बैत की मुहब्बत में मरा वो शहीद मरा।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
मेरे अहले बैत तुम्हारे लिये नूह अलैहस्सलाम की कश्ती के मानिन्द
हैं जो इसमें सवार हो गया उसने निजात पाई और जो चढ़ न पाया
और रह गया वो हलाक हुआ। (मिशकात—573)

ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
अगर कोई शख्स मकामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़े और रोज़ा
रखे और मेरे अहले बैत की दुश्मनी में मर जाये वो जहन्नुमी है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला से मुहब्बत करो क्योंकि वो तुम्हें नेअमतें देता है
और अल्लाह तआला के लिये मुझसे मुहब्बत करो और मेरे लिये मेरे
अहले बैत से मुहब्बत करो। (तिर्मिज़ी—2/737)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है—
मेरे अहले बैत की मुहब्बत एक साल की इबादत से अफ़ज़ल है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया—
हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम) मेरी दुनियाँ के दो फूल
हैं। (तिर्मिज़ी—2/731) (मिशकात—3/272)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिसने मेरे अहले बैत से दुश्मनी रखी उस पर मेरी शफ़ाअत हराम
हो गई।

हजरत अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत
इमाम हसन (रज़ि0) सीने से सर मुबारक तक और हजरत इमाम
हुसैन (रज़ि0) सीने से नीचे पाँव मुबारक तक हुजुर सल्लल्लाहु
अलैह वसल्लम के मुशाबा थे। (तिर्मिज़ी—2/733)

—: ताजियादारी :—

अशरा मुहर्रम में ताजियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है इन अइयाम में शर्बत, खिचड़ा, बिरयानी, खीर वगैराह पर फातिहा दिलाना और लोगों में तकसीम करना और चाय, शर्बत, खीर वगैराह की सबील करना बाइसे खैरो बरकत व सवाब है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

जो लोग अल्लाह तआला की निशानियों और यादगारों का एहतमाम करते हैं ये फेअल उनके दिलों कर तकवा है। (सू०—हज—32)

तफसीर व अहादीस में लिखा है कि हर वो चीज़ (शआइरुल्लाह) यानी अल्लाह तआला की निशानी और उसकी यादगार में दाखिल है जिसको देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें और मैं ताजियादारी की मुखालिफ़त करने वालों से पूँछता हूँ कि क्या उन्हें ताजिया देखकर इमाम हुसैन (रज़ि०) और उनकी कुरबानी याद नहीं आती।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जिस चीज़ को अल्लाह तआला ने हराम करार दिया वो हराम है और जिसको हलाल करार दिया वो हलाल है और जिस चीज़ के बारे में ख़ामोश रहा वो माफ़ है। (जामअ तिमिज़ी, इब्ने माजा,—मिशकात—367)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—अल्लाह तआला ने बाज़ चीज़ें फर्ज़ फरमाई हैं उन्हें ज़ाया मत करो और जो हराम कर दिया उनकी हुमत मत तोड़ो और जो हुदूद मुकर्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढ़ो और बाज़ चीज़ों में उसने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये सुकूत) किसी भूल की वजह से नहीं बल्कि रहमत व करम की वजह से है तो उनमें बहस न करो। (मिशकात—325)

मज़कूरा अहादीस की रोशनी में ये बात साबित हुई कि ताजियादारी करना जाइज़ है क्योंकि अल्लाह तआला ने ताजियादारी

के मुताअल्लिक ख़ामोशी इख़्तियार की है और कुरान व हदीस में ताज़ियादारी की कहीं मुमानियत नहीं आयी है और जिन चीज़ों के बारे में अल्लाह तआला ने ख़ामोशी इख़्तियार की है वो चीज़ें हमारे लिये माफ़ हैं और जिन चीज़ों को अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमाया हो तो वो चीज़ें किसी भी तरह से नाजाइज़ व हराम नहीं हो सकतीं और अल्लाह व रसूल ने जिन चीज़ों को हराम करार न दिया हो उन चीज़ों को हराम व नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियाद है और जिस तरह हम रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और अकीदत में ईद मीलादुन्नबी का जश्न बड़े शौक व जोश और एहतमाम के साथ मनाते हैं इसी तरह हम इमाम हुसैन (रज़ि०) की मुहब्बत में ताज़ियादारी करते हैं और उनकी यादगार मनाते हैं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि०) से मरवी है कि आपने फ़रमाया अगर किसी चीज़ की तस्वीर बनाना ज़रूरी समझो तो दरख़्तों की या ऐसी चीज़ की तस्वीर बनाओ जिसमें रुह न हो। (यानी जानदार न हो) (मिशकात—386)

मज़कूरा हदीस भी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़िया बनाना जाइज़ है क्योंकि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है और ताज़िया ग़ैर जानदार है और उसमें जान नहीं होती जिस तरह पहाड़ मकान जंगल नदी झरना बागात मस्जिद मक्का मुअज्जमा व मदीना मुनव्वरा वगैराह की तस्वीर बनाना जाइज़ है इसी तरह रोज़ये इमाम हुसैन यानी ताज़िया बनाना जाइज़ है।

सैइयद अल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी अपनी किताब “मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रौशनी में” फ़रमाते हैं कि कुरान व हदीस की रू से जिन्हें अहले बैत से मुहब्बत नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि जो चीज़ महबूब से निसबत रखती है तो मुहब्बत करने वाला उस चीज़ से भी निसबत रखता है और उसकी ताज़ीमो तकरीम करता है और ताज़िया अहले बैत से निसबत रखता है तो जिसे अहले बैत से मुहब्बत होगी वो ताज़िये से भी मुहब्बत करेगा और ताज़िया रोज़ये इमाम हुसैन की नक़ल है।

मिसाल के तौर पर हाजी लोग मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा

से बहुत सी चीजें खरीद कर अपने-अपने मुल्कों में लाते हैं फिर उन चीजों को अपने रिश्तेदार दोस्त अहबाब वगैराह को बतौर तोहफा देते हैं और उन्हें लेने वाले लोग उन चीजों को इज्जत की नज़र से देखते हैं और उन चीजों को तबर्क समझते हैं हालाँकि हकीकत ये है कि वो चीजें मक्का या मदीना से आती ज़रूर हैं लेकिन वो चीजें मक्का या मदीना की बनी हुयी नहीं होती हैं बल्कि वो दूसरे मुल्कों से लाकर मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा में बेची जाती हैं लेकिन फिर भी हम लोग उन चीजों की ताज़ीम व तकरीम करते हैं क्योंकि वो तमाम चीजें मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से निसबत रखती हैं इसलिये काबिले ताज़ीम होती हैं।

इसी तरह जो लोग इमाम हुसैन (रज़ि०) से मुहब्बत करते हैं और जब वो ताज़िये को देखते हैं तो उसकी ताज़ीम करते हैं और उसको रोज़ये इमाम हुसैन तसव्वुर करते हैं और ताज़िये की निसबत इमाम हुसैन (रज़ि०) से वाबस्ता होती है इसलिये ताज़िया भी काबिले ताज़ीम होता है।

इसी तरह जब किसी औलियाएकिराम या बुजुर्गानेदीन की दरगाह पर हम हाज़िरी के लिये जाते हैं और जो तबर्क़ात हम दुकानों से खरीदते हैं लेकिन वो तबर्क़ात जब तक दुकानों पर था तो उसकी ताज़ीम नहीं होती थी लेकिन जब वो तबर्क़ात आस्ताना-ए-औलिया की हाज़िरी दे आता है तो वही तबर्क़ात काबिले ताज़ीम हो जाता है क्योंकि उसे दरगाहे औलिया या बुजुर्गानेदीन की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हो जाता है और उसकी निसबत उस दरगाह में मौजूद वलीअल्लाह से वाबस्ता हो जाती है इसलिये हम उस तबर्क़ात को भी इज्जत और एहताराम की नज़र से देखते हैं।

जब कोई शख्स उस तबर्क़ात को लेकर वापस अपने घर आता और उस तबर्क़ात को लोगों में तकसीम करता और कहता कि मैं ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ की दरगाह पर हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ गया था या हज़रत बारिस पाक की दरगाह देवा शरीफ़ गया था या हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलथरी की दरगाह पर हाज़िरी के लिये गया था वगैराह और ये तबर्क़ात वहीं का है तो हम लोग उस तबर्क़ात को कितनी इज्जत की नज़र से देखते क्योंकि वो तबर्क़ात

औलियाएकिराम और बुजुर्गानेदीन से निसबत रखता है।

एक बात काबिले तवज्जौ है और हमें उस पर गौर करना चाहिये कि कुछ शहर व कस्बे ऐसे हैं कि जिनके नाम के आखिर में हम शरीफ लफ्ज़ का इस्तेमाल करते हैं जैसे बगदाद शरीफ, अजमेर शरीफ, देवा शरीफ, किछौछा शरीफ, काल्पी शरीफ, बिल्ग्राम शरीफ, मारैहरा शरीफ, बरेली शरीफ वगैराह आखिर ऐसा क्यों है क्योंकि इन तमाम शहर व कस्बों में औलियाएकिराम व बुजुर्गानेदीन मदफून हैं और इन शहरों व कस्बों से अल्लाह के नेक सालिहीन बुजुर्गों और वलियों की निसबत जुड़ी है इसलिये इन शहरों व कस्बों के नाम भी हम ताज़ीम के साथ लेते हैं तो नेक सालेह बुजुर्गों व औलियाएकिराम की निसबत से उस शहर का नाम भी ताज़ीम के काबिल हो जाता है तो सइयदुना हज़रत इमाम हुसैन की निसबत से ताज़िया कितनी बड़ी ताज़ीमो अदब और एहताराम के काबिल होगा इसका हम और आप खुद अन्दाज़ा लगायें और ताज़िये को ताज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें।

जिस तरह कागज़ सिर्फ कागज़ होता है लेकिन जब उस कागज़ पर अल्लाह व रसूल का नाम लिख दिया जाये तो वो चूम कर सर आँखों पर लगाने के काबिल हो जाता है इसी तरह जब किसी कागज़ पर कुरान लिख दिया जाता है तो वो अल्लाह का कलाम हो जाता है और वो ताज़ीमो अदब व एहताराम के काबिल हो जाता है इसी तरह हम मस्जिदे नबवी और गुम्बदे खज़रा या खाना-ए-काबा की तस्वीर जो सिर्फ कागज़ पर बनी हुई होती है लेकिन हम उसे चूमते और उसकी ताज़ीम करते हैं और उनका एहताराम करते हैं और उन तस्वीरों को ऐसी जगह रखते और सजाते हैं कि जहाँ उनकी बे अदबी न हो।

हालाँकि वो कागज़ पर बनी होती हैं और वो असल भी नहीं होती बल्कि उसकी नक़ल होती हैं लेकिन फिर भी हम उन तस्वीरों की ताज़ीम करते हैं क्योंकि वो अल्लाह व रसूल से निसबत रखती हैं इसलिये हम उस कागज़ को नहीं देखते बल्कि हम ये देखते हैं कि उस कागज़ पर बना क्या है और इसी तरह हम ताज़िये की कागज़ और पन्नी को नहीं देखते हैं बल्कि ये देखते हैं कि ये

रोज़ा—इमाम हुसैन (रज़ि०) है जिसकी निसबत सइयदुना इमाम आली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन से है जो अपने नाना जान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के लख्ते जिगर हैं इसलिये हम ताज़िये को ताज़ीम की नज़र से देखते हैं और यही इमाम हुसैन (रज़ि०) से सच्ची मुहब्बत की अलामत है।

अहले इल्म इस बात को जानते हैं कि किसी चीज़ का जाइज़ या नाजाइज़ होना चार चीज़ों पर मुन्हसिर है। 1—कुरान 2—हदीस 3—इज्माअ 4—कयास और इन चारों चीज़ों से ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं लेकिन उल्माएकिराम में इख़्तिलाफ़ है कुछ उल्मा ताज़ियादारी को जाइज़ करार देते और कुछ उल्मा इसे नाजाइज़ करार देते हैं और जो उल्मा इसे नाजाइज़ कहते हैं वो इस वजह से कहते हैं कि ताज़िया दारी में कुछ काम ग़ैर शरई हैं जैसे बैन्ड बाजा बेहूदा खेल तमाशे, छत्तों पर बैठ कर खाने की चीज़ें व दीगर चीज़ों को लोगों के बीच ज़मीन पर फेंकना ये सब काम बाकई नाजाइज़ हैं लेकिन इस वजह से ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत है और ये उनकी ज़्यादती व जुल्म है जो हमें इमाम हुसैन (रज़ि०) की यादगार मनाने से रोकते हैं जो एक अच्छा और नेक फ़ेअल है और बाइसे अज़र है और रहा सवाल इस फ़ेअल से जुड़ी हुई बुराइयों का तो हर अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी होती है तो उन्हें चाहिये कि सिर्फ़ बुराई को रोकने की लोगों को ताकीद करें न कि अच्छाई को जिस तरह हर इन्सान के साथ अल्लाह तआला ने एक शैतान मुकर्रर कर रखा है जो हमें बुराई का हुक्म देता है और हमारे नफ़्स से बुरे काम कराता है।

तो क्या हम इन्सान से सरज़द होने वाले गुनाहों और बुराइयों को रोकेंगे या उससे बाकैअ होने वाले नेक काम और अच्छाइयों को रोकेंगे क्योंकि इन्सान के साथ भी अच्छाई और बुराई दोनो जुड़ी होती है पस हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ बुराई को रोकें न कि अच्छाई को।

मिसाल के तौर पर शादी ब्याह में बहुत सी बातें ख़िलाफ़े शरअ हैं जैसे मर्द औरत का एक साथ जमा होना, बेपर्दा औरतों का मर्दों से गुफ्तगू करना, मर्दों का ना मेहरम को देखना जो सख़्त हराम है

इसके अलावा दूल्हा भाती की बुरी रस्में, बैन्ड बाजा, आतिश बाज़ी, खड़े होकर खाना पीना, जूता चुराई की रस्में वगैराह ये सब बुराई और खिलाफे शरअ उमूर हैं तो क्या इस वजह से किसी को शादी ब्याह के लिये मना किया जायेगा या शादी को नाजाइज करार दिया जायेगा। नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि शादी ब्याह में शामिल होने वाली बुराइयों और खिलाफे शरअ काम को रोका जायेगा।

इसी तरह रोज़ा नमाज़ फर्ज़ है मगर बाज़ लोग रोज़ा नमाज़ में दिखावा (रियाकारी) करते हैं और रियाकारी हराम है तो क्या इस वजह से रोज़ा नमाज़ से रोका जायेगा या रियाकारी से रोका जायेगा इसी तरह नौकरी करना शरअन जाइज़ है मगर इसके साथ रिश्वत भी ली जाती है जो फेअले हराम है तो क्या इस वजह से नौकरी करने को मना किया जायेगा या रिश्वत लेने से मना किया जायेगा इसी तरह तिजारत में भी झूठ, फरेब, धोका, बेईमानी वगैराह दीगर कई बुराइयाँ जुड़ी हुई होती हैं और बाज़ लोग तो अपनी तिजारत में हराम हलाल का भी तमीज़ नहीं रखते तो क्या इन बुराइयों और गुनाहों की वजह से तिजारत को नाजाइज़ या हराम कहा जायेगा या तिजारत से जुड़ी बुराइयों को रोका जायेगा।

बिल्कुल इसी तरह ताज़ियादारी में जो काम गैर शरई हैं हमें उन कामों को रोकना चाहिये न कि ताज़ियादारी को रोकना चाहिये जिस तरह मस्जिद ख़ाना-ए-काबा की नक़ल है जो एक इमारत है उसी तरह ताज़िया हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) रोज़े की नक़ल है इस दलील से भी ताज़िया बनाना जाइज़ है और इमाम हुसैन और शहीदाने करबला की यादगार मनाने के लिये ताज़ियादारी करना व ज़िक्रे शहादतैन जाइज़ व सवाबे दारैन है

कोई अमल ऐसा किया जाये जिसकी वजह से असल वाक़िया करबला नज़रों के सामने आ जाये तो वही अमल ज़्यादा कारगर होता जैसे ताज़िये को देखकर वाक़िया करबला हमारी नज़रों के सामने आ जाता है और इस दलील से भी ताज़ियादारी करना बेहतर अमल है हदीस पाक में है जो जिससे मुहब्बत करेगा उसका हश्र उसके महबूब के साथ होगा यानी अल्लाह तआला के यहाँ दोनो एक मुक़ाम पर होंगे और अगर हम अहले बैत से मुहब्बत

करेंगे और उनकी मुहब्बत में यादगारी मनाने के लिये ताजियादारी करेंगे तो कयामत के दिन हमें उनका साथ मिलेगा जो हमारे लिये बड़े फरख की बात होगी और उनका साथ हमारे लिये निजात है और उनका साथ हमें जन्नत में ले जायेगा।

बाज़ लोग कहते हैं कि किसी की मौत पर तीन दिन से ज्यादा सोग मनाना शरअन जाइज़ नहीं व बीवी के लिये शौहर की मौत पर चार महीना दस दिन तक सोग मनाना जाइज़ है इससे ज्यादा सोग मनाना हराम व नाजाइज़ है ये बात बिल्कुल हक है लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) तो शहीद हुये हैं और शहीद जिन्दा होता है और हमेशा जिन्दा ही रहेगा मुसलमान उनके मरने का सोग नहीं मनाता बल्कि वो तो इस बात का ग़म मनाता है कि इमाम हुसैन (रज़ि०) और आपके घर वालों और दीगर शुहदाए करबला ने जो मुसीबतें और तकलीफें उठाई और आपके जिस्म मुबारक पर बहात्तर (72) से ज्यादा तलवारों के ज़ख्म थे और आपके सामने आपके बेटे और भतीजे और भाई शहीद हो गये और आपके भाई हज़रत अब्बास का सीना छलनी कर दिया गया और आपके बाजू काट दिये गये और आपका खानदान करबला में लुट गया और आपके घर वालों को कितनी अज़िज़तें दी गई और आपकी अज़वाजे मुतहरात और आपकी बेटी सकीना की कितनी बेहुरमती की गई और आप और आपके घर वाले दीन इस्लाम के लिये कुरबान हो गये और तमाम शुहदाए करबला भूके प्यासे शहीद हो गये और उन्हें पानी की एक बूंद भी न मिली तो हम इन तमाम बातों का ग़म मनाते हैं और जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला होता है तो हज़रत इमाम हुसैन से मुहब्बत करने वाले मुसलमानों की आँखों से आँसू खुद व खुद जारी हो जाते हैं।

और बाज़ लोग तो हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) का ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने को भी नाजाइज़ व बिदअत करार देते हैं जबकि हकीकत ये है कि जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला हो और दिल ग़मगीन न हो तो वो दिल इमाम हुसैन (रज़ि०) की मुहब्बत से खाली है क्योंकि मुहब्बत का तकाज़ा ये होता है कि महबूब के पाँव में काँटा भी चुभे और तकलीफ़ हमें हो और इमाम हुसैन (रज़ि०) ने करबला में कितनी बड़ी-बड़ी बेशुमार तकलीफें उठाई तो हमें उनका कितना ज्यादा ग़म होना चाहिये और मुहब्बत के कई दरजात होते हैं और उनमें सबसे ऊँचा दर्जा

ये है कि कोई शख्स मुहब्बत की तमाम हदों को पार करते हुये खुद को अपने महबूब की मुहब्बत में गर्क कर दे और यही सच्ची और हकीकी मुहब्बत होती है।

हज़रत इमाम मालिक (रज़ि०) को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से बेहद मुहब्बत थी जब आप मदीने की गलियों से गुज़रते तो वहाँ की दीवारों को चूमते हुये जाते थे जिसके बाइस अपना चेहरा गर्द आलूद हो जाता था तो लोगों ने आपसे कहा कि हज़रत आप ऐसा क्यों करते हैं जिससे आपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता है इमाम मालिक (रह०) ने फरमाया कि मैं अपने महबूब की मुहब्बत के सबब ऐसा करता हूँ क्योंकि जब मेरे आका रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जब इन गलियों से गुज़रते होंगे तो आपका हाथ मुबारक इन दीवारों से लगा होगा इसलिये मैं इन दीवारों को चूम लेता हूँ क्योंकि इन दीवारों की निसबत मेरे आका अलैहस्सलाम से है तो लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा मुमकिन नहीं है क्योंकि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम मदीने की गलियों से गुज़रते हों और अपने दस्ते मुबारक दीवारों को लगाते हुये चलते हों फिर इमाम मालिक (रह०) ने फरमाया ठीक है कि ऐसा नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो हो सकता है आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के जिस्म अक़दस के कपड़े का कोई हिस्सा इन दीवारों से लग गया हो फिर लोगों ने कहा कि ऐसा भी नहीं हो सकता क्योंकि आप दीवारों से कुछ दूरी बनाकर चला करते थे तो फिर इमाम मालिक (रह०) ने फरमाया ठीक है हमने माना कि ये नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो ज़रूर हुआ होगा कि मेरे आका जब इन मदीने की गलियों से गुज़रते होंगे तो इन दीवारों पर आपकी निगाहे रहमत ज़रूर पड़ी होगी फिर लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा भी मुमकिन नहीं क्योंकि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम चलते थे तो आप अपनी नज़रें हमेशा नीची रखते थे फिर इमाम मालिक (रह०) ने फरमाया चलो हमने माना ये भी ठीक है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे आका हज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का जिस गली से गुज़र हो और उस गली की दीवारों ने आपके रुख़े अनवर का दीदार न किया हो और जिन दीवारों ने मेरे महबूब का दीदार किया हो वो ताज़ीमो तकरीम और चूमने के काबिल हैं इसलिये इनको चूमना मेरे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत का सबब है।

और ये हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अलामत है जब हम अपने आका का नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम सुनते हैं तो हम अपने अगूँठों को चूमकर आँखों से लगाते हैं क्योंकि ये हुजूर से मुहब्बत की अलामत है इसी तरह जब आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के बेटे और लख्खो जिगर हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र हो और दिल ग़मगीन और आँखें नम न हों तो ये अकीदत मन्दों और उनसे मुहब्बत रखने वालों के लिये कैसे मुमकिन हो सकता है बल्कि हकीकत ये है कि जब हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र होता है या जब ताज़िया नज़रों के सामने होता है तो उनसे मुहब्बत रखने वाले लोगों के आँसू जारी हो जाते हैं क्योंकि जिस वक़्त ताज़िया उनकी नज़रों के सामने होता है उस वक़्त उनका ज़ाहिरी जिस्म ताज़िये के नज़दीक होता है लेकिन वो खुद हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) और करबला की यादों के तसव्वुर में खो जाते हैं और उनकी आँखें आबदीदाह हो जाती हैं

लेकिन बाज़ लोग इमाम हुसैन (रज़ि०) के ग़म और उनकी याद में रोने पर एतराज़ करते हैं और कहते हैं कि किसी के ग़म या किसी की याद में रोना नाजाइज़ व बेसब्री की अलामत है जबकि अल्लाह तआला ने कुरान मजीद में यूसुफ अलैहस्सलाम के ग़म और उनकी याद में हज़रत याकूब अलैहस्सलाम के रोने को फसबुन जमील फ़रमाया (यानी बेहतर सब्र) और हज़रत याकूब अलैहस्सलाम कई सालों तक अपने बेटे हज़रत यूसुफ अलैहस्सलाम की जुदाई के ग़म और उनकी याद में इतना रोये कि रो-रो कर आपकी आँखें सफ़ेद हो गई और अगर रोना नाजाइज़ या बेसब्री की अलामत होती तो अल्लाह तआला कुरान मजीद में हज़रत याकूब अलैहस्सलाम के रोने को बेहतर सब्र क़रार न देता।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और वो (यूसुफ अलैहस्सलाम को कुँए में फेंककर) अपने बाप के पास रात के वक़्त रोते हुये पहुँचे (और) कहने लगे ऐ हमारे बाप कि हम लोग दौड़ में मुकाबला करने चले गये थे और हमने यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था तो उसे भेड़िये ने खा लिया और वो कमीज़ पर झूठा खून लगाकर ले आये (याकूब) ने

कहा (हकीकत ये नहीं है) बल्कि तुम्हारे (हासिद) नफ़्सों ने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिये आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला) पस (इस हादसे पर) सब्र ही बेहतर है और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो। (सू०—यूसुफ—16,—18)

और याकूब ने उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ़ (की जुदाई) पर और उनकी आँखें ग़म से (रो—रो कर) सफ़ेद हो गईं सो वो ग़म को ज़ब्त किये हुये थे (यानी वो सब्र करते रहे)। (सू०—यूसुफ़—84)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआला ने रोना हक़ और ईमान की अलामत करार दिया है कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और (यही वजह है कि उनमें बाज़ सच्चे ईसाई) जब सुनते हैं वो जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आँखें देखो आँसुओं से उबल रहीं हैं इसलिये कि वो हक़ को पहचान गये हैं (और वो) कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें हक़ के गवाहों में लिख ले। (सू०—मायदा—83)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इमाम हुसैन (रज़ि०) की शहादत का जब जब ज़िक्र किया तब—तब आप ग़मगीन हुये और आपकी चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये जिस वक़्त जिबरईल (अलैहस्सलाम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) की शहादत की ख़बर दी तो आप ये ख़बर सुनकर आबदीदाह हो गये तो इन तमाम दलीलों से साबित हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) के ग़म और उनकी याद में आँसू बहाना जाइज़ व सुन्नते रसूल और बेहतर अज़र का बाइस है।

बाज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी यज़ीदी काम है कि जिस तरह यज़ीद के लोगों ने हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) को शहीद करके उनके सरे मुबारक को नेजे पर रखकर घुमाया था तो मैं उन बदअकीदा और बदनीयत रखने वाले लोगों ये कहना चाहता हूँ कि जाहिल से जाहिल मुसलमान का भी अकीदा और नीयत ये नहीं होती कि वो सरे मुबारक को अपने काँधों पर रखे हुये है।

बल्कि उनका अकीदा और नीयत ये होती है कि जिस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने अपने प्यारे बेटों और नवासों यानी हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम को अपने काँधे मुबारक पर सवार किया था उसी तरह हम हुसैनी रोज़ये इमाम हुसैन यानी ताज़िये को अपने काँधों पर रख कर नीयते ज़ियारत घुमाते हैं।

हदीस पाक में है कि हर इन्सान के आमाल का दारोमदार उसकी नीयतों पर है और अल्लाह तआला अपने बन्दे का सिर्फ़ बातिन यानी उसकी नीयतों को देखता है कि मेरे बन्दे की नीयत और इरादा क्या है और अल्लाह तआला हर इन्सान को उसके नेक आमालों का बदला उसके ज़ाहिर को देखकर नहीं देता बल्कि उसकी नेक नीयतों को देखकर अता करता है जैसे अगर कोई शख्स अपनी इबादत या नेक अमल लोगों को दिखाने के लिये करता है तो उसे अपनी इबादत व नेक अमल का कोई भी अज़र (बदला या सवाब) नहीं मिलेगा क्योंकि हर नेक अमल के लिये नेक नीयत का होना ज़रूरी है।

जिस तरह हम अपनी आँखों से माँ बहन बेटा बीवी वगैराह को देखते हैं लेकिन उन तमाम लोगों को देखने की नज़र व नीयत और अकीदा अलग-अलग होता है अगर कोई शख्स ये कहे कि कोई शख्स अपनी आँखों से तमाम लोगों को अलग-अलग नज़र से कैसे देख सकता है क्योंकि आँखें तो दो ही होती हैं तो ये उसकी बदअकीदगी और कम इल्मी की दलील है क्योंकि आँखें दो हैं निगाह एक है लेकिन उस निगाह में नीयतें हज़ारों हैं और जो लोग ताज़िये के बारे में इस तरह का ख़्याल करते हैं कि इमाम हुसैन का सरे मुबारक को लोग लिये हुये घूमते हैं तो ये उनकी बद नीयती और बद गुमानी है और बद गुमानी सख्त गुनाह है और उन्हें चाहिये कि इस तरह के बुरे ख़्यालात व बद नीयतों और बद गुमानियों से बचें और इस तरह के गुनाहों से इजतिनाब करें ताकि अल्लाह तआला की नाराज़गी और गुनाहों से बचने में कामयाब हों।

इसी तरह का एक सवाल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ(रह०) से किया गया कि ताज़िया परस्त का ज़िह्वा हलाल है या हराम तो

आप ने जवाब में फ़रमाया— कि कोई जाहिल से जाहिल मुसलमान भी ताज़िये को माअबूद नहीं जानता और ताज़िया परस्त का लफ़्ज़ बहाबियों की ज़्यादती है जिस तरह ताज़ीम व तकरीम मज़ारात तइयबा पर मुसलमानों को कब्र परस्त का लक़ब देते हैं ये सब उनकी जहालत व बे इल्मी व जुल्म है। (फ़तावा रज़विया—24/500)

मुहर्रमुल हराम ग़म व खुशी दोनों का महीना है ग़म इस बात का है कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) और आपके खानदान और आपके साथियों पर तकलीफ़ों और मुसीबतों के पहाड़ टूटे और उस पर भूक और प्यास की शिददत हत्ता कि मासूम बच्चों को भी पानी मयस्सर न हुआ हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) की गोद मुबारक में आपके लख्ते जिगर अली असगर को शहीद किया गया एक ऐसा तीर अली असगर की गर्दन में लगा कि खून के फव्वारे निकल पड़े और मैदाने करबला की ज़मीन शहीदों के खून से लाल हो गई और हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) ने अपने जिस्मे अक़दस में बे शुमार ज़ख्मों के अलावा बे शुमार तकलीफ़ें और मुसीबतें उठाई और आख़िर में आप भी हालते सजदे में शहीद कर दिये गये।

और खुशी इस बात की है कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) तमाम तकलीफ़ों को बर्दास्त करते हुये सब्र और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहे और ऐसे नाजुक और सख़्त परेशानियों भरे हालातों पर साबित क़दमी रहते हुये शहादत का ज़ाम नोश फ़रमाया इसलिये तमाम मुसलमानों के लिये ये बड़े फख़्र और खुशी की बात है और अल्लाह तआला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है—कि जो लोग मेरी राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा का ग़म नहीं बल्कि खुशी मनाई जाती है इस तरह माहे मुहर्रम ग़म और खुशी दोनों का महीना है।

बाज़ लोग कहते हैं कि शरअ में ताज़ियादारी की कुछ असल नहीं और ये फ़ेअल विदअत व नाजाइज़ है तो मैं उनसे ये पूँछना चाहता हूँ कि कुरान व हदीस में इसकी मुमानियत कहाँ पर आई है हालाँकि गुज़िश्ता सफ़ा पर कुरान व अह्दादीस की रोशनी में ये बात साबित हो चुकी है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है कुरान मजीद की सूरह हज की आयात से भी वाज़ेह हो चुका है।

कि हर वो चीज़ अल्लाह तआला की निशानी है जिसे देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें ताज़िये को देखकर इमाम हुसैन (रज़ि०) की याद आना इस बात पर दलालत करता है कि ताज़िया भी अल्लाह तआला की निशानी है और जो लोग अल्लाह तआला की निशानियों और यादगारों का एहतमाम करते हैं ये फ़ैज़ल उनके दिलों का तक्वा है यानी ताज़िया बनाना और लोगों को उसकी ज़ियारत कराना एक अच्छा और बेहतरीन अमल है।

और अहादीस मुबारका से भी ये बात साबित हो चुकी है कि जिस काम के लिये अल्लाह व रसूल ने ख़ामोशी इस्तिथार की है वो काम हमारे लिये माफ़ हैं और ताज़ियादारी के मुताअल्लिक अल्लाह व रसूल की ख़ामोशी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़ियादारी नाजाइज़ नहीं बल्कि जाइज़ व सवाबे दारैन है और ताज़ियादारी करना ये हमारी इमाम हुसैन से सच्ची मुहब्बत और अकीदत है और जिसे इमाम हुसैन (रज़ि०) से मुहब्बत हो वो ताज़ियादारी करे और उनकी यादगार मनाये और जिसे उनसे मुहब्बत न हो तो वो उनकी यादगार न मनाये।

दुनियाँ में बहुत से काम दीन में नये हुये हैं जो कुरान व हदीस से साबित नहीं लेकिन वो तमाम काम दीन और मुसलमानों के लिये फ़ायदे मन्द साबित हुये हैं और वो तमाम काम हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के बाद विसाल अमल में आये जैसे कुरान का एक साथ जमा होना, कुरान मजीद के हरुफ़ पर ज़ेर, ज़बर, पेश, वग़ैराह का लगाना, जुमा के दिन वक्ते जुमा एक और अज़ान का इज़ाफ़ा करना, मस्जिदों में औरतों का न आना और जमाअत में औरतों की शिर्कत से मुमानियत, रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की नमाज़ बा जमाअत अदा करना वग़ैराह और जिस नये काम को करने से दीन या मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचे वो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतर और पसंदीदा होता है और इसे बिदअते हसना कहते हैं यानी अच्छी बिदअत और दीन में नया वो काम जिससे दीन या मुसलमानों को नुकसान पहुँचे उसे बिदअते सइया कहते हैं यानी बुरी बिदअत इसलिये सबसे पहले हमें बिदअत का माना और मफ़हूम को अच्छी तरह समझ लेना

चाहिये ताकि किसी अच्छे या बुरे काम में फर्क करने में हमसे ग़लती न हो और किसी काम को बुरा कहने से पहले अच्छी तरह समझ लें कि ये काम अच्छा है या बुरा सही है या ग़लत और ये बिदअते हसना है या बिदअते सइया तब उसके बाद किसी काम के मुताअल्लिक अच्छा या बुरा ख़्याल करें यही सही और अच्छा तरीका है और यही दीन व मुसलमानों के हक में बेहतर है।

बाज़ लोग ईद मीलादुन्नबी का जश्न मनाने पर भी एतराज़ करते हैं और इसे बिदअत करार देते हैं हालाँकि ये बहुत बेहतरीन अमल है और बेशुमार अज़र का बाइस है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और अकीदत के सबब किया जाता है और इस अमल से बेशुमार दीनी व दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद हैं और ईद मीलादुन्नबी का जश्न हम मुसलमानों के दिलों में हुज़ूर की मुहब्बत की नई रोशनी और हमारे ईमान में निखार लाता है और जो शख्स इस जश्न को मनाने पर एतराज़ करे या बिदअत कहे वो खुद को हुज़ूर का उम्मती होने का गुमान भी न करे क्योंकि जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और उनके अहले बैत से मुहब्बत नहीं गोया वो मुसलमान ही नहीं कायनात में हम तमाम मुसलमानों के लिये ईद मीलादुन्नबी से बढ़कर कोई दूसरी खुशी नहीं।

सरकारे दो आलम की आमद पर दो आलम में खुशियाँ मनाई गई और हम भी इस मुबारक दिन पर खुशियों का इज़हार करते हैं और उनका उम्मती होने का सबूत पेश करते हैं आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की वो सुहानी बा बरकत घड़ी को याद करना और खुशियाँ मनाना ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अलामत है और इससे दीन या मुसलमानों को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता फिर भी इस बेहतर अमल को बिदअत करार देना ये उनकी बदअकीदगी और कम अक्ली की दलील है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से उनकी मुहब्बत महज़ दिखावा है।

तो जिस तरह हम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते हैं उसी तरह हम उनके

लख्ते जिगर उनके बेटे और नवासे हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) की यादगार मनाते हैं तो हम इसमें क्या गुलत करते हैं जो बाज़ लोगों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती है नाना की यादगार मनाना और नवासे की यादगार न मनाना क्या ये सही व दुरस्त है यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की यादगार मनाने को जाइज़ कहना और उनके नवासे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाने को नाजाइज़ कहना क्या ये ना इंसानी नहीं बल्कि ऐसा कहना इमाम हुसैन से मुहब्बत करने और अकीदत रखने वालों पर जुल्म व ज़्यादती है हज़रत इमाम हुसैन की यादगार हम जुलूस ताज़िया की शकल में मनाते हैं जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की आमद की यादगार हम जुलूस की शकल में मनाते हैं तो इसमें हम क्या बुरा करते हैं जो लोग हमें इससे रोकते और बिदअत व नाजाइज़ का फ़तवा देते हैं।

हालाँकि हकीकत ये है कि जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाते हैं जुलूस ताज़िया निकालते हैं तो हमारा ये फ़ैअल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतरीन व पसंदीदा अमल है और इस अमल से हमारे आका सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम बहुत ज़्यादा खुश होते हैं और हुज़ूर को खुश करना गोया अल्लाह तआला को खुश व राज़ी करना है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को खुशी पहुँचाने से हमें उनकी कुर्बत नसीब होती है जो हमें कुर्बे इलाही की मन्ज़िल तक पहुँचाती है और इमाम हुसैन (रज़ि०) की यादगार मनाने से हमारे दिलों में मौजूद उनकी मुहब्बत और ईमान में नया निखार आता है और हमारे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के दरमियान तआल्लुकातों में मज़बूती आती है और ये मज़बूती हमें हुज़ूर और उनके अहले बैत के क़रीब कर देती है और हमारे दिल हुज़ूर और अहले बैत की मुहब्बत से मुनव्वर होते हैं और ये मुहब्बत रोज़े क़यामत हमारे लिये शफ़ाअत का बेहतरीन ज़रिया होगी।

जुलूसे हुसैनी यानी ताज़ियादारी करने से दीन या कौम को किसी किस्म का कोई नुकसान नहीं होता और ना ही किसी मुसलमान को किसी तरह की कोई तकलीफ़ व परेशानी होती है।

हाँ अगर इसमें कुछ काम खिलाफे शरअ हैं तो हमें चाहिये उन कामों से परहेज़ करें और ताज़ियादारी में शामिल बुराईयों को दूर करने की कोशिश करें लेकिन इस वजह से ताज़िया को नाजाइज़ या बिदअत कहना गोया इमाम हुसैन (रज़ि०) और शुहदाये करबला से निफ़ाक़ रखने की दलील है।

जिन बुराईयों की वजह से बाज़ लोग जुलूसे हुसैनी या रोज़ये इमाम हुसैन (ताज़िये) को नाजाइज़ या हराम कहते हैं और फ़तवा देते हैं तो मैं उनसे एक सवाल करता हूँ ठीक इसी तरह की बुराईयाँ दीगर कामों में भी पायी जाती हैं तो वो लोग उन कामों को नाजाइज़ व हराम क्यों नहीं कहते और उन कामों पर नाजाइज़ व हराम का फ़तवा जारी क्यों नहीं करते क्या ये हक़ और इन्साफ़ की बात है।

मिसाल के तौर पर बाज़ार में दुकानदार से ज़रूरत के सामान खरीदने के लिये बहुत सी ना मेहरम औरतें भी आती हैं और दुकानदार अपनी सौदा बेचने के लिये उन औरतों से बातचीत भी करता है और उनमें अक्सर औरतें बे पर्दा होती हैं और सौदा को परखने समझने फिर सौदा को अपनी पसन्द के मुताबिक़ इन्तेखाब करने और सौदा की कीमत तय करने यानी इस दरमियान दुकानदार और औरत कुछ वक़्त बाहम गुफ़्तगू करते हैं और दोनों लोगों की निगाहें एक दूसरे पर कई बार पड़ती हैं और कभी—कभी दिल में बद ख़्याली भी पैदा होती है और कभी—कभी बद निगाह और बद ख़्याली उसे ज़िना जैसी बड़ी बुराई और गुनाह की तरफ़ ले जाती है और बाज़ लोग तो ज़िना की तरफ़ माइल हो जाते हैं और इस गुनाह के मुरतकिब हो जाते हैं और बाज़ लोग तो झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी पर मुश्तमिल अपनी सौदा को बेचते हैं और हराम माल कमाते हैं और ये तमाम बातें बुराई और गुनाह हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से तिजारत करना नाजाइज़ व हराम होगा हरगिज़ न होगा।

इसी तरह जब हम बाज़ार जाते तो रास्तों और बाज़ारों में बहुत सी औरतें बे पर्दा घूमती हैं या जब हम सफ़र पर जाते हैं तो रास्तों में बसों में, रेलवे प्लेटफ़ार्म पर, ट्रेनों में हवाई जहाज़ पर

अक्सर औरतें बे पर्दा होती हैं और अक्सर लोगों की बद निगाह उन औरतों पर पड़ती है और दिल में बुरे ख्यालात पैदा होते हैं और इसके अलावा दीगर बहुत सी बुराईयाँ बाज़ारों और सफ़र के रास्तों के दरमियान हाइल होती हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से बाज़ार जाना या सफ़र करना हराम व नाजाइज़ होगा हरगिज़ न होगा।

बुराई तो शैतान की तरह हर जगह मौजूद है तो क्या हर जगह जाना बुरा और गुनाह है बल्कि हमें चाहिये कि जिन अच्छे और सवाब के कामों के साथ बुराई भी जुड़ी हुई हो तो हम सिर्फ़ बुराई से बचें और अच्छे कामों के साथ बुराई जुड़ी होने की वजह से अच्छे कामों को तर्क न करें यही अकलमन्दी की अलामत है और दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत और अज़र का बाइस है।

हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने बाज़ार को ज़मीन पर सबसे बुरी जगह बताया लेकिन कभी बाज़ार जाने या बाज़ार में तिजारत करने को मना नहीं फ़रमाया बल्कि बाज़ार और तिजारत में वाकैअ होने वाली बुराइयों और गुनाहों से बचने की हमें ताकीद फ़रमाई और यही तरीक़ा हमारा भी होना चाहिये कि हम खुद को बुराइयों और गुनाहों से पाक रखने की हर मुमकिन कोशिश करें और उन अच्छे कामों को करना न छोड़े जिनसे कुछ बुराइयाँ भी वाबस्ता हैं।

इसी तरह शादी ब्याह व दीगर तक़रीब भी कई तरह की बुराइयों और गुनाहों पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन ताज़िया और जुलूसे हुसैनी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोगों का वहाँ कोई बुराई नज़र नहीं आती है बल्कि वो लोग उम्दाह लिबास ज़ैबे तन करके उन तक़रीबों में शिर्कत करते हैं और खाते पीते बैठते उठते और लोगों से गुफ़्तगू करते, निकाह पढ़ाते, नज़राने बटोरते और उन लोगों को मुबारक बाद देते और वो कभी भी ऐसी जगहों से ऐराज़ नहीं करते चाहे वहाँ खड़े होकर खाना पीना हो, औरतों की बेपर्दगी हो मर्दों व औरतों का बाहम हंसी मज़ाक, आतिशबाजी, बैन्ड, बाजा व दीगर ग़ैर मुस्लिमों की बुरी रस्में हों लेकिन वो लोग इन तमाम

बुराईयों व गुनाहों से बे परवाह रहते हैं हम रोज़ बाज़ार जाते हैं और साल भर में सैंकड़ों शादी ब्याह व दीगर तक़रीब में शिर्कत करते हैं लेकिन बाज़ार व शादी ब्याह वगैराह में उन्हें कोई भी काम ख़िलाफ़े शरअ दिखाई नहीं देता और न कोई बुराई नज़र आती है और जुलूसे हुसैनी (ताज़िया) साल में एक बार निकलता है तो उन्हें उसमें बहुत सी बुराईयाँ दिखाई देती हैं हालाँकि हम पर वाजिब है कि हम जहाँ कहीं भी किसी बुराई या ख़िलाफ़े शरअ काम को देखें तो उसे अपनी ताक़त के मुताबिक़ रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें चाहे बाज़ार हो या शादी ब्याह हो या जुलूसे हुसैनी हो या दीगर कोई भी मजालिस हो या तक़रीब लेकिन बुराई के साथ अच्छाई को भी ख़त्म करना ये हिमाक़त और कम इल्मी की दलील है और हमें इससे इजतिनाब (परहेज़) करना चाहिये।

हालाँकि शरीअत हमें इस बात की क़तअन इजाज़त नहीं देती कि किसी अच्छे या नेक काम के साथ बुराई जुड़ी हो तो उस अच्छे काम को नाजाइज़ या हराम करार दिया जाये बल्कि जो काम शरअन जाइज़ है या जिस काम को अल्लाह व रसूल ने जाइज़ व हलाल करार दिया या जिस काम की अल्लाह व रसूल न हमें मुमानिअत नहीं फ़रमाई तो उस काम को नाजाइज़ या हराम गुमान करना भी सख़्त गुनाह है और हर अच्छे काम का सवाब मिलता है और हर बुरा काम गुनाह है इसलिये हमें चाहिये कि बुरे कामों से परहेज़ करें और अच्छे कामों की तरफ़ राग़िब हों और ताज़िया जो असल में हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) के रोज़ये पाक की नक़ल है उसकी ताज़ीम व तक़रीम करना और इमाम हुसैन की यादगार मनाना और जुलूसे हुसैनी में ताज़िये की ज़ियारत करना और लोगों को ज़ियारत कराना यह एक अच्छा अमल है जो बेहतर अज़र का बाइस है इसलिये हमें चाहिये कि इस अमल को बड़े जोश व मुहब्बत और खुलूस और एहतमाम के साथ करें इंशा अल्लाह हम और आप इस अच्छे अमल का बेहतरीन अज़र पायेंगे।

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो बे नमाज़ी हैं जब जी चाहा नमाज़ पढ़ली और जब जी नहीं चाहा तो नहीं पढ़ी इसके अलावा टी० वी० और मोबाइल पर फिल्में देखते टी० वी० सीरियल बड़े शौक़ और एहतमाम से देखते हैं और टी० वी० और मोबाइल पर गाने सुनते हैं

और दीगर बहुत से बुरे काम करते हैं और बड़े खूबसूरत अंदाज़ से ताज़ियादारी और जुलूसे हुसैनी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं लेकिन खुद का मुहासिबा नहीं करते और ना ही अपनी बुराइयों पर गौर करते हैं जबकि नमाज़ फ़र्ज़ है हमें हर हाल में पढ़नी होगी और रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं हमें हर हाल में रखने चाहिये और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और वो आमाल जिनका हमें अल्लाह व रसूल ने करने का हुक्म दिया है वो हमें ज़रूर करना चाहिये लेकिन बाज़ लोग इन तमाम आमालों से वे फ़िक्र और वे परवाह होते हैं लेकिन जुलूसे हुसैनी और ताज़िये की मुख़ालिफ़त करते हैं खुद को दीनदार मुत्तकी परहेज़गार गुमान करते हैं क्या ये उनकी कम अक्ली व वे इल्मी और इमाम हुसैन (रज़ि०) से निफ़ाक़ रखने की दलील नहीं है।

हालाँकि हकीक़त ये है कि ताज़ियादारी करने से इमाम हुसैन (रज़ि०) और दीगर शुहदाये करबला की यादें ताज़ा होती हैं और ये ख़याल आता है कि हमारे इमाम हुसैन (रज़ि०) ने दीन इस्लाम के लिये खुद को क़ुरबान कर दिया और अपने खानदान को दीन पर निछावर कर दिया और ये इब्रत हमारे लिये बाइसे ख़ैर है जो हमें सबक़ देती है कि हम भी उनकी राह पर चलें और खुद को दीन इस्लाम के लिये वक्फ़ कर दें और उनका रास्ता इख़्तियार करें और उनकी मुहब्बत में खुद को ग़र्क़ कर दें जिसने हमारे दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त की तो उनकी यादगार मनाना हमारे लिये बेहतर अमल है जिसने हमारे दीन को बचाने के लिये सब कुछ किया तो उनकी याद को ताज़ा करना और अपने दिलों को उनकी याद और उनकी मुहब्बत से मुनव्वर करना और अपने ईमान को नया निखार देना ये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर व अफ़ज़ल है।

जब कोई शख्स ताज़िये को देखता है तो उस वक़्त वो ताज़िये के करीब होता है लेकिन उसका ख़याल और तसव्वुर इमाम हुसैन (रज़ि०) और करबला की तरफ़ मुतवज्जै होता है जो उसके दिल को ग़मगीन और आँख को रोने पर मजबूर कर देता है और उनकी याद में आँख से निकला हर आँसू अहले बैत से मुहब्बत की गवाही देता है और जिस तरह हम इमाम हुसैन (रज़ि०) के नाना जान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते हैं।

उसी तरह हम हुजूर के नवासे और बेटे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाते हैं और ये फ़ेअल मुहब्बत व अक़ीदत से वाबस्ता है और दुनियाँ की कोई चीज़ किसी के दिल से मुहब्बत और अक़ीदत को नहीं निकाल सकती क्योंकि अल्लाह व रसूल और अहले बैत की मुहब्बत ईमान की बुनियाद है और जिस चीज़ की बुनियाद मज़बूत होती है तो वो उस चीज़ की पुख़्तगी और मज़बूती के लिये कारसाज़ होती है इन तमाम दलाइल से ये बात साबित होती है कि हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाना और ताज़ियादारी करना और जुलूसे हुसैनी में ताज़ियों की ज़ियारत करना और लोगों को ताज़ियों की ज़ियारत कराना सब जाइज़ व सवाबे दारैन है।

अशरा मुहर्रम में ताज़ियादारी औलियाएकिराम व सूफ़ियाएकिराम ने जोश व मुहब्बत एहताराम व एहतमाम के साथ की है और जिस काम को औलियाएकिराम व सूफ़ियाएकिराम ने किया हो वो काम नाजाइज़ या ग़लत हो ही नहीं सकता क्योंकि ये लोग अल्लाह तआला के मुकर्रबीन नेक सालिहीन महबूब बन्दे होते हैं जो कभी नाजाइज़ व हराम काम की तरफ़ निगाह भी नहीं करते और छोटी से छोटी कम दरजे वाली सुन्नतों को भी तर्क नहीं करते और वो आला मक़ाम पर फ़ाइज़ होते हैं और अल्लाह तआला उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है और उनके दरजात को बुलन्द करता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

सुनलो बेशक अल्लाह तआला के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म वो जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते हैं उन्हें खुशख़बरी है दुनियाँ में और आख़िरत में (और) अल्लाह तआला की बातें बदल नहीं सकती (और) यही बड़ी कामयाबी है।

(यू0—यूनुस—63,—64)

हमारे पीरो मुर्शिद आले रसूल सइयद अल्लामा मौलाना उवैस मुस्तफ़ा साहब बिल्ग्रामी अशरा मुहर्रम की सात तारीख़ को एक अलम उठाते हैं और गालियों में घुमाते हैं और हज़रत अब्बास (रज़ि0) के पास करबला में जो अलम था उस अलम का एक मुतबर्क टुकड़ा सैइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब किब्ला के पास मौजूद है और उस मुबारक टुकड़े को पहले गुस्ल दिया जाता है फिर उसे अलम में नसब करके हज़रत उवैस मुस्तफ़ा साहब किब्ला उस

अलम को लोगों की ज़ियारत के लिये बिलग्राम शरीफ़ की गलियों में घुमाते हैं और ये इमाम हुसैन (रज़ि०) की यादगार मनाने और ये ताज़ियादारी के जाइज़ होने की ज़िन्दा नज़ीर है

मो० कासिम नियाज़ी बरेलवी ने अपनी किताब फज़ाइले अहले बैत में हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ का वाक्या यूँ लिखते हैं कि आफ़ताबे तरीक़त माहताबे शरीअत हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब चिश्ती कादरी बरेलवी (रह०) जिनके दर पे अहले तरीक़त व अहले शरीअत सब अक़ीदत के साथ अपना सर झुकाने में फ़ख़्र महसूस करते हैं आपका वाक्या करामाते निजामियाँ में लिखा है कि एक बार हज़रत नियाज़ बे नियाज़ के साथ सूरत के रहने वाले एक आलिम ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रह०) का हमेशा ये तरीक़ा था कि आप ताज़िये के तख़्त को हाथ लगाकर अपने मुँह व कल्ब पर फेरते थे मगर इस बार हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा दे दिया यह देखकर आपके साथ जो आलिम साहब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत साहब ने ये क्या ग़ज़ब कर दिया कि ताज़िये के तख़्त को मुँह से बोसा दे दिया।

आलिम साहब के दिल में जैसे ही ये ख़्याल आया तो हज़रत नियाज़ बे नियाज़ साहब क़िब्ला (रह०) को इसकी ख़बर हो गई क्योंकि आप बहुत बड़े बुजुर्ग और अल्लाह तआला के वली थे फिर हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ ने आलिम साहब से फ़रमाया कि ताज़िये की तरफ़ देखिये फिर जब आलिम साहब ने ताज़िये की तरफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि ताज़िये के दोनो तरफ़ इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ि०) खड़े हैं और आलिम साहब ने जब ये देखा तो उन पर रिक्कत तारी हो गई और वो ज़मीन पर लोटने लगे इसके बाद हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब क़िब्ला ने और ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये।

जिन उल्माए किराम ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहा है वो इस वजह से कहा है कि उनके वक्ते हयात में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार तस्वीरों पर मुश्तमिल थे जैसे मोर, घोड़ा, पुतली बुर्राक़, परी वगैराह लेकिन बदलते ज़माने और हालात ने धीरे-धीरे

इन जानदार तस्वीरों के ताज़िये में चलन को ख़त्म कर दिया है और आज हालात ये हैं कि ताज़ियों में जानदार की तस्वीर नहीं होती और ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना शरअन जाइज़ है जो कि हदीस से साबित है।

आला हज़रत इमाम रहमत रज़ा ख़ाँ (रह०) फ़रमाते हैं—
ताज़िये की असल इस क़दर थी कि रोज़ये इमाम हुसैन की सही नक़ल बनाकर बा नीयत तबर्क़ मकान में रखना इसमें शरअन हर्ज न था तस्वीर मकानात वग़ैराह ग़ैर जानदार की बनाना व रखना सब जाइज़ है। (फ़तावा रज़विया—24/513)

आला हज़रत की इस तहरीर से वाज़ेह हुआ कि ताज़िया (रोज़े इमाम हुसैन) बनाना जाइज़ है और सही नक़ल से मुराद ताज़िये में जानदार तस्वीर न हो लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि सही नक़ल से मुराद ये है कि जैसा करबला में हज़रत इमाम हुसैन का रोज़ा है वैसा ही बनाओ लेकिन ये सिर्फ़ इल्मी अक़ल की समझ का फ़र्क़ है क्योंकि कई लफ़्ज़ ऐसे होते हैं जिनके कई मायने होते हैं और ज़रूरत के मुताबिक़ हम उन्हें अपने इस्तेमाल में लेते हैं जैसे—वारिद का माना आने वाला और मौजूद है, किब्ला का माना काबा और कलमा ताज़ीम है असबाब का माना—सामान और सबब की जमा है और औकात का माना हैसियत और वक़्त की जमा है अम्र का माना फ़ेअल, हुक्म और काम है क़ज़ा का माना हुक्मे खुदा व मौत और वो इबादत जो मुक़र्रर वक़्त के बाद अदा की जाये वग़ैराह हैं।

इसी तरह हमारे चारो इमामों में कुछ बातों के मुताअल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है हालाँकि चारो हक़ पर हैं फ़र्क़ ये कि जिसकी समझ में जो बात आयी वही उन्होंने लिख दी या बयान कर दी किसी ने कहा कि फ़लाँ बात सुन्नत है तो किसी ने उसको वाजिब कहा और किसी ने फ़र्जे किफ़ाया कहा ये सब इल्मी अक़ल की समझ का फ़र्क़ है और रोज़ये इमाम हुसैन जो कि एक इमारत की नक़ल है और इमारतों की तामीरात अक्सर होती रहती है और उनके नक्शे बदलते रहते हैं एक ज़माने में ख़ाना—ए—काबा व मस्जिदे नबवी की तस्वीर कुछ और थी लेकिन आज कुछ और है और जिस चीज़ को हम दिल से मुकम्मल तौर पर मानें वो चीज़ वही हो जाती है जैसे हमने ईट, सीमेन्ट बालू वग़ैराह से एक चार दीवारी बनाई और दिल से मान लिया कि ये मस्जिद है तो वो मस्जिद हो जाती है।

इसके लिये ज़रूरी नहीं कि मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी की सही नक़ल हो तभी मस्जिद होगी ऐसा ख्याल रखना हिमाक़त और ग़लत व बे बुनियाद है इसी तरह हमने ताज़िया बनाया और दिल से मान लिया कि ये रोज़ये इमाम हुसैन है तो यकीनन वो रोज़ये इमाम हुसैन है और यही हमारा अकीदा होना चाहिये क्योंकि ईमान की बुनियाद अकीदे पर होती है और अच्छा गुमान व सही अकीदा हमें निजात की तरफ़ ले जाता है और बद गुमानी और बद अकीदा हमें गुमराही की तरफ़ ले जाता है।

कुरान व हदीस हम सुन्नी भी पढ़ते हैं और देवबन्दी वहाबी भी पढ़ते हैं लेकिन फ़र्क़ सिर्फ़ समझ और अकीदे का है हमारी अच्छी सोच और अच्छी समझ और सही अकीदा हमें अल्लाह व रसूल के रास्ते की तरफ़ ले गया और देवबन्दी वहाबी की बुरी सोच और बद अकीदा उन्हें गुमराही और दोज़ख़ की तरफ़ ले गया और बाज़ मज़मून या तहरीर या मसाइल को पढ़ना आसान है लेकिन उनका समझना बहुत मुश्किल है और यही मुश्किलात इख़िलाफ़ की वजह होती है इसलिये हमें चाहिये इस मामले में वहस न करें बल्कि अच्छी सोच और समझ पैदा करें और सही अकीदा रखें ताकि हर बात को समझने में हमें आसानी हो।

आला हज़रत (रह०) के ज़माने में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार सूरतों पर मुश्तमिल थे और उनके साथ कुछ ग़ैर शरई उमूर भी ताज़ियादारी में शामिल थे इसलिये आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ करार दिया और मज़कूरा तहरीर में नीज़ फ़रमाया ताज़ियों में जानदार की तस्वीरें परियाँ, बुराक़ वग़ैराह और अशरा मुहर्रम में सीना जनी मातम बाजे ताशे मर्द औरत का मेल जोल बेहूदा खेल तमाशे छतों पर बैठकर खाने की चीज़ें या और कोई चीज़ का फेंकना या लुटाना ये सब बातें खिलाफ़े शरअ हैं। इस वजह से आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रह०) ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ करार दिया।

ताज़िया व जुलूसे हुसैनी नाजाइज़ या हराम नहीं है बल्कि इसके साथ जो खिलाफ़े शरअ काम हैं वो ग़लत व नाजाइज़ हैं आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रह०) के फ़तवों से ये बात साबित

हो चुकी है कि आपने ताज़ियादारी को नाजाइज़ सिर्फ़ इस वजह से कहा कि ताज़ियादारी में कुछ ग़ैर शरई उमूर भी शामिल थे और आप ताज़िये के खिलाफ़ नहीं थे बल्कि ताज़िये में जानदार की तस्वीरों की वजह से आपने ताज़िये को नाजाइज़ कहा लेकिन अब ताज़िये से जानदार तस्वीरों को हटा दिया गया है इसलिये ताज़िये को नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियाद है आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ ने अपने कई फ़तवों में राइजा या मुरब्बजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है और राइजा के माना ये है कि जो चीज़ उस वक़्त राइज (चलन) में हो आपके तहरीर किये हुये फ़तवे हस्वे ज़ैल हैं जिनमें राइजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल हुआ है।

ताज़िया राइजा का बनाना व देखना जाइज़ नहीं।

(फ़तावा रज़विया—24 / 490)

अलम वा ताज़िया व मेंहदी जिस तरह राइज है बिदअत है।

(फ़तावा रज़विया—24 / 500)

ताज़िया राइजा नाजाइज़ व बिदअत है (फ़तावा रज़विया—24 / 501)

बकालत का पेशा जैसा आजकल राइज है शरअन हराम है।

(फ़तावा रज़विया—11 / 257)

आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रह0) फ़रमाते हैं—

अशरा मुहर्रम में इमाम हुसैन (रज़ि0) व दीगर शुहदाएकिराम के नाम से सद्का ख़ैरात व ईसाले सवाब करो और इन अइयाम (दिनों) में रोज़े रखो और उनका सवाब इमाम हुसैन व दीगर शुहदाएकिराम की नज़र करो और अशरा मुहर्रम में गर्मियों के दिनों में शर्बत पिलायें और जाड़ों के दिनों में चाय वग़ैराह पिलायें खाने को चाहे कितना लज़ीज़ व वेश कीमती बनायें सब ख़ैर है खिचड़ा, पुलाव वग़ैराह जो चाहें बनायें मुहताजों को खिलायें अपने घर वालों को खिलायें नेक नीयत से सब सवाब है।

(फ़तावा रज़विया—24 / 494)

इसलिये हम मुसलमानों को चाहिये कि शरई तरीक़े के मुताबिक़ ताज़ियादारी करें और इमाम हुसैन (रज़ि0) से सच्ची मुहब्बत और अकीदत का सबूत दें और अशरा मुहर्रम में रोज़ये इमाम हुसैन

(ताजिया) बनायें और मुहब्बत व अकीदत के साथ उनकी ज़ियारत करें और जुलूसे हुसैनी की शकल में लोगों को रोज़ये इमाम हुसैन (ताजिये) की ज़ियारत करायें ताकि हमारे लिये ये अमल ख़ैरो बरकत व सवाब का बाइस बने।

उल्माये अहले सुन्नत व बुजुर्गाने दीन का ताजियादारी के मुताअल्लिक कौल व फ़ेअल—

1—हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ बरेलवी (रह0) का मामूल था कि शबे आशूरा की रात में ताजियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और जब हज़रत को ज़ॉफ़ हुआ (यानी कमजोरी की हालत में) दूसरे लोगों के सहारे से तशरीफ़ ले जाते थे और हज़रत ने ताजिये के तख़्त को बोसा भी दिया। (करामाते निज़ामियाँ—37)

2—हज़रत मुफ़्ती याकूब लाहौरी फ़रमाते हैं कि मुहर्रम अपने तमाम लमाजात के साथ करना जाइज़ है और ये अच्छा अमल है जो औलिया अल्लाह से साबित है। (तोहफ़तुन नाज़रीन—52)

3—आले रसूल सइयद अब्दुल रज़्ज़ाक बाँसवी (रह0) जिस वक़्त ताजिया उठता तो आप खड़े रहते और जब ताजिया रुख़सत होता तो आप नंगे पाँव ताजिये के साथ जाते थे और दफ़न करके घर वापस आते थे और ये वो आले रसूल वली ए कामिल थे जिनकी नस्ल में से सैइयद हज़रत वारिस पाक (रह0) तशरीफ़ लाये जिनकी दरगाह देवा शरीफ़ में है। (करामाते रज़्ज़ाकिया—15)

4—शाह कुतबुद्दीन मुहद्दिस संभली का मामूल था कि आपके सामने ताजिया आता तो आप बा अदब खड़े हो जाते थे और आप रोते रहते थे। (फ़तावा ताजियादारी—3)

5—शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि ताजिये के सामने रखकर जो फ़ातिहा दी जाती है वो मुतबरक है (फ़तावा अज़ीजी)

6—सइयद अल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी ने ताजियादारी की हिमायत में एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई है और आपने ताजियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन और अच्छा फ़ेअल बताया। (मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में)

7—हज़रत अल्लामा सलामत अली देहलवी शागिर्दे हज़रत शाह अब्दुल अजीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि खुदा का शुक्र है कि ताज़ियेदारी इस्लाम में है और इससे दीनी फ़ायदे होते हैं। (तफ़्सीरातुल ईमान दीने मुहम्मदी और ताज़ियादारी)

8—हज़रत सइयद शाह अब्दुल रज़्ज़ाक बाँसवी (रह०) फ़रमाते हैं कि ताज़िये को कोई ये न जाने कि ये खाली काग़ज़ या पन्नी है बल्कि शहीदाने करबला की मुकद्दस रूहें इस तरफ़ मुतवज्जै होती हैं। (करामाते रज़्ज़ाकिया—15)

9—हज़रत नईमुद्दीन मुरादाबादी साहब (मुफ़स्सिरे कुरान) ताज़िया बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आपके साहबज़ादे और जानशीन और ज़ामये नईमियाँ मुरादाबाद के मुतवल्ली सैयद इज़हारुद्दीन मियाँ साहब किब्ला का बयान है कि मेरे वालिद ने पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त नहीं की। (फज़ाइले अहले बैत—35)

10—हज़रत अल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब किब्ला सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया गंज मुरादाबाद जिला उन्नाव फ़रमाते हैं कि ताज़ियादारी करना, सवील लगाना, फ़ातिहा दिलाना जाइज़ व सवाबे दारैन है। (फ़तवा अल्लामा भोले मियाँ साहब किब्ला)

11—मौलाना तजम्मुल हुसैन रहमानी फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इमाम हसन व इमाम हुसैन (रज़ि०) को उम्मत की सिफ़ारिश के लिये पैदा फ़रमाया है इस हक़ की अदायगी और इमाम आली मक़ाम की ज़्यादा से ज़्यादा खुशी हासिल करने के लिये गुलामाने हुसैनी सवाब पाने की नीयत से सालाना यादगार को अपना सारमाये हयात बनाये हुये हैं हर साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम यादगारी उहद के लिये शुहदाए उहद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनके लिये दुआये रहमत करते थे। (कमालाते रहमानी—121)

13—हज़रत सइयद हाजी वारिस पाक (रह०) ताज़िया वाले घरों पर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बैठते थे और कभी खड़े रहकर लौट आते थे और बस्ती के तमाम ताज़िये आपके दरबार तक आते थे और उस वक़्त आप बाहर खड़े होकर ताज़ियों की ज़ियारत किया करते थे। (मिशकात—ए—हक्कानियाँ—84)

14—आले रसूल सैइयद अल्लामा मौलाना उवैस मुस्तफा साहब सज्जादा नशीन बिलग्राम शरीफ़ मुहर्रम की सात तारीख़ को मुहब्बत और खुलूस और एहताराम व एहतमाम के साथ अलम उठाते और ज़ियारत के लिये गलियों में ले जाते हैं और हज़रत अब्बास (रज़ि०) के पास जो अलम करबला में था उसका एक मुतबर्क टुकड़ा जो हज़रत उवैस मुस्तफा साहब किब्ला के पास मौजूद है और वो उस टुकड़े को इस अलम में नसब करते हैं।

15—उल्माये मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा का फ़तवा—मुहर्रम में मुरव्वजा ताज़िया वाजिबुल एहताराम है और दस मुहर्रम को फ़ातिहा दिलाना लाज़िम है और शरबत की सबील और मलीदा खिचड़ा वगैराह ताज़िये पर रखकर फ़ातिहा दिलाना तबर्क है। (फ़तावा मक़इया—37,—38—सालेह इब्ने अहमद मक्का मुकर्रमा व अबू तुराब उमरी मदीना मुनव्वरा)

—: जन्नत का बयान :—

जन्नत में बेशुमार दायमी नेअमतेँ और लज़्ज़तेँ हैं जिनका शुमार करना ना मुमकिन है जन्नत के आठ दरवाज़े हैं वहाँ की ईटें सोने और चाँदी की हैं जन्नत की ज़मीन नरम मुलायम और ख़ालिस कस्तूरी है उसकी कंकरियाँ मोती व याकूत की हैं उसमें दूध, शहद और शराब की नहरें हैं और हर जन्नती का महल कम से कम उसकी हृदये निगाह तक होगा और बाज़ का महल इससे भी ज़्यादा होगा वहाँ ख़ूबसूरत वादियाँ और बड़े-बड़े बाग़ और मेवे और बेशुमार फल होंगे और तमाम जन्नतियों के लिये बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें व ख़िदमत गुज़ार लड़के होंगे जन्नत में मुख़्तलिफ़ दर्जे होंगे और हर दर्जे के दरमियान इतना फ़ासला होगा जितना ज़मीन व आसमान के दरमियान फ़ासला है और सबसे ऊपर जन्नतुल फिरदौस है जिसमें अल्लाह के मुकर्रब बन्दे रहेंगे।

तमाम जन्नतियों के चेहरे खुशी व फराखी और राहतों की ताज़गी की वजह से चमकते होंगे और जन्नत में कोई बूढ़ा न होगा बल्कि तमाम जन्नती जवान और ख़ूबसूरत होंगे चाहे दुनियाँ में वो किसी हाल या किसी सूरत में रहे हों जैसे काले, लूले लंगड़े, बदसूरत वगैराह लेकिन जन्नत में अल्लाह तआला अपनी कुदरत से उन तमाम बदसूरत लोगों को वो हुस्ने जमाल अता करेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता जन्नत में सबसे ऊपर वाला दर्जा अल्लाह के मुकर्रबीन बन्दों के लिये होगा और उसके नीचे वाले दर्जे उनके लिये होंगे जिनका नामे आमाल उनको दाहिने हाथ में दिया जायेगा और हर इन्सान को उसके आमाल के मुताबिक़ जन्नत में दर्जे अता होंगे।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

और जो सबक़्त ले गये वो तो सबक़्त ही ले गये यही लोग (अल्लाह तआला के) मुकर्रब होंगे चैन के बाग़ों में अगले लोगों में से एक गिरोह और पिछलों में से थोड़े जड़ाओ (जिस पर सुनहरा काम किया गया) तख़्तों पर तकिया लगाये आमने सामने बैठे होंगे और हमेशा रहने वाले ख़िदमत गुज़ार लड़के उनके गिर्द घूमते होंगे कूज़े और जाम लिये और आँखों के सामने बहती हुई शराब कि न उससे दर्द सर हो और न होश में फ़र्क़ आये और मेवे जो वो पसन्द

करें और परिन्दों का गोस्त और बड़ी आँखों वाली हूरें जैसे छुपे हुये मोती ये सिला उनके आमाल का वो उसमें न कोई बेहूदगी सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात मगर सलाम ही सलाम सुनेंगे।
(सू०—वाकिया—10,—26)

नीज फरमाया—

और दाहिनी तरफ वाले बे काँटों (जिनमें काँटे न हों) की बेरियों में और केले के गुच्छों में और हमेशा रहने वाले सायों में और हमेशा जारी रहने वाले पानी में और बहुत मेवों में जो न ख़त्म हों और न रोके जाये और बुलन्द बिछौनों में बेशक हमने उन (हूरों) को (हुस्न व लताफ़त की आइनादार) ख़ास ख़िल्क़त से पैदा से फरमाया फिर हमने उनको कुवारियाँ बनाया जो (अपने शौहरों से) ख़ूब मुहब्बत करने वाली हम उम्र हैं ये (हूरें और दीगर नेअमतेँ) दाँयी जानिब वालों के लिये हैं। (सू०—वाकिया—27,—38)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—

जो शरख्स जन्नत में दाख़िल होगा उसे बेशुमार नेअमतेँ मिलेंगी वो कभी मुहताज न होगा उसके कपड़े पुराने न होंगे और न उसकी जवानी कभी ख़त्म होगी जन्नत में वो कुछ है जिसे कभी किसी आँख ने न देखा और न किसी कान से सुना और न किसी दिल में उसका ख़्याल गुज़रा। (मुस्नद अहमद—2/370)

हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि०) से मरवी है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया जन्नत की ईटें सोने व चाँदी की हैं उसका मसाला खुशबूदार मुश्क का है उसकी कंकरियाँ मोती और याकूत की हैं उसकी मिट्टी जाफ़रान है जो शरख्स जन्नत में दाख़िल होगा वो हमेशा नेअमतों में रहेगा और कभी किसी चीज़ का मुहताज न होगा और हमेशा जिन्दा रहेगा और उसे कभी मौत न आयेगी और न कभी उसकी जवानी ख़त्म होगी (तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद)

जब जन्नती लोग जन्नत के दरवाज़ों पर पहुँचेंगे तो वहाँ एक दरख़्त होगा जिससे दो चश्में जारी होंगे तो वो उसमें से एक चश्में का पानी पियेंगे जिससे उनकी तमाम जिस्मानी तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी फिर वो दूसरे चश्मे का इरादा करेंगे तो उससे वो पाकीज़गी

हासिल करेंगे और वो राहत व खुशी की कैफियत में होंगे फिर वो जन्नत में दाखिल होंगे और जन्नत के मुहाफिज़ उनसे कहेंगे तुम पर सलामती हो और जन्नत में हमेशा रहने के लिये दाखिल हो जाओ।

फिर जन्नत में रहने वाले ख़िदमत गुज़ार लड़कों से उनकी मुलाकात होगी और वो लड़के उनके इर्द गिर्द इस तरह जमा हो जायेंगे जैसे कोई अजीज़ सफ़र से आया हो फिर उन लड़कों में से एक लड़का जन्नत की हूर के पास जायेगा और कहेगा फ़लाँ शख्स आया है तो वो हूर पूछेगी क्या तुमने उसे देखा है तो वो कहेगा हाँ मैंने उसे देखा है और वो मेरे पीछे आ रहा है तो वो हूर बहुत खुश होगी हत्ता कि वो उसके इंतज़ार में दरवाज़े पर खड़ी हो जायेगी।

जब जन्नती अपनी मंजिल पर पहुँचेगा तो वो चारो तरफ़ निगाह करेगा और जन्नती महल देखेगा और उसकी छत को देखेगा जो बहुत ज़्यादा चमकदार होगी और ज़मीन पर उम्दाह कालीन होगी और सोने और चाँदी के बरतन होंगे फिर वो बैठ जायेगा और कहेगा अल्लाह तआला के लिये हम्द है जिसने हमारी रहनुमाई फ़रमाई और हमें जन्नत अता की अगर अल्लाह तआला हमें हिदायत न देता तो हम हिदायत न पाते फिर एक मुनादी आवाज़ देगा तुम इन नेअमतों में हमेशा ज़िन्दा रहोगे और तुम्हें कभी मौत न आयेगी और जन्नत से कभी तुम्हें निकाला न जायेगा और हमेशा सेहतमन्द रहोगे और कभी तुम बीमार न होगे।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और हम उनके सीनों से कीने (यानी वो दुश्मनी जो दुनियाँ में वो एक दूसरे से करते थे) निकाल देंगे और उनके (महलों के) नीचे से नहरें जारी होंगी और वो कहेंगे सब तारीफ़ अल्लाह तआला के लिये है जिसने हमें यहाँ (यानी जन्नत) तक पहुँचाया और हम राह न पाते अगर अल्लाह तआला हमें हिदायत न फ़रमाता बेशक हमारे रब के रसूल हक़ का पैग़ाम लाये थे और (उस दिन) निदा दी जायेगी कि तुम लोग जन्नत के वारिस बना दिये गये हो उन (नेक) आमाल के बाइस जो तुम अंजाम देते थे। (सू—आअराफ़—43)
हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि०) से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

सबसे पहला गिरोह जो जन्नत में जायेगा उनकी शक्लें चौदहवीं रात के चाँद की तरह होंगी और वो वहाँ न थूकेंगे न नाक साफ़ करेंगे और न कज़ाये हाजत (पाख़ाना) के लिये बैठेंगे और उनके बरतन सोने और चाँदी के होंगे और उनका पसीना कस्तूरी होगा। (सही मुस्लिम-2/379)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे पर शफ़ीक़ माँ से भी ज़्यादा रहम फ़रमाने वाला है। (सही बुख़ारी-2/887)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिस शख्स ने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं उस पर अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को हराम कर दिया है। (सही मुस्लिम-1/43)

जन्नत तमाम ख़्वाहिशों को पूरा करने की जगह है बल्कि इन्सान की ख़्वाहिश और उसके तसव्वुर से भी ज़्यादा हर शख्स को जन्नत में नेअमतेँ और लज़्ज़तेँ हासिल होंगी वहाँ उनको जन्नती शराब पिलाई जायेगी जो मीठी और खुशबूदार और बहुत लज़ीज़ होगी जन्नती लोग सुख़ याकूत के मुनब्बरों पर सफ़ेद मोतियों के खेमों में होंगे जो बहुत बड़े-बड़े और मोतियों के होंगे जो अन्दर से खाली होंगे जिसमें सब्ज़ रंग के बिछौने होंगे और तख़्तों पर तकिया लगाये होंगे।

और वो खेमों ऐसी नहरों के किनारों पर होंगे जहाँ शराब और शहद की नहरें होंगी और उनकी ख़िदमत के लिये लड़के मौजूद होंगे और वो लड़के इतने हसीन व खूबसूरत होंगे जैसे बिखरे हुये मोती और वो बड़ी-बड़ी आँखों वाली हसीन खूबसूरत चेहरों वाली हूरों में होंगे जिन हूरों को न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने और वो हूरें हैज़ व निफ़ास और पाख़ाना व पेशाब थूक वगैराह से پاک होंगी और दुनियाँ वाली बीवियाँ भी होंगी जो दुनियाँ में कैसी भी शक्लो सूरत में रही हों लेकिन जन्नत में वो बहुत खूबसूरत हुस्नो जमाल का पैकर होंगी और उनकी बीवियाँ बुढ़ापे से महफूज़ रहेंगी।

और वहाँ मर्द व औरत कोई भी बूढ़ा न होगा बल्कि सब जन्नती जवान रहेंगे और तीस साल की उम्र के होंगे और हमेशा इसी उम्र में रहेंगे और उनकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई सात हाथ होगी और जन्नतियों को जन्नत में ताज पहनाये जायेंगे जिन पर मोती और मरजान जड़े होंगे और जन्नतियों को सोने और चाँदी के कंधन पहनाये जायेंगे और जन्नती हमेशा उन नेअमतों में रहेंगे ये उनके आमाल का बदला होगा जो वो अमन वाले मकाम में होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

बेशक नेक लोग मुख़लिस इताअत गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेंगे जिसमें (खुशबू रंगत और लज़ज़त बढ़ाने के लिये) काफूर की मिलावट होगी (काफूर जन्नत) का एक चश्मा है जिससे (ख़ास) बन्दे पिया करेंगे और जहाँ चाहेंगे उसे छोटी-छोटी नहरों की शक़ल में (दूसरों को पिलाने के लिये) बहाकर ले जाया करेंगे ये अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे हैं जो उस दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती ख़ूब फैल जाने वाली है और (अपना) ख़ाना अल्लाह तआला की मुहब्बत में मुहताज को और यतीम को और कैदी को ख़िला देते हैं और कहते हैं हम तो सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये ख़िला रहे हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देने वाला है पस अल्लाह तआला उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब) उस दिन की सख़्ती बचा लेगा और उन्हें रौनक व ताज़गी और (दिलों में) मशररत (खुशी) बख़्शेगा इस बात के बदले कि उन्होंने सब्र किया (रहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अता करेगा ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे न वहाँ घूप की तपिश पायेंगे और न सर्दों की शिद्दत और (जन्नत के दरख़्तों के) साये उन पर झुक रहे होंगे और उनके गुच्छे झुककर लटक रहें होंगे और (खुददाम) उनके गिर्द चाँदी के बरतन और (साफ़ सुथरे शीशे के गिलास) लिये फिरते होंगे और उन्हें वहाँ (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाये जायेंगे उसमें एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है और उनके इर्द गिर्द ख़िदमत गुज़ार लड़के हमेशा घूमते रहेंगे और जब वो उन्हें देखेंगे तो बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब (बहिश्त पर) नज़र डालेंगे तो वहाँ (कसरत से) नेअमतें और (हर तरफ़) बड़ी सलत्तनत देखेंगे उन

(के जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंधन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा बेशक ये तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी। (सू०—दहर—5,—22)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
सब जन्नती तीस साल की उम्र के होंगे और वो आदम अलैहस्सलाम की तरह होंगे यानी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई सात हाथ होगी। (अत्तगीब वत्तरहीब—4/500)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
अगर तुम जन्नत में चले गये तो तुम्हें वहाँ वो कुछ मिलेगा जो कुछ तुम चाहोगे और जिससे तुम्हारी आँखों को लज़ज़त हासिल होगी। (दुर्रे मन्सूर—6/23)

बेशक जन्नत में दूध की नहरें हैं जो साफ़ हैं जिनका जायका कभी न बदलेगा और शहद व शराब की नहरें हैं जो जन्नतियों के लिये हैं जो पीने में बहुत लजीज़ हैं और जन्नती शराब पीने के बाद किसी की अक्ल जाइल न होगी और न किसी के सर में दर्द होगा बल्कि उसे पीने के बाद वो ऐसी लज़ज़त पायेंगे जो उन्हें कभी मयस्सर न हुई होगी और वो जन्नत में मुतमईन होंगे और जन्नत की नहरें याकूत की कंकरियों पर जारी होगी और बड़े—बड़े बाग़ और खुशबूदार फल होंगे और बड़े—बड़े अनार व खजूर व अंगूर व केले होंगे और जन्नतियों के लिये तेज़ चलने वाले घोड़े और ऊँट होंगे और वो वहाँ एक दूसरे से मुलाकात करेंगे और उनकी बीवियाँ हूरें होंगी गोया शतुर्मुग़ के अन्डों की तरह गर्द गुबार से महफूज़ होंगी उनकी पिन्डली का मगूज (गूदा) उनके लिबासों के ऊपर से नज़र आयेगा और अल्लाह तआला जन्नतियों के अख़लाक़ को हर बुराई से और जिस्मों को मौत से पाक रखेगा।

और जन्नती वहाँ न नाक साफ़ करेंगे और न पेशाब करेंगे और न थूकेंगे न कज़ाये हाजत के लिये बैठेंगे बल्कि खुशबूदार डकार आयेगी व पसीना आयेगा जो कस्तूरी सा महकता होगा जो उनके खानों को हज़म करेगा जो शख्स सबसे आख़िर में जन्नत में

जायेगा जिसका मर्तबा सबसे कम होगा उसका महल उसकी हृद्दे निगाह तक होगा जो सोने और चाँदी से बना होगा और मोतियों के खेमें होंगे और उसकी निगाह को खोल दिया जायेगा हत्ता कि वो महल के आखिरी हिस्से को उसी तरह देखेगा जिस तरह वो महल के करीब वाले हिस्से को देखेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है—

जिस जन्नत का परहेज़गारों से वायदा किया गया है (उसका अहवाल) ये है उसमें ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़ें और ऐसी दूध की नहरें हैं जिसका मज़ा कभी न बदले और ऐसी शराब की नहरें हैं जिसके पीने में लज़्ज़त है और ख़ूब साफ़ किये हुये शहद की नहरें होंगी और उसमें उनके लिये हर किस्म के फल होंगे (सू०—मुहम्मद—15)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

जन्नत की नहरें कस्तूरी के टीलों या पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं। (दुर्रे मन्सूर—1/37)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—

जन्नत में सुख याकूत के घोड़े दिये जायेंगे जो तुम्हें जन्नत में उड़ाकर वहाँ ले जायेंगे जहाँ तुम चाहो। (दुर्रे मन्सूर—6/23)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है सबसे कमतर जन्नती के लिये एक हजार खादिम होंगे और बहात्तर (72) बीवियाँ होंगी और उनके सरो पर ताज होंगे जिसका अदना मोती मशरिक से मगरिब के दरमियान को रोशन कर देगा।

(मिशकात—499)

जन्नत में लोग जन्नती फलों को बैठे व लेटकर जिस तरह चाहेंगे उस तरह खायेंगे और फलों के दरख्त जन्नतियों के इख्तियार में होंगे जब वो बैठे होंगे और कोई फल खाना चाहेंगे तो फलों की टहनी उन पर झुक जायेगी और इसी तरह जब वो लेटे होंगे और फल खाने का इरादा करेंगे तो उनके मुताबिक वो जितना चाहेंगे उतनी ही टहनी उन पर झुक जायेगी और उनकी ख्वाहिश के

मुताबिक बेशुमार फल और मेवे उनके खाने के लिये होंगे और दुनियाँ वाली औरतें जन्नत में कुँवारी और बहुत खूबसूरत होंगी और अपने शौहरों से बहुत प्यार करने वाली होंगी और बहुत अच्छे अखलाक वाली होंगी और कभी भी अपने शौहरों से लड़ाई झगड़ा नहीं करेंगी और अपने शौहरों के अलावा किसी की तरफ़ निगाह उठाकर भी नहीं देखेंगी।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—

बेशक डर वाले (परहेजगार) अमन वाले मकाम में होंगे बागों में और चश्मों में बारीक और रेशमी लिबास पहने होंगे आमने सामने बैठे होंगे इसी तरह (ही) होगा और हम उन्हें गोरी रंगत वाली बड़ी आँखों वाली हूरों से ब्याह देगे वहाँ इत्मीनान से (बैठे) हर किस्म के मेवे और फल तलब करते होंगे उस (जन्नत) में मौत का मज़ा नहीं चखेंगे सिवाय (उस) पहली मौत के (जो गुज़र चुकी होगी) और अल्लाह तआला उन्हें दोज़ख़ से बचा लेगा ये आपके रब का फज़ल है (यानी आपका रब आपके वसीले से ही अता करेगा) यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सू०—दुख़ान—51—57)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—

अगर कोई जन्नती औरत ज़मीन की तरफ़ झाँके तो इस (ज़मीन) को रोशन करदे और इसके दरमियान खुशबू ही खुशबू फैल जाये और उसके सर का दुपट्टा दुनियाँ और जो कुछ इसमें है से बेहतर है। (सही बुख़ारी—2/972)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो शख्स जन्नत में जायेगा उसके सिरहाने और पाँव की तरफ़ दो हूरें बैठेंगी और वो ऐसी आवाज़ के साथ गायेंगी जो न किसी इन्सान ने सुनी होगी और न किसी जिन्न ने।

(मुअजम कबीर तिबरानी—8/113)

जन्नती आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करेंगे और बाहम हंसी मज़ाक करेंगे और जन्नत में अमन व चैन से रहेंगे और उनमें कभी आपस में लड़ाई झगड़ा न होगा और न बेहूदा बकवास करेंगे और न गुस्सा और न ताना ज़नी और न आपस में कीना रखेंगे और जन्नती तमाम बुराइयों से पाक होंगे और उन्हें जन्नत में न किसी तरह का रंजो ग़म होगा और न किसी तरह की कोई परेशानी होगी और जन्नती आपस में दोस्तों की तरह रहेंगे।

और जब कोई जन्नती किसी से मुलाकात करना चाहेगा तो वो उससे मुलाकात करेगा और दुनियाँ में उनके दरमियान जिस तरह आपस में गुप्तगू (बातचीत) होती थी उसी तरह जन्नत में भी आपस में बातें करेंगे और कुछ दुनियाँ की भी बातें करेंगे और कहेंगे ऐ दोस्त तुम्हें याद है हम लोग फ़लों—फ़लों मजलिस में थे और हमारे दरमियान फ़लों—फ़लों बातें हुई थी और जन्नतियों को खाने में फ़लों और मेवों के अलावा गोस्त भी होगा और वो जिस परिन्दे का गोस्त खाने की ख्वाहिश करेंगे तो वो परिन्दा उनके सामने आ गिरेगा जो पका भुना हुआ होगा और बेशुमार चीज़ें जन्नतियों के खाने के लिये जन्नत में मौजूद होंगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो ईमान लाये अच्छे काम किये हम उनको बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बहें (और वो) हमेशा—हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह तआला का सच्चा वायदा और अल्लाह तआला से ज़्यादा किसकी बात सच्ची। (सू०—निसा—122)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक तुम जन्नत में एक परिन्दे को देखकर उसे खाने की ख्वाहिश करोगे तो वो भुना हुआ तुम्हारे सामने गिरेगा।
(मजमउज्जवाइद—10/414)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से मरवी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जन्नती आदमी के लिये उसी तरह बच्चा होगा जैसा वो चाहेगा और उसके हमल व बच्चे की पैदाइश और उसकी जवानी सब एक ही साअत (घड़ी) में हो जायेगी। (दुर्रे मन्सूर—6/23)

जन्नत में हर शख्स को खाने पीने और जिमाअ (हम बिस्तरी) के लिये सौ आदमियों के बराबर ताक़त दी जायेगी और वहाँ न सर्दी होगी और न गर्मी होगी और चाँद और सूरज भी न होंगे क्योंकि जन्नत रब तआला के नूर से रोशन होगी और वहाँ न किसी को थकान होगी और वहाँ न कोई बीमारी होगी और जन्नत में एक बाज़ार होगा लेकिन वहाँ ख़रीद फ़रोख़्त न होगी बल्कि जब कोई

शख्स ये ख्वाहिश करेगा कि फ़लों शक्ल जैसी मेरी शक्लो सूरत हो जाये तो वो फ़ौरन उसी शक्लो सूरत का हो जायेगा।

जन्नत में इन्तिहाई दर्जे की नेअमतें जन्नतियों को अता होंगी और उन्हें रब तआला का दीदार होगा और जुमे के दिन जन्नती अपने रब की ज़ियारत करेंगे और जब वो अल्लाह तआला का दीदार करेंगे तो उसके नूर को देखते ही रह जायेंगे और उनकी निगाहें रब तआला से न हटेंगी इत्ता कि तमाम लोग जन्नती नेअमतों और लज़्ज़तों को भूल जायेंगे फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ जन्नतियों तुम पर सलाम हो फिर अल्लाह तआला पर्दे में हो जायेगा लेकिन उसका नूर बाकी रह जायेगा।

अल्लाह तआला के दीदार के बाद जब लोग अपने महलों में वापस होंगे तो उनकी बीवियाँ कहेंगी कि तुम पहले से ज़्यादा हुस्नो जमाल लेकर लौटे हो और अल्लाह तआला के दीदार से जन्नतियों को वो लज़्ज़त हासिल होगी जो जन्नत की तमाम नेअमतों में भी वो लज़्ज़त हासिल न होगी और जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला शख्स जो सबसे आखिर में जन्नत में दाख़िल होगा अल्लाह तआला उसे दुनियाँ जैसी दस दुनियाँ के बराबर जन्नत में जगह अता करेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जन्नतियों में हर एक को सौ आदमियों के बराबर खाने पीने और जिमाअ की ताक़त दी जायेगी और क़ज़ाये हाज़त नहीं होगी उनका खाना पसीने की शक्ल में हज़म होगा (अत्तरगीब वत्तरहीब-4/525)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जन्नत में एक बाज़ार होगा जिसमें ख़रीद फ़रोख़्त न होगी अलबत्ता मर्दों और औरतों की तस्वीरें होगी जब कोई किसी सूरत की ख्वाहिश करेगा तो उस बाज़ार में दाख़िल होगा वहाँ हूरों का इज़्तेमाअ होगा वो आवाज़ को बुलन्द करेंगी और ऐसी आवाज़ जो मख़लूक ने कभी नहीं सुनी होगी वो कहेंगी हम हमेशा रहने वाली हैं पस उस शख्स के लिये खुशख़बरी है जो हमारे लिये है हम उसके लिये हैं। (मुस्नद अहमद-1/56)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जन्नती अपनी नेअमतों में होंगे कि एक नूर रोशन होगा तो जन्नती अपने सरों को उठायेंगे और देखेंगे कि उनके ऊपर परवरदिगारे आलम है इन लोगों के देखने पर अल्लाह तआला फ़रमायेगा अस्सलामु अलैकुम या अहलल जन्नती (ऐ जन्नतियों तुम पर सलाम हो) नीज़ फ़रमाया अल्लाह तआला जन्नतियों को और जन्नती अल्लाह तआला को देखते रहेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआला पर्दे में हो जायेगा और उसका नूर बाकी रह जायेगा और जब तक जन्नती अपने रब को देखेंगे उनका ध्यान किसी दूसरी नेअमत की तरफ़ नहीं जायेगा (सुनन इब्ने माजा)

जन्नती जन्नत में अमन चैन व ऐशो आराम में बहुत खुश होंगे और उन्हें वहाँ किसी भी चीज़ की कोई फ़िक्र न होगी बल्कि उनकी ख़्वाहिश से भी ज़्यादा बेशुमार नेअमतें उन्हें अता होंगी इसलिये हमें चाहिये बेशुमार नेअमतों और लज़्ज़तों वाली जन्नत को हासिल करने के लिये कसरत से नेक अमल करें और खुद को गुनाहों से پاک रखें और अल्लाह तआला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की इताअत और सुन्नतों पर अमल करें और फ़ानी दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करें अगर जन्नत में सिर्फ़ जिस्मों की सलामती होती और भूक प्यास और हर किस्म की मुसीबतों परेशानी से बे ख़ौफ़ी होती तब भी दुनियाँ बे रग़बती और नफ़रत के लायक़ होती।

जन्नत में भी कई दरजात हैं जो इन्सान को उसके आमाल के मुताबिक़ उसे अता किये जायेंगे जिस तरह हम दुनियाँ में एक दूसरे से माल और जायदाद वगैराह में सबक़्त लेना चाहते हैं और उनसे दुन्यावी मामलात में आगे रहना चाहते हैं और इसलिये हम हिर्स करते हैं और उनसे तमाम मामलात में आगे निकलने के लिये कोशिश और कई तरह की तदाबीर करते हैं हालाँकि दुनियाँ की नेअमतें व लज़्ज़तें सिर्फ़ थोड़े दिनों के लिये हैं

इसलिये हमें चाहिये कि दुनियाँ के बजाय जन्नत के लिये हिर्स करें ताकि जन्नत में आला मक़ाम और ऊँचा दर्जा पायें और इसके लिये हमें चाहिये कि लोगों की इबादत को देखें और

उनसे ज़्यादा इबादत करने की कोशिश करें और लोगों के नेक अमाल को देखें और उनसे ज़्यादा नेक अमल करने की कोशिश करें ताकि उनसे ज़्यादा हम बेहतर अजर पायें और दुनियाँ की मुहब्बत से किनारा कशी इस्तिायार करें ताकि आखिरत में हम इसका बेहतरीन नफ़ा उठायें और हमें चाहिये नेक अमल के ज़रिये जन्नत और उसमें आला मक़ाम की ख़्वाहिश और तलब में अपनी तमाम उम्र सर्फ़ कर दें और हमेशगी वाले घर यानी जन्नत को पाने की तैयारी में खुद को हमेशा मसरुफ़ रखें।

हर मुसलमान को चाहिये कि हमेशा अपने ज़हन में इस बात को रखे और कभी न भूले कि हम अल्लाह के बन्दे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के उम्मती हैं और बन्दे का माना गुलाम के भी है और गुलाम का हर काम उसके आका के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ होता है और जो गुलाम अपने आका के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न करे तो गोया वो गुलाम नहीं बल्कि आज़ाद होता है तो अगर हम खुद को अल्लाह का बन्दा कहते हैं तो हमें चाहिये कि बन्दे ही बनकर रहें आज़ाद बनने की कोशिश न करें क्योंकि हमारी आज़ादी हमें गुनाहों की तरफ़ रागिब करती है और हमारे गुनाह हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं और अल्लाह तआला की नाराज़गी और ग़ज़ब का सबब बनते हैं और हमारी बन्दगी इताअत और फ़रमाबरदारी हमें अल्लाह तआला की रज़ा व खुशनुदी और जन्नत की तरफ़ ले जाती है और इसी तरह हम खुद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का उम्मती कहते हैं तो हम पर लाज़िम है कि हम उनकी बात भी माने और उनकी फ़रमाबरदारी करें और खुद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का उम्मती होने का सबूत दें और कामिल ईमान का तकाज़ा और अलामत ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वही हमें भी पसन्द हो और जो चीज़ अल्लाह व रसूल को ना पसन्द हो वो हमें भी ना पसन्द होनी चाहिये यही असल और मुकम्मल ईमान की अलामत है।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आला दरजात वाले जन्नतियों को निचले दर्जे वाले जन्नती लोग इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम आसमान के किसी किनारे पर तुलूअ होने वाले सितारे को देखते हो। (मुस्नद अहमद—3/27)

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम कौसर है जो दूध से ज़्यादा सफेद और शहद से ज़्यादा मीठी है जो अल्लाह तआला ने अपने महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अता फरमाई है जिस पर एक हौज़ है और इस हौज़ पर क़यामत के दिन मेरे आका रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की उम्मत आयेगी जो इससे एक घूँट भी पियेगा वो कभी प्यासा न रहेगा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया क़यामत के दिन मेरे हौज़ पर सबसे पहले मेरी उम्मत के फुकरा मुहाजिरीन आयेंगे और हौज़े कौसर के कूज़े (बरतन) आसमान में सितारों की गिनती से भी ज़्यादा है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया—
कौसर जन्नत में एक नहर है जिसका अल्लाह तआला ने मुझसे वायदा फरमाया है और इस पर एक हौज़ है जिस पर मेरी उम्मत आयेगी। (सही मुस्लिम—1/72)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फरमाते हैं कि जब सूरह कौसर (इन्ना आअतैना कल कौसर) नाज़िल हुई तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया कि (कौसर) जन्नत में एक नहर है जिसके किनारे सोने के हैं इसका पानी दूध से ज़्यादा सफेद और शहद से ज़्यादा मीठा है और कस्तूरी से ज़्यादा खुशबूदार है और वो मोतियों और मरजान के पत्थरों पर चलता है। (मुस्नद अहमद—2/112)

हज़रत सुफियान सूरी (रह०) ख़ौफ़े इलाही व इबादत में इन्तिहा दर्जे की कोशिश व मेहनत और आख़िरत के डर की वजह से आपकी परेशाँ हाली को देखकर आपके साथियों ने आपसे अर्ज़ किया कि आप इससे कम दर्जे की कोशिश के ज़रिये भी इन्शा अल्लाह अपनी मुराद पा लेंगे तो आपने जवाब दिया मैं क्यों न कोशिश करूँ हालाँकि मुझे ये बात पहुँची है कि अहले जन्नत अपने मनाज़िल व मकानात में तशरीफ़ फरमा होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिससे आठों जन्नत जगमगा उठेंगी जन्नती गुमान करेंगे कि ये अल्लाह तआला की ज़ात का नूर है तो सज्दे में गिर पड़ेंगे फिर उन्हें निदा होगी कि अपने सर सज्दे से

उठा लो ये वो नहीं हैं जिसका तुम्हें गुमान हुआ है बल्कि ये तो जन्नती औरत के तबस्सुम का नूर है जो उसने अपने खाविन्द के सामने ज़ाहिर किया है।

दुन्यावी किसी चीज़ को हासिल करने के लिये हम मेहनत व मशक्कत और उसे हासिल करने के तरीके को इस्तिस्नान करते हैं या कीमत अदा करके उस चीज़ को हासिल करते हैं तो क्या जन्नत जैसी अजीम दायमी नेअमत को हम बगैर कुछ किये हासिल कर सकते हैं हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये और मुग़ालते पर मबनी तमाम बे असल और बे बुनियाद गुमानों को अपने दिलो दिमाग़ से बाहर निकाल देना चाहिये और अच्छी सोच व समझ को हमेशा ज़हन नशीन रखना चाहिये।

इरशादे बारी तआला है—

क्या तुम ये गुमान किये हुये हो कि तुम (यूँ ही) जन्नत में चले जाओगे हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को परखा ही नहीं और ना ही सब्र करने वालों को जाँचा है। (सू०—आले इमरान—142)

हम अल्लाह तआला की जन्नत के तालिब और इस्वाहिशमन्द हैं और उसे हर सूरत पाना चाहते हैं लेकिन अल्लाह तआला की जन्नत बगैर उसकी बात माने हमें कैसे हासिल हो सकती है क्या ये हमारी कम अक्ली और हिमाकत नहीं है कि जन्नत को बुरे आमाल और अल्लाह व रसूल की नाफरमानी के ज़रिये हम हासिल करना चाहते हैं और फिर भी हम कहते हैं कि हम बहुत ज़्यादा अक्लमन्द और होशियार हैं हालाँकि हम बहुत बड़े अहमक (बेवकूफ़) हैं ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं हमने अल्लाह व रसूल की गुलामी के बजाय अपने नफ़्स की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल रखा है और अपने दुश्मन नफ़्स के हुक्मों की इताअत कर रहे हैं और उसी की बात मान कर अपने कामों को अंजाम दे रहे हैं अल्लाह व रसूल के अहकाम से बे ख़ौफ़ और बे परवाह हो गये हैं और ग़फलत की ज़िन्दगी जी रहे हैं।

आज ज़माने और मुआशरे की हालत इतनी ज़्यादा बदतर हो चुकी है कि जिसकी मज़म्मत के लिये कसीर अल्फ़ाज़ भी बहुत कम हैं बाज़ इन्सान अपनी इन्सानियत तक खो चुके हैं और बुराई और बे हयायी को फैशन का लक़ब देते हैं और दुनियाँ से इतिहाई

मुहब्बत करते हैं जिस दुनियाँ को अल्लाह व रसूल ने ना पसन्द फरमाया और काबिले नफरत और मजम्मत बताया दीनी इल्म व तालीम का सीखना लोगो को पसन्द नहीं दिलों में दुनियाँ और दुनियाँ वालों का खौफ है लेकिन खौफे इलाही के लिये दिलों में जगह नहीं बेहूदा व फिजूल गुफ्तगू करते हैं लेकिन जिक्रे इलाही के लिये वक्त नहीं जुबानें तल्ख हो गई हैं जो गीबत और बुरे कलिमात और चुगल खोरी के लिये कैची की तरह चलती हैं लेकिन कुरान की तिलावत के लिये उनकी जुबानें खामोश हो गई हैं।

मस्जिदें वीरान हैं लेकिन उनके घर आबाद और आरास्ता हैं नमाज़ रोज़े का एहतमाम नहीं करते और दुनियाँ से रगवत और आखिरत से बे फिक्री हैं आँखों में शर्मो हया मुर्दा हो चुकी है और दिल अल्लाह की याद से खाली हैं और गफ़लत की कैफ़ियत में मुबिला हैं हत्ता कि अपनी मौत से भी गाफ़िल हैं कब्र कयामत व दोज़ख के इन्तिहाई सख़्त व निहायत दर्दनाक अज़ाब से बे ख़बर हैं मालो दौलत की तलब और ज़ख़ीरा जमा करने में वो मशगूल हैं जैसे वो अपनी दौलत को अपने कफ़न के साथ ले जायेंगे और नेकियों से खाली रहना उन्होने अपनी आदत बना ली है नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात को हर हाल में पूरा करना अपना अहम मक़सद समझते हैं हराम व हलाल में फ़र्क नहीं रखते और अपने शिकमों में हराम ग़िज़ा के ज़रिये निरी आग भरते हैं अगर थोड़ा ज़्यादा माल मयस्सर आ जाये तो उनका तकब्बुर आसमान की बुलंदियों को छूता है और अपने माल से ज़कात अदा नहीं करते ना ही सदका ख़ैरात करते हैं।

और लोग माल व दौलत में एक दूसरे पर सबक़त पाना चाहते हैं और बाहम मुकाबला करते हैं और माल में कमतर लोगो को हकारत की नज़र से देखते हैं और खुद को मुअज़्ज़ज (इज़्ज़तदार) ख़्याल करते हैं और उनके साथ बद सुलूकी और बुरे बरताव और बद कलामी से पेश आते हैं मुसलमानों के हुक्क अदा करने में कोताही करते हैं और हराम माल और बेईमानी पर बहुत ज़्यादा खुशी का इज़हार करते हैं और अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतों पर फ़रख़ करते हैं लेकिन अल्लाह तआला का शुक्र अदा नहीं करते बल्कि वो ये गुमान करते हैं कि ये सब कुछ मेरी अक्ल और मेहनत का नतीजा है और ग़रीब मिस्कीन फुक़रा की मदद नहीं करते बल्कि उन्हें झिड़ककर बद कलामी से दूर भगा देते हैं।

लोगों के दरमियान रहम व शफ़क़त और मुहब्बत सिर्फ़ माल और मतलब के लिये रह गई है रिया (दिखावा) उरुज पर है जब तक कि लोग अपने कामों में दिखावा न कर लें उनके दिल चैन नहीं पाते हत्ता कि कोई छोटी सी नेकी भी रिया से खाली नहीं होती और दुन्यावी व मुआशरती काम फ़िजूल ख़र्ची पर मुश्तमिल होते हैं और अपनी तारीफ़ व तौसीफ़ और इज्ज़त के हमेशा ख़्वाहिश मन्द रहते हैं हालाँकि इज्ज़त व ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआला के इख़्तियार में है लेकिन वो मख़लूक में तलाश करते हैं और थोड़े से नेक अमल पर खुद पसन्दी में मुब्तिला हो जाते हैं और अल्लाह तआला के बजाय लोगों पर एतमाद करते हैं और अपने कामों में मख़लूक की रज़ा और खुशनुदी हासिल करना चाहते हैं चाहे अल्लाह व रसूल बेशक नाराज़ हो जायें उन्हें इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता बल्कि उनके कामों में उनका अहम मक़सद लोगों को खुश करना और अपनी तारीफ़ और वाहवाही कराना होता है।

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जिनका आख़िरत पर ईमान मुकम्मल नहीं और वो कहते हैं कि मौत व क़ब्र और क़यामत जब आयेगी तब देखा जायेगा और जो सबके साथ होगा वो मेरे साथ होगा और वो इस बात से गाफ़िल हैं कि हर शख्स को उसके आमाल के मुताबिक़ सवाब या अज़ाब दिया जायेगा लेकिन उन्हें तो बस दुनियाँ को बेहतर बनाने की फ़िक्र है और वो उसी में मुब्तिला और मसरुफ़ रहते और उसी पर मुतमईन हैं और हिर्सो हसद के बाइस अपने दिलों को सियाह और मुर्दा कर लिया है।

वालिदैन की फ़रमाबरदारी सिर्फ़ किताबों तक महदूद रह गई और अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के अहकाम को लोग किताबों में पढ़ते और मजालिस में उल्मा हज़रात की तफ़रीर और बयानात में सुनते हैं और वाअज़ व नसीहत के ज़रिये उनकी इस्लाह भी की जाती है लेकिन वो सब कुछ जानने के बावजूद अमल नहीं करते बल्कि वो दुनियाँदारी व फ़िजूल कामों और फ़िजूल गुफ्तगू व बेहूदा बकवास में अपने वक़्त को ज़ाया करते हैं हालाँकि इन्सान के पास मौत तक थोड़ा सा वक़्त है चाहे तो नेकियाँ कमा ले या गुनाह और इसी वक़्त में चाहे तो अपने रब को राज़ी कर ले या मख़लूक को।

बाज़ लोग अपनी आखिरत के मुताअल्लिक ये कह दिया करते हैं कि हमें अपनी आखिरत की फ़िक्र नहीं क्योंकि हमारे आका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हमारी शफ़ाअत फ़रमायेंगे और हमारी बख़्शिश हो जायेगी तो मैं उनसे ये कहना चाहता हूँ कि हमारी शफ़ाअत की ज़िम्मेदारी उनकी है और उनकी फ़रमाबरदारी की ज़िम्मेदारी किस पर है उनके फ़रमान को बजा लाना और उनके हुक्मों की तामील की ज़िम्मेदारी क्या हम पर नहीं है यानी जिससे शफ़ाअत की उम्मीद रखना और उन्हीं की बात न मानना क्या ये सही और दुरस्त है हम इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र क्यों नहीं करते कि हमें कब्र के सख़्त और दर्दनाक अज़ाब से हमें कौन बचायेगा और क़यामत के दिन हिसाबो किताब और फ़ैसला होने से कबल हमें क़यामत की हौलनाकियों और निहायत सख़्तियों से हमें कौन निजात देगा पुल सिरात से जहन्नुम की आग में गिरने से हमें कौन बचायेगा सख़्त गर्मी और भूक और प्यास की शिद्दत में मुब्तिला होने पर कौन हमारी मदद करेगा तो जरा सोचें और ग़ौर करें तो हमें जवाब मिलता है कि अल्लाह की रहमत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सिफ़ारिश और हमारे नेक आमाल हमें इन मुसीबतों परेशानी से निजात देंगे।

आखिर हमें क्या हो गया है हम क्यों अपने नफ़्स के गुलाम बन गये हैं और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी और अपने नफ़्स की फ़रमाबरदारी कर रहे हैं और अल्लाह व रसूल के बजाय अपने नफ़्स की बात मानकर खुद को हलाकत में डाल रहे हैं आखिर हम क्यों अपने दुश्मन हो गये हैं जो ग़ैरों की बात मानते हैं अगर तबीब (डाक्टर) हमें किसी चीज़ की मुमानियत करे तो हम उस चीज़ से बाज़ रहते और परहेज़ करते हैं नौकर अपने मालिक के हुक्म के मुताबिक काम करता है शागिर्द अपने उस्ताद का हुक्म बजा लाता है छोटा अफसर अपने बड़े अफसर के हुक्म की तामील करता है हत्ता कि हालात ये हैं कि बाज़ लोग अपनी बीवियों के हुक्म के गुलाम हैं लेकिन अफसोस कि लोग अल्लाह तआला के हुक्मों को नज़र अंदाज़ करते और नाफ़रमानी करते जो तमाम मख़लूक का हाकिम व ख़ालिक और मालिक है बाज़ लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की गुलामी का दावा करते हैं व उनकी शफ़ाअत का दम भरते हैं और उनसे अपनी शफ़ाअत की पूरी उम्मीद रखते हैं।

लेकिन उनके अहकाम व तरीकों और उनके अफ़आल व सुन्नतों को अमल में नहीं लाते तो ऐसे लोगों की हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से उम्मीदें और उनकी गुलामी का दावा महज़ बातिल और बे बुनियाद है ऐसे लोग झूठे और धोके बाज़ हैं जो अल्लाह व उसके रसूल को धोका देने की कोशिश करते हैं हालाँकि वो खुद धोका और ग़लत फ़हमी का शिकार हो रहे हैं और खुद बहुत बड़े फ़रेब में मुब्तिला हैं और दुनियाँ और उसकी आराइश और उसकी शादाबी को हकीकी ज़िन्दगी जानकर अपनी आख़िरत को ख़सारे और दोज़ख़ की आग की तरफ़ ले जा रहे हैं और अपनी क़ब्र को कीड़े मकोड़े साँप और बिच्छुओं का घर बना रहे हैं और खुद अपने लिये आग का बिस्तर तैयार कर रहे हैं उनके काम नारे दोज़ख़ के हैं और दिलों में ख़्वाहिश व तलब ज़न्नत की है और वो खुद अपने ही हाथों खुद को हलाक कर रहे हैं।

यह एक फ़ितरी बात है कि इन्सान अपनी दुन्यावी तमाम ज़रूरतें और ख़्वाहिशात अल्लाह तआला से अपनी मर्जी के मुताबिक़ चाहता है और लोगों के मुताबिक़ भी उसकी यही ख़्वाहिश रहती है कि लोग मेरे मुताबिक़ चलें और उनके तमाम काम मेरे मुताबिक़ हों और लोग मेरी बात मानें लेकिन वो ये भूल जाता है कि जो चीज़ हम लोगों से चाहते हैं और पसन्द करते हैं और जो चीज़ हम लोगों से हासिल करना चाहते और उसके तालिब रहते हैं वही चीज़ लोग भी हमसे चाहते और उसे पसन्द करते हैं और उसे हमसे हासिल करना चाहते और उसके तालिब रहते हैं।

मिसाल के तौर पर अगर हम चाहते हैं कि लोग हमें सलाम करने में पहल करें और हमारी इज़्ज़त करें और हम पर रहम व मेहरबानी करें और हुस्ने खुल्क़ और अच्छे बरताव से पेश आयें और बुरे वक़्त और मुसीबतों परेशानी में हमारी मदद करें और हम पर जुल्म व ज़्यादती न करें और किसी भी तरह की अज़िज़यत न पहुँचायें और न हमसे हसद करें और न बुराई का क़सद और न तकब्बुराना कलाम करें बल्कि हुस्ने सुलूक से पेश आयें और मेरे मुताबिक़ जो हुक्क़ उनके ज़िम्मे हों वो उन्हें अदा करें तो मज़क़ूरा बातें जो हम लोगों से चाहते हैं तो लोग भी हमसे वो ही चाहते हैं इसलिये हमें चाहिये कि पहले इन तमाम बातों को हम खुद अपने अमल में लायें फिर लोगों से उम्मीद व ख़्वाहिश रखें।

क्योंकि जो चीज़ हम किसी को दे नहीं सकते उस चीज़ को लोगों से पाने की उम्मीद व ख्वाहिश रखना हिमाकत है यानी जो सुलूक और बरताव हम लोगों के साथ करते हैं वही हमें बदले में मिलता है अगर हम लोगों के साथ नेक और अच्छा सुलूक करेंगे तो लोग भी हमारे साथ नेक सुलूक से पेश आयेंगे याद रखो अच्छाई का बदला अच्छाई और बुराई का बदला बुराई और गुनाह होता है और बाज़ लोग तो ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला की तखलीक कर्दा मख़लूक में भी ऐब व नुक्स निकालते हैं और उनका मज़ाक बनाते हैं और हंसते हैं।

मिसाल के तौर पर अगर कोई शख्स लूला, लंगड़ा, हक्ला, काना, बहरा, भेंड़ा, काला, भूरा, पस्त क़द (नाटा) गूंगा, लम्बा, पतला, ज़्यादा मोटा या कम दिमाग़ या गन्जा या अच्छी शक्लो सूरत का न होना बग़ैराह तो बाज़ लोग उनका हंसी मज़ाक बनाते हैं क्या वो इस बात से अन्जान हैं कि उनको पैदा करने वाला परवरदिगार है अगर कोई शख्स हमारी या हमारी किसी चीज़ की बुराई करे तो हमें बुरा लगता है ठीक इसी तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बनाई हुई किसी चीज़ की जब कोई शख्स बुराई करता या ऐबो नुक्स निकालता या हंसी मज़ाक बनाता तो अल्लाह तआला को बुरा लगता है और वो सख़्त नाराज़ हो जाता है और उसकी नाराज़गी इन्सान की हलाकत का सबब बन सकती है।

हर इन्सान पर लाज़िम है कि अल्लाह तआला के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अन्जाम दे लेकिन इसके बरअक्स बाज़ लोग चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमारी दुन्यावी तमाम ज़रूरतें और ख्वाहिशों में मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़राहम करें हालाँकि ज़मीनों आसमान का मालिक रब्बुल आलमीन है और कुल कायनात उसी की मिल्कियत है और उसकी कुदरत के निज़ाम में हक़ व अदलो इन्साफ़ है जिसमें किसी का दख़ल मुम्किन नहीं है और वही पाक ज़ात मालिक व मुख़्तार है और हम उसके बन्दे और गुलाम हैं जो अपने मौला की बारगाह में आजिज़ी व इन्क़सारी के साथ अपनी दुआ और माअज़रत के पेश करने का हक़ रखते हैं लेकिन हमारी दुआओं मक़बूलियत रब तआला की मर्ज़ी और उसके इस्तिथार में है चाहे तो कुबूल करे या रद्द कर दे और दोनो हालतों

में इन्सान की भलाई और बेहतरी मख्फी है जिसे हम छोटी अक्ल वाले नहीं समझ सकते और इन्सान के तल्ख व शीरीं तमाम हालातों में अल्लाह तआला की रहमत होती है और इसकी मजबूत दलील ये है कि जिस तरह हम अपनी औलाद से मुहब्बत करते हैं इसी तरह तमाम मखलूक को पैदा करने वाला खालिक भी अपने बन्दों से इतनी बेइन्तिहा मुहब्बत करता है जितनी इन्सान अपनी औलाद से भी नहीं करता और मुहब्बत और रहम करने वाला कभी किसी के साथ ना इन्साफी या ज़्यादती नहीं करता।

इन्सान की ख्वाहिशात जो अल्लाह तआला से उम्मीद की तालिब रहती हैं इन्सान उन ख्वाहिशात को अपनी मर्जी के मुताबिक चाहता है मिसाल के तौर पर हर किसान चाहता है कि जब हमारे खेतों को पानी की ज़रूरत हो तब अल्लाह तआला पानी बरसाये और जब जितनी गर्मी सर्दी की ज़रूरत हो तब उतनी ही गर्मी सर्दी हो और हमारे खेतों में बहुत ज़्यादा पैदावार हो ताकि हमें ज़्यादा माल हासिल हो इसी तरह ताजिर (व्यापारी, दुकानदार) की ख्वाहिश होती है कि अल्लाह तआला हमारे रिज़क में बरकत दे और हमारी तिजारत में कसीर फायदा हो और किसी तरह का माली नुक़सान न हो और इन्सान चाहता है कि अल्लाह तआला मेरी मर्जी और ख्वाहिशात के मुताबिक हमें अता करे हमारा रिज़क कुशादा हो घर में खुशहाली हो व मालो दौलत का ज़खीरा हो और ऐशो आराम के सभी सामान मुहैया हों और हमारी औलाद बा ख़ैर रहे और अल्लाह तआला हमें मुसीबतो परेशानी से महफूज़ रखे वगैराह यानी इन्सान दुन्यावी तमाम मामलात अल्लाह तआला से अपनी मर्जी के मुताबिक चाहता है और उसका ख्वाहिश मन्द और तालिब रहता है।

लेकिन क्या हमने कभी इस बात पर भी गौर किया है कि क्या हम अल्लाह के हुक्म और उसकी मर्जी के मुताबिक चलते हैं क्या हम अल्लाह और रसूल के फ़रमानों के मुताबिक अमल करते हैं क्या हम अल्लाह व रसूल की बात मानते हैं क्या हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के तरीकों और सुन्नतों के मुताबिक अपने कामों को अन्जाम देते हैं यानी अल्लाह तआला की बात न मानना और अल्लाह ही से अपनी ख्वाहिशात व ज़रूरियात और तकलीफो परेशानी से निजात की उम्मीद रखना और दुआ की मक़बूलित के तालिब रहना क्या ये हक और दुरुस्त है।

हमारा कुरआन व अहादीस पर एतकाद (अकीदा) है लेकिन क्या हम कुरान व अहादीस की बात भी मानते हैं और बाज़ लोग तो कुरान की तालीम न खुद हासिल करते हैं न औलाद को दिलाते हैं बल्कि अंग्रेजी पढ़ाकर डॉक्टर इंजीनियर बनाना चाहते हैं और फिर ये ख़्वाहिश रखते हैं कि हमारी औलाद हमारी फ़रमांबरदार हो और हमारी हर बात माने और हमारे हर हुक्म की तामील करे क्या हमने कभी इस बात पर भी गौर किया है कि हमने अपने माँ बाप की कितनी फ़रमांबरदारी की है कितनी उनकी बात मानी है और कितनी उनकी ख़िदमत गुज़ारी की है जो हम अपनी औलाद से उम्मीद और ख़्वाहिश रखते हैं।

बसा औकात देखा गया है कि हमारी औलाद हमारा कहना नहीं मानती और नाफ़रमानी करती है और उन की शादी (निकाह) के बाद तो हालात इतने बदतर हो जाते हैं कि हमारा लड़का हमारा कहना बिल्कुल नहीं मानता लेकिन वो अपनी बीवी की फ़रमांबरदारी करता है माँ बाप और औलाद के दरमियान ज़ाहिरी रिश्ता कायम रहता है लेकिन बातिनी रिश्ता मुनक़ताअ हो जाता है आख़िर ऐसा क्यों होता है अगर हम इस बात पर गौर करें तो हमें पता चलता है कि इसकी दो वजह हो सकती हैं एक तो ये कि हमने अपने माँ बाप के साथ जो सुलूक और बरताव किया है वही हमें बदले में मिलता है और दूसरी वजह ये हो सकती है कि हमने अपनी औलाद को दुन्यावी तालीम दिलायी और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से वाबरस्ता रखा और दीनी तालीम व कुरान व अहादीस और अहकामे शरीअत के उलूम से दूर रखा तो हमारी औलाद ने जो तालीम हासिल की उसी दुनियाँ के मुताबिक़ वो अमल करता है काश अगर हमने अपनी औलाद को दुन्यावी तालीम के साथ-साथ दीनी तालीम भी दिलायी होती तो शायद हालात ऐसे न होते।

जिस तरह हम अपनी औलाद से चाहते हैं कि मेरी औलाद मेरी फ़रमांबरदार हो मेरे हर हुक्म की इताअत करे तो इसी तरह हमारा परवरदिगार जो हमारा ख़ालिक व मालिक है वो अपने बन्दों से चाहता है कि मेरे बन्दे मेरे फ़रमांबरदारी करें और मेरे और मेरे महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के अहकामात पर अमल पैरा हों और अपनी तमाम उम्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह

वसल्लम के तरीकों और सुन्नतों के मुताबिक गुज़ारें ताकि मैं उन्हें अपनी कुरबत में ले लूँ और उन्हें उनके नेक आमाल का बेहतर सिला दूँ और उनकी दुआओं को कुबूल करूँ और उनकी ख्वाहिशात व ज़रूरियात को को पूरा करूँ और उन्हें मुसीबतों परेशानी व अपने गज़ब और अज़ाब से महफूज़ रखूँ और उन्हें अपनी अमान में जगह अता करूँ और उन पर रहमतें व बरकतें नाज़िल करूँ और जन्नत में आला दरजात से सरफ़राज़ फ़रमाऊँ तो ज़रा सोचो और गौर करो कि अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फ़रमाबरदारी के बाइस अल्लाह तआला जिस शख्स को मज़कूरा अज़्रो इनामात से नवाज़े तो फिर उस बन्दे के मक़ाम और मर्तबे का आलम क्या होगा जिसे अल्लाह तआला के मुक़र्रब और मख़सूस बन्दों की फ़ैहरिस्त में शामिल होने और अल्लाह की रज़ा और खुशनूदी हासिल करने का शरफ़ हासिल हो जाये।

इसलिये हमें चाहिये कि इन मज़कूरा बातों पर गौरो फ़िक्र करें और खुद की इस्लाह करें और अपने गुनाहों पर पशेमान (शर्मिन्दा) हो और खुलूस दिल से तौबा करें और आइन्दा गुनाहों व बुराइयों से इजतिनाब करें और ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमाने का क़सद और कोशिश करें और तमाम बुरी बातों से ऐराज़ करें और अपने रब से ना उम्मीद न हों हमारा रब बड़ा रहीम व करीम है वो हमारे तमाम गुनाहों को बख़्श देगा अगर हम चाहते हैं कि हम जन्नत और उसकी दायमी नेअमतों के मुस्तहिक हो जायें तो हमें हर हाल में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करनी होगी चाहे असवाब हमारे मुवाफ़िक हों या हमारे ख़िलाफ़ हों और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी का नतीजा बहुत बुरा व सख़्त और बहुत भयानक होगा जिसे कोई भी शख्स बर्दास्त न कर सकेगा।

इब्लीस (शैतान) ने अल्लाह तआला की अस्सी हज़ार साल इबादत की लेकिन उसने सिर्फ़ एक हुक्म की नाफ़रमानी की तो अल्लाह तआला ने उसको अपनी बारगाह से मरदूद कर दिया और उसकी अस्सी (80) हज़ार साल की इबादत उसके मुँह पर मार दी गई और क़यामत तक उसके गले में लानत का तौक डाल दिया और उसके लिये हमेशा अज़ाबे अलीम में जलना मुक़र्रर कर दिया।

हज़रत आदम अलैहस्सलाम अल्लाह तआला के बरगज़ीदा नबी हैं जिनको अल्लाह तआला ने बराहे रास्त अपने दस्ते कुदरत से बनाया फिर तमाम मलाइका को उन्हें सज्दा करने का हुक्म दिया फिर उनको वसीअ और आरामदाह जन्नत में जगह अता फरमाई फिर सिर्फ एक हुक्म की नाफरमानी के बाइस जन्नत से निकाल दिये गये और ज़मीन पर भेज दिये गये यहाँ तक कि आप मुसलसल दो सौ (200) साल तक रोते रहे और इस सिलसिले में आपको इतिहाई मशक्कत और तकलीफें बर्दास्त करनी पड़ी।

हज़रत यूनुस अलैहस्सलाम से सिर्फ इतनी बात सादिर हुई कि एक दफ़ा आप बेजा बे मौका गुस्से में आ गये तो समुन्दर की गहराइयों में चालीस रोज़ तक मछली के पेट में कैद कर दिये गये वहाँ आप तस्वीह पढ़ते थे और रब तआला से निदा करते थे (ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तुम मिनज्जालिमीन) तेरे सिवा कोई माअबूद नहीं तेरी ज़ात पाक है बेशक मैं ही (अपनी जान पर) ज़्यादती करने वालों में से था। (सू०—अम्बिया—87)

तो इन रिवायात पर हम गौर करें और इब्रत हासिल करें कि उनकी एक गलती पर अल्लाह तआला ने कैसी सख़्त सज़ायें दीं तो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी के बाइस हमारा क्या हाल होगा जो हम ग़लतियों पर ग़लतियाँ और गुनाह पर गुनाह किये जा रहे हैं इसलिये हमें चाहिये कि बुराई और गुनाहों का रास्ता छोड़कर सिराते मुस्तकीम का रास्ता इख़्तियार करें और अल्लाह व उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के फ़रमाबरदार बन जायें क्योंकि सिराते मुस्तकीम की मंज़िल जन्नत है और बुराई का रास्ता हमें सीधे दोज़ख़ में ले जाता है अब खुद फैसला करें और अपनी भलाई और ख़ैर वाले रास्ते को मुन्तख़ब करें और अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इताअत व फ़रमाबरदारी में सर्फ़ कर दें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में अज़रे अज़ीम व इनामात के मुस्तहिक़ हो जायें बन्दा जब अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमाबरदारी करता है तो वो उन बेशुमार दुन्यावी व उख़रवी नेअमतों व राहतों का मुस्तहिक़ हो जाता है जिसका वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता अल्लाह तआला अपने फ़रमाबरदार बन्दों का तज़क़िरा फ़रिश्तों में करता है तो वो शख्स कितना खुश नसीब और मुअज़्ज़ज़ हैं कि जिसका तज़क़िरा रब्बुल आलमीन फ़रिश्तों में करके उस पर एहसान करे और

रब तआला अपने इताअत गुज़ार बन्दों से बेहद मुहब्बत करता है और ये उनके लिये बड़े फरख का मक़ाम होता है और रब तआला उनका कारसाज होता है जब वो किसी काम का इरादा व तदाबीर करे और अल्लाह तआला उनके रिज़क का कफ़ील (ज़िम्मेदार) होता है और उन्हें वहाँ से रिज़क अता करता है जहाँ उनका वहमो गुमान भी नहीं होता और उनका मददगार होता है और वक़्त मुसीबत उनकी मदद फ़रमाता है और हर दुश्मन और हर बुराई का इरादा करने वालों से उन्हें महफूज़ रखता है और पाकीज़ा नफ़्स व फ़राख़ सीना और उनके दिल नूर से मुनव्वर होते हैं और उनके दिल उलूम और हिकमतों (पोशीदा बातों) पर मुत्तलाअ होते हैं और दुनियाँ के मसाइब और तकलीफ़ और लोगों की अइयारियों और मक्कारियों से उनके दिल तंग नहीं होते और सब नेक व बद उनकी इज़ज़त और एहताराम करते हैं और अल्लाह तआला उनकी तमाम हाजतों और दुआओं को कुबूल फ़रमाता है।

जो बन्दे अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी में गुज़ारते हैं और सिराते मुस्तकीम पर साबित क़दमी रहते हैं तो उन पर मौत की सख़्ती को आसान कर दिया जाता है और जाँकनी के वक़्त नज़अ की हालत में उन्हें हर तकलीफ़ से महफूज़ रखा जाता है और उनके लिये मौत राहत व खुशगवार और तोहफ़ा होती है और वो अल्लाह तआला की रहमत व अमान में रहते हैं और उनकी क़ब्र सर सब्ज़ व शादाब हो जाती है और क़ब्र के अज़ाब और क़यामत के इतिहाई सख़्तियों और हौलनाकियों से वो बेख़ौफ़ और महफूज़ और अमन व राहत में रहेंगे और जन्नत और उसकी नेअमतों और लज़ज़तों के वारिस होंगे और उसमें वो हमेशा—हमेशा रहेंगे और उन्हें अपने रब से मुलाकात का शरफ़ हासिल होगा हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया—बेशक़ तुम अपने रब को इस तरह देखोगे जिस तरह तुम इस चाँद को देख रहे हो

इरशादे बारी तआला है—

और उनको पुकारा जायेगा कि ये जन्नत है जिसका तुम्हें वारिस बनाया गया ये तुम्हारे आमाल की जज़ा है। (सू०—आअराफ़—43)

—: जन्नत में ले जाने वाले आमाल :—

- 01—अल्लाह तआला के हर हुक्म पर राजी रहना और हर मुशिकलात में सब्र करना।
- 02—अल्लाह तआला की हर अता पर उसके शुक्रगुज़ार रहना।
- 03—तमाम गुनाहों से किनाराकशी इस्तियार करना और हर वक्त ये ख्याल रखना कि मेरा रब हमें देख रहा है।
- 04—हर वक्त अपनी मौत को याद रखना और दुनियाँ से बे रग़बती इस्तियार करना।
- 05—कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और अहले बैत से रखना।
- 06—अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करना और सुन्नतों पर कसरत से अमल करना।
- 07—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर कसरत से दुरुदो सलाम भेजना।
- 08—सिर्फ अल्लाह तआला से डरना और उसी का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखना और उसी पाक ज़ात पर मुकम्मल भरोसा रखना।
- 09—रोज़ा, नमाज़ का पाबन्द रहना और पूरी ज़कात अदा करना।
- 10—कसरत से सद्का ख़ैरात करना और हर मुसलमान से हुस्ने खुल्क से पेश आना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना और उनके साथ हुस्ने सुलूक और अच्छे बरताव से पेश आना और उनकी हर तरह से मदद करना।
- 11—हर नेक अमल ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये करना।

- 12—अपने नफ़्स से जिहाद करना और खुद को रिया और तकब्बुर से पाक रखना और अपने तमाम मामलात में मारफ़ते खुदावन्दी इस्तियार करना ।
- 13—माँ बाप से हुस्ने सुलूक से पेश आना और उनकी फ़रमाबरदारी करना और उनका अदबो एहताराम करना ।
- 14—हमेशा सच और हक़ बात कहना और अपनी आख़िरत के लिये हर वक़्त तैयारी में लगे रहना ।
- 15—अपने नफ़्स को हमेशा काबू में रखना और उस पर ग़ालिब रहने के लिये कोशिश और तदाबीर करना और हमेशा ख़िलाफ़े नफ़्स काम करना ।

अल्लाह तआला अपने महबूब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफ़ैल हम तमाम मुसलमानों को हिदायत अता फ़रमाये और शैतान के शर से महफूज़ रखे और तमाम गुनाहों और बुराइयों से पाक रखे और सिराते मुस्तकीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारे दिलों में सबसे ज़्यादा अपनी और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत को कायम व दायम रखे और हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमादे और हमें क़ब्र व क़यामत के अज़ाब से महफूज़ रखे और हमें कसरत से नेक अमल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और क़यामत के दिन हमें सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की शफ़ाअत नसीब हो और अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफ़ैल हम मुसलमानों को जन्नत में आला मक़ाम से सरफराज़ फ़रमाये—आमीन ।

व आखिरुद्दअवाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ।



विहिम्दिही तआला व फ़ैजे रसूलुल आला व करमे गौसुल आज़म व इनायते ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ व अताये वारिस पाक व फ़ैजे रुहानी हज़रत सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब किब्ला बिलग्रामी व बरकात तमाम बुर्जुगाने दीन बड़ी मुददत तबीला के बाद आरजू के गुलिस्तां में बहार आयी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के तुफ़ैल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ हकीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हकीकतन मैं उसके काबिल न था लेकिन बुर्जुगों की निगाहे करम ने मुझे इस काबिल बनाया अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने अपने महबूबे पाक रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के में मुझ से ये खिदमत ली हालाँकि मैं इसके बिल्कुल काबिल न था बहर कैफ़ आप हज़रात के हाथ में जो किताब मौजूद है इस किताब का मुताअला करें और उस पर अमल पैरा हों ताकि अल्लाह तआला जज़ा ऐ ख़ैर से नवाज़े और दुनियाँ व आख़िरत में कामयाबी हासिल करें और अल्लाह तआला के मुक़र्बीन बन्दों में अपना मक़ाम बनायें व मन्ज़िले मक़सूद पर फ़ाइज़ हों। अगर किताब के लिखने में कोई ग़लती हो या किताबत की ग़लती हो तो पढ़ने के बाद बराये करम मुत्तलाअ़ फ़रमायें ऐन नवाज़िस होगी।

जो हज़रात अपने अज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हों वो बराहे रास्त हम से राबता कायम करें।

नोट—इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मरहूम जनाब ईद मुहम्मद साहब की रुह को अल्लाह तआला अज़रे अज़ीम अता फ़रमाये और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के सद्के और तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये।

डा० आज़म बेग़ कादरी

PH-09897626182

उर्दू बुक हाउस

तलाक़ महल कानपुर (उ० प्र०)

PH-09389837386, 09559032415